॥ श्रीः ॥

श्रीमद्भगवद्गीता

(श्लोक दोहा सहित भाषाटीका)

ब्रजभाषान्तर बनायकर

श्रीमद्भगवद्गीतामाहात्म्यभाषाटीकासहित

श्रीविष्णु-धरासंवाद

स्वामी

पं० श्रीधरशिवलालजीके

ज्ञानसागर छापखानाके मालिकनें

मुंबईमध्यें

श्रीवेंकटेश्वर छापखानामें

छपाया

यह गीता स० १८६७ के आक्ट २५ प्रमाण
रजिष्टर किया है

आवृत्ति १

मिति कार्त्तिक कृष्ण १ संवत् १९४५ शा० १८१०

सन १८८८


युद्धप्रसंग·
भीष्म
पार्थ·



अथश्रीमद्भगवद्गीतार्थेवाङ्मयीमूर्त्तिः ॥ श्लोक· वक्त्राणिपंचजानी-
हि पंचाध्यायाननुक्रमात् ॥ दशाध्याया भुजश्चैव मुदरं द्वौ पदांबुजे
॥१॥ एवमष्टादशाध्यायी वाङ्मयीमूर्तिरैश्वरी ॥ जानीहि ज्ञानमा
त्रेण महापातकनाशिनी ॥२॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥

श्रीः।

श्रीधरकृतगीतामाहात्म्य भाषाटीका दोहासमेतप्रारंभः



श्लोक

॥ धरोवाच ॥

भगवन्परमेशानभक्तिरव्यभिचारणी ॥
प्रारब्धंभुज्यमानस्यकथंभवतिहेप्रभो ॥ १ ॥

टीका—हेभगवान् हेपरमपुरुषोत्तम यह संसारसागरमैं अनंत जीव है सो प्रारब्धकर्मोंके अनुसार अपनेअपने प्रारब्धकर्म भोगते है तिनौको भगवच्चरणारविंदमै अव्यभिचारिणी भक्ति वा अनन्यभक्ति आपके चरणकमल शिवाय और कोईभी आश्रय नहीहै. जामैं अव्यभिचारिणी ऐसी भक्ति कौनसे पुण्यतै होतहै सोही साधन हेप्रभो आप कहियै. ॥ ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ धरतीपूछैविष्णुपैं, सुनियेमाधवराव ॥ कर्मभोगिजीवांनकौ, कैसे भक्तिप्रवाह. ॥ १ ॥

॥ विष्णुरुवाच ॥

प्रारब्धंभुज्यमानोहिगीताभ्यासरतःसदा ॥
समुक्तःससुखीलोकेकर्मणानोपलिप्यते ॥ २ ॥

टीका—श्रीविष्णुभगवान् कहैहै. हेधरणी! यहसंसारमैं जो प्रारब्धकर्म भोगी जीवहै तिनमैं जो कोईक नित्य श्रीगीताजीको पठण करते सोही पुरुष मोक्षरूपहै. वेही सुखीहै. यालोकमैं उनको येप्रारब्धक लिपायमान नही होते है. ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ प्रारब्धीकर्मानकौं, भोगै जीवअनंत ॥ श्रीगीताकेपठनतैं, पावैभक्तिनिरंत ॥ २ ॥

महापापादिपापानिगीताध्यानंकरोतिचेत् ॥
क्वचित्स्पर्शंनकुर्वंतिनलिनीदलमंभसा ॥ ३ ॥

टीका—जो पुरुष श्रीगीताजीको ध्यानही करैहै. तिनकौं महापापसै अधिक पाप होय तोभी वागीताके ध्यान करीवेतैं वाकौं वे पातकस्पर्शभी नही करै तामै दृष्टांतहै जैसे कमलपत्रकौं कदाचितभी जलस्पर्श नही करै तैसे पातक दूरही रहैहै ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ महापातकीजोकरै, गीताकोअभ्यास ॥ ताकोंपातकनाछुवै, कमलपातजलवास ॥ ३ ॥

गीतायाःपुस्तकंयत्रयत्रपाठःप्रवर्तते ॥
तत्रसर्वाणितीर्थानिप्रयागादीनितत्रवै ॥ ४ ॥

टीका—श्री गीताजीका पुस्तक जहांजहां होय तहांतहां पठनहू होतहै वहांवहां सर्व तीर्थनिकोनिवास. श्रीप्रयागराज, त्रिवेनिजी, आदिलैकै सर्वतीर्थ निवास करतेहै ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ जाकेघरगीतावसै, पुस्तकपाठकरंत ॥ सर्वतीर्थवाठौरहै, प्रयागआदिअनंत ॥ ४ ॥

सर्वेदेवाश्चऋषयोयोगिनःपन्नगाश्चये ॥
गोपालगोपिकावापिनारदोद्धवपार्षदैः ॥ ५ ॥

टीका—अरु जहां श्रीगीताजीको पुस्तक पठनहै तहां सर्वदेवता ऋषि योगेश्वर, पन्नगदेवता, गोपालगोपिका, तथा श्रीनारदजी, उद्धवजी, आदि पार्षद, वहां निवास करतेहै ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ सर्वदेवऋषियोगिजन, पन्नगगोपिगवाल ॥ नारदउद्धवपारषद, वसैतहांनँदलाल ॥ ५ ॥

सहायोजायतेशीघ्रंयत्रगीताप्रवर्तते ॥
यत्रगीताविचारंचपठनंपाठनंश्रुतम् ॥
तत्राहंनिश्चितंपृथ्विनिवसामिसदैवहि ॥ ६ ॥

टीका—हेपृथ्वी! जहां गीताजीकी प्रवर्तिहै अरु गीताकौं विचारतेहै पठतेहै पढावतेहै श्रवणकरतेहै उहां मैं सदा निवास करताहूं निश्चय स-

हायता करौंहौं शीघ्रही ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ सहायकरैसबपारषद, जहां-गीतासुषवास ॥ जोवांचैसीषैसुणै, ज्याकेरच्छकदास ॥ ६ ॥

गीताश्रयेहंतिष्ठामिगीतामेचोत्तमंगृहं ॥
गीताज्ञानमुपाश्रित्यत्रीन्लोकान्पालयाम्यहम् ॥७॥

टीका–हेपृथ्वी! श्रीगीताजीके आश्रय वासकरौंहौं गीताजी मेरा उत्तम घरहै श्रीगीताजीका ज्ञानकी उपासनातैं त्रैलोककी पालना करौंहौं परम इष्ट मेरेहै ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ मैगीताकेआसरे, सुषवासीसतिपाल ॥ श्रीगीताकेइष्टसौ, त्रैलोकीप्रतिपाल ॥ ७ ॥

गीतामेपरमाविद्याब्रह्मरूपानसंशयः ॥
अर्धमात्राक्षरानित्यास्वनिर्वाच्यपदात्मिका ॥ ८ ॥

टीका–मेरी परमविद्या श्रीगीताजीहै परमविद्याहै ब्रह्मरूपा यामैं संदेह नहीं मात्रा अर्धमात्रा अक्षर पादश्लोक ये मेराही रूपहै ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ मेरीविद्यापरमहै, गीताब्रह्मसरूप ॥ अक्षरमात्रानितपढै, पडैन भवकेकूप ॥ ८ ॥

चिदानंदघनेकृष्णेनोक्तास्वमुखतोर्जुनं ॥
वेदत्रयीपरानंदातत्वार्थज्ञानमंजसा ॥ ९ ॥

टीका–चिदानंद आनंदघन श्रीकृष्णके मुखारविंदतैं अर्जुनप्रति कही है सो यागीता वेदत्रय कर्म उपासना ज्ञानकांडमयी आनंदतत्वकै साक्षात् ज्ञानकौं देवै है. ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ चिदानंदघनकृष्णके, मुखतेंअर्जुन धारि ॥ वेदत्रयीआनंदमय, तत्वज्ञानकोसार ॥ ९ ॥

योष्टादशजपेन्नित्यंनरोनिश्चलमानसः ॥
ज्ञानसिद्धिंसलभतेततोयातिपरंपदम् ॥१०॥

टीका–जोपुरुष अठारा अध्यायके पाठ नित्य करते है निश्चलमनतैं वा पुरुषकौं ज्ञानसिद्धि प्राप्त होयकै अंतमैं परमपदकौं पावैहै. ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ जो अष्टादशाध्यायको, नित्यकरैपढजाप ॥ ज्ञानसिद्धिमोक्षहि मिलै, छूठजातसबपाप ॥ १० ॥

पाठेसमर्थःसंपूर्णेतदार्द्धंपाठमाचरेत् ॥
तदागोदानजंपुण्यंलभतेनात्रसंशयः ॥ ११ ॥

टीका–जोपुरुष पूरणपाठ करिवेमैं असमर्थ होय तो अर्द्धपाठ गीताका करै वाकौं गोदानको पुण्य समान फलमिलै. यामै कछुं संदेह नहीं ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ जोअसक्तसबपाठमैं, आधौकरैनिदान ॥ गऊदानके पुण्यसम, पावैपदनिर्वाण ॥ ११ ॥

त्रिभागंपठमानस्तुगंगास्नानफलंलभेत् ॥
षडंशंजपमानस्तुसोमयागफलंलभेत् ॥ १२ ॥

टीका–श्रीगीताजीके पठन तृतीयांश. तिसराहिसाभी करैहै वाकौं श्रीगंगास्नानके समान फल होताहै. अरु षडंगनाम छठाहिसाका पाठ जो करै वाकौ सोमयाग कियेका फल होताहै. ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ तीजेहिसेसुपाठतैं, स्नानगंगसमजान ॥ छठेहिसेजुपाठतैं, सोमयागपरमान ॥ १२ ॥

एकाध्यायंतुयोनित्यंपठतेभक्तिसंयुतः ॥
रुद्रलोकमवाप्नोतिगणोभूत्वावसेच्चिरम् ॥ १३ ॥

टीका–जो एकअध्यायका नित्य पाठकरै भक्तियुक्त होकर वाकौं श्रीमहारुद्रके लोककी प्राप्ति होतहै. महारुद्रके गणहोकर बहुतकालतक निवास करैहै ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ एकअध्यायजोपठतहै, नित्यभक्तिसंयुक्त ॥ गणस्वरूपह्वैकैबसै, रुद्रलोकमैमुक्त ॥ १३ ॥

अध्यायंश्लोकपादंवानित्यंयःपठतेनरः ॥
सयातिनरतांयावन्मन्वंतरवसुंधरे ॥ १४ ॥

टीका–श्रीगीताजीका एकअध्याय. वा एकश्लोक एकके चौथाचरण-

याके नित्यपाठ करतेहै सो पुरुष एक मन्वंतरतलक नरसरीर धारण करतेहै. हेवसुंधरा, चारजुगकी एकचौकडी ऐसी एकोत्तरशप्त ७१ चौकडीतक नरदेही भोगैहै. ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ एकश्लोकअध्यायपद, नित्यपढततनरकोय ॥ एकमनूकेराजतक, नरतनधारीहोय ॥ १४ ॥

गीतायाःश्लोकदशकंसप्तपंचचतुष्टयं ॥
द्वित्रिएकंतदर्धंवाश्लोकानांयःपठेन्नरः ॥ १५ ॥

टीका—जोपुरुष गीताजीके श्लोकदश वा सातवा पांचवा च्यारवा तीनवा दोयवा एक अथवा आधा नित्यपाठ करतहै ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ यागीताकेश्लोकदश, सातपांचजोच्यार ॥ तीनदोयएकजुअरध, जोनितपढतसुधार ॥ १५ ॥

चंद्रलोकमवाप्नोतिवर्षाणामयुतंध्रुवम् ॥
गीतापाठसमायुक्तोमृतोमानुषतांव्रजेत् ॥ १६ ॥

टीका—वेपुरुष दशहजार वर्षलौं निश्चय चंद्रलोकमै निवास करैहै. अरु श्रीगीताजीका पाठ करतही पुरुष देहत्याग जुकरतेहै. वेपुरुष फिरफिर मनुष्यदेहपायके श्रीगीताजीका अनुष्ठान करतेहै. सो जीवन्मुक्तहै ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ चंद्रलोकमैवसतहै, संमतदशजुहजार ॥ गीतापठनसंयुक्तहै पुनिमानुषअवतार ॥ १६ ॥

गीताभ्यासंपुनःकृत्वालभतेमुक्तिमुत्तमां ॥
गीतेत्युच्चारसंयुक्तोम्रियमाणोगतिंलभेत् ॥ १७ ॥

टीका—गीताजीका पाठ वारंवार करते तिनोकौ करते उत्तम मुक्ति मिलैहै. अरु गीता गीताकरते जो प्राणत्यागे है वेपुरुष श्रेष्ठ गतिकौं पावैहै ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ गीताकेअभ्यासतैं, उत्तममुक्तिलहंत ॥ गीताकेउच्चारसंग, मरेसुमुक्तकहंत ॥ १७ ॥

गीतार्थश्रवणासक्तोमहापापयुतोपिवा ॥

वैकुंठसमवाप्नोतिविष्णुनासहमोदते ॥ १८ ॥

टीका--अरु जो पुरुष महापापीहै परंतु गीताके अर्थ सुनिवे मै असक्तते वैकुंठधाम पायकै श्रीविष्णुसमीप निवास करते है. आनंदयुक्तरहै है. १८ ॥ दोहा ॥ जोगीताकेअर्थबिन, केवलकरैजुपाठ ॥ विष्णुसहितवैकुंठमै, टूटैकर्मकपाट ॥ १८ ॥

गीतार्थंध्यायतेनित्यंकृत्वाकर्माणिभूरिशः ॥
जीवन्मुक्तःसविज्ञेयोदेहांतेपरमंपदम् ॥ १९ ॥

टीका--जो गीताजीके अर्थको निसदिन ध्यानकरतहै औरभी मोठे मोठे कार्य करतहै सो जीवन्मुक्तहै. अरु देहांतमैं परमपदकों प्राप्त होतहै ॥ १९ ॥ दोहा ॥ बडेबडेकर्मजुकरै, हियगीताकोध्यान ॥ जीवन्मुक्तसुजानिये, मरेपरमपदमान ॥ १९ ॥

गीतामाश्रित्यबहवोभूभुजोजनकादयः ॥
निर्धूतकल्मषालोकेगीतागीताःपरंपदम् ॥ २० ॥

टीका--श्रीगीताजीके आश्रयतैं बडेबडे जनकादिक भूपाल पापनतैं जुदेहोकै गीता गीता कहते हुवे परम पदकौं प्राप्तिभयेहै. ॥ २० ॥ दोहा गीताआश्रितहोयके, जनकादिकबहुभूप ॥ गयेपरमपदपापतज, भयेपारषदरूप ॥ २० ॥

गीतायाःपठनंकृत्वामाहात्म्यंनैवयःपठेत्॥
वृथापाठोभवेत्तस्यश्रमएवउदाहृतः ॥ २१ ॥

टीका--जो पुरुष गीताजीका पठनतो करतेहै. अरु गीतामाहात्म्यका पठन नहीकरै तो उनके पढणेका श्रम वृथा है. कारण गीताजीतैं गीतामाहात्म्यका फल विशेष है ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ जोमहातमपाठविन, करैजुगीतापाठ ॥ प्रेमपंथपावैनहीं, चालैऊजडवाट ॥ २१ ॥

एतन्महात्म्यसंयुक्तंगीताभ्यासंकरोतियः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अस्यश्रीभगवद्गीतामालामंत्रस्य ॥ श्रीभगवान्वेदव्यासऋषिः ॥ अनुष्टुप्छंदः ॥ श्रीकृष्णः परमात्मादेवता ॥ अशोच्यानन्वशोचस्त्वंप्रज्ञावादांश्चभाषसइतिबीजम् ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रजेतिशक्तिः ॥ अहंत्वासर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुचइतिकीलकम्॥ नैनंछिंदंतिशस्त्राणिनैनंदहतिपावकः ॥ इत्यंगुष्ठाभ्यांनमः ॥ नचैनंक्लेदयंत्यापोनशोषयतिमारुतइतितर्जनीभ्यांनमः ॥ अच्छेद्योयमदाह्योयमक्लेद्योशोष्यएवचेतिमध्यमाभ्यांनमः ॥ नित्यःसर्वगतःस्थाणुरचलोयंसनातनइत्यनामिकाभ्यांनमः ॥ पश्यमेपार्थरूपाणिशतशोथसहस्रशइतिकनिष्ठिकाभ्यांनमः ॥ नानाविधानिदिव्यानिनानावर्णाकृतीनिचेतिकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः ॥ ॥ अथहृदयादिन्यासः ॥ नैनंछिंदंतिशस्त्राणिनैनंदहतिपावकइतिहृदयायनमः ॥ नचैनंक्लेदयंत्यापोनशोषयतिमारुतइतिशिरसेस्वाहा॥ अच्छेद्योयमदाह्योयमक्लेद्योशोष्यएवचेतिशिखायैवषट् ॥ नित्यःसर्वगतःस्थाणुरचलोयंसनातनइतिकवचायहुम् ॥ पश्यमेपार्थरूपाणिशतशोथसहस्रशइतिनेत्रत्रयायवौषट् ॥ नानाविधानिदिव्यानिनानावर्णाकृतीनिचेतिअस्त्रायफट् ॥ ॥ अथध्यानम् ॥ ॥ पार्थायप्रतिबोधितांभगवतानारायणेनस्वयं व्यासेनग्रथितांपुराणमुनिनामध्येमहाभारते ॥ अद्वैतामृतवर्षिणींभगवतीमष्टादशाध्यायिनीमंबत्वामनुसंदधामिभगवद्गीतेभवद्वेषिणीम् ॥ १ ॥ नमोस्तुतेव्यासविशालबुद्धेफुल्लारविंदायतपत्रनेत्र ॥ येनत्वयाभारततैलपूर्णःप्रज्वालितोज्ञानमयप्रदीपः ॥ २ ॥ प्रपन्नपारिजातायतोत्रवेत्रैकपाणये ॥ ज्ञानमुद्रायकृष्णायगीतामृतदुहेनमः ॥ ३ ॥ सर्वोपनिषदोगावोदोग्धागोपालनंदनः ॥ पार्थोवत्सःसुधीर्भोक्तादुग्धंगीतामृतंमहत् ॥ ४ ॥ वसुदेवसुतंदेवंकंसचाणूरमर्दनम् ॥ देवकीपरमानंदंकृष्णंवंदेजगद्गुरुम् ॥ ५ ॥ भीष्मद्रोणतटाजयद्रथजलागांधारनीलोत्पला शल्यग्राहवतीकृपेणवहिनीकर्णेनवेलाकुला ॥ अश्वत्थामविकर्णघोरमकरादुर्योधनावर्त्तिनी सोत्तीर्णाखलुपांडवैरणनदीकैवर्त्तकःकेशवः ॥६॥ पाराशर्यवचःसरोजममलंगीतार्थगंधोत्कटंनानाख्यानककेसरं

सतत्फलमवाप्नोतिदुर्लभांगतिमाप्नुयात् ॥ २२॥

टीका—यह गीताजीके माहात्म्ययुक्त जो पठन करै है. वा पठणकरावै है वा श्रवणकरै करावै है तिनकों पूर्ण फल मिलै है. अरु जो दुर्लभगति है सो सुलभसैं प्राप्ति होती है. ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ यहमाहातमयुक्त-धर, करगीताकोपाठ ॥ दुर्लभफलजोहरिकह्यो, मिलैरतीनहिघाट ॥ २२॥

सूतउवाच

माहात्म्यमेतद्गीतायामयाप्रोक्तंसनातनं ॥
गीतांतेचपठेद्यस्तुयदुक्तंतत्फलंलभेत्॥ २३ ॥

टीका—सूतजी कहते है हेशौनकादिकऋषीहो, मै जो यह श्रीगीताजीका माहात्म्य तुमसौं कह्या है सो सनातन है. श्रीगीताजीके पठनके अंतमै माहात्म्यका पठनकरै वा आदिमै करै तौ यहमहात्म्यके प्रभावतैं श्रीगीता पठनका फल कह्या है. तदुक्तफल. सोफल निश्चय करकै होयगा ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ सूतपुराणिककहतहै, सौनकसौंसमुझाय ॥ आदि-अंतकरपाठके गीतामहातमध्याय ॥ २३ ॥

इतिश्रीवाराहपुराणे श्रीगीतामाहात्म्ये श्रीधरकृत
व्रजभाषांतर समाप्त

॥ असतोमासद्गमयतमसोमाज्योतिर्ग
मयमृत्योर्मामृतंगमयेति॥१॥ अर्थ ब्रा
हे परमगुरो परमात्मन् आप हमको असत्
मार्गसे पृथक्‌करसन्मार्गमेंप्राप्तकीजिये अ
विद्यान्धकारकोछुड़ाकेविद्यारूपसूर्य्यकोप्रा
प्तकीजिये औरमृत्युरोगसे पृथक् करकेमोक्षकेआ
नन्दरूपअमृतकोप्राप्तकीजिये अर्थात् जिस
२ दोषवादुर्गुणसेपरमेश्वर और अपनेको
भीपृथक्‌करना ने केपरमेश्वरकीप्रार्थनाकीजा
तीहै वहविधिनिषेधमुखहोनेसेसगुण
निर्गुणप्रार्थनाजोमनुष्यजिसबातकीप्रा
र्थनाजोकरताहै उसकोवैसाहीवर्तमानक
रनाचाहिये अर्थात् जैसेसर्वोत्तमबुद्धिकी
प्राप्तिकेलिये परमेश्वरकीप्रार्थनाकरे उसके
[illegible]

यहूव्यात मनुष्यों का भी ग्रहण करना योग्य
है जैसे पुरुषार्थ करते हुए पुरुष को सहाय
दूसरा भी करता है वैसे धर्म से पुरुषार्थी पुरुष
का सहाय ईश्वर भी करता है जैसे कि काम कर
नेवाले ... भृत्य करते हैं और अन्यथा
उसी को न हो देखने को इच्छा करने और नेत्र
वाले को दिखलाता है अन्धे को नहीं इसी प्र
कार परमेश्वर भी सब के उप ... को प्रा
प्त होने में सहायक होता है हानिकारक कर्म
में नहीं जो कोइ गुड मीठा है ऐसा कहता है
गुड प्राप्त ... उसको ... भोजन ... और ...
उसको प्राप्त वा बिल्व से गुड मिल ही जाता
... करता है उसको
है अब तीसरा उपासना ॥
समाधिनिर्धूतमलस्य चेतसो ... निवे
शितस्यात्मनि यत्सुखं भवेत् न शक्यते
वर्णयितुं गिरा तदा स्वयं तदन्तःकरणे
न गृह्यते ॥१॥ यह उपनिषद्‌का बचन है

होती बात है १ और (२) जो परमेश्वर की स्तुति प्रार्थ
ना पूर्वक समाधि योग से अविद्यादि मल न
ष्ट होगये हैं आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त
जिसने लगाया है उसको जो परमात्मा के योग
का सुख होता है वह वाणी से कहा न हो जा सक
ता क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तः
करण से ग्रहण करता है । उपासना शब्द का अ
र्थ समीपस्थ होना है अष्टाङ्ग योग से परमात
मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी सर्वा
न्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिये जो २
काम करना होता है वह २ सब करना चाहिये अ
र्थात् ॥ तत्राऽहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्या
परिग्रहा यमाः ॥ इत्यादि सूत्र पातञ्जल
योगशास्त्र के हैं जो उपासना को आरम्भ करना
चाहे उसके लिये यही आरम्भ है कि वह किसी से
वैर न रक्खे सर्वदा सब से प्रीति करे सत्य

[illegible]

[illegible]

खेतीबाड़ीभीकीजियेइसप्रकारजोपरमेश्वर
रकेभरोसेआलसीहोकरबैठेरहतेवेमहा
मूर्खहैंक्योंकिजोपरमेश्वरकीपुरुषार्थकरने
कीआज्ञाहैउसकोजोकोईउसकोजानताहैगा
वहसुखकभीनपावेगाजैसेः
कुबेरनेबेलककमायाजिजोविषे[redacted]त
समाः॥ प्र॥ ५०॥ मं॥ २॥ परमेश्वरआज्ञा
देताहैकिमनुष्यसौबर्षपर्यन्तअर्थात
जबतककीजीवेतबतककर्मकरताहुवा
जीनेकीइच्छाकरेआलसीकभीनहोवेदेख
सृष्टिकेबीचमेंजितनेप्राणीहैंअथवाअप्र
प्राणीहैंवेसबअपने२कर्मऔरयत्नकर
तेहीरहतेहैंजैसेपिपीलिकाआदिसदाप्रयत्न
करतेहैंपृथवीआदिसदाघूमतेऔर
वृक्षआदिसदाबढतेघटतेरहतेहैंवैसे

हरिकथासंबोधनाबोधितम् ॥ लोकेसज्जनषट्पदैरहरहःपेपीयमानंमुदा भू-
याद्भारतपंकजंकलिमलप्रध्वंसिनःश्रेयसे ॥ ७ ॥ मूकंकरोतिवाचालंपंगुलं-
घयतेगिरीन् ॥ यत्कृपातमहंवंदेपरमानंदमाधवम् ॥ ८ ॥ यंब्रह्मावरुणेंद्ररु-
द्रमरुतः स्तुन्वंतिदिव्यैःस्तवैर्वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायंतियंसामगाः ॥
ध्यानावस्थितद्गतेनमनसापश्यंतियंयोगिनोयस्यांतंनविदुःसुरासुरगणादेवाय
तस्मैनमः ॥ ९ ॥ ॥ इतिन्यासः ॥ ॥ ॐनमोभगवतेवासुदेवाय ॥
॥ अथश्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकाश्लोकदोहासहितालिष्यते ॥ ॥ दोहा ॥
हरिगौरीशगनेशगुरु, प्रनमौंसीसनवाय ॥ गीताभाषारथकरूं, दोहासहित
बनाय ॥ १ ॥ सुथिरराजविक्रमनगर, नृपमनिनृपतिअनूप ॥ थिरथाप्यौप
रधानयह, राजसभाकोरूप ॥ २ ॥ नाजरआनंदरामकैं, यहउपज्योचित
च्चाऊ॥गीताकीटीकाकरौं, सुनिश्रीधरकेभाऊ ॥३॥ गीताज्ञानगंभीरलखि, र
चीजुआनंदराम ॥ कृष्णचरणचितलगिरह्यौ, मनमैंअतिअभिराम ॥ ४ ॥
आनंदमनउत्सवभयौ, हरिगीताअवरेष ॥ दोहाअरथभाषाकरी, बानी-
महाविशेष ॥ ५ ॥ भक्तिवस्यश्रीकृष्णजू, निगमकहैनिरधार ॥ भक्ति
करोबहुभांतिसौं, यहैवेदकौसार ॥ ६ ॥ ॥ श्रीमत्गुरुचरणाभ्यांनमः ॥

धृतराष्ट्रउवाच

धर्मक्षेत्रेकुरुक्षेत्रेसमवेतायुयुत्सवः ॥
मामकाःपांडवाश्चैवकिमकुर्वतसंजय ॥ १ ॥

टीका–धृतराष्ट्र पूछताहै संजयसौं हेसंजय धर्मको क्षेत्रहै ऐसोजुहै कुरुक्षेत्र ताविषै एकत्र भयेहै. अरु जुद्धकी इच्छा करतहै ऐसेजेमेरे अरु पांडवके पुत्र ते कहा करत भये ॥ दोहा ॥ धर्मक्षेत्रकुरुक्षेत्रमैं, मिलेजुद्ध-केसाज ॥ संजयमोसुतपांडवनि, कीन्हेकैसेकाज ॥ १ ॥

संजयउवाच

दृष्ट्वातुपांडवानीकंव्यूढंदुर्योधनस्तदा ॥
आचार्यमुपसंगम्यराजावचनमब्रवीत् ॥ २ ॥

अयनेषुचसर्वेषुयथाभागमवस्थिताः ॥
भीष्ममेवाभिरक्षंतुभवंतःसर्वएवहि ॥ ११ ॥

टीका— ताते जे मेरेहै ते सबकोऊ अपनैं अपनैं जुद्ध करनकै ठिकानैं सावधान रहौ अरु भीष्म विषै दृष्टिराषौ अरु सर्वत्र भीष्महीकी रच्छाकरौ आपनो सबहीको जीवन भीष्माचार्यके आधीनहै. ॥ दोहा ॥ आसपासमोव्यूहकै, तुमसबठाढेहोहु ॥ भीषमकीरच्छाकरौ, धरकैमनमैंमोहु ॥ ११ ॥

तस्यसंजनयन्हर्षंकुरुवृद्धःपितामहः ॥
सिंहनादंविनद्योच्चैःशंखंदध्मौप्रतापवान् ॥ १२ ॥

टीका— अब संजय कहतहै कि हेधृतराष्ट्र ऐसै दुर्योधनको वचन सुनिकै दुर्योधनकौं हर्ष उपजावैकौं भीष्मपितामह सिंहनादकरिकै शंख धुनिकरी ॥ ॥ दोहा ॥ दुर्योधनकैहर्षकौं, भीष्मजूचितलाइ, ॥ सिंहनादऊचौकियौ, दुःसहशंषबजाइ. ॥ १२ ॥

ततःशंखाश्चभेर्यश्चपणवानकगोमुखाः ॥
सहसैवाभ्यहन्यंतसशब्दस्तुमुलोभवत् ॥ १३ ॥

टीका— तब संष भेरी पणव आनक गोमुष ऐसे भांति भांति के वादित्र ठोर ठोरतैं एकही बीरियां बाजे सो शब्द उग्रभयौ. ॥ दोहा ॥ तबहिसंपभेरीपणव, आनकगोमुषभूरि, ॥ ताहिछिनवाजतभए, सबदरह्योभरपूर ॥ १३ ॥

ततःश्वेतैर्हयैर्युक्तोमहतिस्यंदनेस्थितौ ॥
माधवःपांडवश्चैवदिव्यौशंखौप्रदध्मतुः ॥ १४ ॥

टीका— तापाछे श्वेत अश्वन युक्त ऐसो जु रथ ताविषै बैठे ऐसे श्रीकृष्ण अरु अर्जुन तिनहूं अपनैं दिव्य शंषकी धुनिकरी. ॥ ॥ दोहा ॥ श्वेतवर्णघोरेलगे,वीरघरथहिबनाय॥हरिअर्जुनतापरचढे,हरपेसंषबजाय॥१४॥

पांचजन्यंहृषीकेशोदेवदत्तंधनंजयः॥
पौंड्रंदध्मौमहाशंखंभीमकर्मावृकोदरः॥ १५॥

टीका– श्रीकृष्णने अपने पांचजन्य नाम शंषकी धुनी करी अरु अर्जुननैं अपनैं देवदत्तनाम शंखकी धुनी करी भीमसेननैं अपना पौंड्रक नाम शंखकी धुनि करी. सो भीमसेन कैसोहै जुद्धमैं भयानक कार्यको कर्त्ताहै. ॥ ॥ दोहा ॥ देवदत्तअर्जुनलियौ पांचजन्यजदुराय ॥ भीमभयानकभेषसौं पौंड्रकशंषबजाय ॥ १५ ॥

अनंतविजयंराजाकुंतीपुत्रोयुधिष्ठिरः॥
नकुलःसहदेवश्चसुघोषमणिपुष्पकौ ॥ १६॥

टीका– अरु कुंती पुत्र राजा युधिष्ठिरनें अनंत विजय नाम शंषकी धुनि करी नकुल अरु सहदेव नैं सुघोष अरु मणिपुष्पक नाम शंषकी धुनि करी. ॥ ॥ दोहा ॥ नृपहियुधिष्ठिरहूंकियौ, अनंतविजयकेघोष, ॥ पुनिसहदेवजुनकुलनैं, मणिपुष्पकजसुघोष ॥ १६ ॥

काश्यश्चपरमेष्वासःशिखंडीचमहारथः॥
धृष्टद्युम्नोविराटश्चसात्यकिश्चापराजितः॥ १७॥

टीका– तब काशिराज शिखंडी धृष्टद्युम्न विराट सात्यकी. ॥ दोहा ॥ महाधनुरधरकाशिपति, रथीशिखंडीजानि, ॥ धृष्टद्युम्नविराटअति, बलिसात्यकीहिमानि ॥ १७ ॥

द्रुपदोद्रौपदेयाश्चसर्वशःपृथिवीपते॥
सौभद्रश्चमहाबाहुःशंखान्दध्मुःपृथक्पृथक्॥१८॥

टीका– द्रुपद द्रौपदीके पुत्र सुभद्राको पुत्र अभिमन्यु इन सबनि अपनै अपनै शंषकी धुनि करी. ॥ ॥ दोहा ॥ द्रुपदद्रौपदीसुतसबै, औरसुभद्रापूत, ॥ अपनेअपनेशंषले, धुनिकीनीतासूत. ॥ १८ ॥

सघोषोधार्तराष्ट्राणांहृदयानिव्यदारयत्॥

नभश्चपृथिवींचैवतुमुलोव्यनुनादयन् ॥ १९ ॥

टीका– ता उग्रशब्द करिकै आकाश पृथिवी विषै सर्वत्र नाद भयौ ता पाछै वाही शद्बनै धृतराष्ट्रके पुत्रनको हृदय विदारण कऱ्यौ. ॥ दोहा ॥ फऱ्यौहृदयकौरवनको, शब्दसुन्यौतावार ॥ पुहमीअरुआकाशमैं, पूरऱ्यौगुंजार. ॥ १९ ॥

अथव्यवस्थितान्दृष्ट्वाधार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ॥

प्रवृत्तेशस्त्रसंघातेधनुरुद्यम्यपांडवः ॥ २० ॥

टीका– या उपरांत कौरवनकौं युद्धके लिये तयारभये देखि अरु शस्त्रनकौं प्रहार प्रवर्त्त भयौ देखि अर्जुन गांडिवधनुष उठाय कृष्णसौं बोल्यो. ॥ ॥ दोहा ॥ देषेसुतधृतराष्ट्रके, अर्जुनधनुषसंभारि, ॥ कपिवरताकैध्वजलसै, शस्त्रनिपरतप्रहार. ॥ २० ॥

हृषीकेशंतदावाक्यमिदमाहमहीपते ॥

अर्जुनउवाच

सेनयोरुभयोर्मध्येरथंस्थापयमेच्युत ॥ २१ ॥

टीका– अर्जुन श्रीकृष्णसौं कह्यौकि हेकृष्ण दोनू सेनाके बीच मेरो रथ लेजाय ठाढो करौ. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनकहीजुकृष्णसौं, मेरैचितयहचिंत ॥ दुहुंसेनाकेमांझरथ, ठाढोकरिमोमिंत ॥ २१ ॥

यावदेतान्निरीक्षेहंयोद्धुकामानवस्थितान् ॥

कैर्मयासहयोद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥

टीका– हेकृष्ण जोलौं ए जुद्ध करिवेकौं आयेहै तिनकौ देखौं अरु देषौं मोसो कौन कौन या संग्रामविषै जुद्धकरिवेकौं आयेहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जबलगदेषौंहौदुहू, जुरेजुद्धकेदाय ॥ कौनकौनसौंहौलरौं, यारनमैंसमपाय ॥ २२ ॥

योत्स्यमानानवेक्षेहंयएतेत्रसमागताः ॥

धार्तराष्ट्रस्यदुर्बुद्धेर्युद्धेप्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥

टीका– अरु देखौं दुरबुद्धि दुर्योधनके हितकौ मोसौं जुद्ध करेंगे ऐसे कौन कौनहै अरु देषौं इहां कौन कौन आयेहै ॥ ॥ दोहा ॥ जुद्धकरनधाएजिते, आयेहैयासाज, ॥ दुरबुद्धीहितकौरवनि, भलोकरनकेकाज॥ २३॥

संजयउवाच

एवमुक्तोहृषीकेशोगुडाकेशेनभारत ॥
सेनयोरुभयोर्मध्येस्थापयित्वारथोत्तमं ॥ २४ ॥

टीका– अब संजय कहतहै कि हेधृतराष्ट्र अर्जुन जब श्रीकृष्णसौ ऐसे कह्यौ तब श्रीकृष्णनैं दोनौं सेनाके बीच रथ ठाढौ कर्‍यो. ॥ ॥ दोहा ॥ ऐसेहीश्रीकृष्णजू, सुनिअर्जुनकीबात, ॥ दोऊसेनामांझरथ, लेराष्यौताघात ॥ २४ ॥

भीष्मद्रोणप्रमुखतःसर्वेषांचमहीक्षितां ॥
उवाचपार्थपश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥ २५ ॥

टीका– भीष्माचार्य द्रोणाचार्यके अरु सबराजनकै सनमुष रथ ठाढो करि कह्यो, हेअर्जुन जुद्धके लियै सब एकत्र भयेहैं कौरव तिनकौं देषि. ॥ दोहा ॥ भीषमगुरुपुनिनिखलनृप; तिनसनमुषसुविशेषि, ॥ कहतकृष्णअरजुनअबै मिलेसबैकुरुदेषि. ॥ २५ ॥

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थःपितॄनथपितामहान् ॥
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा २६

टीका– तब अर्जुन देषि पिता ठाढेहै पितामहठाडेहै आचार्यहै मामे है भाईहै, पुत्रहै नातीहै मित्रहै. ॥ दोहा ॥ अर्जुनतेदेषैसबै, पिता पितामहभाय ॥ गुरुमांमांभैयासखा, सुतनातीसमुदाय ॥ २६ ॥

श्वशुरान्सुहृदश्चैवसेनयोरुभयोरपि ॥
तान्समीक्ष्यसकौंतेयःसर्वान्बंधूनवस्थितान् ॥

कृपयापरयाविष्टोविषिदान्निदमब्रवीत् ॥ २७॥

टीका— ससुरहै, सनेहीहै ऐसे दोनौं सेनाके विषे अर्जुन सबही अपने कुटुंब ठाढे देषे तब कृपाजुक्त होइकैं मनमैं अतिहि दुखपाइकैं ऐसैं बोल्यो. ॥ ॥ दोहा ॥ ससुरसुहृदबंधुसकल, दोऊसेनांमांह, ॥ तिन्हैदेषिकरुनाभई, तवबोलेंनरनाह. ॥ २७ ॥

अर्जुनउवाच

दृष्ट्वेमंस्वजनंकृष्णयुयुत्सुंसमुपस्थितं ॥
सीदंतिममगात्राणिमुखंचपरिशुष्यति ॥ २८॥

टीका— अर्जुन कहतहै कि हेकृष्ण जुद्धकरिवेकौं सकल मेरोही कुटुंव ठाढोहै. तातैं मेरोगात सिरातहै अरु मूंह सूख्योजातहै कंपहोत है रोमांच होतहै. मेरोशरीर ऐसो भयोहै. ॥ ॥ दोहा ॥ देषेमैंसबबंधुए कृष्णजुद्धकेदाई मोमुषसूषतजातहै अंगअंगशिथिलाइ ॥ २८ ॥

वेपथुश्चशरीरेमेरोमहर्षश्चजायते ॥
गांडीवंस्त्रंसतेहस्तात्त्वक्चैवपरिदह्यते ॥ २९ ॥

टीका— मेरोशरीर कांपतहै अरु रोमांचित होतहै तातैं गांडीव हाततैं गिरैहै अरु त्वचामैं दाहहोतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ रोमहर्षतनहोतहै, औरकंपहूभाय, ॥ मोहातनतेंधनुगिरै, जरतत्वचाअधिकाय ॥ २९ ॥

नचशक्नोम्यवस्थातुंभ्रमतीवचमेमनः ॥
निमित्तानिचपश्यामिविपरीतानिकेशव ॥ ३० ॥

टीका— हेकृष्ण रथपरमैं ठाढौ रहि सकौ नाहीं मानौं मेरोमन भ्रमत है अरु सकुनहू विपरीतसे देषियतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ठाढोव्हैहौंनहिंसकतु भ्रमतजुहैमनभीत ॥ केशवशकुननिदेषियत कैसीहैयहरीत ॥ ३० ॥

नचश्रेयोनुपश्यामिहत्वास्वजनमाहवे ॥ ३१ ॥

टीका— हेकृष्ण संग्रामविषे कुटुंबकौं मारिकै कछु कल्यान नहीं दे-

षौंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ स्वजनहनौंसंग्राममैं, धरिकरवानकमान ॥ अपनौभलौनदेषियौ, हैविपरीतसुजान ॥ ३१ ॥

नकांक्षेविजयंकृष्णनचराज्यंसुखानिच ॥
किंनोराज्येनगोविंदकिंभोगैर्जीवितेनवा ॥ ३२ ॥

टीका— हेकृष्ण ऐसो विजयहूं नचाहतहूं अरु कुटुंब मारकैं राज्य नचाहतहौं अरु राज्यके, सुखऊन चाहतहौं हमारे राज्यसौं कहाहैं. अरु राज्य भोगसौं कहाहै अरु कुटुंब मारकै जीयैतो जीवनौं कहाफलहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जियनचाहौंकृष्णजू ॥ नहिंचाहौंसुषराज, राज्यभोगगोविंदजू अरुजीवनकिहकाज ॥ ३२ ॥

येषामर्थेकांक्षितंनोराज्यंभोगाःसुखानिच ॥
तइमेऽवस्थितायुद्धेप्राणांस्त्यक्त्वाधनानिच ॥ ३३ ॥

टीका— हेकृष्ण जिनके काजै हम राजभोग अरु सुखचाहै तेतौ प्रान धन ताजिकै युद्ध करिवेंकौं आनि ठाढेभयेहै ॥ ॥ दोहा ॥ राजभोग सुखकृष्णजू, करियतइनकैकाज, ॥ लरतजीवइनछांडिकै, हमनांहिंचाहतराज ॥ ३३ ॥

आचार्याःपितरःपुत्रास्तथैवचपितामहाः ॥
मातुलाःश्वशुराःपौत्राःश्यालाःसंबंधिनस्तथा ॥ ३४ ॥

टीका— आचार्यहै, पिताहै, पुत्रहै, मामेंहैं, सुसरहैं, नातीहैं, शालाहैं संबंधीहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ गुरुमातुलसुतसुसुरअरु, सारेहूअवरेषि, ॥ संबंधीनातीनिरषि, पितापितामहपेषि ॥ ३४ ॥

एतान्नहंतुमिच्छामिघ्नतोपिमधुसूदन ॥
अपित्रैलोक्यराज्यस्यहेतोःकिंनुमहीकृते ॥ ३५ ॥

टीका— हेमधुसूदन जो ए मोकौं मारे तऊ मोसौं एमारे नाहीं जाता. जोइनकै मारे त्रैलोक्यको राजपाऊं तऊ इनकौं नमारातौं पृथ्वीकोराज

कहाहै. जाके लियै मैं इनकौं मारौं. ॥ ॥ दोहा ॥ एमारैमोकौंजदपि, हौं नहिंहनौंअकाज, ॥ वंशकटेकिहिकामकौ, त्रैलोकोकेराज ॥ ३५ ॥

निहत्यधार्तराष्ट्रान्नःकाप्रीतिःस्याज्जनार्दन ॥
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ ३६ ॥

टीका— हेजनार्दन इनकौरवनकौं मारे हमकौं कौनसुष होयगो इनकै मारे हमकौं पापही होयगो. ॥ दोहा ॥ पापहोयइनकैहने, जदपिलियैहथियार, ॥ तातैंयहहनियेनहीं, बंधुसहितनिरधार ॥ ३६ ॥

तस्मान्नार्हावयंहंतुंधार्तराष्ट्रान्स्वबांधवान् ॥
स्वजनंहिकथंहत्वासुखिनःस्याममाधव ॥ ३७ ॥

टीका— हेकृष्ण जद्यपिए आततार्इहै हथियार लिये ठाढेहै तऊहमइनकौं मारिवेकौं जोग्यनाहीं काहेतें जुहमारे बांधवहै तातें हेमाधव अपने कुटुंबमारे हमकौंकैसो सुखहोयगो. ॥ ॥ दोहा ॥ निजबंधव धृतराष्ट्रसुत क्यौंहनियैजदुराई, ॥ कृष्णसुजनकैं मारिकौं, सुखं लहीयतकाभाई ॥ ३७ ॥

यद्यप्येतेनपश्यंतिलोभोपहतचेतसः ॥
कुलक्षयकृतंदोषंमित्रद्रोहेचपातकम् ॥ ३८ ॥

टीका— यद्यपि ए लोभतें कुलक्षयकोदोष अरु मित्रद्रोहका पाप नाहीं देखतेहै कुटुंबमारिवेकौं उद्यमी भयेहै. ॥ ॥ दोहा ॥ एजुलुभानेंलोभसौं, नहिंदेषत जो मोह, ॥ कुलक्षयकीनैदोषहै औरमित्रकोद्रोह. ॥ ३८ ॥

कथंनज्ञेयमस्माभिःपापादस्मान्निवर्तितुम् ॥
कुलक्षयकृतंदोषंप्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥ ३९ ॥

टीका— हे कृष्ण जेहम कुलक्षय दोष जानैंहै तोहम या पापतैं निवृत्त होनौं क्यौंकरिन जानैं. ॥ ॥ दोहा ॥ जानिबूझअघकीजियै होतपापकौंपोष ॥ क्यौंनटरैहमदेषिकै, कृष्णकुलक्षयदोष. ॥ ३९ ॥

कुलक्षयेप्रणश्यंतिकुलधर्माः सनातनाः ॥

धर्मेनष्टेकुलंकृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥ ४० ॥

टीका– हेकृष्ण कुलछयकीये कुलधर्मकों नाश होय धर्मकै नाशतैं कुलको धर्म पराभवकरै. ॥ ॥ दोहा ॥ कुलछयकीनैंकुलधर्म जातजुसभैनसाय ॥ धर्मनसैंकुलकौजबै होतअधर्मसुभाय ॥ ४० ॥

अधर्माभिभवात्कृष्णप्रदुष्यंतिकुलस्त्रियः ॥
स्त्रीषुदुष्टासुवार्ष्णेयजायतेवर्णसंकरः ॥ ४१ ॥

टीका– अरु अधर्म कुलकौं व्याप्त करै तब कुलकीस्त्री व्यभिचारिणी होहि कुलस्त्रीव्यभिचारिनी भयै बरनसंकरहोई. ॥ ॥ दोहा ॥ कृष्णअधर्महिकेवढे, दुष्टहोहिकुलनारि ॥ हौंहिबरनसंकरजबै, त्रियादोषनिरधार॥४१॥

संकरोनरकायैवकुलघ्नानांकुलस्यच ॥
पतंतिपितरोह्येषांलुप्तपिंडोदकक्रियाः ॥ ४२ ॥

टीका– हेकृष्ण वरणसंकर भयै कुलछय करताकौं अरु कुलकौं नरककोवासहोय कुलछय करताके पितर श्राद्ध तरपनतैं रहित ह्वैकैंनरकपाती होही ॥ ॥ दोहा ॥ नरकपरैसंकरभयै कुलघातीजेजोय ॥ पतितहोईतिनकेपितर पिंडनदेई कोय ॥ ४२ ॥

दोषैरेतैःकुलघ्नानांवर्णसंकरकारकैः ॥
उत्साद्यंतेजातिधर्माःकुलधर्माश्चशाश्वताः ॥ ४३ ॥

टीका– हेकृष्ण कुलक्षय कर्ताकै वर्ण संकर दोषतैं अपनैं परंपराके जातिधर्मजाय अरु कुलधर्म हू जाय. ॥ ॥ दोहा ॥ कुलहिवरनसंकरभयै, डारतदोषवढाय ॥ जातिधर्मकुलकेदोऊ, तेऊदेतनसाय ॥ ४३ ॥

उत्सन्नकुलधर्माणांमनुष्याणांजनार्दन ॥
नरकेनियतंवासोभवतीत्यनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥

टीका– हेजनार्दन जिनकौ कुलधर्म गयौ ऐसे जो मनुष्य जिनको, निश्चै नरकवासहै ऐसी बात शास्त्रमैं सुनियतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ कुलधर्मनि-

कै नसतिही, निःसंदेहयहहोय॥सदानरकमैंतेरहै, कहतजुयौंसबकोय ॥४४॥

अहोबतमहत्पापंकर्तुंव्यवसितावयम् ॥
यद्राज्यसुखलोभेनहंतुंस्वजनमुद्यताः ॥ ४५ ॥

टीका–अहो हमजानिबूझि बडोपापकरिवेकौं उद्यत भयेहैं. जुराज्य सुखके लोभतें अपनौ कुटुंबमारिवेकौं उद्यमकर्योहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ बडे पापके करनकौं, निश्चैकियौविचार ॥ तिनमैआन्यौराजसुख, हनतकुटुंबनिरधार ॥ ४५ ॥

यदिमामप्रतीकारमशस्त्रंशस्त्रपाणयः ॥
धार्तराष्ट्रारणेहन्युस्तन्मेक्षेमतरंभवेत् ॥ ४६ ॥

टीका–हेकृष्ण तातैमैं जुद्धको उपाय छांड्यौ. आयुध छांडे ऐसे शस्त्ररहित मोकौंकौरवशस्त्रधारिकै मारे तऊ भलेहै. ॥ ॥ दोहा ॥ करमेलेहथियारए, आवैंमोसमुहाय ॥ मोहिहनैजोसहजमन, लेउंतऊंशुषभाय ॥ ४६ ॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनःसंख्येरथोपस्थउपाविशत् ॥
विसृज्यसशरंचापंशोकसंविग्नमानसः ॥ ४७ ॥

टीका– अब संजय कहतहै कि हेधृतराष्ट्र ऐसे अर्जुन श्रीकृष्णसौं कहि धनुष्य बान छांडि कैसो विरक्तव्है रथमांहिजाइबैठो. ॥ ॥ दोहा ॥ ऐसैकहिअर्जुनतबै, बैठिगयौरथमांहि ॥ करतैंडारेशरधनुषशोकबढ्यौनरनांहि॥ ॥ ४७ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादकी बरनीकथाबनाय, अर्जुनकियोविषादसोकथाप्रथमअध्याय ॥ १ श्रीधरप्रथमाध्यायमैं पूर्वापरसंबंध, व्यासकृपातैंसंजय बरन्यौकथाप्रबंध ॥ २ ॥ ॥ हरिः ओम् तत्सदितिश्रीमन्महाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैय्यासिक्यांभीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनविषादयोगो नामप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

संजयउवाच

तंतथाकृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ॥
विषीदंतमिदंवाक्यमुवाचमधुसूदनः ॥ १ ॥

टीका– ऐसै कृपायुक्त आंसू भरे नेत्रजाके ऐसो जु अर्जुन ताकौं अतिही दुषपावतदेष श्रीकृष्णबचन कहतभये ॥ ॥ दोहा ॥ लैउसासअंसुवांभरे अर्जुनकरुनाभाय, ॥ बहुविषादसंयुक्तलषि बोलेश्रीयदुराय ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वाकश्मलमिदंविषमेसमुपस्थितम् ॥
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥

टीका– श्रीकृष्ण कहतहैकि, हेअर्जुन ऐसी विषमबिरियां यह मोहतोकौं कहांतैं आनिप्राप्तभयौ यासमैं ऐसोमोह नीचपुरुषपावैं. यामोहतैं स्वर्गनहोय. अरु कुजसहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनयासंग्राममैं कतदुषपायोमीत ॥ कीरतिअरुस्वर्गहिहरै, कायरज्यौंभयभीत ॥ २ ॥

क्लैब्यंमास्मगमःपार्थनैतत्त्वय्युपपद्यते ॥
क्षुद्रंहृदयदौर्बल्यंत्यक्त्वोत्तिष्ठपरंतप ॥ ३ ॥

टीका– हेअर्जुन ऐसी कायरता अधीरज यासमैं ताकौं नचाहिये ऐसी छोटीबात हृदयकी दुर्बलता छांडि उठिठाढौह्वै जुद्धकरि ॥ ॥ दोहा ॥ कायरतातूंजिनकरै, यहतोकौंनहिजोग ॥ छांडिकचाईहीयकी, देशत्रुनकोरोग ॥ ३ ॥

॥ अर्जुनउवाच ॥

कथंभीष्ममहंसंख्येद्रोणंचमधुसूदन ॥
इषुभिःप्रतियोत्स्यामिपूजार्हावरिसूदन ॥ ४ ॥

टीका– अर्जुन कहतहै कि हे कृष्ण तुम साच कहतुहौ. ये भीष्माचार्य अरु द्रोणाचार्य पुहपनसौं पूजाकरिवे लायकहै. तिनकौं बाननकरि कैसेह-

नौं. ॥ ॥ दोहा ॥ हरिपूजासंग्राममैं, हैभीष्मअरुद्रोण ॥ पूजौकैसरसौह-नौ, मोसोंकहियैसौन ॥ ४ ॥

गुरूनहत्वाहिमहानुभावान्श्रेयोभोक्तुंभैक्ष्यमपीहलोके ॥ हत्वार्थकामांस्तुगुरूनिहैवभुंजीयभोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५

टीका—हेकृष्ण बडोप्रभावहै जिनकौ ऐसो जुहै गुरु तिनकौं मारौ नाहीं. अरु भिक्षामाग काल्छेप करियै तौ नीकै है गुरुनकौ मारिकैं जेसुखहमभोगवै तेसुष लौहूंसौं सानैहै ॥ दोहा ॥ भीषमांगिअरुषाइयै, गुरुहनिबौजुअनीत ॥ गुरुहिमारिभोगहिकरौं, भषौंसुलौहूरीति ॥ ५ ॥

नचैतद्विद्मःकतरन्नोगरीयोयद्वाजयेमयदिवानोजयेयुः ॥ यानेवहत्वानजिजीविषामस्तेवस्थिताःप्रमुखेधार्तराष्ट्राः ॥६॥

टीका— हेकृष्ण जद्यपि हम अधर्मकौ अंगिकार करैं तऊयहनहीं. जानीजाइहै कि इनकौं जीतै हमकौं भलाईहै अरु हमइनकौं जीतैंगे कि एहमकूं जीतैंगे ऐसो निश्चयहूनाहैं जिनकौं मारौं हमकौं अपनौं जीवनौं नभावै ते हमसौं संग्राम करिवेकौं सनमुखठाढेहै. याते हमारे जयहोयतऊहारेही समानहै. ॥ ॥ दोहा ॥ इहेजुहमनहिंजानहीं, हारिहोइकै जीत ॥ जिन्हैमारिहमनहि, जिवतेठाढेहैमीत ॥ ६ ॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावःपृच्छामित्वांधर्मसंमूढचेताः ॥ यच्छ्रेयःस्यान्निश्चितंब्रूहितन्मेशिष्यस्तेहंशाधिमांत्वांप्रपन्नं ॥७

टीका—इनकौमारि हम कैसे जीविहै. यह कार्पण्य कहियै अरु कुलछयसौं दोष कहियै इनदोनौसौं मेरोस्वभाव हत भयोहै. अरु अतिहीव्याकुलहै. यातैं तुमकौं पूछौंहौं. मेरो धर्म होई सो मोकौं कहिये. युद्धछांडि भिक्षाकरियै यहक्षत्रीको धर्महै कि अधर्महै यहनिश्चै करिकै मोकों भलो होई सो कहो. मैं तुह्मारो शिष्यहूं अरु तुह्मारे शरनैं आयौ जासौं मेरो धर्म रहै तैसी मोकौं शिक्षा दीजै. ॥ ॥ दोहा ॥ धर्ममांझिहैंमूढहौं पूछत-

कृपनसुभाय, ॥ दीनतुमारीसरनह्नौं दीजैयुक्तिबताय ॥ ७ ॥

नहिप्रपश्यामिममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिंद्रियाणाम् ॥
अवाप्यभूमावसपत्नमृद्धंराज्यंसुराणामपिचाधिपत्यम् ॥८॥

टीका– हे कृष्ण जो हूं सकल पृथिवीको राज्यपाऊं अथवा इंद्रासन पाऊं अथवा सबमनोरथपाऊं तऊं शोकमिटैनहीं. जो मेरेया शोककौं मिटावै ऐसो औरउपाय मोकौं सूझत नाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ भूमिलोकसुरलोककौं, लहौंअकंटकराज, ॥ इंद्रियशोकैजीवकौं, जाइनसोकसमाज ॥ ८ ॥

संजयउवाच

एवमुक्त्वाहृषीकेशंगुडाकेशःपरंतप ॥
नयोत्स्यइतिगोविंदमुक्त्वातूष्णींबभूवह ॥९॥

टीका– संजय कहतहैकि हे धृतराष्ट्र अर्जुन श्रीकृष्णसौं ऐसै कहि- अरु कह्योकिमैं जुद्ध न करौं यौंकाहि चुपकरिरह्यौ ॥ ॥ दोहा ॥ ऐसैकहि- श्रीकृष्णसौ अर्जुनताहीवार, ॥ युद्धनहोंहरिजीकिरौं कीनोयहनिर्धार ॥ ९ ॥

तमुवाचहृषीकेशःप्रहसन्निवभारत ॥
सेनयोरुभयोर्मध्येविषीदंतमिदंवचः ॥ १० ॥

टीका– ऐसैं दोनौं सेनाके बीच अर्जुनकौं शोकयुक्त देषि श्रीकृष्ण आप मुसकाइके कृपाकरि यह वचन कहतभये ज्ञान कहि अर्जुनकौं समुझायौ यह भावार्थहै. ॥ ॥ दोहा ॥ दोऊसेनामांझयौं अर्जुनकीयौविषाद ॥ कृपावंतहोष्णकृजू, कीनोवचनप्रसाद ॥ १० ॥

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वंप्रज्ञावादांश्चभाषसे ॥
गतासूनगतासूंश्चनानुशोचंतिपंडिताः ॥ ११ ॥

टीका– प्रथम श्रीकृष्णनैं विचारकिया अर्जुनकौं देह अरु आत्माकै- अविवेकतें शोकउपज्योहै ऐसैं जानिकै ज्ञानोपदेशकै निमित्त श्रीभगवान्

कहतेहैं हेअर्जुन जावस्तुको शोचकरचौ नचाहियै तावस्तुको तूं शोच करतुहै. यह फिरफिरतूं अपनेही वात ठहरावतुहै. अरु तूं बुद्धिवंतकेसे वचन कहतुहै पैं विनसमुझे हठकरैहै. तातैं जे बुद्धिवंत विवेकीहै तेमूए अरु जीय तेको शोच नाहीं करत काहेतैंकि जन्म मरण दोनौ मिथ्याहै. ॥ ॥ दोहा ॥ शोकअशोचीकोकरै, करतज्ञानकीवात ॥ शोचनपंडितकरतहै, जीवनउपजतजात ॥ ११ ॥

नत्वेवाहंजातुनासंनत्वंनेमेजनाधिपाः ॥
नचैवनभविष्यामःसर्वेवयमतःपरम् ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन मैं अनादिहौं यातैं कदाचित्हू मैं नहू तौ यौ नहीं अरु तूं नहूतौयौ नहीं एराजाहूं नहुतेयौंनहीं अरु आगैं उ नहौंहिगेयौनहीं अर्थ येहैकि हमतुम अरु ऐसव लोक आगेहुते अबहै फिरहौंहिगे ॥ दोहा॥ हमतुमअरुनरपतिजिते तिनकोनाशनहोइ, ॥ तिहूंकालमैंथिररह्यौ ऐसैंसबकोंजोइ ॥ १२ ॥

देहिनोस्मिन्यथादेहेकौमारंयौवनंजरा ॥
तथादेहांतरप्राप्तिर्धीरस्तत्रनमुह्यति ॥ १३ ॥

टीका– हेअर्जुन जैसैं यादेहीनाम जीवकौं यादेहविषै वाल अवस्था यौवनावस्था वृद्धावस्था होतहैं. तैसैं देही अनेक देहकौं प्राप्त होइ याठौरधीर पुरुषकौं मोह उपजत नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ वालजुवाअरुवृद्धता यादेहीकौहोय, ॥ तैसैंदेहांतरलहै धीरनमोहितकोय ॥ १३ ॥

मात्रास्पर्शास्तुकौंतेयशीतोष्णसुखदुःखदाः ॥
आगमापायिनोनित्यास्तांस्तितिक्षस्वभारत ॥ १४ ॥

टीका– हेअर्जुन इंद्रियनके जेविषयहैं तेशीतउष्ण सुखदुःखके करताहै. काहेतैंकि एशीतउष्ण सुखदुःखअनित्यहै आवै जाइहै. तातैं शीत उष्ण सुखदुःखए सबहीकौंसहे चाहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनइंद्रियचितमि-

लि विषैजुसुषदुषदेत, ॥ आवैजाइनथिररहै सहतनयाकोहेत ॥ १४ ॥

यंहिनव्यथयंत्येतेपुरुषंपुरुषर्षभ ॥

समदुःखसुखंधीरंसोऽमृतत्वायकल्पते ॥ १५ ॥

टीका— हेअर्जुन जाकौं इंद्रियनकौं एइंद्रियनके सुखदुःख व्यापैनाहीं अरु सुषदुषकौं समानकरिजानै ऐसो धीरपुरुष मोक्षको अधिकारी होइ. ॥ दोहा ॥ जाकैविथानहोइकबु, सुषदुषगिनैसमान ॥ वहैधर्मकरिमोक्षहै, बातयहैपरमान ॥ १५ ॥

नासतोविद्यतेभावोनाभावोविद्यतेसतः ॥

उभयोरपिदृष्टोंतस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ १६ ॥

टीका— हेअर्जुन असतकहे अनित्य सुषदुषादि तिनकी आत्माविषै सत्तानाहीं अरु सतकहे. नित्य आत्मा ताकौ विनाशनाहीं अनभाव अरु अभाव दुहुनकौं अंतजे तत्वदर्शीहै तिनदेख्यैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोहैसो विनसैनहीं,जोविनसैंजोनाहीं ॥ जोविनतत्वनकोंलहै,गनिथैग्यानींमांहि १६

अविनाशितुतद्विद्वियेनसर्वमिदंततम् ॥

विनाशमव्ययस्यास्यनकश्चित्कर्तुमर्हति ॥ १७ ॥

टीका— हे अर्जुन अविनाशिता ताकौं जानि जौ सर्वत्र व्यापक है. या अविनाशीको विनाश काहूसौं नँहोय यह ईश्वर साक्षिरूपसौं व्यापकहै अरु आत्मास्वरूप करिकै अविनाशीहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जासौं जगयहहैभ-र्‍यौ, सोअविनाशीजानि ॥ जाहिविनाशनकोऊसकै, ताहिआत्मामानि १७

अंतवंतइमेदेहानित्यस्योक्ताःशरीरिणः ॥

अनाशिनोऽप्रमेयस्यतस्माद्युध्यस्वभारत ॥ १८ ॥

टीका—हे अर्जुन नित्यकहे सदा एकरूप ऐसोजु शरीरकहे जीव ताकौं एदेहतें अंतवंत विनाशी कहैहैं. अरु आप विनाशीहैं जाकौ प्रमान क-ह्यौ नजाइ ऐसोहै तातैं जुद्ध करि अपनैं धर्म छांडे मति. ॥ ॥ दोहा ॥ अं-

तवंतसबदेहहै जीवरहितहैनित्त., ॥ अविनाशीवहवस्तुहै जुद्धकरौकिन- मित्त ॥ १८ ॥

यएनंवेत्तिहंतारंयश्चैनंमन्यतेहतम् ॥
उभौतौनविजानीतोनायंहंतिनहन्यते ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन याजीवकौं जो मारन हार समुझैहै अरु जोमारचो समुझैहै सो दोऊ भांति समुझै नाहीं नँयह काहूकौं मारै नँ यह काहूसौं मा- रचोजाइ. याश्लोकतैं भीष्मादिकनकैं मारिबेकौ शोक दूर करचौ. ॥ **दोहा**॥ जोयाकौंहंतागनै हन्यौगनैजोकोई ॥ यहनमरैमारैनहीं अज्ञानीवेदोई॥१९

नजायतेम्रियतेवाकदाचिन्नायंभूत्वाभवितावानभूयः ॥
अजोनित्यःशाश्वतोयंपुराणोनहन्यतेहन्यमानेशरीरे ॥२०॥

टीका– हे अर्जुन यह आतमा कदाचित् नँ उपजैहै नैं यहमरैहै नँ यह उपज्यौहै. नँ यहउपजैगो. यह अजहै. जन्मरहितहै. नित्यहै सदा एक- सो है. शाश्वतहै. अनादिहै क्षयरहितहै. पुराणहै. परिपाकरहितहै. शरी- रकै हन्यै हन्यौ नजाइ. ॥ ॥ **दोहा** ॥ यहनमरैउपजैनहीं, भयौन बहुरयौ- होइ ॥ अजपुरातननित्यहै, मरैमरैनसोइ ॥ २० ॥

वेदाविनाशिनंनित्यंयएनमजमव्ययम् ॥
कथंसपुरुषःपार्थकंघातयतिहंतिकम् ॥ २१ ॥

टीका– हेअर्जुन जो याआत्माकौं अविनाशी नित्य अजअव्ययऐसौ समुझैहै सो पुरुष कौनकौं मरवावै अरु कौनकौं मारै. ॥ ॥ **दोहा** ॥ जो- जानैहैआतमा, अजअविनाशीनित्त, ॥ सोनरमारैकौनकौं ताहिहनैकोमित्त ॥ २१ ॥

वासांसिजीर्णानियथाविहायनवानिगृह्णातिनरोऽपराणि ॥
तथाशरीराणिविहायजीर्णान्यन्यानिसंयातिनवानिदेही॥२२

टीका– हेअर्जुन जैसै पुरुष पुरातनै वस्त्रतजै अरु नये वस्त्रपहिरै ऐसैं

देही जीरन देह तजै अरु नई देहधारै. ॥ ॥ दोहा ॥ जैसैंपटजीरनतजै, पहिरतनरजुनवीन ॥ देहपुरातनजीवतजि, नईगहतपरवीन ॥ २२ ॥

नैनंछिंदंतिशस्त्राणिनैनंदहतिपावकः ॥
नचैनंक्लेदयंत्यापोनशोषयतिमारुतः ॥ २३ ॥

टीका– हेअर्जुन या आत्माकौं शस्त्रछेदै नाहीं अग्निदहै नाहीं याकौं जल भेदैनाहीं अरु वायु शोषै नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ यहनकटैहथियारसौं पावकसकैनजारि ॥ भींजसकैजलनांहिंनै, सोषसकैनबयारि ॥ २३ ॥

अच्छेद्योयमदाह्योयमक्लेद्योशोष्यएवच ॥
नित्यःसर्वगतःस्थाणुरचलोयंसनातनः ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन यह आत्मा छेद्यो नजाय जार्यौ नजाय यहभीजयौ नजाय सोष्यौ नजाय काहेतैं किनित्यहै व्यापीहै स्थिरहै. अचलहै. क्रियासौं रहितहै. सनातनहै. ॥ ॥ दोहा ॥ कटैजरैसूखैनहीं, औरनभिजवनजोग ॥ नित्यजबैसबठौरथिर, अविनाशीविनरोग ॥ २४ ॥

अव्यक्तोयमचिंत्योयमविकार्योऽयमुच्यते ॥
तस्मादेवंविदित्वैनंनानुशोचितुमर्हसि ॥ २५ ॥

टीका– हेअर्जुन यह आत्मा इंद्रियनतैं पायो न जायहै. अरु अचिंत्यहै. मनसौं मान्यो न जाइहै अविकारीहै कर्मेंद्रियनके गोचरनाहीं तातैं या आत्माकौं जैसैं जानिकै तूंसाच करिवेकौं जोग्यनाहीहै. ॥ ॥ दोहा ॥ प्रगटनहींजुअचिंत्यहै, अविकारीतूंजानि ॥ ऐसैयाकौंजानिकैं, सोकलेहुजिनमानि ॥ २५ ॥

अथचैनंनित्यजातंनित्यंवामन्यसेमृतम् ॥
तथापित्वंमहाबाहोनैनंशोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥

टीका– हेअर्जुन जोतूं या आत्माकौं देहसंबंधतैं उपज्योमानैहै अरु नित्य मर्यौ जन्म्यौ मानैहै. तऊ शोच करनौ तोकूं जोग्य नाहीहै. ॥

॥ दोहा ॥ जोतूं जानैं जीवकौं, जनममरनपुनिहोय ॥ तऊशोकतूंजिनकरै, मनदृढतामैंगोई, ॥ २६ ॥

जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥
तस्मादपरिहार्येर्थेनत्वंशोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥

टीका– हेअर्जुन जो उपज्योहै ताकौ निश्चै मरनोहैहि. अरु ज्यो मर्योहै ताकौं निश्चै उपजनोहैहि. जो अर्थ मिठायोनमिटै ताको सोककरनौ तोकौं जोग्यनाहींहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोउपजैसोविनसिहै मरैसुउपजैआई ॥ होनहारसोहोतहै तहांनशोचबढाई ॥ २७ ॥

अव्यक्तादीनिभूतानिव्यक्तमध्यानिभारत ॥
अव्यक्तनिधनान्येवतत्रकापरिदेवना ॥ २८ ॥

टीका– हेअर्जुन भूतप्राणीनकौं आदि प्रगटनाहीं. मध्यप्रगटहै अंतप्रगटनाहीं. तातैं यह जन्ममरन देह स्वभावहै. तहां सोककैसो जैसें निद्रातै जागै. पुरुषसुपनैमैं देषैजेबंधु विनकौं सोक करनौं जोग्यनाहीं. तैसै तोकौं इनको शोक करनो जोग्यनाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ पाछोजाइनदेषियै आगैपरैनजानि ॥ मांझहियहकछुदेषियै, ताकोशोचनमानि ॥ २८ ॥

आश्चर्यवत्पश्यतिकश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदतितथैवचान्यः ॥
आश्चर्यवच्चैनमन्यःशृणोतिश्रुत्वाप्येनंवेदनचैवकश्चित् २९॥

टीका– हे अर्जुन कोई एक पुरुष या आत्माकौं गुरुके उपदेशतैं पाइकै मोकौं यहदर्शन कहां ऐसो विस्मयकरि अचिरजसौं देषैहैं. कोइएक अचरजसौं सुनैहै. तातें यादेही आत्माकौं देषिकै कहिकै सुनिकैहू कोऊ जानै नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्यौंयाकौंदेषैकहै सोईअचरजभाई, ॥ सुनैअचंभोसोलहै, यहजान्यौनहिंजाइ. ॥ २९ ॥

देहीनित्यमवध्योयंदेहसर्वस्यभारत ॥
तस्मात्सर्वाणिभूतानिनत्वंशोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥

टीका– हेअर्जुन यहदेही सदा अवध्यहै. कोऊ याकौं मारिसकै नाहीं तातें सकल प्रानीनको सोच करनौं ताकौं जोग्यनाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ जीवनमारयौजातुहै वसतसवनकीदेह, ॥ तातैंसोचनकीजियै, करिकाहूसौनेह ॥ ३० ॥

स्वधर्ममपिचावेक्ष्यनविकंपितुमर्हसि ॥
धर्म्याद्धियुद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्यनविद्यते ॥ ३१ ॥

टीका– हे अर्जुन जोतूं आपनों क्षत्रीको धर्मदेषै तऊ कंपायमान होनौ तोकौं योग्य नाहीं. क्षत्रीको धर्म युद्धतें और भलोधर्म कोऊ नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ अपनेंधर्मविचारितूं जिनछांडैसंग्राम ॥ धर्मयुद्धतैंक्षत्रियहिं, औरनकछुअभिराम ॥ ३१ ॥

यदृच्छयाचोपपन्नंस्वर्गद्वारमपावृतम् ॥
सुखिनःक्षत्रियाःपार्थलभंतेयुद्धमीदृशं ॥ ३२ ॥

टीका– हेअर्जुन सहजही आय वन्यौ स्वर्गको षुलोद्वार ऐसो जु यह जुद्धताकौं भाग्यवान् क्षत्री होहितेंपावै. ॥ ॥ दोहा ॥ अपनीइच्छातैंलह्यौ षुल्यौस्वर्गकोद्वार, ॥ भाग्यवंतक्षत्रीलहै. लरैसुरणमंझार ॥ ३२ ॥

अथचेत्त्वमिमंधर्म्यंसंग्रामंनकरिष्यसि ॥
ततःस्वधर्मंकीर्तिंचहित्वापापमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥

टीका– अरु हेअर्जुन जोतूं अपनौं क्षत्रीको धर्म संग्राम न करैगो तूं स्वधर्म अरु कीरतिकौं तजिकै पापहीकौं पावैगो. ॥ ॥ दोहा ॥ यहीं धर्म संग्रामकौ जोतूंकरिहैनांहि ॥ तजिकैकीरतधर्मकौं परिहैपापनिमांहिं ३३॥

अकीर्तिंचापिभूतानिकथयिष्यंतितेऽव्ययाम् ॥
संभावितस्यचाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥

टीका– हेअर्जुन सबलोक बहु वरसतक तेरो अपजस कहिहै अरु जाकौं बहुत लोक मानैं ताको अपजसहोइ तो मरेतैं अधिकहै. ॥ दोहा ॥

तेरौअपयशजगतमैं, बोलैंगेसबलोय ॥ मानवंतकोमानघट, अधिकमरणतैंहोय ॥ ३४ ॥

भयाद्रणादुपरतंमंस्यंतेत्वांमहारथाः ॥
येषांचत्वंबहुमतोभूत्वायास्यसिलाघवं ॥ ३५ ॥

टीका– हेअर्जुन सबमहारथी तौकौं भयतैं फिरचो मानिहै. अरु जिनकै मतैं तूं धीर पुरुषहै. तो तोकौं अधीर लघुमानिहै. ॥ ॥ दोहा ॥ भयतैंअर्जुननैंतज्यौ जगयौंकहिहैवीर, ॥ तोहिबहुतकरिमानिहै अबलघुव्है-होधीर ॥ ३५ ॥

अवाच्यवादांश्चबहून्वदिष्यंतितवाहिताः ॥
निंदंतस्तवसामर्थ्यंततोदुःखतरंनुकिम् ॥ ३६ ॥

टीका– हेअर्जुन जे तेरे वैरीहैं ते तोकौं अयोग्य वचन कहिहैं अरु तेरे सामार्थ्यकी निंदा करिहै. तो यातैं अधिक दुष कहाहै. ॥ ॥ दोहा ॥ तेरै कौंअरिसबकहै जेअनकहनीवात, ॥ निजघटियायीकैसुनैं बहुदुषलागैतात ॥ ३६ ॥

हतोवाप्राप्स्यसिस्वर्गंजित्वावाभोक्ष्यसेमहीं ॥
तस्मादुत्तिष्ठकौंतेययुद्धायकृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥

टीका– हेअर्जुन जोतूं या संग्राम विषै मारयौ जाइहै तो स्वर्गपाइहै अरु जोतूं जीतिहै तो पृथिवीको भोग करिहै. तातैं युद्धकौं निश्चय करिकै उठिठाढौ होहु ॥ ॥ दोहा ॥ लरतमरैलहिहैस्वरग जीतैपुहमीभोग, ॥ उठिअर्जुनतूंजुद्धकरि देशत्रुनकौंरोग ॥ ३७ ॥

सुखदुःखेसमेकृत्वालाभालाभौजयाजयौ ॥
ततोयुद्धाययुज्यस्वनैवंपापमवाप्स्यसि ॥ ३८ ॥

टीका– हेअर्जुन सुखदुःख लाभ हानि जय पराजय एसमान करिकै युद्धकौं सावधान होइ सुखदुःखादिकनकी अभिलाषा तजिकैं धर्म बुद्धिसैं

जुद्धकरि. ऐसै जुद्धकियै पापनहोयगो. ॥ ॥ दोहा ॥ लाभहानिअरुसुष-दुखो जीत्यौहारिसमान, ॥ तातैंअर्जुनजुद्धकरि पापलेहुजिनमानि ॥ ३८ ॥

एषातेभिहितासांख्येबुद्धियोगेत्विमांशृणु ॥
बुद्ध्यायुक्तोययापार्थकर्मबंधंप्रहास्यसि ॥ ३९ ॥

टीका— हेअर्जुन यह तोसों मैं बुद्धिकहीहैं सोतूं सांख्यविषै सांख्यकहे. प्रकृति पुरुषकौं विवेककरिकै जहां आत्मतत्व नीकी भांति कह्योहै और अबतूं जोगविषै बुद्धिसुनि जाबुधिसौं जुक्तहैकै कर्मबंधनकौं तजै पुरुष मोहन पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ सांख्यबुद्धितोसौंकही कहतजोगबुधितोहि, ॥ ताबुधिकैसंजोगतैं रहैनकर्मनिमोहि ॥ ३९ ॥

नेहाभिक्रमनाशोस्तिप्रत्यवायोनविद्यते ॥
स्वल्पमप्यस्यधर्मस्यत्रायतेमहतोभयात् ॥ ४० ॥

टीका— हेअर्जुन यह जूकर्म योगमैं तोसौं कहतहौं ताके फलकौं ना-सनाहीं कछुक्रम भंगनाहीं. पापनाहीं. विघनहोतनाहीं. याधर्मको अल्प-मात्रही आरंभकरियै तौबडे भयतैं रक्षाकरै. ॥ ॥ दोहा ॥ कर्मकरैविनुका-मना ताकौहोइननास, ॥ अल्पकियैहूंधर्मयह काढतभवभयपाश ॥ ४० ॥

व्यवसायात्मिकाबुद्धिरेकेहकुरुनंदन ॥
बहुशाखाह्यनंताश्चबुद्धयोऽव्यवसायिनां ॥ ४१ ॥

टीका— हेअर्जुन निश्चैवंत बुद्धि एकहीहै. अरु जिनकै निहचौ नाहीं तिनकौ बुद्धिअनेक है अरु तिनबुद्धिनकी साषाहूको विस्तार बहुतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ बुद्धिजुनिश्चैवंतसो ऐकैहैतूंजानि, ॥ तिनकेनिश्चैनाहिनै तिनहु-सुबहुविधीमानि ॥ ४१ ॥

यामिमांपुष्पितांवाचंप्रवदंत्यविपश्चितः ॥
वेदवादरताःपार्थनान्यदस्तीतिवादिनः ॥ ४२ ॥

टीका—हेअर्जुन अविवेकीहै तेवेदवानीमैं कर्मफलदिषाय मीठी मीठी

यातें कहतहैं. अरु जा वेदवानीमैं कर्मफल बतावैहै कि कर्म उपरांत ई-श्वर और कोई नाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ वेदहिमानतस्वर्गफल तेअग्यानीलो-ई, ॥ कहतजुयांकछुनाहिनैं तिनमैंग्यानीहोई ॥ ४२ ॥

कामात्मानःस्वर्गपराजन्मकर्मफलप्रदां ॥
क्रियाविशेषबहुलांभोगैश्वर्यगतिंप्रति ॥ ४३ ॥

टीका– तातैं हे अर्जुन स्वर्गहै परमपुरुषार्थ जिनकै ऐसे जेहै सकाम पुरुषते भोग बडाई पाईवैके लियै नानाभांतिके जग्यादिक उपायकरैहै सो भोग अरुबडाई प्राप्ति कैसीहै जन्मफल अरु कर्मफलकीदाताहै ॥ दोहा ॥ स्वर्गलोककीकामना करतजुतिनकैचित्त, ॥ भोगबडाईकैलियै करतक्रिया-सोंहित्त ॥ ४३ ॥

भोगैश्वर्यप्रसक्तानांतयाऽपहृतचेतसां ॥
व्यवसायात्मिकाबुद्धिःसमाधौनविधीयते ॥ ४४ ॥

टीका– हेअर्जुन यातैं जो भोग अरु ऐश्वर्यकै विषै असक्तहै अरु कर्मबतावैहै ऐसी वेदवानीमैं जिनकौ चित्तहरचौहै तिनकौं निश्चै बुद्धि परमेश्वरविषैं नाहींहोतहै ॥ ॥ दोहा ॥ भोगबडाईकामना तिनकौमनहरलेत, ॥ निहचैकरिकैबुद्धिकौं नहिसमाधिमेंदेत ॥ ४४ ॥

त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुन ॥
निर्द्वंद्वोनित्यसत्त्वस्थोनिर्योगक्षेमआत्मवान् ॥ ४५ ॥

टीका– हेअर्जुन जे सकामहै तिनकौं वेदकर्मफल बतावतुहै तूं त्रिगुण रहित निहकामहोहु सुषदुषादिक द्वंदसहि नित्यधीरजवंत होहु तेरै नकछु पावनौहै अरुनकछु पायैंकौं राषनहै. तातैं आत्मस्वरूपव्है सावधानहोहु. ॥ ॥ दोहा ॥ त्रिगुणकर्मकौंकहतहै वेदसुतजितूंमित्त, ॥ धीरजधरिदुषसुषसही जोगछेममैंचित्त ॥ ४५ ॥

यावानर्थउदपानेसर्वतःसंप्लुतोदके ॥

तावान्सर्वेषुवेदेषुब्राह्मणस्यविजानतः ॥ ४६ ॥

टीका– हेअर्जुन जैसैं जितनौं कार्य वापि कूपादिकतैं होतहै तितनौं सबही स्नानपानादिक कार्य एकही महासरोवरसैं होइ तैसैं सकलही वेदार्थकी निश्चै बुद्धि एकग्यानीमैंहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जैसैंवापीकूपसौं, सरतजितेजलकाज ॥ जितेसबैइकठौरही, करतसरोवरराज ॥ १ ॥ जैसैजितेकवेदमैं, कहेसकलविधिकाज ॥ ज्ञानीमैंइकठोरहीं, तपैयैकुरुराज ॥२॥४६॥

कर्मण्येवाधिकारस्तेमाफलेषुकदाचन ॥

माकर्मफलहेतुर्भूर्मातेसंगोस्त्वकर्मणि ॥ ४७ ॥

टीका– हे अर्जुन तेरो कर्महीविषै अधिकारहै. अरु फलविषै कबहूं अधिकार नाहीं अरु कर्मनकौं छांडि देह फलविषै प्रवर्त्तै जिन ओर कर्मतैं बंधनहोइ ऐसै जानि कर्म छांडि जिनतातैं कर्म कारि अरु फल तजिदे. ॥ ॥ दोहा ॥ तोअधिकारजुकर्ममैं, नाहींफलसोंहेत ॥ कर्मनकेफलछांडिदे, करहुकामहीचेत ॥ ४७ ॥

योगस्थःकुरुकर्माणिसंगंत्यक्त्वाधनंजय ॥

सिद्ध्यसिद्ध्योःसमोभूत्वासमत्वंयोगउच्यते ॥ ४८ ॥

टीका– हेअर्जुन परमेश्वर परायनव्हैके अद्वैतदृष्टिसौं कर्म कारि मैं कर्मको कर्ताहो ऐसोऐसो अभिमान छांडि केवल ईश्वरकौ आश्रय करितैं कर्मकरि सिद्ध अरु असिद्धविषै समानरूप व्हैकेईश्वर निमित्त कर्मकरि समानबुद्धि सोइ जोग कहियै ॥ दोहा ॥ योगस्थितव्हैकर्मकरि, सबैसंगको त्याग, ॥ सिद्धअसिद्धसमानगनि, यहैजोगअनुराग ॥ ४८ ॥

दूरेणह्यवरंकर्मबुद्धियोगाद्धनंजय ॥

बुद्धौशरणमन्विच्छकृपणाःफलहेतवः ॥ ४९ ॥

टीका– हेअर्जुन ईश्वर निमित्त निहिचै की बुद्धिसौं कर्मकीजै सो बुद्धि जोगकहियै ताबुद्धितैं सकामकर्म अतिही तुच्छजानियै तातैं तूं बु-

द्धिहींकै सरनैंजाइ. ईश्वरको आश्रय करिजे. सकाम चाहतहै तेदीनहै. ॥
॥ दोहा ॥ बुद्धियोगतैंकर्मको, अर्जुनतोघटिजानि ॥ सरनहोहितुमबुद्धि-
की, दीनकामनामानि ॥ ४९ ॥

बुद्धियुक्तोजहातीहउभेसुकृतदुष्कृते ॥
तस्माद्योगाययुज्यस्वयोगःकर्मसुकौशलम् ॥ ५० ॥

टीका— हेअर्जुन जो बुद्धिजुक्त होइ सो याही जन्मविषै परमेश्वरकी कृपासैं भली अरु बुरी करनी, पाप अरु पुन्य दोनों तजै कर्म योग करि जद्यपि कर्मबंधकहै तऊ ईश्वराराधन केलियै मोक्षनिमित्त करियै. ऐसी कर्म करिवेकी चतुराई सोई जोग कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ बुद्धिजुक्तदोऊ-
तजत, कहापुन्यकहापाप ॥ जोगकर्ममैंचतुरहै, सोईतूंकरिआप ॥ ५० ॥

कर्मजंबुद्धियुक्ताहिफलंत्यक्त्वामनीषिणः ॥
जन्मबंधविनिर्मुक्ताःपदंगच्छंत्यनामयम् ॥ ५१ ॥

टीका— हेअर्जुन जे मनुष्य कहै पंडितहै ते कर्मफलकौं तजि श्रीपरमेश्वरकै आराधन निमित्त कर्म करतहै तातैं कर्मबंधकौं छांडिकै निरभैपद मोक्षकौं प्राप्तहोतहै. ॥ दोहा ॥ चाहतनहिजेकर्मफल, तेपंडितबडभाग ॥
कर्मबंधकौंछांडिकै, लहतमुक्तिअनुराग ॥ ५१ ॥

यदातेमोहकलिलंबुद्धिर्व्यतितरिष्यति ॥
तदागंतासिनिर्वेदंश्रोतव्यस्यश्रुतस्यच ॥ ५२ ॥

टीका— हेअर्जुन तेरी बुद्धि परमेश्वरकै आराधनसैं मोह जाल पापकौं तरिकै पारव्हैहै. तब तोकौं वैरागसौं सुनिबोसुन्यौं एदोनूं भावैगेहीं. ॥
॥ दोहा ॥ मोहसगनताजबतजै, अर्जुनतेरीबुद्धि ॥ तबतैहैवैरागकौं, चित-
मैंव्हैहैसुद्धि ॥ ५२ ॥

श्रुतिविप्रतिपन्नातेयदास्थास्यतिनिश्चला ॥
समाधावचलाबुद्धिस्तदायोगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥

टीका– हेअर्जुन नानाभांतिके फलसुनिकै तेरी बुद्धि सर्वत्र फलीहै. सु जब एकठिकानैं निश्चल्ह्वैकै समाधिकहै परमेश्वर ताविषै थिरहोय. तब योगहै. योगफल तत्वज्ञानताकौं पाइहै ॥ दोहा ॥ तेरीबुद्धिवैरागपैं थिरहिहैजबमित्त, ॥ तबसमाधिमैंजोगलहि ह्वैतूंनिहचलचित्त ॥ ५३ ॥

॥ अर्जुनउवाच ॥

स्थितप्रज्ञस्यकाभाषासमाधिस्थस्यकेशव ॥
स्थितधीःकिंप्रभाषेतकिमासीतव्रजेतकिम् ॥ ५४ ॥

टीका– अब तत्वज्ञानीकै लछन अर्जुन पूछतहै. हेकृष्ण जाकी थिरबुद्धिहोय ताकौ लछन कहा अरु जाकौ समाधिस्थ कहियै सो कैसैबोलै कैसेंरहै. अरुकैसें चलै यह मोकौं बतावौ. ॥ दोहा ॥ जाकीबुद्धिनिहचलसदा, ताकौचिन्हबताइ ॥ कैसैबोलतक्यौंरहत, चलतसुहैकिहिभाइ॥५४॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

प्रजहातियदाकामान्सर्वान्प्रार्थमनोगतान् ॥
आत्मन्येवात्मनातुष्टःस्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ५५ ॥

टीका– श्रीकृष्ण कहतहै कि हे अर्जुन जबकोई पुरुष सब मनकी कामनातजै अरु आपसौं आपहीविषै संतुष्ट होय तब थिरबुद्धि कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ जैहैमनकीकामना, तिनकौंतजैजुकोय ॥ आतममैंसंतोषगाहि, निहचलबुद्धिसुहोय ॥ ५५ ॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाःसुखेषुविगतस्पृहः ॥
वीतरागभयक्रोधःस्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५६ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष दुषभयै शोक नंकरै अरु सुख भयै हर्ष नमानै अरु जाकै प्रीति भय क्रोध नहोइ सो थिरबुद्धि कहियै. ॥ दोहा ॥ दुःषदेषिभाजैनहीं, सुषचाहैनहिंचित्त ॥ तजैनेहअरुक्रोधभय, निहचलबुद्धिसुमित्त ॥ ५६ ॥

यःसर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्यशुभाशुभम् ॥
नाभिनंदतिनद्वेष्टितस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता ॥ ५७ ॥

टीका– हेअर्जुन जो सबवस्तु विषै सनेह रहित होई अरु शुभ अथवा अशुभ पाई तऊ हर्ष शोक नकरै तापुरुषकी बुद्धि थिरहै. ॥ ॥ दोहा ॥ नेहनकाहूसौंकरैं, भलैवुरैकीचाहि ॥ रागद्वेषहूंनाकरै, थिरबुद्धिलषियैताहि ॥ ५७ ॥

यदासंहरतेचायंकूर्मोंगानीवसर्वशः ॥
इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥

टीका– हेअर्जुन जैसै कछुवा अपनैं पांचौं अंगसमोटि आपुमैं लेतहै. तैसे पुरुष इंद्रियनकौं अपनैं अपनें विषयतें षैचै ताकी बुद्धि थिरहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोंकछुवानिजअंगकौं, षैंचिआपुमैंलेत ॥ तैसैंषैंचौंइंद्रियन, बुधिनिश्चलकैंहेत ॥ ५८ ॥

विषयाविनिवर्त्तंतेनिराहारस्यदेहिनः ॥
रसवर्जंरसोप्यस्यपरंदृष्ट्वानिवर्त्तते ॥ ५९ ॥

टीका– हेअर्जुन निराहार जो पुरुष ताकै विषयतैं निवृत्ति होहि पैं नतृष्णा निवृत्ति होयसौ तृष्णा परमपुरुषकौ देषे निवृत्तहोय अथवा निराहार पुरुषकै विषय निवृत्ति होइ क्षुधातुर दुर्बलकै विषयनकी इच्छानहोई पैं रसकी इच्छा मिटै नाहीं सोरसकी इच्छा परम पुरुषकौं देषै मिटै. ॥ ॥ दोहा ॥ विषयनकरतजुदूरिसों तजतजतजुऐहार, ॥ आतमदेषैजातुहै अभिलाषानिरधार ॥ ५९ ॥

यततोह्यपिकौंतेयपुरुषस्यविपश्चितः ॥
इंद्रियाणिप्रमाथीनिहरंतिप्रसभंमनः ॥ ६० ॥

टीका– हेअर्जुन विवेकी पुरुष मोछ निमित्त जतन करतहै तऊ इंद्रिय अतिबलवंतहै. तातैं बल करकै मनकों हरिले जाई. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञा-

नवंतजेपुरुषहै, जतनकठिनतासाधि ॥ इंद्रियअतिबलवंतहै, तऊलगावत-व्याधि ॥ ६० ॥

तानिसर्वाणिसंयम्ययुक्तआसीतमत्परः ॥
वशेहियस्येंद्रियाणितस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥

टीका– तिन सब इंद्रियनकौं संजममैं ल्याय युक्त होय आत्म परायन होय बैठै ऐसैं इंद्रिय जाकै वसहोय ताकी प्रज्ञास्थितहै. ॥ ॥ दोहा ॥ तातैंरोकैइंद्रियन, सोमोमैंचितलाइ ॥ वसकीनैजिनएसबै, सोथिरबुद्धिसमाई ॥ ६१ ॥

ध्यायतोविषयान्पुंसःसंगस्तेषूपजायते ॥
संगात्संजायतेकामःकामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ ६२ ॥

टीका– जो पुरुष विषयनको संगकरै ताकौं विषयनको संगहोय और विषय संगसौं कामहोय अरु कामसौं क्रोधहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ बलजुबंधावतविषयकौं, तिनसौंउपजतसंग ॥ कामजुउपजतसंगते, तातैंक्रोधउभंग ॥ ६२ ॥

क्रोधाद्भवतिसंमोहःसंमोहात्स्मृतिविभ्रमः ॥
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशोबुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६३ ॥

टीका– हे अर्जुन क्रोधसौं मोह उपजै. अरु मोहसौं शास्त्र अरु गुरुकै वाक्यनको विस्मरणहोय अरु जब शास्त्र गुरुवाक्यनकौं विस्मरणहोय तबबुद्धि नाश होय अरु बुद्धिनाशतैं आपही नष्टहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ मोहहोतहैक्रोधतैं, मोहहीतेस्मृतिनाश, ॥ सुधीगयेबुद्धिनसत, बुद्धिनसैंजमपास ॥ ६३ ॥

रागद्वेषवियुक्तैस्तुविषयानिंद्रियैश्चरन् ॥
आत्मवश्यैर्विधेयात्माप्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥

टीका– हे अर्जुन रागद्वेषसौं रहित अरु अपनैं वस ऐसैं इंद्रिय तिन-

करिके विषयनकौ ग्रहणकरै अरु अंतहकरन अपनैं वसराषै ऐसो जो पुरुषसो शांतिकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ रागद्वेषकौंजबतजै, करैविषयकीसेव ॥ इंद्रियजोनिजवसकरै, लहैशांतिकोभेव ॥ ६४ ॥

प्रसादेसर्वदुःखानांहानिरस्योपजायते ॥
प्रसन्नचेतसोह्याशुबुद्धिःपर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥

टीका– हे अर्जुन जबशांति प्राप्तिहोय तब या विवेकीके सबदुष मिटिजाय अरु जाके चित्तप्रसन्नहै ताकीबुद्धि वेगही ब्रह्मरूपहोय. ॥ दोहा॥ शांतिजबहियहगहतुहै, होतदुषनकीहानि ॥ बुधितबहिथिरहोतहै, तुमलीजौयामानि ॥ ६५ ॥

नास्तिबुद्धिरयुक्तस्यनचायुक्तस्यभावना ॥
नचाभावयतःशांतिरशांतस्यकुतःसुखम् ॥ ६६ ॥

टीका– हे अर्जुन जाकै इंद्रिय वसनाहीं ताकी परमेश्वरविषै बुद्धि नाहीं होत अरु जाकी बुद्धि परमेश्वर परायन नाहीं ताकी ताकौं भावना कहै. ध्यान साऊ नाहीं होत अरु जो भावना रहितहै. ताकौं शांति नाहीं ताकौं सुषकहांतैंहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ जोगविनाबुद्धिहिनही, बुद्धिविनहोइनज्ञान ॥ ज्ञानविनांशांतीनही, ताविनसुषनसुजान ॥ ६६ ॥

इंद्रियाणांहिचरतांयन्मनोनुविधीयते ॥
तदस्यहरतिप्रज्ञांवायुर्नावमिवांभसि ॥ ६७ ॥

टीका– हे अर्जुन इंद्रिय अपनैं अपनै विषय परि चलि जाइहै अरु तिनके साथ मनहू जातुहै सोमन याकी बुद्धिकौं हरै तैसै वायु नोका हरतुहै. ॥ ॥ दोहा ॥ इंद्रीजिततितफिरतुहै, तितमनुल्यावतखैंचि ॥ मनजुबुद्धिहरिलेतुहै, वायुनावज्यौंऐंचि ॥ ६७ ॥

तस्माद्यस्यमहाबाहोनिगृहीतानिसर्वशः ॥
इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥

टीका– तातैं हे महाबाहु अर्जुन जिन अपने सब इंद्रियठौर ठौरतैं रोकि अपने वसिकरैहै ऐसे जिन इंद्रिय विषयन सौ रहित कियेहै ताकी बुद्धिथिरहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जिनइंद्रियरोकेसबै, ठौरठौरतैंआनि ॥ विषय त्यागहैंजिनकियौ, थिरबुद्धिताहीमानि. ॥ ६८ ॥

यानिशासर्वभूतानांतस्यांजागर्त्तिसंयमी ॥
यस्यांजाग्रतिभूतानिसानिशापश्यतोमुनेः ॥ ६९ ॥

टीका– हे अर्जुन यह आत्म तत्वज्ञानजुहै सो सकल प्रानिनकौ रात्रिरूपहै ता ज्ञानविषे यह संजमी जागैहै. अरु जा विषय सुषविषै यह संजमी नाहीं देषतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञानतत्वसोइजगतनिशि तहांजागतरिषिराय, ॥ जगतजगतभ्रमभूलितहां, सोनिशियाकैभाय ॥ ६९ ॥

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठंसमुद्रमापःप्रविशंतियद्वत् ॥
तद्वत्कामायंप्रविशंतिसर्वेसशांतिमाप्नोतिनकामकामी ॥७०॥

टीका– हेअर्जुन जैसै समुद्र अनेक नदीनसौं भर्योहै तऊ अचल प्रतिष्ठितहै अपनी मरजाद छांडत नाहीं ऐसै समुद्रविषै औरहूं सब जल प्रवेश करतहै तथापि तैसोईहै तैसै जाविवेकी पुरुषविषै सकल कामना लीन होहिसो शांतिकौं पावै अर्थ यहहैकि कामनातजै मोक्षपावै अरु कामना किये मोछनपावै. ॥ ॥ दोहा ॥ जैसैसबजलसारितकौ, मिलैसमुद्रहिजाय ॥ त्यौंयामैंसबकामना, शांतिरहैतहांआय ॥ ७० ॥

विहायकामान्यःसर्वान्पुमांश्चरतिनिस्पृहः ॥
निर्ममोनिरहंकारःसशांतिमधिगच्छति ॥ ७१ ॥

टीका– हे अर्जुन जो सकल कामना तजि निहकाम होय निस्प्रेही होय निर्मम होय ममता छांडै अरु अहंकारकौं तजै सो विवेकी पुरुष पूर्वे कर्म निकै वसभयौ जहां कहूं जाई तहां शांति कहै मोछकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ तजिकैसबमनकामना, जोनिस्प्रेहीहोय ॥ अहंकारममतातजै, तामहिशांतिहिजोय ॥ ७१ ॥

एषाब्राह्मीस्थितिःपार्थनैनांप्राप्यविमुह्यति ॥
स्थित्वाऽस्यामंतकालेपिब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥ ७२ ॥

टीका– हे अर्जुन यह तोसौमैं ब्रह्म ज्ञानकी निष्ठा कही परमेश्वरकै आराधनतैं शुद्धिहै अंतःकरनजाकौं ऐसोजु पुरुष सोया ब्रह्मज्ञानकी निष्ठाकौं पाइकै फेरसंसार मोहकौं नपावै अरु अंतकालविषै छिनमात्रही या ब्रह्मज्ञानकी निष्ठामैं रहै. तऊ निर्वानब्रह्मकौं पावै अरु जो बाल्यावस्थासौंलेकै या ब्रह्मज्ञानविषै रहै अरु ब्रह्म निर्वान पावै ताकौ कहनौ कहा. ॥ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मज्ञानतोसौंकह्यौ जातैंमोहनसाइ, ॥ जोबुद्धिअंतसमैरहै, मिलिब्रह्ममेजाइ ॥ १ ॥ सोकपंकमेंमगनलषि, अरजुनकौंअनपार ॥ सांख्ययोगदुसरेकह्यौ, हरकीन्होउद्धार ॥ २ ॥ सांख्ययोगवरन्यौविषद, हरिकोंकरपरनाम ॥ पूरोआनंदरामके, सकलमनोरथकाम ॥ ३ ॥ ७२ ॥

इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेसांख्ययोगोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अर्जुन उवाच

ज्यायसीचेत्कर्मणस्तेमताबुद्धिर्जनार्दन ॥
तत्किंकर्मणिघोरेमांनियोजयसिकेशव ॥ १ ॥

टीका– अर्जुन कहतहै कि हेकृष्ण जोतुम कर्म योगतैं ज्ञानयोग श्रेष्ट मानतहै तो मोकौं ऐसै घोर कर्मविषै काहेकौं प्रेरतहै. ॥ दोहा ॥ बुद्धिभलीहैकर्मतैं, कृष्णहेतुमजोहि॥कर्मभयानकमैंकहा, केशवडारतमोहि ॥ १॥

व्यामिश्रेणैववाक्येनबुद्धिंमोहयसीवमे ॥
तदेकंवदनिश्चित्ययेनश्रेयोहमाप्नुयात् ॥ २ ॥

टीका– हे कृष्ण औरनाना भांतिके अर्थ जामैं भासै ऐसे मिश्रित वचन मोकौं कहिकहि मेरी बुद्धिकौं मोहसो उपजावतहो. तातै मोकौं निश्चय करिकै एकही बात प्रगट करिकहो. जातै मैं मोक्षपाऊं. ॥ दोहा ॥

बचनसुनेसंदेहको, मोबुद्धिहैभरमाति ॥ निश्चयकरिएकौंकहौ, मुक्तिहोइ, जाभांति ॥ २ ॥

श्रीभगवानुवाच

लोकेस्मिन्द्विविधानिष्ठापुराप्रोक्तामयानघ ॥
ज्ञानयोगेनसांख्यानांकर्मयोगेनयोगिनाम् ॥ ३ ॥

टीका– श्रीकृष्ण कहतहै कि हे अर्जुन पहिले यालोकविषे दोय भांतिकी निष्ठा कही तहां प्रथम जे शुद्धचित्तहै अरु तत्वपदार्थके सोधन सांख्यकौं जे समुझैहै तिनकों ध्यानादिक ज्ञानयोग करि ब्रह्म परायणता कहीहै. अरु जे सांख्यकौं पायैा चाहतहै तिनकौं कर्मयोग करिकै ब्रह्मपरायणता कहीहै. ऐसे चित्तकी शुद्धि अरु असुद्धि रूप अवस्था भेद करिकैं दोऊ भांतिकी निष्ठा कही. तातैं कर्म गुनहै. सांख्य प्रधानहै मुख्यहै. ॥ ॥ दोहा ॥ निष्ठाजोद्वै भांतिकी, पहिलीकहैबनाय ॥ सिद्धनकौंज्ञानेभलौ, कर्मनिकर्मबताय ॥ ३ ॥

नकर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यंपुरुषोऽश्नुते ॥
नचसंन्यसनादेवसिद्धिंसमधिगच्छति ॥ ४ ॥

टीका– हेअर्जुन कर्म विनु कीयै पुरुषकौं ज्ञानकी प्राप्ति नहोई अरु चित्त शुद्धि विना ज्ञान रहित संन्यास हूतैं मोक्षनपावै. ॥ दोहा ॥ कर्मविनाकीयैपुरुष, ज्ञानहिलहैनकोय ॥ ज्ञानरहितसंन्यासतैं, कबहुनमुक्तिजुहोय ॥ ४ ॥

नहिकश्चित्क्षणमपिजातुतिष्ठत्यकर्मकृत् ॥
कार्यतेह्यवशःकर्मसर्वःप्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥

टीका–हे अर्जुन कदाचित् हरकाहू अवस्थाविषें छिनमात्रही ज्ञानी अथवा अज्ञानी प्रानी कर्म विनुकियै रहै नाहीं तातें सकल प्रानीमात्रप्रकृतिके जै रागद्वेषादिक गुनहै तिनसौं बंधे विवसभये कर्मकरतुहै ॥ दोहा

कर्मकरेविनुछिनकहू, रहैनकोऊजंतु॥विवसभयैकर्मनिकरै, बांधेमायातंतु ५

कर्मेंद्रियाणिसंयम्ययआस्तेमनसास्मरन् ॥
इंद्रियार्थान्विमूढात्मामिथ्याचारःसउच्यते ॥ ६ ॥

टीका–हे अर्जुन ओरसुनि जोपुरुष कर्मेंद्रियनकौं संयम करि मनसौं भगवद्ध्यान छलकरिकै विषयनकौं स्मरन करतुहै सो मूढात्मा मिथ्याचारी कपटी दंभी कहीयै. ॥ दोहा ॥ कर्मेंद्रियनरोकिकै, मनविषयनकोध्यान ॥ कपटीमूरषहै वडो, ताकौंदंभीजान ॥ ६ ॥

यस्त्विंद्रियाणिमनसानियम्यारभतेऽर्जुन ॥
कर्मेंद्रियैःकर्मयोगमसक्तःसविशिष्यते ॥ ७ ॥

टीका– हेअर्जुन अरु जो पुरुष मनसौं इनको संयमकरि इंद्रिय ईश्वरविषै लगावै. अरु कर्मेंद्रियसौं कर्म जोग आरंभै अरु फलकी अभिलाषा तजै सो विवेकी अतिश्रेष्ठहै. ॥ दोहा ॥ रोकैइंद्रियननिकछू, कर्मनियमनिरचाइ ॥ फलअभिलाषाकौंतजै, तातैयहअधिकाइ. ॥ ७ ॥

नियतंकुरुकर्मत्वंकर्मज्यायोह्यकर्मणः ॥
शरीरयात्रापिचतेनप्रसिध्येदकर्मणः ॥ ८ ॥

टीका– तातैं हे अर्जुन निश्चैकर्म अन करिवे तैं कर्म करनोश्रेष्ठहै अरु कर्मके विनुकीयै तेरे शरीरकौं निर्वाह कैसैं केंहैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ अनकरिवेतैंकर्महै, भलैसुतूंकरिमीत ॥ विनुकीनेतैंकर्मके, देहननिवहैरीत ॥८॥

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्रलोकोयंकर्मबंधनः ॥
तदर्थंकर्मकौंतेयमुक्तसंगःसमाचर ॥ ९ ॥

टीका– हेअर्जुन जज्ञ विष्णुरूपहै ताजज्ञके लियै जे पशु हिंसादिक कर्म कहेहै ते कर्म जज्ञविना और ठोर वर्जितहै. ये जग्यविषै वरजित नाहीं तातैं निहकाम व्हैकै परमेश्वर प्रीतिकौं कर्मकी विधिकरौ. ॥ ॥ दोहा ॥ जग्यसुकर्मविकर्मजे, जनबंधनकौहोत ॥ तिहिंकाजैकर्मनिकरौ, मेटिफलनकेगोत ॥ ९ ॥

सहयज्ञाःप्रजाःसृष्ट्वापुरोवाचप्रजापतिः ॥
अनेनप्रसविष्यध्वमेषवोस्त्विष्टकामधुक् ॥ १० ॥

टीका— हेअर्जुन पहिलै सृष्टिकै आदि ब्रह्मानैं प्रजा अरु जग्यसाथही सृजिकै प्रजासौं कह्यौ कि तुम या जग्यकरिकै अधिक वृद्धिपावौ यह जग्य तुह्मारे मनोरथ पूर्ण करिहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जग्यसहितरचजगतकौ कहीविधातावात, ॥ उदयतुह्मारोजग्यतैं, कामधेनुयहतात ॥ १० ॥

देवान्भावयतानेनतेदेवाभावयंतुवः ॥
परस्परंभावयंतःश्रेयःपरमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥

टीका— जब तुम या जग्यकरिकै देवताँकी वृद्धि करिहौ तब एदेवताहू तुह्मारी वृद्धि करिहै ऐसैं परस्पर वृद्धि भयैं तुम अरु देवता परस्पर वृद्धि पायहौ. ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जग्यनिकरिदेवनिजजो, देवतुह्मैफलदेहु ॥ वृद्धिपरस्परयौंकरौ, मनवंछितफललेहु ॥ ११ ॥

इष्टान्भोगान्हिवोदेवादास्यंतेयज्ञभाविताः ॥
तैर्दत्तानप्रदायैभ्योयोभुंक्तेस्तेनएवसः ॥ १२ ॥

टीका— ओर एदेवता जग्यसौं जेजे तुमकौ इष्टभोग देतहै. तब तुम फेरही जग्यकरो. काहेतैं कि जो पुरुष देवतानकौं विनुजजै भोगकरै सो चोरहै. अपराधीहै. ॥ ॥ दोहा ॥ इष्टभोगकूंदेतहै, देवजजैतेमित्त ॥ विनपूजैतेलेतहै, तेहैचोरनचित्त ॥ १२ ॥

यज्ञशिष्टाशिनःसंतोमुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥
भुंजतेतेत्वघंपापायेपचंत्यात्मकारणात् ॥ १३ ॥

टीका— हेअर्जुन वैश्वदेवादिक जाग करिकै जे सतपुरुष भोजनकरत है तेसर्व पापनतैं मुक्त होतहै. अरु जे अपनैं भोजन निमित्त पाक बनाइकै भोजनकरतहै ते दुराचारी पापहीकौं भोजन करतहै. ॥ ॥ दोहा ॥

जग्यशेषजोपातहै, पापनमारतधोइ ॥ जग्यविनाजेषातहै, अघनिलहत. हैसोई ॥ १३ ॥

अन्नाद्भवंतिभूतानिपर्जन्यादन्नसंभवः ॥
यज्ञाद्भवतिपर्जन्योयज्ञःकर्मसमुद्भवः ॥ १४ ॥

टीका– हेअर्जुन सकल प्राणी अन्नतैं होतहै. अरु अन्न मेंहतैं होतहै. अरु मेह जग्यतैं होतहै. अरु जज्ञ कर्मतैं होतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जीवअन्न. तैंहोतहै, अन्नमेहतैंहोय ॥ मेहजग्यतेंहोतहै, जग्यकर्मतेंजोय ॥ १४ ॥

कर्मब्रह्मोद्भवंविद्धिब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ॥
तस्मात्सर्वगतंब्रह्मनित्यंयज्ञेप्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥

टीका– कर्म वेदतैं होतहै अरु वेद अछर ब्रह्मतैं होतहै अछर ब्रह्महै- तातैं ब्रह्म सर्वव्यापीहै. तऊ नित्य जग्यविषै रहैहै जैसै उद्यमविषै लक्ष्मीर- हैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ कर्मजुउपजैवेदतैं, वेदब्रह्मतैंमानि ॥ ब्रह्मजुभाषतसब- निमैं, ताहिजग्यकीरजानि ॥ १५ ॥

एवंप्रवर्तितंचक्रंनानुवर्त्तयतीहयः ॥
अघायुरिंद्रियारामोमोघंपार्थसजीवति ॥ १६ ॥

टीका– हेअर्जुन वेदतें कर्म कर्मतैं जग्य जग्यतें मेह मेहतें अन्न अ- न्नतेंप्रानी. अरु प्रानीकी कर्मविषै प्रवृतिहोइ. फिर तैसेंई कर्मकरै याभांति यह चक्र फिरायोहै. जो पुरुष भांति नैं फिरावै ताको आयुर्बल पापरूप- है. यहइंद्रियारामहै. वाको जीवन व्यर्थहै. ॥ दोहा ॥ वेदवंतयाकर्मकौ, जेनकरतजनकोय ॥ पापीइंद्रीवसिभये, जनमरहतहैषोय ॥ १६ ॥

यस्त्वात्मरतिरेवस्यादात्मतृप्तश्चमानवः ॥
आत्मन्येवचसंतुष्टस्तस्यकार्यंनविद्यते ॥ १७ ॥

टीका– हेअर्जुन जाकौ आत्माहीमैं प्रीतिहै अरु आत्मानंदसौं तृप्ति- है. आत्माहि विषैं संतुष्टहै. तापुरुषकौं देवतानिकै निमित्त कुछ कार्य क-

रनौं लागै नाहीं. ॥ दोहा ॥ आतमसौंसंतुष्टजे, आतमसौंरतिहोय ॥ त्रिपतिजआतमसौंरहै, ताहिनकरनौकोय ॥ १७ ॥

नैवतस्यकृतेनार्थोनाकृतेनेहकश्चन ॥
नचास्यसर्वभूतेषुकश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ १८ ॥

टीका– तातैं हेअर्जुन आत्मज्ञानीकौं कर्म करिये कछु पुन्यनाहीं अरु कर्मविनुकिये कछु पाप नाहीं निरहंकारहै. तातैं याकौ कछु विधिनिषेध नाहीं अरु मोछ पाइ वैकै अर्थ याकौ कछु ब्रह्मादिकनहुसौं प्रयोजन नाहीं. स्वतै मुक्तहै. ॥ दोहा ॥ जाहिकरैतैंपुन्यनाहिं, विनुकीयैनहिंदोष ॥ ब्रह्मादिकसौंकाजनहिं, आत्माहीसौंमोछ ॥ १८ ॥

तस्मादसक्तःसततंकार्यंकर्मसमाचर ॥
असक्तोह्याचरन्कर्मपरमाप्नोतिपूरुषः ॥ १९ ॥

टीका– तातैं हेअर्जुन फलकी अभिलाषा छांडिकै नित्य नैमित्तिकादिक जे कर्महै ते सदाकरि काहेतैं कि जोपुरुष फलकी अभिलाषा तजि कर्मकरै तेकर्म मोक्षके अंतराइ नाहीं होत तातैं मोछ वाकौंहोहि. ॥ दोहा ॥ फलकामनकौंछांडिकै, कर्मकरोतुमनित्त ॥ संगविनाकर्मनिकरै, मुक्तलहतहैमित्त ॥ १९ ॥

कर्मणैवहिसंसिद्धिमास्थिताजनकादयः ॥
लोकसंग्रहमेवापिसंपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥ २० ॥

टीका– हेअर्जुन जनकादिक कर्म करतही सिद्धिकौं प्राप्त भयेहै तातैं जद्यपि अपनैं आत्माकौं तूं ज्ञानी मानतहै. तऊ लोकसंग्रहकै लिये ताकौं कर्म करनौं जोग्यहै. ॥ ॥ दोहा ॥ लहीसिद्धिजनकादिहूं, कीनेकर्मसमाज, ॥ तुह्लेदेषिऔरउकरै, यातैंकरोसुकाज ॥ २० ॥

यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः ॥
सयत्प्रमाणंकुरुतेलोकस्तदनुवर्त्तते ॥ २१ ॥

टीका– हेअर्जुन लोकसंग्रह यह कहियै कि श्रेष्ठपुरुष प्रवृत्तिमार्ग अथवा निवृत्तिमार्ग जो जो आचरै सो सो औरहू लोक आचरै वह श्रेष्ठ पुरुष जो प्रमान करै सोई सब प्रमान करै. ॥ ॥ दोहा ॥ बडेजुआचारहिकरै, सोहीमानतआन ॥ ताहीमगसबजनचलै, बडेकरैजुप्रमान ॥ २१ ॥

नमेपार्थास्तिकर्त्तव्यंत्रिषुलोकेषुकिंचन ॥
नानवाप्तमवाप्तव्यंवर्तएवचकर्मणि ॥ २२ ॥

टीका– हेअर्जुन याही बातविषै मैं अपनौं दृष्टांत बतावतहौं देखितौ मेरे कछु तीनहू लोकविषै कार्य करनो नाहीं. अरु मेरे अन पायौ कछु नाहीं अरु कछु पावनौहूनाहीं तऊ कर्म करतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ मोकौंकछुकरनौनहीं तिहुंलोकमेकाज, ॥ नकछुअलभलहिवेनकछु, कर्मकरतयासाज ॥ २२ ॥

यदिह्यहंनवर्त्तेयंजातुकर्मण्यतंद्रितः ॥
ममवर्त्मानुवर्ततेमनुष्याःपार्थसर्वशः ॥ २३ ॥

टीका– हेअर्जुन जौ हूं आलस छांडि सावधान व्हैकै कर्म नकरौ तो एमनुष्य सबमेरे मार्गकौं अनुसरै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोहौंकर्मनिनहिंकरौ रहौं आलसहिमीत ॥ सोहीसबनरहूंगहै, मेरेमगकीरीति ॥ २३ ॥

उत्सीदेयुरिमेलोकानकुर्यांकर्मचेदहम् ॥
संकरस्यचकर्त्तास्यामुपहन्यामिमाःप्रजाः ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन जोहौं कर्म नकरौं तो कर्म लोपतें एसबही लोक नष्ट होहीं. तातें वर्ण संकर होहिं तावर्णसंकरकौं कर्ता मैं होऊ. तब प्रजाकौं मैंहीं नष्टकरौं ताते ज्ञानी पुरुषहू लोकसंग्रहके लियै कर्म करै. ॥ ॥ दोहा॥ जौहौंकर्मनिनहिंकरौं होइसबनकोनास, ॥ प्रगटाऊंसंकरतबै, हनौप्रजाचहत्रास ॥ २४ ॥

सक्ताःकर्मण्यविद्वांसोयथाकुर्वंतिभारत ॥

कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥ २५ ॥

टीका– हेअर्जुन जैसै अविवेकी पुरुष कर्म करतहै तैसेही विवेकी पुरुष कर्म फलकी इच्छा तजिकै कर्म करै. क्यौंकि लोकसंग्रहके निमित्त लोक व्यवहार राष्यौ चाहिये. ॥ दोहा ॥ मूरषजोकर्मनिकरै, करबहुप्रीतिसभाई ॥ लोककाजज्ञानीकरै, मनतासौंनलगाई ॥ २५ ॥

नबुद्धिभेदंजनयेदज्ञानांकर्मसंगिनाम् ॥
जोषयेत्सर्वकर्माणिविद्वान्युक्तःसमाचरन् ॥ २६ ॥

टीका– हे अर्जुन जे अज्ञानीहै अरु कर्मविषै आसक्तहै. तिनकी बुद्धि कर्मनतैं दूरियन करियै ज्ञानीहै ते अज्ञानीपैं कर्म करावै अरु आपहु सावधान व्हैकै उनसौं मिलिकै कर्म करै. ॥ ॥ दोहा ॥ तिनबुद्धिभेदनतजै, रहैकर्मलपटाइ ॥ सावधानज्ञानीरहै, पोषैंतेईदाइ. ॥ २६ ॥

प्रकृतेःक्रियमाणानिगुणैःकर्माणिसर्वशः ॥
अहंकारविमूढात्माकर्ताहमितिमन्यते ॥ २७ ॥

टीका– हेअर्जुन प्रकृतिके गुण कहियै इंद्रियन तिन करिकै होतहै. जे कर्म तिनकौं अहंकारसौं मूढहै. पुरुषसो आपकों कर्ता मानतुहै कि कर्म कर्ता मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ मायाकेगुणरहितहै, सबैकर्मयहजानि ॥ अहंकारकरिमूढजे, लेतअपनमैंमानि ॥ २७ ॥

तत्ववित्तुमहाबाहोगुणकर्मविभागयोः ॥
गुणागुणेषुवर्ततइतिमत्वानसज्जते ॥ २८ ॥

टीका– हे महाबाहो अर्जुन जो पुरुष गुन अरु कर्म आत्मातैं जुदे जुदे करि जानैहै ऐसो जो तत्त्ववेत्ता जो इंद्रियहै ते अपने विषयमें रहतेहै. यों मानै अरु आप असंग रहै. मैं विषयनसौं भागता नाहीं ऐसो जानकै आसक्तन होइ. ॥ ॥ दोहा ॥ गुनअरुकर्मविभागकौं, जानततत्वजोकोइ॥ इंद्रीविषयनसोंलगी, आपमगननहिहोय. ॥ २८ ॥

प्रकृतेर्गुणसंमूढाःसज्जंतेगुणकर्मसु ॥
तानकृत्स्नविदोमंदान्कृत्स्नविन्नविचालयेत् ॥ २९ ॥

टीका– हेअर्जुन जे प्रकृतिके गुनकौं नहीं जानतेहै ते गुणकर्मकौं अपने कीये मानतहै. ते थोरी समुझैहै. जे ज्ञानीहै ते अज्ञानीयै कर्म छुडावै नाहिं अरु आपहू कर्म करै अद्यापि तूं तौ कछु तत्ववेत्ता हैनाहीं यातैं कर्म करि. ॥ ॥ दोहा ॥ मायागुनकरिमूढजे, रहैविषैलोलाइ ॥ तामगतैंज्ञानैतिन्है, देइनकहूंचलाइ ॥ २९ ॥

मयिसर्वाणिकर्माणिसंन्यस्याध्यात्मचेतसा ॥
निराशीर्निर्ममोभूत्वायुध्यस्वविगतज्वरः ॥ ३० ॥

टीका– हेअर्जुन तूं मेरेविषै सब कर्मकौं आरोपकरि अंतर्यामी कहावतुहौं तैसैं करतुहौं ऐसे जानिकै निहकाम होइ ममताछांडि शोकतजिकै जुद्धकरि. ॥ ॥ दोहा ॥ चितअध्यातमआनिकै, कर्मनसौंलोराषि ॥ व्हैअकाममतातजौ, जुद्धहिकौंअभिलाषि ॥ ३० ॥

येमेमतमिदंनित्यमनुतिष्ठंतिमानवाः ॥
श्रद्धावंतोनसूयंतोमुच्यंतेतेपिकर्मभिः ॥ ३१ ॥

टीका– हेअर्जुन जे पुरुष मेरा यामतकौं श्रद्धावंत होइ दोष दृष्टि दूरिकरिकै अनुसरहै तेऊ कर्मनतें छुटि निहकर्महोहि. ॥ दोहा ॥ जेनितयामेंरमतहि, श्रद्धासोंगहिलेत ॥ तिनकैजियनिहकर्महै, करैकर्मनहिंचेत॥

यत्वेतदभ्यसूयंतोनानुतिष्ठंतिमेमतम् ॥
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धिनष्टानचेतसः ॥ ३२ ॥

टीका– हेअर्जुन जे दोषदृष्टि करिकै मेरे यामतकौं नाहीं अनुसरत ते मूढहै अज्ञानहै अचेतनहै तातैं तूं उनकौं नष्ट भये जानि. ॥ दोहा ॥ जोयामेंरमतहिकौं, करतदोषलगाइ ॥ तेमूरषजानतनहीं, हैअचेतकेभाई ३२

सदृशंचेष्टतेस्वस्याःप्रकृतेर्ज्ञानवानपि ॥

प्रकृतिंयांतिभूतानिनिग्रहःकिंकरिष्यति॥ ३३॥

टीका– हेअर्जुन ज्ञानीहू अपनी प्रकृतिकै समान चेष्टा करैहै तौ अज्ञानी अपनी प्रकृतिकै अनुसार चेष्टाकरै ताकौ कहनौ कहा. तातै जे प्रानीहै ते अपनी प्रकृतिकै पाछै अनुसरैहै. प्रकृति बलवंतहै यातैं निग्रहकहा करैगो.॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञानवंतजूरहतहै, अपनीप्रकृतिसमान ॥ सबकोउनिजप्रकृति, वसरोकैतेजुअमान ॥ ३३ ॥

इंद्रियस्येंद्रियस्यार्थेरागद्वेषौव्यवस्थितौ ॥
तयोर्नवशमागच्छेत्तौह्यस्यपरिपंथिनौ ॥ ३४ ॥

टीका– हे अर्जुन इंद्रियनकौं विषयनविषै रागद्वेषहै यातैं रागद्वेषकें वस नहोइ. ते रागद्वेष मोक्षके अंतरायहै.॥ ॥ दोहा ॥सबइंद्रियनकेविषैमैं, रागद्वेषजोहोइ ॥ तिनकैवसनरजानाहिं, रहैजुअरिसमहोइ ॥ ३४ ॥

श्रेयान्स्वधर्मोविगुणःपरधर्मात्स्वनुष्ठितात् ॥
स्वधर्मेनिधनंश्रेयःपरधर्मोभयावहः॥ ३५॥

टीका– हेअर्जुन अपनो धर्म नीकौ नहोइ तामैं अंगहीन होइ तऊ भलेहै. अरु परधर्म नीकी भांति सांगोपांग करियै तऊ भलै नाहीं. अपनैं धर्मविषै मरियै तोऊ सुषहै. अरु परधर्मभयानकहै.॥ दोहा ॥ ऊनहोयनिजधरमहु, परतैंअधिकोमानि॥मींचभलीनिजधरममे, परधर्महिमै जानी॥३५

॥ अर्जुनउवाच ॥

अथकेनप्रयुक्तोयंपापंचरतिपूरुषः॥
अनिच्छन्नपिवार्ष्णेयबलादिवनियोजितः॥ ३६ ॥

टीका– अर्जुन कहतहै कि हेकृष्ण यह पुरुष काकै प्रेरे पाप करतुहैं याकै विना चाहेहू पापहोतहै. जैसै काहूनै बलात्कारसौं प्रेरयौ होइ तैसै करतुहै.॥ ॥ दोहा॥ जाकैइच्छानाहिनै, कर्मदेतसंताप॥ कहियैप्रेरैकोनकै, पुरुषकरतहैपाप॥ ३६ ॥

श्रीभगवानुवाच

कामएषक्रोधएषरजोगुणसमुद्भवः॥
महाशनोमहापाप्माविद्ध्येनमिहवैरिणम्॥ ३७॥

टीका– अब श्रीकृष्ण कहतहै हे अर्जुन यह कामही क्रोधहै अरु क्रोधही कामहै ए रजोगुनतें उपजोहै. सत्वगुनकी वृद्धितैं रजोगुन छीन होइ तब कामहू छीन होइ. याकामकौं तूं मोछमार्गविषै शत्रु जानि यह काम कामहूसौं पूरनहोइ अरु महा पापीहै. ॥ ॥ दोहा ॥ यहजूकामअरुक्रोधहै, रजोगुनहीतैंहोइ ॥ क्यौंहूंपूरनहोइनहि, पापीकौंअरिजोइ ॥३७॥

धूमेनाव्रियतेवह्निर्यथादर्शोमलेनच॥
यथोल्बेनावृतोगर्भस्तथातेनेदमावृतम्॥ ३८॥

टीका– हेअर्जुन जैसै धूम अग्निकौं आवर्योहै अरु जैसैं दर्पनकौंमैल आवर्योहै अरु जैसैं जरा करिकैं गर्भ आवर्योहै तैसैं इन कामहूग्यान आवर्योहै. ॥ ॥ दोहा ॥ आगिढपैज्यौंधूमसौं, दर्पनमलकैभाइ ॥ गर्भजरासौंज्यौंढपै, जगइनताहीदाइ ॥ ३८ ॥

आवृतंज्ञानमेतेनज्ञानिनोनित्यवैरिणा॥
कामरूपेणकौंतेयदुष्पूरेणानलेनच॥ ३९॥

टीका– यह विवेकीकों ग्यान कामनैं आवर्योहै. यह काम सदा कोवैरीहै यहकैसैहू पूरन होत नाहीं. सोक संताप करै तातैं अग्निसमानहै ॥ दोहा ॥ ॥ ज्ञानीहूकौज्ञानइन, वैरीराख्यौढांपि ॥ कामदुसःहयहअग्निहै, सकैनकोऊदांपि ॥ ३९ ॥

इंद्रियाणिमनोबुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते॥
एतैर्विमोहयत्येषज्ञानमावृत्यदेहिनम्॥ ४०॥

टीका– हेअर्जुन, मनबुद्धि इंद्रिय एकामके उपजवेको ठिकानोहै. इंद्रियादिक ज्ञानकौं आवरन करिकै याही देहीकौं मोह उपजावतहै.॥दोहा॥

इंद्रीमनअरुबुद्धिहै, एईजाकौथान ॥ इनकरिसोनासतुजुहै, ज्ञानीहूको-ज्ञान ॥ ४० ॥

तस्मात्त्वमिंद्रियाण्यादौनियम्यभरतर्षभ ॥
पाप्मानंप्रजहिह्येनंज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥ ४१ ॥

टीका– हेअर्जुन इंद्रिय मन बुद्धि इनको निग्रह करिकै पापरूप कामकौं मारि यह काम कैसोहै आत्मज्ञान अरु शास्त्रज्ञान इन दोनोंकौं नाश करै अथवा शास्त्रतैं अरु गुरुनके उपदेशतैं भयो सो ज्ञान ज्ञान कहिये अरु निदिध्यासन अनुभव विज्ञान कहिये. इन दोउनकौं दूरकरै. ॥ दोहा अर्जुनतातैंपहिलहीं, तूंइंद्रियनकौंरोकि ॥ हरतिज्ञानविज्ञानको, पापमूल लषिठोकि ॥ ४१ ॥

इंद्रियाणिपराण्याहुरिंद्रियेभ्यःपरंमनः ॥
मनसस्तुपराबुद्धिर्योबुद्धेःपरतस्तुसः ॥ ४२ ॥

टीका– हेअर्जुन इंद्रिय सूछमहै. प्रकाशहै. तातैं देहादिक विषयनतैं परैहै अरु इंद्रियननतैं मन श्रेष्ठहै. अरु मनतैं बुद्धि श्रेष्ठहै अरु बुद्धितैं अंतर्यामी आत्मा श्रेष्ठहै. ॥ दोहा ॥ इंद्रियहैसबतैंपरै, तिनतैंपरैमनजोय ॥ मनतैंपरैजुबुद्धिहै, तातैंआतमहोय ॥ ४२ ॥

एवंबुद्धेःपरंबुद्ध्वासंस्तभ्यात्मानमात्मना ॥
जहिशत्रुंमहाबाहोकामरूपंदुरासदम् ॥ ४३ ॥

टीका– हेअर्जुन ऐसे बुद्धितैं परै आत्माकौं जानिकै आत्माकहै मन ताकौं निहचल करिकै कामरूप शत्रुकौं मारि सोकाम कैसोहै. दुरासदहै. दुषहुकरिकै जाकी गति जानि नजाय ऐसोहै. ॥ ॥ दोहा ॥ आतमलषियैबुद्धिपर, मनकौंकरिवसमांह ॥ कामरूपअरिदुसहकौ, मारिडारिनरनाह ॥ ॥ ४३ ॥ कह्योतीसराध्यायमैं, कर्मजोगजदुनाथ ॥ पूजैयासौभक्तिजौं, हरितारैदेहाथ ॥ १ ॥ कीनोआनंदरामयह, कर्मयोगबहुभाय ॥ कृष्णकृपाक

रिहैरियै, रहियैसदासहाय ॥ २ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भाषादोहासहितटीकायां कर्मयोगोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

श्रीभगवानुवाच

इमंविवस्वतेयोगंप्रोक्तवानहमव्ययम् ॥
विवस्वान्मनवेप्राहमनुरिक्ष्वाकवेब्रवीत् ॥ १ ॥

टीका— ऐसे मोछकी प्राप्तिविषै ज्ञानयोग करनकह्यौ सोई ज्ञानयोग या संसारमैं परंपरातैं प्राप्त भयोहै. सू कहतहै. हेअर्जुन यह ज्ञानयोग पहिले मैं सूर्यसौं कह्यौ सूर्यनें अपने पुत्र मनुसौं कह्यौ. मनुनैं अपने पुत्र इक्ष्वाकूसौं कह्यौ. ॥ ॥ दोहा ॥ यहैजोगहैमैंकह्यौ, पहिलैरविसौंआइ ॥ तिनहुसवमनुसौंकह्यौ, मनुइक्ष्वाकुकौंसिषाइ. ॥ १ ॥

एवंपरंपराप्राप्तमिमंराजर्षयोविदुः ॥
सकालेनेहमहतायोगोनष्टःपरंतप ॥ २ ॥

टीका— हेअर्जुन ऐसेही परंपरासौं यह जोग राज रिषिनि पायौं सो यह जोग बहुतकालतक अप्रसिद्ध रह्योहै. ऐसै करत बहुत काल बी त्यौ तातें जोग नष्ट भयौ. ॥ ॥ दोहा ॥ परंपरायाजोगकौं, जानतहैरिषिराय ॥ बहुतदिनाबीतैगयो, सोयहजोगनसाय ॥ २ ॥

सएवायंमयातेद्ययोगःप्रोक्तःपुरातनः ॥
भक्तोसिमेसखाचेतिरहस्यंह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥

टीका— ऐसे योग संप्रदाय मिटिगयौहु तौसौ अब वुह पुरातनयोग आजमैं तोसौं कह्यौ. तूं मेरो भक्तहै. मित्रहै. तातैं यह उत्तम रहस्य कह्योहै ॥ ॥ दोहा ॥ यहैपुरातनजोगमैं, तोसौंदयौबताय ॥ यातैंतूंमोमीतहै, आरभ क्तिकेभाय ॥ ३ ॥

अर्जुनउवाच

अपरंभवतोजन्मपरंजन्मविवस्वतः ॥

कथमेतद्विजानीयात्वमादौप्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥

टीका– अब अर्जुन पूछतहै कि हेकृष्ण पहिलै सूर्यको जन्महै अरु पाछै तुमारो जनमहै. तातैं मैं कैसैं जानौं कि सूर्यसौं तुम कह्योहै तुमअब-प्रगटेहौ. तासौं तुमकैसे कह्यौ यह संदेहहै. ॥ ॥ दोहा ॥ तुमतोप्रगटेहो अबै, सूर्यपुरातनदेव ॥ तुमकबतासौंयहकह्यौ, क्यौंजानूंयहमेव ॥ ४ ॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

बहूनिमेव्यतीतानिजन्मानितवचार्जुन ॥

तान्यहंवेदसर्वाणिनत्वंवेत्थपरंतप ॥ ५ ॥

टीका– अब श्रीकृष्ण कहतहै कि मैं ओर रूपसों उपदेश कह्योहै. हे अर्जुन मेरे जनम बहुत भयेहै. ते सबहीमैं जानतहूं अरु तूं नाहीं जान-तहै. ॥ ॥ दोहा ॥ तेरेअरुमेरेजनम, वीतेहैबहुवार ॥ तूंतिनकूंजानतनहीं, हौंजानतनिरधार ॥ ५ ॥

अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन् ॥

प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवाम्यात्ममायय ॥ ६ ॥

टीका– हेअर्जुन ओरही सुनि जोमैं जनमरहितहौं अविनाशीहौं स-कल प्राणीको ईश्वरहौं तऊ अपनी माया करिकै सात्विकी प्रकृतिकौं अं-गीकार करि अपनी इच्छातैं अवतार लेतहौं ॥ दोहा ॥ अजअविनाशी-प्रगटहौं, जगतइसकरतार ॥ अपनीइछालेतहौं, सावधानअवतार ॥ ६ ॥

यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभारत ॥

अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥

टीका– हेअर्जुन जब जब धर्मकी हानिहोतहै अरु अधर्मकी वृद्धि हो-तहै तब तबमैं अवतार लेतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ जबअर्जुनजगमैंघटत, पर-

मधरमकेभाइ ॥ बढतअधर्मजहांतहां, जबजनमतमैंआइ ॥ ७ ॥

परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृताम् ॥
धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे ॥ ८ ॥

टीका– हेअर्जुन जे अपनैं धर्मविषै ततपरहै साधूहै तिनकी इच्छाकें लीयै अरु जे विकर्मी पापीहै तिनके नाशके लीयै अरु धर्मकी स्थापनाके लीयै जुगजुगविषै अवतार लेतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ साधुजनकीरछ्याकरौं, पापीनडारौंमारि ॥ थापितजुगतजुधर्मकी, जुगजुगमांझिविचारि ॥८॥

जन्मकर्मचमेदिव्यमेवंयोवेत्तितत्त्वतः ॥
त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्मनैतिमामेतिसोऽर्जुन ॥ ९ ॥

टीका– हेअर्जुन मेरो जन्म अरु मेरो कर्म ये दोऊ दिव्य अलौकिकहै तिनकौं जो ऐसैं तत्वतैं जानैं सो पुरुष देहकौं तजि फिरि जनम नपाइ ओमोकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ मेरेजन्मअरुकर्मकौं, तत्वलहैजोकोय ॥ देहतजैमोकौंमिलै, बहुरिनजनमैंसोय ॥ ९ ॥

वीतरागभयक्रोधमन्मयामामुपाश्रिताः ॥
बहवोज्ञानतपसापूतामद्भावमागताः ॥ १० ॥

टीका–हेअर्जुन मैं शुद्ध सात्विक अवतारतैं धर्मपालन करतहौं ऐसे मेरी परम करुना जानैं ते गयेहै. राग क्रोध भय जिनके अरु मोसौं त न मन भयेहै. अरुमोकौं आश्रयेहै. ऐसे बहुत पुरुष ज्ञान तपसौं पवित्रव्हैके मेरी सायुज्यमुक्ति कौं प्राप्तभयेहै. ॥ दोहा ॥ रागक्रोधभयकौंतजे, मोमेरापेभाय ॥ बहुतज्ञानतपकरिगए, मोहीमांझिसमाय ॥ १० ॥

येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम् ॥
ममवर्त्मानुवर्त्ततेमनुष्याःपार्थसर्वशः ॥ ११ ॥

टीका–हेअर्जुन जैसैं मोकौं भजैहैं तिनकौं मैं तैसेई भजौंहौं अरु जे सेवक मनुष्यहै तेसबही मेरे मार्ग अनुसरतुहै.॥ ॥ दोहा ॥ जोमोकौंजैसैंभ-

जै, हौंतैसैफलदेत ॥ अर्जुननरसबजगतमें, मेरोपदगहिलेत ॥ ११ ॥

कांक्षंतःकर्मणांसिद्धिंयजंतइहदेवताः ॥
क्षिप्रंहिमानुषंलोकेसिद्धिर्भवतिकर्मजा ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन जे कर्मकी सिद्धिकौं चाहतहै. ते इंद्रादिक देवतानिकै भाजनतैं लौकीक कर्मकी सिद्धि शीघ्रहोतहै. अरु ज्ञानकी सिद्धि मोछसो शीघ्रनाहीं होत. ज्ञानदुर्लभ है यातैं. ॥ दोहा ॥ कर्म-सिद्धिकीचाहकरि, पूजतदेवनिलोइ ॥ कर्मनकीनरलोकमैं, सिद्धिवेगहीहोइ॥१२

चातुर्वर्ण्यंमयासृष्टंगुणकर्मविभागशः ॥
तस्यकर्त्तारमपिमांविद्ध्यकर्त्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥

टीका– हेअर्जुन एचारों वरन गुनकर्मकै विभागसौं मैं सिरजे है. मैं इनको कर्त्ताहीं तऊपरमार्थतैं मोकौं अकर्त्ता जानि मै आसक्ति तैं रहितहौं यातैं अव्यय अविनाशी हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ चारौंवर्णजुमैंरचे, करिगुनकर्मविभाग ॥ हौंइनहींकौंकरतहौं, नहींमोहिअनुराग ॥ १३ ॥

नमांकर्माणिलिंपंतिनमेकर्मफलेस्पृहा ॥
इतिमांयोभिजानातिकर्मभिर्नसबध्यते ॥ १४ ॥

टीका– हेअर्जुन मोकौं कर्म लिपै नाहीं अरु नामेरे कर्मफलकी इच्छाहै. जो पुरुष ऐसो मोकौं जानै सोपुरुष कर्मनसौं बंधावै नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कर्मनमोकौंलगतुहै, मोहिनफलकीचाहि ॥ ऐसोजोमोकौंलषै, कर्मनबांधैताहि ॥ १४ ॥

एवंज्ञात्वाकृतंकर्मपूर्वैरपिमुमुक्षुभिः ॥
कुरुकर्मैवतस्मात्त्वंपूर्वैःपूर्वतरंकृतम् ॥ १५ ॥

टीका– अहंकार तजिकै कर्म करियै तो कर्मको बंधन नहोइ ऐसो जानिकै पहिले ते जे सनकादिक मुमुक्षु भयेहै तिनहू कर्म करेहै. तातैं यह कर्म तैंहूंकर युगांतरहूंविषै पुरातन पुरुष करत आएहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जे-

चाहतहैमुक्तिकौं, करैकर्मतिनआइ ॥ तातंतूहुजुकर्मकरि, पहिलनकोम-
तपाइ. ॥ १५ ॥

किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोऽप्यत्रमोहिताः ॥
तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेशुभात् ॥१६॥

टीका– हेअर्जुन कर्मकहा अरु अकर्म कहा यावातमैं जेविवेकीहै
तेऊ मोह पावतुहै. सो कर्मतोसौं कहतुहौं. जाकै जानैं तैंतू या अशुभ सं-
सारतैं छूटिहै. ॥ ॥ दोहा ॥ कौनसुकर्मअकर्मकौं, नरहतपंडितमोह ॥ मु-
क्तिकाजसोईकरम, कहैदेतहौंतोह. ॥ १६ ॥

कर्मणोह्यपिबोद्धव्यंबोद्धव्यंचविकर्मणः ॥
अकर्मणश्चबोद्धव्यंगहनाकर्मणोगतिः ॥ १७ ॥

टीका– हेअर्जुन कर्मको तत्त्वजाननौं अरु विकर्म तत्त्वजाननौं याभां-
ति कर्म अकर्म विकर्मकी गतिगहनहै. जानि जाइन नहिं. ॥ दोहा ॥ जा-
न्यौंचहियेकर्महू, ओरविकर्मसुभाइ ॥ सुनिअकर्मगतिकीजियै, गहनक-
र्मकेंदाइ ॥ १७ ॥

कर्मण्यकर्मयःपश्येदकर्मणिचकर्मयः ॥
सबुद्धिमान्मनुष्येषुसयुक्तःकृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥

टीका– तातैं हेअर्जुन कर्मकौं जो अकर्म करिदेषै अरु अकर्मकौं जो
कर्म करिदेषै सोपुरुष मनुष्यानविषै बुद्धिवंतहै अरु वह जोगजुगतहै व-
हसकलकर्म कर्ता ब्रह्मज्ञानीहै. ॥ ॥ दोहा ॥ कर्मनिमांझअकर्मजे, आवै-
कर्मअकर्म ॥ बुद्धिवंततिनसबकिए, मेटेमनकेभर्म ॥ १८ ॥

यस्यसर्वेसमारंभाःकामसंकल्पवर्जिताः
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुःपंडितंबुधाः ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन जाकै सकल कर्म कामनातैं रहितहै अरु जाकै ज्ञा-
नरूप अग्निसौं दग्ध भयेहै. कर्म ताकौं विवेकी पुरुष पंडित कहतहै ॥

॥ दोहा ॥ ॥ जाकैसबआरंभते, बिनाकामनाहोत ॥ तासोंपंडितकहतजि-
नि, देहकर्मकेगोत ॥ १९ ॥

त्यात्काकर्मफलासंगंनित्यतृप्तोनिराश्रयः ॥
कर्मण्यभिप्रवृत्तोपिनैवकिंचित्करोतिसः ॥ २० ॥

टीका– जो पुरुष कर्मफलकी इच्छा तजिकै नित्यही निजानंदसौं तृ-
प्त ह्वैकै जाकर्मविषै प्रवर्तै तऊ वह कछुकर्म नाहीं करत ॥ ॥ दोहा ॥ क-
र्मफलनिछांडैसदा, तृप्तकरैनहिंआस ॥ ताकर्मनकैंकरतहो, लगैनभवकी-
पास ॥ २० ॥

निराशीयतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥
शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् ॥ २१ ॥

टीका– हेअर्जुन जोनिरास काम होय चित्त अरु शरीरकों संगमक-
रि सबसंग्रहतजि शरीरमात्रसौं कर्मकरै ताऊकौं कछु कर्म बंधन नाहीं ॥
॥ दोहा ॥ जीतैंइंद्रियदेहनहिं, कामपरिग्रहजाहि ॥ देहिकाजकर्मनिक-
रत, पापनलागतताहि ॥ २१ ॥

यदृच्छालाभसंतुष्टोद्वंद्वातीतोविमत्सरः ॥
समःसिद्धावसिद्धौचकृत्वाऽपिननिबध्यते ॥ २२ ॥

टीका– हेअर्जुन जोपुरुष यथालाभतें संतोषमानै अरु जो सुषदुषा-
दि द्वंद्वतें रहितहोय और मत्सर न होय अरु सिद्धि असिद्धि इनदोऊन,
विषै समान बुद्धि होइ तौ वापुरुषकौं कर्म कीयै अनकीये हूं कछु बंधन
नाहीं ॥ दोहा ॥ यथालाभसंतोषजो, सुषदुषरहैनकोइ ॥ सिद्धिअसि-
द्धौएकसौं, कर्मनबंधनहोइ ॥ २२ ॥

गतसंगस्यमुक्तस्यज्ञानावस्थितचेतसः
यज्ञायाचरतःकर्मसमग्रंप्रविलीयते ॥ २३ ॥

टीका– हेअर्जुन जो निहकर्महै रागादिकनतैं मुक्तहै अरु ज्ञानविषै

जाकौ चित्तहै सो पुरुष जौ परमेश्वर निमित्त सुकर्मकरै तो सकल कर्मवासना सहित लीन होहिं निहकर्म ताकौं पावै ॥ दोहा ॥ तजैसवैजोकामना, ज्ञानलगावैचित्त ॥ जग्यकाजकर्मनिकरै, सोनबांधीयैमीत ॥ २३ ॥

ब्रह्मार्पणंब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौब्रह्मणाहुतम् ॥
ब्रह्मैवतेनगंतव्यंब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन जिनसौं होम करियै ऐसैजे स्रुवादिक ते अरु जौघृतादिक हविष्यहै सौ अरु जो अग्निहै सो अरु जो होमको कर्ताहै सो अरु जो यग्यसौं पैयैगौ फल सौं अरु जोयाकर्मविषै चित्तकी एकाग्रहै सो एसब तूं ब्रह्महीजानि ॥ दोहा ॥ होमअगनिहविब्रह्महै, अपैंब्रह्महिजानि ॥ जाइब्रह्ममैंसोरहैं, कर्मसमाधिहिठानि ॥ २४ ॥

दैवमेवापरेयज्ञंयोगिनःपर्युपासते ॥
ब्रह्माग्नावपरेयज्ञंयज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ २५ ॥

टीका– हेअर्जुन केतेक कर्मयोगी श्रद्धाकरिकै इंद्रादिक देवताकै लीयै करतहै. अरु केतेक ज्ञानयोगी ब्रह्मागनिविषै ब्रह्मार्पण प्रकार करिकै होमैहै. ॥ दोहा ॥ दैवनकोइकजजतहै, करतजग्यबहुभाइ ॥ एकब्रह्ममें जजतुहै, ज्ञानजग्यकेदाई ॥ २५ ॥

श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्येसंयमाग्निषुजुह्वति ॥
शब्दादीन्विषयानन्यइंद्रियाग्निषुजुह्वति ॥ २६ ॥

टीका– हेअर्जुन केतेक नैष्ठिक ब्रह्मचारी नेत्रादिक इंद्रियनको संयमरूपजो अग्नि ताविषै होमैहै, अरु केतेक शब्दादिक विषयनको इंद्रियरूप अग्नि ताविषै होमैहै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकजुहोमतइंद्रियनि संयमअगनिसरूप, विषयनहोमतएकही इंद्रीअगनिअनूप ॥ २६ ॥

सर्वाणींद्रियकर्माणिप्राणकर्माणिचापरे ॥
आत्मसंयमयोगाग्नौजुह्वतिज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥

टीका– हे अर्जुन केतेक ध्याननिष्ठहै तेसब इंद्रियनके कर्मकौं अरुजे दशप्रानहैं तिनके कर्मकौं आतम संजमजोगरूपजो अग्नि ताविषै होमैंहै यह अगनि ज्ञानकरिकै प्रकाशरूपहै ॥ दोहा ॥ तेसबइंद्रियनकेकरम औरकरमसबप्रान, होमतसंयमअगनिमैं प्रगटकरैचितज्ञान ॥ २७ ॥

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञायोगयज्ञास्तथापरे ॥
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्चयतयःसंशितव्रताः ॥ २८ ॥

टीका– हे अर्जुन ऐसे केतेक द्रव्यके दानतैं जग्यहै अरु केतेक कछुचांद्रायणादिक तपोजग्य है, अरु केतेक जोगजग्यहै केतेक स्वाध्याय जग्यहै, केतेकग्यानजग्यहै, ते ग्यानजग्यके कर्ता कैसैंहै तीछनहै व्रतजिनकौं ॥ दोहा ॥ एकजजतहैद्रव्यसौं, एकतपस्याजोग ॥ एकजुपठिवेई जजै, एकजुज्ञानसौंलोग ॥ २८ ॥

अपानेजुह्वतिप्राणंप्राणेपानंतथाऽपरे ॥
प्राणापानगतीरुध्वाप्राणायामपरायणाः ॥ २९ ॥

टीका– हे अर्जुन केतेक अपान विषै प्रानकौं होमैंहै, अरु प्रान विषै अपानकौं होमैंहै, अरु प्रान अपानकी गति रोकिकै प्राणायाम करतहैं ऐसे पूरक कुंभक रेचक त्रिविधप्रानायामहीतैं जग्यकरतहै. ॥ दोहा ॥ होमअपानहिप्रानकौं, प्रानअपानहिमांह ॥ प्रानअपानहिरोकिकै, रहतजुहै नरनांह ॥ २९ ॥

अपरेनियताहाराःप्राणान्प्राणेषुजुह्वति ॥
सर्वेप्येतेयज्ञविदोयज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥

टीका– हे अर्जुन ओर केतेक आहारकौं घटावत घटावत प्रान कहै इंद्रिय तिनविषै प्रानकहै. विषय तिनकौं होमैंहै. ए सबही जग्यके वेत्ताहै जग्यहीसौं निहपापहै. ॥ ॥ दोहा ॥ प्राननहींमैंप्रानकौं, होमतजिंयतआहार ॥ एसबजानतजग्यकौं, मेठतपापविकार ॥ ३० ॥

यज्ञशिष्टामृतभुजोयांतिब्रह्मसनातनम् ॥
नायंलोकोऽस्त्ययज्ञस्यकुतोऽन्यःकुरुसत्तम ॥ ३१ ॥

टीका– हे अर्जुन जग्यकीये उपरांत जग्यावशेष अमृतरूप अन्नकौंजे भोजनकरतहै तेसनातन ब्रह्मकौं पावैहै. ओर इनजग्यनकौं नाहीं करत ताकौं यह लोकहूं नाहीं तो परलोक कहांतैं. ॥ ॥ दोहा ॥ जग्यशेषअमृतहिभषत, होतब्रह्मसोंलीन ॥ यहलोकविनुजग्यनहिं, परलोकैहैछीन ॥३१॥

एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे ॥
कर्मजान्विद्धितान्सर्वानेवंज्ञात्वाविमोक्ष्यसे ॥ ३२ ॥

टीका– हेअर्जुन ऐसै बहुभांतिके जग्यसाक्षात् वेदनें वतायेहै ते वेदतैं भूपनहै. तऊ तिन सबहीनकौं काया वाचा मनसाके कर्मतैं उपजेहै अरु आत्मा स्वरूपके ज्ञानतें रहितहै. ऐसै तूं जानि ऐसैं जानैं या संसारतैं मुक्त होइगो. ॥ ॥ दोहा ॥ बहुभांतिवेदनकही, जग्यसबैलेमानि ॥ तेसबजानौंकर्मतैं, लेहुमुक्तिसुखसानि. ॥ ३२ ॥

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञःपरंतप ॥
सर्वंकर्माऽखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते ॥ ३३ ॥

टीका– हेअर्जुन शत्रुतापन देवताननिकैं लीयै करियै. जेद्रव्य यज्ञ तिनतैं ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठहै. काहेतैं कि फलसहित सकल कर्मज्ञानविषै समाप्तहै. यातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ द्रव्यजग्यतैंहैवडो, ज्ञानयज्ञइहिंभाय ॥ जितेकर्मवेदनिकही, ज्ञानहिरहितसमाय ॥ ३३ ॥

तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया ॥
उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥

टीका– हे अर्जुन ज्ञानी पुरुष ऐसो जु गुरु ताकौं नमस्कार करिएतैं अरु मेरो यह संसार कैसैं निवृत्त व्हैहै ऐसैं गुरुकौं प्रश्नकरियै तैं अरु सेवा कीयै तैं ताज्ञानकौं तूं पाइहै. अरु जे शास्त्रविषै विज्ञहै तत्वदर्शीहै तेतो-

कौं ज्ञानोपदेश करिहै. ॥ ॥ दोहा ॥ कीजैबहुतोनम्रता, प्रश्नओरअतिसेव ॥ तौज्ञानीउपदेशिहै, तुह्मैज्ञानकोभेव ॥ ३४ ॥

यज्ज्ञात्वानपुनर्मोहमेवंयास्यसिपांडव ॥
येनभूतान्यशेषेणद्रक्ष्स्यात्मन्यथोमयि ॥ ३५ ॥

टीका– हे अर्जुन जा ज्ञानके जानै तै फिरि कबहूं तूं ऐसो मोहनपाइहै. अरु जा ज्ञानकरिकै तूं सकल प्रानीनकौं आपुनविषै देषिहैं तापाछै ताही ज्ञान करिकै आपनी आत्माकौं अभेदबुद्धि करिकै मोंमैं देषिहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनयाकौंलहतही, मोहनरहिहैतोहि ॥ सबजीवनकौं देषिहै आपमांझिकैमोहि ॥ ३५ ॥

अपिचेदसिपापेभ्यःसर्वेभ्यःपापकृत्तमः ॥
सर्वंज्ञानप्लवेनैववृजिनंसंतरिष्यसि ॥ ३६ ॥

टीका– हे अर्जुन जोतूं सकल पापीनतैं अधिक पापीहै. तऊ ज्ञाननावसौं अनायासतैं पापरूप समुद्रसौं तरिहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ सबपापिनमैंजोबडो, पापीहूंतूंहोय ॥ ज्ञाननावचढिउतरिहैं, पापसिंधुसमजोय॥३६॥

यथैधांसिसमिद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेर्जुन ॥
ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा ॥ ३७ ॥

टीका– हे अर्जुन तूं ऐसै मति जानैकि ज्ञानतैं पापको उल्लंघन मात्रहै यै नाश नाहीं होत. सो ज्ञान ऐसोहैकि जैसै दैदीप्यमान अग्निकाष्ठ मात्रकौं भस्मकरै तैसैही यह ज्ञानरूप अग्नि सकल कर्मकौं भस्म करै. ॥ ॥ दोहा ॥ जैसैंज्वालहुताशकी, डारतसबहीजारि ॥ ज्ञानअग्निसोप्रबलहै, डारतकर्मनिवारि ॥ ३७ ॥

नहिज्ञानेनसदृशंपवित्रमिहविद्यते ॥
तत्स्वयंयोगसंसिद्धिःकालेनात्मनिविंदति ॥ ३८ ॥

टीका– हे अर्जुन ज्ञानसमान और पवित्र नाहीं ताज्ञानकौं जोगसि-

द्ध पुरुष आपुही विषै पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञानसमानजुलोकमैं, पावननाहींओर ॥ जोगसाधनाजोकरै, लहैज्ञानकीठोर ॥ ३८ ॥

श्रद्धावाँल्लभतेज्ञानंतत्परःसंयतेंद्रियः ॥
ज्ञानंलब्ध्वापरांशांतिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ३९॥

टीका– हे अर्जुन जाकी गुरुकी उपदेशविषैं आस्तिक बुद्धिहैं जो ज्ञानविषै सावधानहै जाके इंद्रिय वसहै सो पुरुष ज्ञानकौं पावै. ॥ दोहा ॥ इंद्रियजितसरधासहित, पावैऐसोज्ञान ॥ तापायेंततकालहैं, पावैशांतिसुजान ॥ ३९ ॥

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्चसंशयात्माविनश्यति ॥
नायंलोकोस्तिनपरोनसुखंसंशयात्मनः ॥ ४० ॥

टीका– हे अर्जुन जो अज्ञानीहै. श्रद्धारहितहै. जाकै संशय बहुतहै सो विनाश पावै. अपनैं स्वार्थतें भ्रष्टहोय जो संशयात्माहै. ताकौं यहलोकहूं नाहीं और परलोकहूं नाहीं अरु सुखहूं नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ जोमूरषसरधाविना, ताकोहोइविनास ॥ जाकैयहसंदेहहै, सोदुहुंलोकविनास ४०

योगसन्यस्तकर्माणंज्ञानसंछिन्नसंशयम् ॥
आत्मवंतंनकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय ॥ ४१ ॥

टीका– हे अर्जुन परमेश्वराराधनरूप जोग करिकै तजेहै कर्मजिन अरु अज्ञानतैं छूटैहै संदेह जाकै ऐसोजु आत्मवंत पुरुष ताकौं कर्म कछु बाधतनाहीं ज्ञानी लोक संग्रहके लीयै कर्मकरै. ॥ दोहा ॥ मोकौंअर्प्यैकर्मकारे, करिसंदेहहिदूरि ॥ ज्ञानीबंधैनकर्मसौं, रहैसदासुषपूरि॥ ४१ ॥

तस्मादज्ञानसंभूतंहत्स्थंज्ञानासिनात्मनः ॥
छित्त्वैनंसंशयंयोगमातिष्ठोत्तिष्ठभारत ॥ ४२ ॥

टीका– तातैं हे अर्जुन अपनैं अज्ञानतैं उपज्यौ ऐसोजु संशय ताकौं ज्ञानषड्गसौं छेदिकै कर्मयोगकौ आश्रय करि अरु पहिलै तौ युद्धआनि

प्राप्तभयेहै. ताकौं निमित्त ऊठ युद्धकरि. ॥ ॥ दोहा ॥ संदेहजुअज्ञानतैं उपज्यौअर्जुनआहि ॥ ज्ञानषड्गसौंकाटिकै, जोगकरौकिनताहि ॥ ४२ ॥ याचौथेअध्यायतैं निष्ठाहैद्वैभाय,॥कहीअवस्थाभेदतैं कर्मज्ञानसमुझाय १॥ कृष्णचरनपरनामकरि वरन्योकर्मसंन्यास,॥सकलजगतकैहितकह्यौ आनंदरामप्रकाश ॥ २ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दोहासहित भाषाटीकायां कर्मसंन्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ श्रीकृष्णार्पणम् ॥

अर्जुनउवाच

संन्यासंकर्मणांकृष्णपुनर्योगंचशंससि ॥
यच्छ्रेयएतयोरेकंतन्मेब्रूहिसुनिश्चितम् ॥ १ ॥

टीका– अब अर्जुन कहतहै किहेकृष्ण तुम मोकौं सांख्यहू कहतहौं अरु कर्मयोगहू कहतहौं तातैं मेरे इनदुहनमैं तैं निहचै मेरे श्रेष्ठ हितकारी होय सो मोकौं कहो. ॥ ॥ दोहा ॥ कबहूंकहतसंन्यासकौं, कबहुंकर्मकोजोग ॥ निश्चैकरिएकैकहौं, मेटौकिनभवरोग ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

सन्यासःकर्मयोगश्चनिःश्रेयसकरावुभौ ॥
तयोस्तुकर्मसंन्यासात्कर्मयोगोविशिष्यते ॥ २ ॥

टीका– अब श्रीकृष्ण कहतहै कि हे अर्जुन संन्यास अरु कर्म योग दोऊ मोक्षकारीहै जों लों चित्त शुद्ध नहोय तोलौं कर्मयोग करे. चित्त शुद्धभए. पाछै सन्यास करै इन दुहुनमैं कर्मयोग श्रेष्ठहै. ॥ दोहा ॥ कर्मयोगसंन्यासअरु, दोऊएसबदैन ॥ कर्मयोगसंन्यासमैं, कर्मलहीयतचैन २॥

ज्ञेयःसनित्यसंन्यासीयोनद्वेष्टिनकांक्षति ॥
निर्द्वंद्वोहिमहाबाहोसुखंबंधात्प्रमुच्यते ॥ ३ ॥

टीका– हे अर्जुन ताकौं तूं नित्यसंन्यासी जानि जो काहूसौं द्वेषन- करै नकाहूसौं कछु चाहै रागद्वेषादिक द्वंद्वतैं रहितहोइ. ऐसो शुद्धचित्त- पुरुषज्ञानसौं सुखेन संसार बंधनतैं छूटै. ॥ दोहा ॥ द्वेषतजैचाहहितजै, सोसंन्यासीजानि ॥ रागद्वेषसौंजेरहित, ताहिछुट्यौतूंमानि ॥ ३ ॥

सांख्ययोगौपृथग्बालाःप्रवदंतिनपंडिताः ॥
एकमप्यास्थितःसम्यगुभयोर्विंदतेफलम् ॥ ४ ॥

टीका– हेअर्जुन सांख्य अरुयोग इनदुहुनकौ अज्ञानी जुदे कहैहै अ- रु जे पंडितहै ते यौं नाहीं कहत काहेतैं कि इनदुहुनमैं एककौं भलीभांति आश्रय दुहुनको फलपावै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोगसांख्यद्वैकहत, मूरषपंडि- तनांहि ॥ दोउनैंमएकैभजै, दोऊफलहैताहि ॥ ४ ॥

यत्सांख्यैःप्राप्यतेस्थानंतद्योगैरपिगम्यते ॥
एकंसांख्यंचयोगंचयःपश्यतिसपश्यति ॥ ५ ॥

टीका– हे अर्जुन ज्ञानी संन्यासी जो मोछस्थानकौं प्राप्तहोंहीं ता- स्थानकौं कर्मयोगी हूं ज्ञान करिकै प्राप्त होंहि तातैं जो सांख्य अरु कर्म योगकौं एक फलकौं एककरि देषै सोई पुरुष नीकी भांतिसौं देषैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ स्थानजुलहियैसांख्यतैं, सोजोगइतैहोइ ॥ सांख्ययोगएकौंगनै ताकौंज्ञानीजोइ ॥ ५ ॥

संन्यासस्तुमहाबाहोदुःखमाप्तुमयोगतः ॥
योगयुक्तोमुनिर्ब्रह्मनचिरेणाधिगच्छति ॥ ६ ॥

टीका– हे अर्जुन कर्मयोग विना संन्यास पावनौ अतिकठिनहै चि- त्त शुद्ध नाही यातैं अरु जो कर्मयोग करैहै सो चित्तशुद्धतैं संन्यासी व्हैकै शीघ्रब्रह्मकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ लहतसंन्यासहिदुषसौं, विनकर्मनुरेमीत॥ जोगजुगतकेकरतहै, रहतब्रह्मनिहचिंत ॥ ६ ॥

योगयुक्तोविशुद्धात्माविजितात्माजितेंद्रियः ॥

सर्वभूतात्मभूतात्माकुर्वन्नपिनलिप्यते ॥ ७॥

टीका– हे अर्जुन जो पुरुष जोगयुक्तहै निरमलचित्तहै तिन शरीर जीत्योहै. जिनैं इंद्रियजीत्योहै सो सकल प्रानीनकौं अंतरजामीहै. सो लोक संग्रहके लीयै कर्मकरि तऊ वाकौ कर्मालिपत नाहीं. ॥ दोहा ॥ इंद्रीजीतहैशुद्धहृदय, जोगजुगतजोकोय ॥ जीवनजानैआतमा, कर्मलिप्तसुनहोय ॥ ७ ॥

नैवकिंचित्करोमीतियुक्तोमन्येततत्ववित् ॥ पश्यन्शृण्वन्स्पृशन्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपन्श्वसन् ॥ ८ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष जोगजुक्तहै सो क्रमसौं तत्ववेत्ता व्हैकै जद्यपि रूपकौं देषैहै. शद्बकौंसुनैहै तैसैं स्पर्श करैहै गंधलेतहै. षायहै चलैहै सोवैहै स्वासलेतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञानीकर्मनिकरतहुं, लेइकीयैहुनमानि ॥ सूंघतदेषतछुवतपुनि, सुनतचलतहूज्ञानि ॥ ८ ॥

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ॥ ॥
इंद्रियाणींद्रियार्थेषुवर्ततइतिधारयन् ॥ ९ ॥

टीका– बोलेहै छांडैहै गहैहै उन्मेषकरैहै निमेष करतहै तउ मैं न कछुकरतहौं. इंद्रियअपनै अपनै विषयनमैं वरतैहैं ऐसैं जानैं. ॥ ॥ दोहा ॥ सोवतजागतगहतुहुं, बोलतडारिहुंदेत ॥ इंद्रियविषयनमैं परी, जानतहैयहहेत ॥ ९ ॥

ब्रह्मण्याधायकर्माणिसंगंत्यक्त्वाकरोतियः ॥
लिप्यतेनसपापेनपद्मपत्रमिवांभसा ॥ १० ॥

टीका– हे अर्जुन कर्मनकौं ब्रह्मविषै अर्पन करिकै अरु फल कामना तजिकै जो कर्म करै सो पुरुष पाप पुन्यसौं लिपत नाहीं होत. जैसै कमलपत्र जलमै रहैहै तउ जलसौं लिपत नाहीं. ॥ दोहा ॥ कर्मकरैतजिसंगकौ, सबकौंब्रह्महिजानि ॥ ताकौंपापनलगतुहै, पदमपत्रजलमानि॥१०॥

कायेनमनसाबुद्ध्याकेवलैरिंद्रियैरपि ॥
योगिनःकर्मकुर्वंतिसंगंत्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ ११ ॥

टीका– हेअर्जुन जोगी है ते कायासौं मनसौं बुद्धिसौं अरु केवल इंद्रियनसौं कर्म करतहै. ये फलकी अभिलाषा तजिकै चित्तशुद्धिके लीयै करतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ तनकरिमनकरिबुद्धिकरि, पुनिइंद्रिनहुंकीन ॥ संगछांडिकर्मनिकरै, जोगीहोहिनलीन ॥ ११ ॥

युक्तःकर्मफलंत्यक्त्वाशांतिमाप्नोतिनैष्ठिकीम् ॥
अयुक्तःकामकारेणफलेसक्तोनिबध्यते ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष परमेश्वर परायन व्हैकै कर्म फलकौं तजिकै कर्मकरै सो मोछकौं प्राप्तहोय अरु जौ अयुक्तहै परमेश्वरकौं विमुखहै फलकी कामनालीयै कर्म करैहै सोपुरुष कर्मसौं बंधावै ऐसीभांति चित्तशुद्धविना करियै जोसन्यास तासौं कर्म जोग विशेषहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञानीहूमुक्तिलहै, करैकर्मफलछाडि ॥ मूरखफलकीआसकरि, बंधतकामनाआड ॥ १२ ॥

सर्वकर्माणिमनसासंन्यस्यास्तेसुखंवशी ॥
नवद्वारेपुरेदेहीनैवकुर्वन्नकारयेत् ॥ १३ ॥

टीका– हेअर्जुन जितने पुरुष सकल कर्मनकौं विवेककरि मनसौं तजिकै नवद्वार पुरशरीरविषै सुखी रहहै अरु अहंकार रहितहै तातैं नकछु आपुकरैहै नकछु काहूसौं करवावै. ॥ ॥ दोहा ॥ मनकरिकर्मनिजेतजै, ज्ञानीतेसुपआहि ॥ नवद्वारपुरमेंवसत, करतकरावतनाहिं ॥ १३ ॥

नकर्तृत्वंनकर्माणिलोकस्यसृजतिप्रभुः ॥
नकर्मफलसंयोगंस्वभावस्तुप्रवर्त्तते ॥ १४॥

टीका– हेअर्जुन प्रभु ईश्वर जीवलोकको कर्मको कर्ता नाहीं सृजत है अरु कर्म हू नाहीं सृजत है अरु कर्म फल संयोग हूं नाहीं सृजत

तऊ जीवको स्वभाव अविद्या है सोई कर्ता है कर्म फल संयोगरूप क-
रिकै प्रवर्त्ते है. ॥ ॥ दोहा ॥ ईश्वरनहिंकर्मनिकरत, नहिंकर्मनिकरतार ॥
कर्मफलनहूंनहिंकरत, प्रकृतिकरतविस्तार ॥ १४ ॥

नादत्तेकस्यचित्पापंनचैवसुकृतंविभुः ॥
अज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः ॥ १५॥

टीका— तातैं हे अर्जुन यह ईश्वर नकाहूको पाप लेतहै. नकाहूको पुन्यलेतहै ईश्वर सर्वत्र समानहै. ऐसो जुहै ज्ञान सो अज्ञानसौं आवर्यो-है तातैं जेअज्ञानी जीवहै ते मोह पावैहै. प्रभुकौं विषम मानेहै ॥ दोहा ॥ सुकृतकाहूकागहै, औरपापनहिंलेत ॥ ढांप्यौज्ञानअज्ञानसों, मोहनप्र-गटनदेत ॥ १५ ॥

ज्ञानेनतुतदाज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः ॥
तेषामादित्यवज्ज्ञानंप्रकाशयतितत्परम् ॥ १६॥

टीका— हेअर्जुन जिनकौ वह विषम अज्ञान आत्मज्ञानतैं मिट्योहै तिनकों वहज्ञान अज्ञानकौं दूरि करकै सूर्यजौं प्रकाशरूप व्हैकै परिपूर्ण ईश्वर स्वरूपकौं प्रकाशित करैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञानभयेअज्ञानवह, जिन-कौपावतनास ॥ तिनकौंरविसमज्ञानवह, करतसुपरमप्रकास ॥ १६ ॥

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ॥
गछंत्यपुनरावृत्तिंज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ १७ ॥

टीका— ताही ईश्वरविषैहै बुद्धि जिनकी अरु ताईश्वरविषैहै आत्मा जिनकौ ताही विषैहै नेष्ठा जिनकी अरु सोई ईश्वरहै परम आश्रय जि-नकै अरु जाई इश्वरकी कृपातैं पायौजु आत्म ज्ञानता करिकै दूरभयेहै पापजिनकैं ऐसे जे ब्रह्मपरायनहै ते यासंसारविषै आवतना मुक्तिकौं प्रा-प्तहोहिं. ॥ ॥ दोहा ॥ जेमनकौंअरुबुद्धिकौं, राषतईश्वरमाह ॥ जनममर-नतिनकौंनहीं, मुक्तिहोतनरनाह ॥ १७ ॥

विद्याविनयसंपन्नेब्राह्मणेगविहस्तिनि ॥
शुनिचैवश्वपाकेचपंडिताःसमदर्शिनः ॥ १८ ॥

टीका– हेअर्जुन विद्या विनयसौं संयुक्त ऐसोजु ब्राह्मन ताविषै अरु गोविषै हाथीविषै श्वानविषै चांडालविषै जेपंडित है ते सम दृष्टीहै. भेद मानत नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ विद्याविनयसंपन्नद्विज, गोगजसुपचोस्वान ॥ ज्ञानीइनकौंसमगनत, भेदलेतनाहिंमान ॥ १८ ॥

इहैवतैर्जितःसर्गोयेषांसाम्येस्थितंमनः ॥
निर्दोषंहिसमंब्रह्मतस्माद्ब्रह्मणितेस्थिताः ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन जिनकौं मनसाम्यतामैं समान स्थितहै तिन यह संसार याही लोकमें जीत्योहै ब्रह्म निरदोषहै. समानहै. ऐसे जे जानै ते समदृष्टी ब्रह्महीमें मिलैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ समताजिनकैहीयमैं, तिनजीत्यौसंसार ॥ समताब्रह्महीकौंकहत, ब्रह्मलीनिनिरधार ॥ १९ ॥

नप्रहृष्येत्प्रियंप्राप्यनोद्विजेत्प्राप्यचाप्रियम् ॥
स्थिरबुद्धिरसंमूढोब्रह्मविद्ब्रह्मणिस्थितः ॥ २० ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष प्रियवस्तुकौं पाइ हरष नकरै अरु अप्रिय वस्तुकौं पाइशोक नकरै, निश्चल बुद्धिहोय निवृत्त भयोहै मोह जाको ऐसोजु ब्रह्मज्ञानीसो ब्रह्महो विषैलीनहै. ॥ ॥ दोहा ॥ सुषपायैहरषैनहीं, दुषपायैनारिसाय ॥ राषैथिरनिजबुद्धिकौं, ब्रह्महिरहैसमाय ॥ २० ॥

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्माविंदत्यात्मनियत्सुखम् ॥
सब्रह्मयोगयुक्तात्मासुखमक्षय्यमश्नुते ॥ २१ ॥

टीका– हेअर्जुन जो बाह्य विषयन विषै आसक्त चित्त नाहीं अरु अंतःकरणविषै सात्विक सुखकौं पावैहै. सो ब्रह्मयोग युक्तात्मा अक्षय सुखकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ बाहिरकेसुषकौंतजै, हियसुखरहैसुजानि ॥ ब्रह्मविषैचित्तकौंधरै, लहिआनंदअनुमानि ॥ २१ ॥

येहिसंस्पर्शजाभोगादुःखयोनयएवते ॥
आद्यंतवंतःकौंतेयनतेषुरमतेबुधः ॥ २२ ॥

टीका– हेअर्जुन जे विषय भोगहै ते दुष्षहींके मूलहै. आदिअंत जिनकौ है उपजैहै अरु विनसैं है तातैं जे विवेकी है ते उनविषय विषै रमत नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ विषयजितैसंसारके, तेहैदुषकेमूल ॥ उपजतविनसतहैतिन्हैं, पंडितगहैनमूल ॥ २२ ॥

शक्नोतीहैवयःसोढुंप्राक्शरीरविमोक्षणात् ॥
कामक्रोधोद्भवंवेगंसयुक्तःससुखीनरः ॥ २३ ॥

टीका– हेअर्जुन काम अरु क्रोधतैं उपज्योवेग ताके सहिवेकौं जो संमर्थ है जौलौं जीयत रहै. तौलौं सही सोई पुरुष युक्त कहिये अरु सोई सुषहै. ॥ ॥ दोहा ॥ कामक्रोधकेवेगकौं, जोसहिसकैसुभाय ॥ तेजोगीतितहूंरहै, थिरसुखमैंलपटाय ॥ २३ ॥

योऽतःसुखोन्तरारामस्तथांऽतर्ज्योतिरेवयः ॥
सयोगीब्रह्मनिर्वाणंब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष आत्माहीविषै सुषीहै अरु विषयनतैं सुषी नाहीं अरु जाकी क्रीडा आत्माही विषै बाहिरनाहीं अरु जाकी आत्माहीविषै दृष्टिहै. नृत्यगीतादिक विषै नाहीं सो योगी ऐसी भांति ब्रह्मरूप व्हैकै ब्रह्मविषै लीनहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ जाकैहियैप्रकासहै, अंतरसुखआराम ॥ वहजोगीपरब्रह्ममैं, लहैब्रह्मकोधाम ॥ २४ ॥

लभंतेब्रह्मनिर्वाणमृषयःक्षीणकल्मषाः ॥
छिन्नद्वैधायतात्मनःसर्वभूतहितेरताः ॥२५॥

टीका– हेअर्जुन जे निहपापहै जिनकै द्विधा भावनाहीं अरु जिन अपनौ आत्मावस कर्यौहै जे सकल प्रानीनिकौं हित चाहत है ऐसै जे राषिहै ते मोछकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोज्ञानीपापनितजै, होतब्रह्ममै-

लीन ॥ भेदनतिनकैजीयमैं, रहतसवनसौंदीन ॥ २५ ॥

कामक्रोधवियुक्तानांयतीनांयतचेतसाम् ॥
अभितोब्रह्मनिर्वाणंवर्ततेविदितात्मनाम् ॥ २६ ॥

टीका– हेअर्जुन जे काम क्रोधतैं रहितहै जिन आत्म तत्वजान्यो है जिन मनवसकरचो है. ऐसो जु संन्यासी जीवनमुक्तहै. अरु मरेपीछेही मुक्तहै. ॥ दोहा ॥ योगीमनकौंजीतिकै, कामहुक्रोधवियुक्त ॥ आत्मतत्वकौंजानकै, जीवन्मरणविमुक्त ॥ २६ ॥

स्पर्शान्कृत्वाबहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवांतरेभ्रुवोः ॥
प्राणापानौसमौकृत्वानासाभ्यंतरचारिणौ ॥ २७ ॥

टीका– हेअर्जुन जिन रूपादिक बाह्य विषयनको स्मरन तजिकै विषय तजैहै. अरु दोऊ नेत्र भौंहनकैं मधिराषैहै प्रान अरु अपान एदोऊ नासिकामैं समान फिराएहै. ॥ ॥ दोहा ॥ तजैविषयसंसारकौं, दिष्टभौंहमधिराषि ॥ पानअपानहिसमकरत, नासामधिअभिलाषि ॥ २७ ॥

जितेंद्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ॥
विगतेच्छाभयक्रोधोयःसदामुक्तएवसः ॥ २८ ॥

टीका– ओर हेअर्जुन जिहिंपुरुष या उपाइसौं इंद्रियमन बुद्धि जीतैहै अरु जाकी मोछही परम आश्रयहै यातैं गयेहै. इछा भय क्रोध, जाकै ऐसोजु मुनि सो सदाजीवन्मुक्तहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जीतैइंद्रीबुद्धिमन, मुक्तिहिमैंमनदेय ॥ इच्छाभयक्रोधहितजे, मुक्तिपदारथलेय ॥ २८ ॥

भोक्तारंयज्ञतपसांसर्वलोकमहेश्वरम् ॥
सुहृदंसर्वभूतानांज्ञात्वामांशांतिमृच्छति ॥ २९ ॥

टीका– हेअर्जुन जग्यदान तपस्याकौं भोक्ता मै हौं सबलोकनकौं ईश्वर मैंहौं सकल प्रानीकौं हित अंतरमैंहौं जो मोकौं ऐसैं जानैंसो मेरो रूपातैं मोक्षकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ तपयग्यनकौंभोगवौ, सबलोकनिकौ-

ईस ॥ शांतिलहैयौंजानिकै, मोकौंप्रभुजगदीस ॥ २९ ॥

सांख्ययोगअरुकर्मकौ विकलपदीयौमिटाय, यातैंसेवनदुहुनकौं कह्यौ-पांचवेऽध्याय ॥ १ ॥ कह्यौजगतमनभावतौ वरन्यौजोगसन्यास, जदु-पतिआनंदरामकौं दीजैभक्तिविलास ॥ २ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु-ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दोहासहित भाषाटीकायांसं-न्यासयोगोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ श्रीकृष्णार्पणम् ॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

अनाश्रितःकर्मफलंकार्यंकर्मकरोतियः ॥
ससंन्यासीचयोगीचननिरग्निर्नचाक्रियः ॥ १ ॥

टीका– हेअर्जुन जो कर्म फलकौं न चाहै अरु अपनौं अवश्य नित्य नैमित्तिक कर्म करैहै वहसंन्यासीहै अरु वह जोगीहै. ताकौं कछु अग्नि-होत्रादिक इष्ट अरु वापी कूपादिक पूर्व कर्म छांडैही संन्यासी योगी हो-इगो योंनाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ कर्मफलनचाहैनहीं, कर्मनिकरतजुआहि ॥ जोगीसंन्यासीवहै, नअगिनिअक्रियनाहिं ॥ १ ॥

यंसंन्यासमितिप्राहुर्योगंतंविद्धिपांडव ॥
नह्यसन्यस्तसंकल्पोयोगोभवतिकश्चन ॥ २ ॥

टीका– हेअर्जुन जाकौं संन्यास कहतहै ताहिकौं तूं जोग जानि ऐ-सो कर्मनिष्ठ कोऊ नाहीं जो फल संकल्प विनुतजै ज्ञाननिष्ठ योगी होय संकल्पकौ त्याग दुहुनमैं समानहै. यातैं जोग संन्यास सोई कर्म जोग.॥ ॥ दोहा ॥ जाकौंसन्यासीकहैं, वहैंजोगतूंजानि ॥ विनुसंन्यासहिजोगन-हिं, यहैसाचहूंमानि ॥ २ ॥

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥
योगारूढस्यतस्यैवशमःकारणमुच्यते ॥ ३ ॥

टीका– हेअर्जुन जो ज्ञानयोग पाया चाहै तो मुनिकौं ज्ञानयोग विषै कारन कर्महै अरु जोयोगारूढहै ध्याननिष्ठहै. ताकौ ज्ञान परिपाकविषै शांति कारन है. ॥ ॥ दोहा ॥ योगहिकर्मनतेंलहत, ज्ञानीचित्तविचारि ॥ जोगलहैशांतिगहै, विषयइंद्रियनमारि ॥ ३ ॥

यदाहिनेंद्रियार्थेषुनकर्मण्यनुसज्जते ॥
सर्वसंकल्पसंन्यासीयोगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष इंद्रियनको शब्दादिक विषयमैं जब आसक्तनहोय अरु कर्मविषै आसक्तन होय सबही फलकी संकल्पहै तिनकौं त्यागकरै तब योगारूढ कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ विषयनसौंअरुकर्मसौं, होयप्रीतिजबदूरि ॥ सबसंकल्पनकौंतजै, जोगरहैजबपूरि ॥ ४ ॥

उद्धरेदात्मनात्मानंनात्मानमवसादयेत् ॥
आत्मैवह्यात्मनोबंधुरात्मैवरिपुरात्मनः ॥ ५ ॥

टीका– हेअर्जुन विवेक युक्त मन करिकै आत्माकौं संसारतें उद्धार करिकै अविवेकयुक्त मनकरिकै आत्माकौं अधोगति प्राप्तन करियै. मनही अपनौं उपकारी बंधुहै. मनही अपनौ अपकारी शत्रुहै. ॥ ॥ दोहा ॥ निजआतमकौंउद्धरत, अधोगमनजुकरेय ॥ आतमहीरिपुआपकौ, आतमहीसुपदेय ॥ ५ ॥

बंधुरात्मात्मनस्तस्ययेनात्मैवात्मनाजितः ॥
अनात्मनस्तुशत्रुत्वेवर्तेतात्मैवशत्रुवत् ॥ ६ ॥

टीका– हेअर्जुन यह आपुही आपकौं बंधुहै अरु आपुही आपकौं शत्रुहै. जिन आत्माकरिकै आत्माजीत्यौहै. ताकौ आत्मा बंधुहै. अरु आपनौं आत्मा जीत्यौ नाहीं ताकौ आत्मा शत्रुसमानहै. ॥ ॥ दोहा ॥ आपुहिजीत्यौआतमा, सोईबंधुजुयाहि ॥ जिनजीत्यौनाहीजुवह, अरिजानियैसुताहि ॥ ६ ॥

जितात्मनःप्रशांतस्यपरमात्मासमाहितः ॥
शीतोष्णसुखदुःखेषुतथामानापमानयोः ॥ ७॥

टीका– हेअर्जुन जिन अपनौ आतमा जीत्यौहै जो रागद्वेषादिक सौं रहित होय अरु जो शीत उष्ण सुख दुःख मान अपमान विषै समान है विकार न पावै. ताकै हृदयविषै परमात्मा स्थिरहै. ॥ दोहा ॥ जिनजीत्यौहैआतमा, सांतलहैवहुज्ञान ॥ शीतउष्णसुखदुःखसमैं, अरुअपमानजुमान ॥ ७ ॥

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माकूटस्थोविजितेंद्रियः ॥
युक्तइत्युच्यतेयोगीसमलोष्टाश्मकांचनः ॥ ८ ॥

टीका– हेअर्जुन जो ज्ञान विज्ञानतैं तृप्तिहै अरु निर्विकारहै जितेंद्रियहै. अरु जाकै मृत्तिका पिंड पाषाण सुवर्ण समान है सो मुनि योगारूढ कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ जानतज्ञानविज्ञानजो, अरुइंद्रीजितजोय ॥ सोनौंपाहनएकसम, गनैसुजोगीहोय ॥ ८ ॥

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबंधुषु ॥
साधुष्वपिचपापेषुसमबुद्धिर्विशिष्यते ॥ ९ ॥

टीका– हेअर्जुन सुहृदविषै मित्रविषै उदासीनविषै मध्यस्थविषै अरु जो द्वेष सहितहै ताविषै बंधुविषै साधुविषै पापविषै जिनकी समान बुद्धिहै सो श्रेष्ठहै. ॥ ॥ दोहा ॥ मित्रउदासीशत्रुपुनि, अरुनिजबंधुसमान ॥ साधोपापीचित्तमैं, गनैएकअनुमान ॥ ९ ॥

योगीयुंजीतसततमात्मानंरहसिस्थितः ॥
एकाकीयतचित्तात्मानिराशीरपरिग्रहः ॥ १० ॥

टीका– हेअर्जुन योगारूढसो एकांतविषै रहै. काहूकौं संगनराषै चित्तदेह अपनैं वश्य करै काहूकी चाहि न राषै काहू वस्तुकौं संग्रह न करै ऐसो व्हैकै निरंतर आत्माकौं एकाग्रहकरै. ॥ ॥ दोहा ॥ बैठैएकोएकचित्त

जोगीसाधैजोग ॥ एकाकीचाहैनकछु, जौरैनाहिंसुषभोग ॥ १० ॥

शुचौदेशेप्रतिष्ठाप्यस्थिरमासनमात्मनः ॥
नात्युच्छ्रितंनातिनीचंचैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ११ ॥

टीका– हेअर्जुन जोगाभ्यास साधैं. सो एकांत पवित्रस्थान विषै प्रथम दर्भ विछावै तापर मृग चर्म तापर वस्त्र विछावै आसन बहुत ऊंचो न होय वहुत नीचो न होय अरु स्थिर होय. ॥ दोहा ॥ ठौरपुनीतनिहारकैं, करिआसनविस्तार ॥ नहिंऊंचोनीचोनहिं, पटकुशअजिनविथार॥११

तत्रैकाग्रंमनःकृत्वायतचित्तेंद्रियक्रियः ॥
उपविश्यासनेयुंज्याद्योगमात्माविशुद्धये ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन ऐसे आसनडारि एकाग्र मनकरि इंद्रिय अरु चित्तकी क्रियासौं रहित होयकै ता आसनपर वैठिकै आत्मशुद्धिकै अर्थ योग साधन करै. ॥ ॥ दोहा ॥ करिवैठैमनकूंजुस्थिर, सबइंद्रिनकौंजीति ॥ करिकैआसनशुद्धकौं, जोगकरैइहिंरीति ॥ १२ ॥

समंकायशिरोग्रीवंधारयन्नचलंस्थिरः ॥
संप्रेक्ष्यनासिकाग्रंस्वंदिशश्चानवलोकयन् ॥ १३ ॥

टीका– सूधीसमानहै काया मस्तक अरु ग्रीवा जाकी ऐसेजु योगीश्वर थिरहोइकै अपनी नासिकाकै अग्रविषैं दृष्टि रापिकै ओर दिस नैंदेषै. ॥ दोहा ॥ कायाशिरअरुग्रीवकौं, राषैएकसमान ॥ दृष्टिकरैनिजनासिका, पेपैनहिंदिसिआन ॥ १३ ॥

प्रशांतात्माविगतभीर्ब्रह्मचारीव्रतेस्थितः ॥
मनःसंयम्यमच्चित्तोयुक्तआसीतमत्परः ॥ १४ ॥

टीका– हेअर्जुन शांति चित्त ह्वैकैं ब्रह्म चर्य रापिकै मोकौं परम पुरुषारथ जानिकै जो जोगयुक्त ह्वैकै रहै. ॥ ॥ दोहा ॥ शांतिगहैभयकौंतजैं, ब्रह्मचर्यव्रतलेय ॥ मोमैंरापैरोकिमन लहैंजोगकौंभेय ॥ १४ ॥

युंजन्नेवंसदात्मानंयोगीनियतमानसः ॥
शांतिंनिर्वाणपरमांमत्संस्थामधिगच्छति ॥ १५ ॥

टीका– जो ऐसी भांति सदा मनकौं एकाग्र करिकै मनकौं वस करै सो जोगी मेरौरूप पाइकै संसारसौं रहित व्हैकै मोक्षकौं प्राप्त होय योगाभ्यासको मोछ फलहै. ता मोछकौं पावै. ॥ दोहा ॥ इहिंविधिकरैजुयोगकौं, निजमनकौंथिरराषि ॥ शांतिलहैमोकौंमिलै, लहैअमीरसचाषि ॥ १५॥

नात्यश्नतस्तुयोगोस्तिनचैकांतमनश्नतः ॥
नचातिस्वप्नशीलस्यजाग्रतोनैवचार्जुन ॥ १६ ॥

टीका– हेअर्जुन जो बहुत आहार करै तासौं जोग सधै नहीं अरु जो निराहार है ताहुपैं नैसधै अरु जो बहुत सोवै ताहुपैं नँ सधै अरु जो बहुत जागै ताहुपैं नँ सधै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोगलहैनहिंबहुभषै, विनुषाएहूमित्त ॥ सोवतहूनहिंहोतहै, नहिंअतिजागेनित्त ॥ १६ ॥

युक्ताहारविहारस्ययुक्तचेष्टस्यकर्मसु॥
युक्तस्वप्नावबोधस्ययोगोभवतिदुःखहा ॥ १७॥

टीका– हेअर्जुन जो योगी यथायोग्य परिमित आहार करै अरु परिमित विहार करै अरु कर्मही परिमित यथा योग्यकरै जो सोवनौं जागनौंहू जथा योग्य करै ताकौं दुःख जोगतैं दूरहोई. ॥ ॥ दोहा ॥ युक्तविहारआहारकौं, कर्मयुक्तपुनिहोय ॥ जागतसोवतजोगजुत, सोडारतदुखधोय ॥ १७ ॥

यदाविनियतंचित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ॥
निस्पृहःसर्वकामेभ्योयुक्तइत्युच्यतेतदा ॥ १८ ॥

टीका– हेअर्जुन जबयोगीश्वर अपनौ चित्त विषयनसौं निवृत्त करिकै आत्माविषै निश्चल करि राषै अरु सकल कामना तजै तब वह प्राप्त जोग कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ जबनिजचित्तकौरोकिकै, राषतआतममांह॥

तजैसवैजोकामना, सोजोगीनरनाह ॥ १८ ॥

यथादीपोनिवातस्थोनेंगतेसोपमास्मृता ॥
योगिनोयतचित्तस्ययुंजतोयोगमात्मनः ॥ १९ ॥

टीका— हेअर्जुन जो पुरुष आत्मस्वरूप पाइवेकै लीये योगाभ्यास करैहै तिन अपनौ चित्तजीत्योहै. सो चित्त कैसाहै निर्वातकहै वायु रहित ऐसो ठिकानौ ताविषै दीपककी जोति निश्चल होइ तैसै ईहोवै. ॥ दोहा ॥ जैसैदीपसमीरविनु, रहैजातिठहराय ॥ जोगीनिश्चलचित्तकौं, उपमामैंया-भाय ॥ १९ ॥

यत्रोपरमतेचित्तंनिरुद्धंयोगसेवया ॥
यत्रचैवात्मनात्मानंपश्यन्नात्मनितुष्यति ॥ २० ॥

टीका— हेअर्जुन योगाभ्यासतैं निश्चल कर्यौ ऐसोजु चित्तसो जहां अवस्था विशेषविषै लीनहोय अरु जा अवस्था विशेष विषै शुद्धमनसौं आत्माही सौं देषै देहादिकनकौं नदेषै अरु आत्माविषैं संतुष्ट होय विषयनविषै न होय सो सदा सुखकों पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोगीसेवतजोगकौं चित्तहीयेठहराय ॥ निरषतआतमकौंतहां, रहतसदासुषपाय. ॥ २० ॥

सुखमात्यंतिकंयत्तद्बुद्धिग्राह्यमतींद्रियम् ॥
वेत्तियत्रनचैवायंस्थितश्चलतितत्त्वतः ॥ २१ ॥

टीका— हेअर्जुन जिहि अवस्था विशेष विषै नित्यही परम सुख पावै सो सुख कैसोहै विषय अरु इंद्रियकै संबंधसौं रहितहै. अरु केवल बुद्धिहीसौं जान्यौ जाय ऐसोहै ता सुखविषैहै ते आत्मस्वरूपतें चलै नाहीं. ॥ दोहा ॥ जोसुषइंद्रीतैंपरे, बहुतबुद्धिगहिलेत ॥ वासुखकौंजानैतवै, तापाछैंहैंनेत ॥ २१ ॥

यंलब्ध्वाचापरंलाभंमन्यतेनाधिकंततः ॥
यस्मिंस्थितोनदुःखेनगुरुणापिविचाल्यते ॥ २२ ॥

टीका— हेअर्जुन जो आत्मरूप लाभकौं पाइकै तासौं अधिक दूसरो लाभ मानत नाहीं अरु जा सुषविषै रहिकै सीत उष्ण सुष दुःष ऐसोजु द्वंद्व तिनहु सौं डिगै नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ जोपायौलाभनअधिक, ओरजोनरेमित्त ॥ थिरतागहिडैलैनहीं, बहुदुषपायोचित्त ॥ २२ ॥

तंविद्याद्दुःखसंयोगवियोगंयोगसंज्ञितं ॥
सनिश्चयेनयोक्तव्योयोगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥

टीका— हेअर्जुन जाविषै दुःषकौं लेसमात्रही नाहीं ऐसोजु अवस्थाविशेषकौ जोग जानियै ताजोगकौं निहचैसौं सावधान चित्तकरिकै सावधान करियै. ॥ ॥ दोहा ॥ दुषहीकोसंजोगकौं, मानैलेतवियोग ॥ निश्चैकरिजोगहिकरै, ताकौंकहतजुजोग ॥ २३ ॥

संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वासर्वानशेषतः ॥
मनसैवेंद्रियग्रामंविनियम्यसमंततः ॥ २४ ॥

टीका— हेअर्जुन संकल्पतैं उपजे जेकाम तिनकौं तजिकै अरु मनहीसौं विषै दोष दृष्टि धारिकै इंद्रिय वर्गकौं जीतिकै जोगाभ्यास करै. जोगाभ्यास विषै कष्ट जानिकै जोगसौं निवृत्त नहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ संकल्पअरुनिजकामना, तिन्हैतजैचितलाय ॥ मनसौंरोकैइंद्रियजन. जोगकरैयहभाय ॥ २४ ॥

शनैःशनैरुपरमेद्बुद्ध्याधृतिगृहीतया ॥
आत्मसंस्थंमनःकृत्वानकिंचिदपिचिंतयेत् ॥ २५ ॥

टीका— हेअर्जुन धृती कहीयै धारणा ता करिकै वशी करीहै ऐसी बुद्धि तासौं आत्माविषै मनकौं लीन करिकै धीरैधीरैं अभ्यास क्रमसौं विषय अरु कामनातें निवृत्त होइ और काहू वस्तुकौं चिंतवन करै नाहीं ॥ दोहा ॥ धीरजधरिअरुबुद्धिकरि, परैरहैसबत्याग ॥ कछुवेकरैनकामना आतमसौंअनुराग ॥ २५ ॥

यतोयतोनिश्चरतिमनश्चंचलमस्थिरम् ॥
ततस्ततोनियम्यैतदात्मन्येववशंनयेत् ॥ २६ ॥

टीका—हे अर्जुन स्वभावहीतैं चंचल अरु जाठोर लगाइयै ताहिठोर स्थिर नरहै. अैसोजू मनसों जित जित विषयन विषै चलै तित तितसौं रोकि कै आत्माही विषै वस करिकै राषै. ॥ दोहा ॥ मनचञ्चल जिततित-चलै, ताकौंराषैरोकि ॥ करिसंजमनीजआतमा, सजैजुताकौठोकि ॥ २६ ॥

प्रशांतमनसंह्येनंयोगिनंसुखमुत्तमम् ॥
उपैतिशांतरजसंब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥ २७ ॥

टीका—हे अर्जुन इहिभांति शांत भयों है रजोगुन ताकों अरु अतही शांत भयोहै मन जाकों अरु जो निहपापहै अरु जो जो ब्रह्मकों प्राप्त भयो है ऐसोजु योगीश्वर ताकौं उत्तम जु समाधि सुखसो आपसौं आप आनि प्राप्त होय. ॥ दोहा ॥ जाकै मनमैंशांतिहै, ताहिकौंसुखहोय ॥ मगनजुब्रह्मानंदमैं, पापरहितमुनिसोय ॥ २७ ॥

युंजन्नेवंसदात्मानंयोगीविगतकल्मषः ॥
सुखेनब्रह्मसंस्पर्शमत्यंतंसुखमश्नुते ॥ २८ ॥

टीका—हे अर्जुन जोजो पुरुष ऐसी भांती निहपाप व्है कै मनकौं वस करैसो जोगी विनहुश्रम कियैतैं ब्रह्मसाक्षात्कार पावै यह सर्वोत्तम सुष है. जोगताहीकौं पावै तव कृतार्थ होय ॥ दोहा ॥ जो जोगीइहिविधिकरै, पापकौं त्याग ॥ सहजाहिब्रह्माहिकैं, सुषहिंलहैवहैअनुरागि ॥ २८ ॥

सर्वभूतस्थमात्मानंसर्वभूतानिचात्मनि ॥
ईक्षतेयोगमुक्तात्मासर्वत्रसमदर्शनः २९ ॥

टीका—हे अर्जुन जोगाभ्यास करिकै एकाग्रहै मन जाकौऐसोजू जोगेश्वरसो सर्वत्रकौं समान करिकै देषै तैसेही अपने आत्माकों ब्रह्मातैं लेकै थावर ताऊं प्रानीनविषै देषै अरु सकल प्रानीनिकौंअपने आत्माविषै

देषै.॥ दोहा ॥ मोहिलषैसबसदनमैं सबकौंमोहीमांहि ॥ मोकौंदेषतसोसदा हौंहूदेषतताहि ॥ २९ ॥

योमांपश्यतिसर्वत्रसर्वंचमयिपश्यति ॥
तस्याहंनप्रणश्यामिसचमेनप्रणश्यति ॥ ३० ॥

टीका—हे अर्जुन जो पुरुष मोकों सकल प्रानी मात्रविषै देखै अरु सकलप्रानीनिकौं मोंमैं देषै ता जोगेश्वरकौं मैं प्रत्यछहौं अरु सो जोगीश्वरमेरे प्रत्यछहै. ऐसी भांतिमैं प्रत्यछ व्हैकै कृपा दृष्टिसौंदेषिकै अनुग्रह करतहौं. ॥ दोहा ॥ जोमोकौंसबमैलषै, सबजगमोहियमांहि ॥ ताकिहौं-ढिगहीरहौं, सोमेरेढिगआहि ॥ ३० ॥

सर्वभूतस्थितंयोमांभजत्येकत्वमास्थितः ॥
सर्वथावर्तमानोपिसयोगीमयिवर्तते ॥ ३१ ॥

टीका—हे अर्जुन सर्व प्रानी मात्रमैं मैंरहौंहौं ऐसोजु मैं तामोकौं अभेद दृष्टिसौं प्रीति करिकै जो भजै सोज्ञानी व्हैकै सर्वथा कर्मत्यागकरै तऊ मोहीविषै वरतैहै. अर्थ येहैकि मुक्तहोय. ॥ दोहा ॥सर्व विषै स्थितमैंजुहौं इकलखिभजैसुमोहि ॥ रहौंकौंनहुभांतिवह मोंमैंवर्तैसोहि ॥ ३१ ॥

आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोऽर्जुन ॥
सुखंवायदिवादुःखंसयोगीपरमोमतः ॥३२॥

टीका—हे अर्जुन जैसे आपकौं सुष प्रियहै अरु दुःख अप्रियहै तैसैं सबही प्रानीनकौं सुखदुःख अपने समान करि देषै सकल प्रानीनकौं सुषी चाहै. दुषी नचाहै सो जोगी मेरे मततैं श्रेष्ठ है. ॥ दोहा ॥ सबकौं देषै आपसम सुषी दुषी इकभाय॥ सोजोगीसबतैं बडौ, मोमैं रैहै समाय ३२

॥ अर्जुनउवाच ॥

योऽयंयोगस्त्वयाप्रोक्तःसाम्येनमधुसूदन ॥
एतस्याहंनपश्यामिचंचलत्वात्स्थितिंस्थिराम् ॥ ३३

टीका— अव अर्जुन कहतहै हे मधुसूदन सर्वहीकौं आपसमान करिदेषै ऐसेजु यह तुम साम्यता करिकै जोग कह्यौ ता जोगकी स्थिती बहुत कालतैं कहौ देषत नाहीं काहेतैंकि मनस्थिरनाहीं रहैहै ॥ ॥ दोहा ॥ जोगकह्यौतुमकृष्णजू, मोकौंएकसमान ॥ रहैनमोचितचपलहै, जोतुमकीयौवपान ॥ ३३ ॥

चंचलंहिमनःकृष्णप्रमाथिवलवद्दृढम् ॥
तस्याहंनिग्रहंमन्येवायोरिवसुदुष्करम् ॥ ३४ ॥

टीका— हेकृष्ण मन स्वभावहीतैं अति चंचलहै अति बलवंतहै देहइंद्रियनको क्षोभकरै. विचारकियै हू जीत्योनजाय अरु दृढहै भेद्यो नजाय ऐसोहै. यातैं जैसे अति प्रवल पवनकौं निग्रह न कर्‍यो जायतैसैं यामनकौं निग्रह अति कठिनहै. ॥ ॥ दोहा ॥ मनहैचंचलकृष्णजू, बहुछोभकदृढजानि ॥ ताकौंरोकनपवनसम,है अतिकठिनसमानि ॥ ३४ ॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

असंशयंमहावाहोमनोदुर्निग्रहंचलम् ॥
अभ्यासेनतुकौंतेयवैराग्येणचगृह्यते ॥ ३५ ॥

टीका— अव श्रीकृष्ण कहतहैंकि हेअर्जुन यह निश्चैहै तैं सांचीकही ऐसीहीहै. मनचंचल. ताकौ निग्रह अति कठिनहै ये अभ्यासतैं क्रमक्रमसौं अरु वैराग्यसौं गह्यौ जाय ओर काहू विधि न गह्योजाय. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनतुमसाचीकही, मनचंचलनगहाय ॥ जोगहितैंवैराग्यतैं, नीकैंपकर्‍यौजाय ॥ ३५ ॥

असंयतात्मनोयोगोदुष्प्रापइतिमेमतिः॥
वश्यात्मनातुयतताशक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥ ३६ ॥

टीका— हेअर्जुन अभ्यास अरु वैराग्यसौं जाको मन वस नाहीं होत ताजोगीकौं जोगदुर्लभहै. अरु अभ्यासतैं वैराग्यतैं जाको मनवस भ-

योहै. अरु फिरि याही उपायसौं जतन करै ताकौं जोग सफलहै.॥ दोहा॥ जिनपकरयौनहिंचित्तनिजु, तापैंजोगनहोय ॥ जिनअपनौमनवसकियौ, लहतजतनसौंसोय ॥ ३६ ॥

॥ अर्जुन उवाच ॥

अयतिःश्रद्धयोपेतोयोगाच्चलितमानसः ॥
अप्राप्ययोगसंसिद्धिंकांगतिंकृष्णगच्छति ॥ ३७ ॥

टीका– हेकृष्ण जो पुरुष इंद्रिय बिनु जीते श्रद्धायुक्त होइकै जोगविषै प्रवर्त्तै तापाछै जोगाभ्यासको जतनहू करै नाहीं अरु जोगाभ्यासतैं चित्तकौं चलाय विषयनविषै आसक्त होइ करि मंद वैराग्य होइकै जब जोगसिद्धि न पावै तब वह कौनगतिकौं प्राप्त होय.॥ ॥ दोहा ॥ अजतीअरुश्रद्धासहित, जोगभ्रष्टतापाइ ॥ लहेनसिद्धसुजोगकी, कहौकौनगतिजाइ ॥ ३७ ॥

कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिवनश्यति ॥
अप्रतिष्ठोमहाबाहोविमूढोब्रह्मणःपथि ॥ ३८ ॥

टीका– हेकृष्ण वह कर्मयोग दुहुनतैं भ्रष्ट भयौ तौ किधौं ओछे बादर ज्यौं विनसै हैं कि नाहिन. क्यौंकि निराश्रयहै. ब्रह्मप्राप्ति मार्गविषै मूढहै. तातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ कीधौंदुहुनतैंभ्रष्टहै, बादरज्यौंविनसाय ॥ ताकौंकछूनआसरौ, रह्यौमूढकैभाय ॥ ३८ ॥

एतन्मेसंशयंकृष्णछेत्तुमर्हस्यशेषतः ॥
त्वदन्यःसंशयस्यास्यच्छेत्तानह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥

टीका– हेकृष्ण या मेरे संशय छेदिवेकौं तुम जोग्य हौं अरु या संशय छेदिवे लायक तुमसो और दूसरौ कौऊ नाहीं तातैं संशय निवृत्तिकी जै.॥ ॥ दोहा ॥ मेरेयासंदेहकौं, करौदूरजगदीस ॥ याकहिवेकौंतुमउचित, नहींसिषअजईस. ॥ ३९ ॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

पार्थनैवेहनामुत्रविनाशस्तस्यविद्यते ॥
नहिकल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिंतात्तगच्छति ॥ ४० ॥

टीका– अब श्रीकृष्ण कहतहै हेअर्जुन या लोकविषै अथवा परलोकविषै वाको विनाश कबहूं नाहीं शुभकर्मको कर्ता दुर्गति न पावै यह तो शुभकारी है. शुद्ध जोगमैं प्रवर्त्तैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनदोऊलोकमैं, ताकौहोइननास ॥ भलेकर्मजेकरतहै, तिनकौंनहिंअवधास ॥ ४० ॥

प्राप्यपुण्यकृताँल्लोकानुषित्वाशाश्वतीःसमाः ॥
शुचीनांश्रीमतांगेहेयोगभ्रष्टोऽभिजायते ॥ ४१ ॥

टीका– हेअर्जुन वह योगभ्रष्ट योगी पुण्यलोककौं पाइकै उहां बहुत कालतक रहिकै अनेक भोग करिकै ता पाछै जे पवित्र है लक्ष्मीवंतहै तिनकै घरविषै जन्म पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ पुण्यवंतकेलोकलहि, रहितबहुतदिनजाय ॥ जोगभ्रष्टधनवंतशुचि, तिनघरजनमतुआय ॥ ४१ ॥

अथवायोगिनामेवकुलेभवतिधीमताम् ॥
एतद्धिदुर्लभतरंलोकेजन्मयदीदृशम् ॥ ४२ ॥

टीका– अथवा हेअर्जुन जे जोगाभ्यासी है. बुद्धिवंत है तिनकै कुलविषै वह जोगभ्रष्टी उपजै थै यालोक विषै ऐसौ जोगभ्रष्टकौ जन्म बहुत दुर्लभ है. ॥ ॥ दोहा ॥ बुद्धिवंतजोगीकुलनि, आनिलेतअवतार ॥ जन्मलतऐसैघरनि, दुर्लभहैनिरधार. ॥ ४२ ॥

तत्रतंबुद्धिसंयोगंलभतेपौर्वदेहिकम् ॥
यततेचततोभूयःसंसिद्धौकुरुनंदन ॥ ४३ ॥

टीका– हेअर्जुन तहां जन्म पावै उपरांत फेर वहै पूर्वजन्मकौ बुद्धिसंयोगकौं पावै तब फिरि जोगासिद्धिको जतन करै. ॥ ॥ दोहा ॥ ति-

नहूपाहिलीदेहकौं, लहतबुद्धिसंजोग ॥ जतनकरतहैसिद्धिकौं, बहुविधि-साधनयोग ॥ ४३ ॥

पूर्वाभ्यासेनतेनैवह्रियतेह्यवशोऽपिसः ॥
जिज्ञासुरपियोगस्यशब्दब्रह्मातिवर्त्तते ॥ ४४ ॥

टीका– हेअर्जुन जो याकौ पूर्वाभ्यास है सो यापैं वह कार्य करावै विषयनतैं निवृत्तिकरि ब्रह्मपरायन करै ओर जोगरूप जानिवैकी इच्छा करै अरु जोग पायौ नहीं ऐसो पुरुष जो कबहूं जोगविषै प्रवेशमात्रहू करै अरु कदाचित् जौ काहू पापतैं जोगभ्रष्ट होय तऊ वेदोक्त कर्मफलतैं अधिक फल पाइकै मुक्त होइ तौ पूर्वाभ्यासतैं जोगकौं जतन करत मुक्त-होय. ताकौं कहा कहनौं. ॥ ॥ दोहा ॥ सौतौअपनौंबसनहीं, हैपहिलौ-अभ्यास ॥ तातैंउपजैजोगतूं, ब्रह्मसिंधुमैंवास ॥ ४४ ॥

प्रयत्नाद्यतमानस्तुयोगीसंशुद्धकिल्बिषः ॥
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततोयातिपरांगतिम् ॥ ४५ ॥

टीका– हेअर्जुन जो जोगाभ्यासी जोगविषै अधिकार ताहीतैं निहपाप होइ सो जोगाभ्यासी अनेक जन्मकै योगतैं ज्ञानी ह्वैकै श्रेष्ठगति-कौं प्राप्त होय. ॥ ॥ दोहा ॥ जोगीजोजतनाहिकरै, डारैसबअवधोय ॥ बहुतजन्मसिद्धीलहै, ताहिपरमगतिहोय ॥ ४५ ॥

तपस्विभ्योऽधिकोयोगीज्ञानिभ्योऽपिमतोधिकः ॥
कर्मिभ्यश्चाऽधिकोयोगीतस्माद्योगीभवार्जुन ॥ ४६ ॥

टीका– हेअर्जुन कृच्छ्र चांद्रायण व्रत करै ऐसे जे तपस्वीहै तिनतैं अरु जे शास्त्रवंत ज्ञानीहै तिनतैं अरु जे पूर्तादिक कहियै यज्ञ वापी कूपादिक कर्म तिनकौं जे करतहै तिनतैं योगी श्रेष्ठहै. तातैं तुहुं योगी होहु ॥ ॥ दोहा ॥ तपसीहूतैंजोअधिक, ज्ञानीहूतैंमानि ॥ कर्मनिहूंतैंहैंअधिक अर्जुनजोगहिजानि ॥ ४६ ॥

योगीनामपिसर्वेषांमद्गतेनांतरात्मना॥
श्रद्धावान्भजतेयोमांसमेयुक्ततमोमतः ॥ ४७ ॥

टीका— हेअर्जुन सकल जोगिनविषै वहै जोगी श्रेष्ठहै. जाको आत्मा मोविपैहै. अरु मोकौं श्रद्धायुक्त व्हैकै भजैहै. सोवह मेरे भक्तहै. अरु मेरे मततैं वह सवनतैं श्रेष्ठहै.॥ ॥ दोहा॥जोजोगीराषैमनहिं, मोंमैंनिश्चलभाय ॥ श्रद्धायुतमोकौंभजै, सोसवतैंअधिकाय ॥ ४७ ॥

कर्मज्ञानमतयोगतैं भगतिसबनिसिमौर ॥तिनअर्जुनहौंवसाकियौ मोविनुछिनुनहिओर ॥ १ ॥ शुद्धचित्तसंन्यासतैं ध्यानविनाकिहिभाय॥मुक्तिहोययातैंकह्यौ ध्यानछठेअध्याय ॥ २ ॥ सोइध्याननिश्चैकह्यौ मनमेंआनंदराम ॥ जाहिनिरंतरकैकीयै होइहैआतमराम॥ ३ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दोहासहितभाषाटीकायां अभ्यासयोगोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु.

॥ श्री भगवानु वाच ॥

मय्यासक्तमनाःपार्थयोगंयुंजन्मदाश्रयः ॥
असंशयंसमग्रंमांयथाज्ञास्यसितच्छृणु ॥ १ ॥

टीका— हेअर्जुन तेरो मन मोविषै आसक्त करिकैं राषि अरु मेरो आसरो गहिकै जोगजुक्त व्हैकै जाभांति सबही मेरे स्वरूपकौ जानैगो सोसुनि. ॥ ॥ दोहा ॥ मेरोईकरआसरौ, मोहीमैंचितराषि ॥ मोकौंजानैसत्यवह यौंसमझाऊंभापि ॥ १ ॥

ज्ञानंतेहंसविज्ञानमिदंवक्ष्याम्यशेषतः ॥
यज्ज्ञात्वानेहभूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ २ ॥

टीका— हेअर्जुन मैं तोकौं सबही ज्ञान विज्ञान सहित कहतहौं जाके जानेतै और जानिवौ कछु रहै नाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञानअरुविज्ञानहु, तोकौंकहौंवषानि ॥ जाकेजानैजानिवौ, कछुनरहतहैआनि ॥ २ ॥

मनुष्याणांसहस्त्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धये ॥
यततामपिसिद्धानांकश्चिन्मांवेत्तितत्वतः ॥ ३ ॥

टीका– हेअर्जुन मनुष्यनके सहस्रनमैं केतेक पुरुष ज्ञानकै लीये जतन करत है. अरु जे ज्ञानके अर्थ जतन करतहै तिनहूमैं मोकौं तत्वतैं जानैं ऐसो पुरुष कोऊ एकहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जतनकरतहैंसिद्धकौं, एकहजारनमांहि ॥ तिनहूंमैंकोऊलहै, बहुतलहतहैनाहिं ॥ ३ ॥

भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच ॥
अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥

टीका– हेअर्जुन मेरी प्रकृति आठ भांतिकी है. भूमि १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ मनकहिये अहंकार ६ बुद्धिकहै महत्तत्व ७ अहंकारकहै अविद्या ८ ऐसैआठभांतिहै.॥ ॥ दोहा ॥ भूमिनीरपावकपवन, अंबरमनबुद्धिमान ॥ अहंकारहैआठवा, मायाभेदनिदान ॥ ४ ॥

अपरेयमितस्त्वन्यांप्रकृतिंविद्धिमेपराम् ॥
जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगत् ॥ ५ ॥

टीका– हेअर्जुन,जु यह आठभांतिकी मेरी मायारूप प्रकृति कही ताकौं तू अपरकहै अधम जानि अरु यातैं ओर दूसरी जीवरूप उत्तम प्रकृति जानि जिनि यह जगतधर्योहै. ॥ ॥ दोहा ॥ मायामेरीएक,यह,जिनिजीत्यौसंसार ॥ साचीमनमैंजानिलै, जीयहुतैनिरधार ॥ ५ ॥

एतद्योनीनिभूतानिसर्वाणीत्युपधारय॥
अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवःप्रलयस्तथा ॥ ६ ॥

टीका– हेअर्जुन एसकल भूत प्रानी मेरी इन दोऊ प्रकृतिनतैं उपजै है ऐसै तूं समुझि तातैं सकल जगतको कर्त्ता मैंही हौं अरु संहारहूकौ कर्ता मैंही हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ मायातैंउतपन्नहै, सबैंजीवइहिंदाय ॥ हौंउपजाऊंजंतुसब, नासकरौंचितचाय॥ ६ ॥

मत्तःपरतरंनान्यत्किंचिदस्तिधनंजय ॥
मयिसर्वमिदंप्रोतंसूत्रेमणिगणाइव ॥ ७ ॥

टीका– तातैं हेअर्जुन मोतैं श्रेष्ठ और कछु नाहीं. सृष्टि अरु संहारकौं कर्ता मैंहौं अरु स्थितीहूकौं कर्ता मैंहौं. जैसे सूत्रविषै सबमनिके पोए हौंहि तैसैं यह जगत मोविषै पोयोहै. मेरी आस करै रहै.॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनमोतैंजोपरै, औरवातजिनिजानि ॥ पोयेमनीया सूतमैं, त्यौंमोमधिजगमानि ॥ ७ ॥

रसोहमप्सुकौंतैयप्रभाऽस्मिशशिसूर्ययोः ॥
प्रणवःसर्ववेदेषुशब्दःखेपौरुषंनृषु ॥ ८ ॥

टीका– हेअर्जुन जलविषै रस मैहीहौं. और चंद्रमा अरु सूरजविषै जोतिरूप मैहीहौं. अरु सर्व वेदविषै ॐकार मैंहूं आकाशविषै शब्दमैंहूं पुरुषनविषै पुरुषार्थ मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ चंद्रसुरजकीजोतिहूं, जलरसप्रनवहुवेद ॥ गगनसवदवलनरनकौं, सवहीमेरोभेद. ॥ ८ ॥

पुण्योगंधःपृथिव्यांचतेजश्चास्मिविभावसौ ॥
जीवनंसर्वभूतेषुतपश्चास्मितपस्विषु ॥ ९ ॥

टीका– हेअर्जुन पृथ्वीविषै पुण्य कहै निर्विकार गंधहै सो मैंहौं. अरु अग्निविषै तेज मेरो स्वरूप है. सकल भूतनविषै द्वंद्व सहनभूत तपस्या मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ गंधजुहौंहीभूमिमैं,हौं पावकमैंतेजु ॥ जीवनहूकोजीवहौं, तपनंनितपलपिलेजु ॥ ९ ॥

बीजंमांसर्वभूतानांविद्धिपार्थसनातनं ॥
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मितेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥

टीका– हेअर्जुन सकल भूतनको सनातन बीज मोकौं जानि जातै सकल सृष्टि उपजैहै. अरु बुद्धिवंत जेहै तिनकी बुद्धि मैहौं. जे तेजस्वीहै

तिनको तेज मैंहौं. ॥ ॥ दोहा॥ सबजीवनकोबीजहौं, मोकौंजानिजेलेहु ॥ बुद्धिवंतमैंबुद्धिहौं, सवतेजनकौगेहु ॥ १० ॥

बलंबलवतामस्मिकामरागविवर्जितम् ॥
धर्माविरुद्धोभूतेषुकामोऽस्मिभरतर्षभ ॥ ११ ॥

टीका– हेअर्जुन बलवंतहै तिनविषै अभिलाषा तृष्णारहित जो बलहै सो मैंहौं स्वधर्मको अविरोधि अरु अपनी स्त्रीविषै पुत्र उपजावै; ऐसो जु काम सौं मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ बलबलवंतनकौजुहौं, कामरागतितनाहिं ॥ कामरूपहीहौंजुहूं, धर्मसवैमोहिमांहिं. ॥ ११ ॥

येचैवसात्विकाभावाराजसास्तामसाश्चये ॥
मत्तएवेतितान्विद्धिनत्वहंतेषुतेमयि ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन जे सात्विक भाव शमदमादिकहै. अरु जेराजसभाव हर्षादिकहै अरु जे तामसभाव भयशोकादिकहै ते सबही मोहीतैं भये जानि मेरी प्रकृतिके जे गुनहै तिनतैं उपजैहै. तथापि मैं उनविषै नाहींहौं मैं उनकै आधीन नाहीं अरु वेऊ मोंमैंहैं. मेरे आधीन व्हैकै मोमैं वर्तैंहै. ॥ ॥ दोहा ॥ राजसतामससत्वकै, जेहैसिगरेभाय ॥ एसबमोमैबसतहै, मोहीइनसौंचाय ॥ १२ ॥

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिःसर्वमिदंजगत् ॥
मोहितंनाभिजानातिमामेभ्यःपरमव्ययम् ॥ १३ ॥

टीका– हेअर्जुन एपहिले कहे जे काम लोभादिक त्रिगुणस्वभाव तिनही संसार मोहित कर्योहै तातैं कोऊ मोकौं जानत नाहीं काहेतैंकि मैं इन भावतैं परैहौं. इनको मैं नियंताहौं. अरु अव्यय कहे. निर्विकारहैं तातैं जानत नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ तीन्यौगुनकेभाइजे, तिनमोह्यौसंसार ॥ मोकौंकोहूनाहिंलखै,इनसैंपैलैपार. ॥ १३ ॥

दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया ॥

मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरंतिते ॥१४॥

टीका– हेअर्जुन यह मेरी माया बहुत अद्भुतहै त्रिगुणमयीहै. अपारहै. ऐसी प्रसिद्धहै. तथापि जे मोहीकौं भजैहै भक्तहै तेपुरुष या दुस्तरहूं मायाकौं तजै तब मोकौं जानि. ॥ ॥ दोहा ॥ मेरीमायागुनमयी, दुस्तरतरीनजाय ॥ जोकोउआवैमोसरनि, सोजुतरैसंसार ॥ १४ ॥

नमांदुष्कृतिनोमूढाःप्रपद्यंतेनराधमाः ॥
मााययापहृतज्ञानाआसुरंभावमाश्रिताः ॥ १५ ॥

टीका– हेअर्जुन जे पापीहै मनुष्यनमैं अधमहै ते मोकौं भजै नाहीं काहेतें कि मेरी मायानैं हर्‍योहै ज्ञान जिनकौ अरु दंभ दर्प अभिमान क्रोध कठोरता ऐसै असुरभावकौं प्राप्त भयेहै तातैं भजै नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ पापीमूरषजेजगत, तेनाहिंपावतमोहि ॥ ज्ञानजुमायाकरिहर्‍यौ, असुरगर्वमैंपोहि. ॥ १५ ॥

चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिऽनोर्जुन ॥
आर्तोजिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभ ॥१६ ॥

टीका– हेअर्जुन जिन जन्मांतरविषै पुन्यकर्‍योहै. ऐसे जे चारिभांतिकै पुरुष मोकौं भजैहै. ते कौनकौन एक दुषी एक आत्मज्ञान जानिवेकी इच्छा करै सो एक अर्थकी कांछा करै सकाम होय सो अरु एकज्ञानी. ॥ ॥ दोहा ॥ पुन्यवंतजेच्यारविधि, मोहिभजतचितऐन ॥ ज्ञानीयोगीकामयुत विज्ञानीसुनिवैन ॥ १६ ॥

तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते ॥
प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः ॥ १७ ॥

टीका– हेअर्जुन इन चारि विधिके भक्तनमैं ज्ञानी अति श्रेष्ठ है काहेतेंकि सदा मोहविषै युक्त है. अरु एक मोहिविषै अनन्यभक्ति है जाकौं तातैं हौं ज्ञानीकौं प्रिय हौं अरु एज्ञानी मोंकौं प्रियहैं. ॥ ॥दोहा॥ ज्ञानी-

जो भक्ताहि करै, सो सबतैं अधिकाय ॥ ज्ञानीकौं वल्लभजुहौं, ज्ञानी मोहि सुहाय ॥ १७ ॥

उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतं ॥
आस्थितःसहियुक्तात्मामामेवानुत्तमांगतिम् ॥१८॥

टीका– हेअर्जुन एसब अपनी अपनी ठौर उत्तमहै पै ज्ञानी मेरोही स्वरूपहै. ऐसो मेरो मतैं निश्चयहै. सो ज्ञानी मोहीविषै युक्तचित्तहै.अरु सबतैं उत्तमगति ऐसोजुमैं ता मोहीकौं आश्रित भयौहै. ॥ ॥ दोहा ॥ मेरे मत ए सब बडे, ज्ञानी मोकौं जानि ॥ उत्तमगति पाईजु तिन, प्रलय लेतु नहिं मानि ॥ १८ ॥

बहूनांजन्मनामंतेज्ञानवान्मांप्रपद्यते ॥
वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन बहुत जन्मकै अंत ज्ञानी होयसो मोकौं पावै. यह सब जगत वासुदेवहै. ऐसी दृष्टिकरि जो मोकौं भजैसो महापुरुष दुर्लभहै. ॥ दोहा ॥ बहुजन्मनि मोकौं लही, ज्ञानवंत रे मित्त ॥ वासुदेव सबमैं लखै, सो दुर्लभहै नित्त ॥ १९ ॥

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाःप्रपद्यंतेऽन्यदेवताः ॥
तंतंनियममास्थायप्रकृत्यानियताःस्वया ॥ २० ॥

टीका–हेअर्जुन पुत्र स्त्री धनइत्यादि भांति भांतिकी कामनातैं हरचौहै. मन,ज्ञान जिनकौ ते पुरुष भांति भांतिकै नेमधरिकै अपनी पूर्व वासनातैं भांति भांतिके देवता मानतहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ नष्टज्ञानबहुकामना, भजै अन्यदेवान ॥ तिहितिहि नियम रु वासना, स्वस्वप्रकृति उन्मान॥२०॥

योयोयांयांतनुंभक्तःश्रद्धयार्चितुमिच्छति ॥
तस्यतस्याचलांश्रद्धांतामेवविदधाम्यहं ॥ २१ ॥

टीका– हेअर्जुन जोजो पुरुष जाजा देवताकी मूर्तिकौं श्रद्धाकरिकै

भजेहै. ताता पुरुषकी तिनतिन मूर्त्तिविषै ताही श्रद्धाकौं मैंही दृढ करतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ श्रद्धाजु त जे पूजहिं, जा देवनि चितलाय ॥ ताकों ताहीमां झहौं, श्रद्धा देऊं चढाय ॥ २१ ॥

सतयाश्रद्धयायुक्तस्तस्याराधनमीहते ॥
लभतेचततःकामान्मयैवविहितान्हितान् ॥ २२ ॥

टीका—हे अर्जुन सो पुरुष ताही श्रद्धासौं युक्तहोइकै आन देवताकी मूर्तिकौं आराधैहै. अरु आराधेतैं कामनाकौ पावैहै. पै तिन तिन कामनाको दाता मैंही हौं सब देवता मेरी मूर्तिहै. यातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ सोवाही श्रद्धा हितें, पूजत वाही देव, देवजुहौं ही कामना, वह जानतनाहिं भेव॥२२॥

अंतवत्तुफलंतेषांतद्भवत्यल्पमेधसां ॥
देवान्देवयजोयांतिमद्भक्तायांतिमामपि ॥ २३ ॥

टीका—हे अर्जुन तिन अल्प बुद्धिनकौं मैं आन देवता रूप ह्वैकै फल देतहौं सोफल विनाशकौं पावैहै. तातें जो देवतानकौं भजैहै ते देवतानकौं पावैहै. वे देवता अंत विनाशकौं पावैहै. अरु जे मोकौं भजैहै. ते मोकौं पावै. मैं अनादि हौं अनंत हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ फल थोरौं पावतुजुवै-विना ज्ञानके मूढ, ॥ देवभक्त देवनमिलै मेरी मोकौं गूढ ॥ २३ ॥

अव्यक्तंव्यक्तिमापन्नंमन्यंतेमामबुद्धयः ॥
परंभावमजानंतोममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥

टीका—हेअर्जुन अल्पबुद्धिहै ते प्रपंचरहित मेरे रूपकौ मनुष्य मत्स्य-कूर्मादिक रूप प्राप्तभयौ मानतहै. ते मेरे अविनाशी सर्वोत्तम ऐसे स्वरूपकौं नाहीं जानत. ॥ ॥ दोहा ॥ जाकै थोरी बुद्धिहै, जानतप्रगट न मोहि॥ अविनाशी उत्तमजुहौं, सबतैं न्यारोजोहि ॥ २४ ॥

नाहंप्रकाशःसर्वस्ययोगमायासमावृतः ॥
मूढोयंनाभिजानातिलोकोमामजमव्ययम् ॥ २५ ॥

टीका—हेअर्जुन मै सबकै प्रत्यच्छ नाहीं होतहौं. अरु जे मेरे भक्तहै तिनहीकै प्रत्यच्छ होतहौं. क्यौंकि सब लोकनकौं मायाको आवरनहै तातैं मूढहै. ताहीतैं ए लोक मोकौं अज अविनाशी जानत है नाहीं.॥ ॥ दोहा ॥ ढप्यौजु मायोयागहौं, काहूकौ न प्रकास ॥ मूरष मोय न जानहिं, अजर अमरसुखवास ॥ २५ ॥

वेदाहंसमतीतानिवर्त्तमानानिचार्जुन ॥
भविष्याणिचभूतानिमांतुवेदनकश्चन ॥ २६ ॥

टीका—हेअर्जुन जे स्थावर जंगम प्राणी आगै भये अरु अब जेहै अरु होहिंगे तिनसबनकौं हौं जानौंहौं. अरु मोकौं कोऊ जानत नाहीं. मेरी मायासौं मोहितहै तातैं.॥ ॥ दोहा ॥ जे बीते जानततिन्है, वर्तमान त्यौं जोय॥ हौं न हार सबको लषौं, मोहि लषैंनहिं कोय ॥ २६ ॥

इच्छाद्वेषसमुत्थेनद्वंद्वमोहेनभारत ॥
सर्वभूतानिसंमोहंसर्गेयांतिपरंतप ॥ २७ ॥

टीका—हेअर्जुन इच्छाद्वेषहै रागद्वेष तिनतैं उपज्यौ सुषदुषादिक द्वंद्वमोह ता करिकै सृष्टिविषै सब प्रानी मोहकौं पावतहै.॥ ॥ दोहा ॥ रागद्वेषअग्यानतैं, सबैजु मोहित होत ॥ मानलेतहै आपकौ, हम सुषदुष निउदोत ॥ २७ ॥

येषांत्वंतगतंपापंजनानांपुण्यकर्मणाम् ॥
तेद्वंद्वमोहनिर्मुक्ताभजंतेमांदृढव्रताः २८ ॥

टीका—हेअर्जुन जे पुण्यात्माहै अरु जिनके पाप दूर भयेहै ते पुरुष द्वंद्व मोहतें छूटैहै. मोकौं निश्चल भक्ति करि भजैहै.॥ ॥ दोहा ॥ पुन्यकिये जिन जगतमैं, दूरिकिये जिन पाप ॥ तेही छूटत मोहसौं, मोकौं पावत आप ॥ २८ ॥

जरामरणमोक्षायमामाश्रित्ययतंतिये ॥
तेब्रह्मतद्विदुःकृत्स्नमध्यात्मंकर्मचाखिलम् ॥ २९ ॥

टीका– हेअर्जुन जे पुरुष जरामरनके भयदूरि करिवेकौं मेरो आश्रय करि जतन करतहै. तेब्रह्मकौं जानैहै. देहादिरहित शुद्ध आत्माकौं जानै. अरु सकल कर्महूकौं जानैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जरामरनकीहानिकौं, जो को-ऊ करत उपाय ॥ जाननतेअध्यातमहि, ब्रह्म कर्मकेभाय ॥ २९ ॥

साधिभूताधिदैवंमांसाधियज्ञंचयेविदुः ॥
प्रयाणकालेऽपिचमांतेविदुर्युक्तचेतसः ॥ ३० ॥

टीका– हेअर्जुन जे पुरुष मोकौं अधिभूत अधिदैवत अरु अधियज्ञ ऐसे जानै ते युक्तचित्त ऐसोही प्रयान कालकहै. मरन काल ताहूविषे मोकौं जानैं. ॥ ॥ दोहा ॥ अधिदैवअधिभूतसौं, अधियज्ञमुहिमित्त ॥ मरनसमैं भूलत नाहिं, जोगी मोकौं चित्त ॥३०॥ भजिवे लायक रूप निज, कह्यौ सातमैं ध्याय, विनाजतन ज्ञानहि लहै, कृष्णभक्ति अधिकाय ॥ १ ॥ चरना-आनंदरामहै, यहै जोगविज्ञान, प्रभु मेरी विनती यहैं, भक्ति देहु भगवान॥२॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दोहासहितभाषाटीकायां ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः॥७॥

॥ अर्जुन उवाच ॥

किंतद्ब्रह्मकिमध्यात्मंकिंकर्मपुरुषोत्तम ॥
अधिभूतंचकिंप्रोक्तमधिदैवंकिमुच्यते ॥ १ ॥

टीका– अव अर्जुन कहतहै कि हेकृष्ण ब्रह्मसो कहा. अध्यात्मसो कहा. कर्म सो कहा अधिभूत सो कहा. अरु अधिदैव सो कहा. ॥ ॥ दोहा ॥ अध्यात्मको ब्रह्म को, कर्म कहा जगदीस ॥ अधिदैवता अधिभूत तुम, जानत विश्वैवीस ॥ १ ॥

अधियज्ञःकथंकोत्रदेहेऽस्मिन्मधुसूदन ॥
प्रयाणकालेचकथंज्ञेयोसिनियतात्मभिः ॥ २ ॥

टीका– हेकृष्ण यादेहविषै अधियज्ञसो कहा. अरु जिनकै मनमैं निह

चौहै तेमरनसमैं तुमकौं कैसैं जानै. ॥ ॥ दोहा ॥ अधियज्ञहि कासौं कहत, यादेहीमैं कौन ॥ कैसै तुमकौं जानियै, प्रान करै जब गौन ॥ २ ॥

अक्षरंब्रह्मपरमंस्वभावोध्यात्ममुच्यते ॥
भूतभावोद्भवकरोविसर्गःकर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥

टीका– श्रीकृष्ण कहतहै कि हेअर्जुन परम अछर अविनासीसो ब्रह्म कहियै अरु स्वभाव कहै जीवसो अध्यात्मकहियै अरु प्रानीनकी उत्पत्ति उद्भवकौं करै ऐसोजु विसर्ग कहैहै यज्ञादिक सो कर्म कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ अच्छरसो ब्रह्महि कहत, अध्यातमजु सुभाय ॥ जोउपजावत जगतकौं, सोई कर्म सदाय ॥ ३ ॥

अधिभूतंक्षरोभावःपुरुषश्चाधिदैवतम् ॥
अधियज्ञोऽहमेवात्रदेहेदेहभृतांवर ॥ ४ ॥

टीका– हेअर्जुन जो छर कहै विनाशीहै ऐसोजु देहादिक भाव सौतौ अधिभूत कहियै. अरु जे इंद्रियनके अधिष्ठाता देवता तिनकौ अधिपति ऐसो जुवैं राजपुरुषसो जीव अधिदैवत कहियै अरु यादेहविषै अंतर्यामी स्वरूप ऐसो जुमैं सो अधियज्ञ कहियै. ॥ ॥दोहा॥ देह जु है अधिभूत यह, अधिदैवत है जीव ॥ सबदेहिनकी देहमैं, हौंअधियज्ञ सुपीव ॥ ४ ॥

अंतकालेचमामेवस्मरन्मुक्त्वाकलेवरं ॥
यःप्रयातिसमद्भावंयातिनास्त्यत्रसंशयः ॥ ५ ॥

टीका– हेअर्जुन अंतकालहु विषै मेरो स्मरन करत शरीरकौं तजैसो पुरुष मेरे स्वरूपकौं पावै यामैं संदेह नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ अंतसमैं देहहि तजै, मोसुमिरनजो होय ॥ सो तबही मोकौं मिलै, तहां न संशय कोय ॥५॥

यंयंवाऽपिस्मरन्भावंत्यजत्यंतेकलेवरं ॥
तंतमेवैतिकौंतेयसदातद्भावभावितः ॥ ६ ॥

टीका– हेअर्जुन यह जीव जैसौ जैसौ स्मरन करतही शरीरकौं त-

जे तैसों भाव पावै क्यौंकि अंतकालविषै स्मरन कर्यौ जो भाव ताही वासनाकौं संसारहै यातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ प्रानी जब देहहि तजै, सुमिरै जाई काज ॥ यामैं संसो नांहिनैं, पावै सोई साज ॥ ६ ॥

तस्मात्सर्वेषुकालेषुमामनुस्मरयुद्ध्यच ॥
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयः ॥ ७ ॥

टीका– हेअर्जुन यातैं मेरो सदासर्वदा स्मरन करि अरु शुद्ध चित्त विनु स्मरन होतनाहीं तातैं शुद्ध चित्तकी लीयैं युद्धादिक आपनौं धर्महै सोतूं करि. याभांति मेरेविषै मनबुद्धिकौं अर्पन.करैगौतौ मोहीकौं पावैगौ यामैं संदेह नाहीं.॥ ॥ दोहा ॥ मेरो सुमिरन नित्य करि, युद्धकरै किनमित्त ॥ अर्पै मोमैं बुद्धिमन, तामैं आन उचित्त ॥ ७ ॥

अभ्यासयोगयुक्तेनचेतसानान्यगामिना ॥
परमंपुरुषंदिव्यंयातिपार्थानुचिंतयन् ॥ ८ ॥

टीका– हेअर्जुन अभ्यासयोग युक्तहै निरंतर आत्मज्ञानप्रवाहसो अभ्यास कहियै सोई योग कहे उपाय ताकरिकै युक्त कहै. एकाग्र अरु और काहूविषयविषै न चलै ऐसोजु चित्त ताकरिकै परम पुरुषकौ चिंतवन करैतो ताही पुरुष परम पुरुषकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोग ओर अभ्यासमैं, जाको चितथिरहोय ॥ मो चिंताराषै सदा, पुरुषहि पावै सोय॥८॥

कविंपुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ॥
सर्वस्यधातारमचिंत्यरूपमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात्॥९

टीका– हेअर्जुन जापर परम पुरुषकौ स्मरन करियै सो परम पुरुष कैसोहै. कविकहै सर्वज्ञहै. अरु पुरातनहै अनादिसिद्धहै अरु सबको नियंता कहे प्रेरकहै. अरु सूछमतैं अतिसूछमहै. सबकौं पोषैहै. अरु जाकी महिमाकी अवधि नाहीं. अपारहै. यातैं अचिंत्यरूपहै. अरु अपनौं प्रकाशकरै. औरहूकौं प्रकाशकरै. यातैं आदित्यवर्णहै. अरु प्रकृतितैं परैहै.

॥ दोहा ॥ कविपुरानअनुशासिता, धातासूछिममानि ॥ भानूवरनतमतैं-
परै, अतिअचिंत्यमुहिमानि ॥ ९ ॥

प्रयाणकालेमनसाचलेनभक्त्यायुक्तोयोगबलेनचैव॥
भ्रुवोर्मध्येप्राणमावेश्यसम्यक्सतंपरंपुरुषमुपैतिदिव्यम् १०

टीका— हेअर्जुन ऐसे परम पुरुषकौं प्रयान कालहै मरन समैं भक्ति, युक्त व्हैकै योगकै बलतैं सुषम नाडिकै दोनौं भौंहनींकै बीच प्रानको आरोनप करिकै निश्चल मनकौं जो स्मरनकरै सो पुरुष ताही परम पुरुषकौं पावै. सो परम पुरुष कैसोहै दिव्यहै. प्रकाशरूपहै ॥ दोहा ॥मरनसमैंमनु थिरकरै, भक्तियोगबल पाय ॥ भृकुटीमधिप्रानाहिधरै, परमपुरुषमैंजाय १०

यदक्षरंवेदविदोवदंतिविशंतियद्यतयोवीतरागाः॥
यदिच्छंतोब्रह्मचर्यंचरंतितत्तेपदंसंग्रहेणप्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥

टीका— हेअर्जुन जाकौ वेदांतकै वेत्ता अछर कहैहै अरु जे वीतरागहै ते जतन करिकै ता अछर ब्रह्मकौं पावै अरु जाकै जानिवेकी इच्छा करिकै ब्रह्मचारी गुरुकुलविषै ब्रह्मचर्यनैं धरतहै सोपद तोसौंमैं संछेपतैं कहतहौं. अर्थ यह हैकि ताब्रह्मके पाइवेको उपाय कहतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ अक्षर जासौं कहतहै, वीतराग जहांजात ॥ ब्रह्मचर्य जाचाहतैं, तापदकी कहुं वात ॥ ११ ॥

सर्वद्वाराणिसंयम्यमनोहृदिनिरुद्ध्यच ॥
मूर्ध्न्यांधायात्मनःप्राणमास्थितोयोगधारणाम् ॥ १२

टीका— हेअर्जुन सर्वद्वारकहै इंद्रिय तिनकौ संजमकरिकै मनकौं हृदयविषै राखिकै अपनै प्रानकौं भौंहनींकै बीच राषिकै योगकी धारणा कहै. थिरताकौं करै. ॥ दोहा ॥ सब द्वारनकौं वस करै, मन रोकी हियमांहि- प्रानहि रोकै सीसमहिं, रहै धारणा गाहि ॥ १२ ॥

ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन् ॥

यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम् ॥ १३ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष एकाक्षरब्रह्म ॐकारकौं जपै अरु मेरो स्मरनकरै ऐसी भांति जो देहकौं तजै सो मोकौं पावै मुक्त होय. ॥ दोहा ॥ प्रनवअक्षरको जपकरै, समरै मोकौं नित्त इहिविधि जो देहहि तजै, लहैपरमगति मित्त ॥ १३ ॥

अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः ॥
तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्तस्ययोगिनः ॥ १४ ॥

टीका– हेअर्जुन जो अनन्य चित्तव्हैके सदा मेरो सुमिरनकरै सो पुरुष नितही जोगजुक्तहै. एकाग्रचित्तहै. तातैं वह मोकौं सुषहीतैं पावै. अरु ओर पुरुष पावै नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ अनन्यचित्तव्हैकैं करै, मेरोसुमिरनध्यान ॥ ताकौं मैं नित सुलभहौं, योगयुक्तसो जान ॥ १४ ॥

मामुपेत्यपुनर्जन्मदुःखालयमशाश्वतम् ॥
नाप्नुवंतिमहात्मानःसंसिद्धिंपरमांगताः ॥ १५ ॥

टीका– हेअर्जुन ऐसे जेमहात्माहै मेरे भक्तहै तेमोकौं पाइकै दुःखको घर अनित्यहै. ऐसोजु जन्मसुफिर पावै नाहीं काहेतैंकि परम सिद्धि कहै मोछ ताहीकौं प्राप्त भयेहै. यातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ महापुरुषसिद्धिहिलहै, मोमैंहोतजुलीन ॥ दुषकोघरजोजन्महै, तातैंहोतनदीन ॥ १५ ॥

आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावृत्तिनोऽर्जुन ॥
मानुपेत्यतुकौंतेयपुनर्जन्मनविद्यते ॥ १६ ॥

टीका– हेअर्जुन ब्रह्मलोक पर्यंत जेलोकहै. तेसबही फिरफिर जन्म पावैहै. काहेतैं ब्रह्मलोकहु विनाशीहै. यातैं येमोकौं पाइकै बहुरयौ जन्म नाहीं होतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मलोकलौंलोकजे, तिततैंआवनहोय ॥ अर्जुनमोकौंपाइकै, जन्मलहतनहिंकोय ॥ १६ ॥

सहस्त्रयुगपर्यंतमहर्यद्ब्रह्मणोविदुः ॥
रात्रिं युगसहस्त्रांतांतेऽहोरात्रविदोजनाः ॥ १७ ॥

टीका– हेअर्जुन चार जुगको एक जुग ऐसे हजार युगपर्यंत ब्रह्माको एकदिनहै. और तितनीही रात्रि है ऐसी जोगकै बलसौं जानैं. ते सर्वज्ञपुरुषरात्रि दिनकौं जानैहै. ॥ दोहा ॥ सहस्रयुगनके अंतलौं, ब्रह्माकौं दिन जानि ॥रात्यौ तितनी होतहै, ज्ञानी कहै वषानि ॥ १७ ॥

अव्यक्ताद्व्यक्तयःसर्वाःप्रभवंत्यहरागमे ॥
रात्र्यागमेप्रलीयंतेतत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥ १८ ॥

टीका– हेअर्जुन अव्यक्तकहै कारनरूप जो ईश्वर तातैं व्यक्तकहै चराचर प्रानीते प्रगट होतहै तब ब्रह्माको दिन होतहै. अरु जब फेरि ब्रह्माकी रात्री होतहै तब प्रानी मात्रताही अव्यक्तसंज्ञकारनरूप ऐसोजु ईश्वर ताविषै लीनहोतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ब्रह्माकेदिनहोतही, प्रगटतयहसंसार ॥ निसिकैआयैजातुहैं, मायामैतावार ॥ १८ ॥

भूतग्रामःसएवायंभूत्वाभूत्वाप्रलीयते ॥
रात्र्यागमेवशःपार्थप्रभवंत्यहरागमे ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पहिलौ हुतौं ऐसोजु चराचर प्रानीनकौं समूह सों यह दिनकै आगमविषै उपजिकै रात्रिकै आगमविषै प्रलय होतुहै. फिरि दिनकै आगमविषै कर्मनिकै आधीनव्है उपजतुहै. ॥ ॥ दोहा ॥ वारवारउपजतुसबै, जीवनसुनुरेमित्त ॥ ब्रह्माकेदिनरैनमैं, वहेजातहैनित्त ॥

परस्तस्मात्तुभावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः ॥
यःससर्वेषुभूतेषुनश्यत्सुनविनश्यति ॥ २० ॥

टीका– ऐसे सकललोक सृष्टिकी अनित्यता कहिकै अब परमेश्वरकी नित्यता कहतुहै. हेअर्जुन ताचराचर प्रानीनिको कारनरूप जो अव्यक्तहै ताहूकौं परम कारनरूप विलच्छन औरहु अव्यक्त है सो इंद्रियादिकनके

अगोचर भावहै. सनातनकहै अनादिहै अरु कार्या कारन मात्र सवही विनसैं तऊ यह परमेश्वर विनसै नाहिं. ॥ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मजुमायातैंपरै इंद्रीगह्योनजाय ॥ सवजीवनकैनसतही, सोकवहूंननसाय ॥ २० ॥

अव्यक्तोऽक्षरइत्युक्तस्तमाहुःपरमांगतिं ॥
यंप्राप्यननिवर्त्ततेतद्धामपरमंमम ॥ २१ ॥

टीका– हेअर्जुन सो अव्यक्त अक्षरब्रह्म कहियै ताहीकौं विवेकी परमग तिकहतुहै. जाकौ पाइकै फिरि ॥ या संसारविषै आव नहीं सो मेरो परम धाम कहियै.॥ ॥ दोहा ॥ सोईअच्छरपरमगति, अव्यक्तौपुनिसोय॥ फिरैनजाकौंपाइकै, परमधाममम जोय ॥ २१ ॥

पुरुषःसपरःपार्थभक्त्यालभ्यस्त्वनन्यया ॥
यस्यांतःस्थानिभूतानियेनसर्वमिदंततम् ॥ २२ ॥

टीका– हेअर्जुन सोमैं परम पुरुषहौं तामोकौं अनन्यभक्ति करिकै पावै. अन्यथा पावैनहीं. सोपरम पुरुष कैसो है जाविषै प्रानी मात्र रहतु है. जिनकरिकै यह संसार सवही व्याप्त भयोहै.॥दोहा॥ भक्तिकरैतेपाइयै परमपुरुषसोंजानि ॥ जामैसिगरेजीवहै, जगसवरच्योरुआ-नि ॥ २२ ॥

यत्रकालेत्वनावृत्तिमावृत्तिंचैवयोगिनः ॥
प्रयातायांतितंकालंवक्ष्यामिभरतर्षभ ॥ २३ ॥

टीका– हेअर्जुन जासमैं जोगेश्वर देह छांडै परलोक जाइकै फिरि आवै नहीं. अरु जासमैं जोगेश्वर देह छांडै परलोक जाइकै फिरि आवै ऐसे समयकौं काल कहतहौं. ॥ दोहा ॥ फिरिआवतजाकालमुनि, नाहिं-आवतजाकाल ॥ अर्जुनतोसौंकहतहौं, सुनियहसीषविसाल ॥ २३ ॥

अग्निर्ज्योतिरहःशुक्लःषण्मासाउत्तरायणम् ॥
तत्रप्रयातागच्छंतिब्रह्मब्रह्मविदोजनाः ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन प्रयानके मार्ग दोय है. एक उत्तरायन एक दच्छि-

नायन, तहां उत्तरायन मार्ग विषै अग्निर्ज्योतिदिन सुकलपच्छ अरु छमहिने है इन सबहिनके देवता है. तामार्गविषै प्रयान करै ते परमेश्वरके उपासक ब्रह्मकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ अग्निर्ज्योतिदिनशुक्लषट्, उत्तरायनकेमास ॥ जातजुज्ञानीयासमैं, लहतब्रह्ममैंवास ॥ २४ ॥

धूमोरात्रिस्तथाकृष्णःषण्मासादक्षिणायनम् ॥
तत्रचांद्रमसंज्योतिर्योगीप्राप्यनिवर्तते ॥ २५ ॥

टीका– हेअर्जुन ओर दच्छिनायनविषै धूमहै रात्रिहै कृष्णपच्छिहै. छमहिनै है. चंद्रमाकी ज्योतिहै. इन सबहीनके देवताहै. तामार्गविषै जो कर्म जोगी प्रयान करै तौ स्वर्ग लोक पाइ कर्म फलको भोग करिकै फिरि संसारमैं आवै. ॥ ॥ दोहा ॥ धूमदिसादच्छिनअयन, कृष्णपच्छजे होय ॥ ससिमंडलयोगीलहै, फिरिआवैहैसोय ॥ २५ ॥

शुक्लकृष्णेगतीह्येतेजगतःशाश्वतेमते ॥
एकयायात्यनावृत्तिमन्ययावर्त्ततेपुनः ॥ २६ ॥

टीका– हेअर्जुन प्रकाशमय है. यातैं एक शुक्लमार्ग है. अरु अंधकारमयहै यातैं एक कृष्णमार्ग है ए दोनौ ज्ञानयोगी अरु कर्मयोगीकौं अनादिसिद्ध संसारके मार्ग है. इन दोउनमैं शुक्लमार्गसौं मोच्छकौं पावै, अरु कृष्णमार्गसौं फिरिफिरि आवै. ॥ ॥ दोहा ॥ शुक्लकृष्णगतीकही,ते संसारहिहोति ॥ फिरिआवतुहैएकगति, एकलहतहैजोति २६॥

नैतेसृतीपार्थजानन्योगीमुह्यतिकश्चन ॥
तस्मात्सर्वेषुकालेषुयोगयुक्तोभवार्जुन ॥ २७ ॥

टीका– हेअर्जुन जो योगी इन दोनौं मार्गनकौं मोच्छ अरु संसारके दाता जानै सो जोगी कबहू मोहन पावै. अरु सुषकै लीयै वह जोगीश्वर स्वर्गफल चाहै नाहीं. केवल परमेश्वर परायनहोय. तातैं अर्जुन तूं सदा योगयुक्त होहु. ॥ ॥ दोहा ॥ जोजानैदोऊगतिन, तोजोगीमोहनकोय ॥ जोगीव्हैअर्जुनतुहूं, सबकालनकौंजोय ॥ २७ ॥

वेदेषु यज्ञेषु तपस्सु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् ॥
अभ्येतितत्सर्वमिदंविदित्वायोगीपरंस्थानमुपैतिचाद्यं॥२८॥

टीका– हेअर्जुन वेदनिविषै जग्यनविषै तपस्याविषै दानविषै जो पुण्यकाल कहेहै तिन सबहिनसौं श्रेष्ठ ऐसो योगेश्वर पावै. अरु इनदोनौ मार्गनकी गति जानै सो पुरुष ज्ञानी ह्वैकै जगको मूल ऐसो जो परम पद ताकौं प्राप्त होय. ॥ ॥ दोहा ॥ वेदजज्ञतपदानकौ, फलजुकह्योहैमित्त॥ जोगीताफलसौंअधिक, रहैनैनदिनचित्त ॥ २८ ॥ सबफलकौयहसारफल, जोगीहरिसौंजोग. ॥ भक्तिकरैमोकौंमिलै, फलत्यागीकरिभोग ॥ २८ ॥ कृष्णचरनइकचित्तजे, जेजानैयेभाय ॥ ब्रह्मकर्मअधिभूतए कहेआठहेऽध्याय ॥ १ ॥ विनुकलेसइष्टहिलहै, महापुरुषयहजोग, ॥ आनंदरामप्रकाशकरी, कियैयथारथलोग ॥ २ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगोनाम अष्टमोऽध्यायः ॥८ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

इदंतुतेगुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवे ॥
ज्ञानंविज्ञानसहितंयज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेशुभात् ॥ १ ॥

टीका– श्रीकृष्ण वारवार मोसौं अपनोही माहात्म्य कहतुहै. ऐसे तूं मेरी निंदा नाहीं करत तातैं हेअर्जुन परम गोप्य अरु विज्ञान कहै. उपासना ताकरिकै सहित ऐसोजु ईश्वरपरायन ज्ञानसो यह तोसौं कहतहौं-जाकै जानै अशुभ कहै संसार तासौं मुक्त होइगो. ॥ दोहा ॥ अर्जुनतोसौंकहतुहौं, एकगुप्तयहवात॥समझैज्ञानविज्ञानकौं, लहैमुक्तिविख्यात ॥१॥

राजविद्याराजगुह्यंपवित्रमिदमुत्तमम् ॥
प्रत्यक्षावगमंधर्म्यंससुखंकर्तुमव्ययम् ॥ २ ॥

टीका– हेअर्जुन यह राजविद्याहै अरु गोप्यहै. तिनहीमैं अतिगोप्यहै. अतिपवित्रहै. प्रत्यक्षदृष्टफलहै. अरु धर्मरूपहै. सुखसौं कीजैए-

सोहै. अरु अव्यय कहे अच्छयफलहै. ॥ ॥ दोहा ॥ राजविद्यागुह्यमैं अतिपवित्रतूंजानि ॥ फलताकोप्रत्यछहै, करियैतैंसुखमानि ॥ २ ॥

अश्रद्दधानाःपुरुषाधर्मस्यास्यपरंतप ॥
अप्राप्यमांनिवर्त्ततेमृत्युसंसारवर्त्मनि॥ ३ ॥

टीका– याधर्मविषै श्रद्धा न करै ऐसै जे पुरुष ते ओर अनेक उपाव करै तऊ मोकौं पावै नाहीं अरु वारवार मृत्युजुक्त संसारमार्गविषै आवै. ॥ ॥ दोहा ॥ करिवेकौयाधर्मकौ, जाकेश्रद्धानाहिं ॥ तेमोकौंपावैनहीं, डोलतहैभवमांहिं ॥ ३ ॥

मयाततमिदंसर्वंजगदव्यक्तमूर्तिना ॥
मत्स्थानिसर्वभूतानिनचाहंतेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥

टीका– हेअर्जुन अव्यक्तमूर्ति कहे इंद्रियनके अगोचर ऐसीजु मेरी मूर्ति कहै स्वरूप ता कारनरूप मेरी मूर्त्ति करिकै यह सब जगत व्याप्त भयोहै. अरु ए सब चराचर प्रानी मोंमैं रहतु है अरु मैं काहूकौं आश्रय नाहीं हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ विस्तार्योसबजगतमे, मोहिनदेषैकोय ॥ सबैजीवमोमैंवसै, मोहिनतिनमैंजोय ॥ ४ ॥

नचमत्स्थानिभूतानिपश्यमेयोगमैश्वरम् ॥
भूतभृन्नचभूतस्थोममात्माभूतभावनः ॥ ५ ॥

टीका– हेअर्जुन मोविषै एसबप्रानी नाहीं ऐसै कहे कदाचित् तूं पूर्वोक्त श्लोकसौं विरोध मानैगो सो मेरे ऐश्वर्य योगकों तूं देषि मेरो ऐश्वर्ययोग अचिंत्यहै. यातैं विरोध नाहीं. अरु भूत प्रानीनको पालन करतहौं तऊ मैं भूत प्रानीनिमैं नाहीं रहतहौं निरहंकारहौं यातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ मौमैंकोऊनहिंवसै, यहईश्वरतादेषि ॥ उपजावतपालतजुहौं, नांहितिनमैंअवरेषि॥५

यथाकाशस्थितोनित्यंवायुःसर्वत्रगोमहान् ॥
तथासर्वाणिभूतानिमत्स्थानीत्युपधारय ॥ ६ ॥

टीका– हेअर्जुन वायु आकाश विषै रहतुहै अरु सर्व व्यापीहै तऊ वडोहै. तऊ आकाशसौं आसक्त नाहीं होत. अंगप्रत्यंग नाहीं यातैं तैसै सकल भूतप्रानी मेरेविषै है. ऐसे तूं जानि. मैं योगमायातैं असंगहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ जैसैंपवनआकाशमैं, विचरतहैंसबवार ॥ त्यौंमोंमैंसबजीवए, फिरतजानिनिरधार ॥ ६ ॥

सर्वभूतानिकौंतेयप्रकृतिंयांतिमामिकाम् ॥
कल्पक्षयेपुनस्तानिकल्पादौविसृजाम्यहम्॥ ७॥

टीका– हेअर्जुन प्रलयकालविषै सकल प्रानी मेरी त्रिगुनमयी प्रकृतिमैं लीन होतहै. फिरि सृष्टिकै समैं उनकौं मैही सिरजौंहौ. ॥ ॥ दोहा॥ मेरीमायामैंरही, प्रलयभयैसबजंतु ॥ कल्पआदिसिरजौतिन्है, मोमैंतिनकौअंतु ॥ ७ ॥

प्रकृतिंस्वामवष्टभ्यविसृजामिपुनःपुनः ॥
भूतग्राममिमंकृत्स्नमवशंप्रकृतेर्वशात् ॥ ८ ॥

टीका– हेअर्जुन अपनी प्रकृतिकै आश्रय सौं फेरि फेरि मैं जरायुज स्वेदज, अंडज, उद्भिज्ज इनचतुर्विध भूतग्रामकौं सिरजोहौं. ॥ ॥ दोहा॥ अपनीमायासंगले, सिरजतवारंवार ॥ मायाहीकैवसपर्‌यौ, रहैसदासंसार ॥ ८ ॥

नचमांतानिकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय ॥
उदासीनवदासीनमसक्तंतेषुकर्मसु ॥ ९ ॥

टीका– हेअर्जुन तिनकर्मनतैं कछु मोकौं बंधन नाहीं. मैं उदासीन हौं. अरु उन कर्मनितैं अलिप्तहौं. संबंध काहूसुं नाहिं. यातैं उदासीनहौं अरु सकल काम पुरेहौं यातैं अलिप्तहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनमोकौंकर्मवै, कर्मंहुबांधतनाहिं ॥ सदाउदासीरहतहौं, आसक्तनतिनमांहिं ॥ ९ ॥

मयाध्यक्षेणप्रकृतिःसूयतेसचराचरम् ॥
हेतुनानेनकौंतेयजगद्विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥

टीका– हेअर्जुन मैं अधिष्ठाता निमित्तरूपहौं तातैं प्रकृति सचराचर विश्वकौं सिरजोहौं. याहि कारनतैं यह जगत फिरि फिरि जन्म पावै है.॥ ॥ दोहा ॥ हौंप्रेरतमायाजबै, उपजतसबसंसार ॥ पारथयाहीहेततैं, फिरत-सुवारंवार ॥ १० ॥

अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितम् ॥
परंभावमजानंतोममभूतमहेश्वरम् ॥ ११ ॥

टीका– हेअर्जुन मूरष अज्ञानी जेहै ते मोकौं जानत नाहीं. काहेतैं कि सर्वभूत महेश्वररूप ऐसौजु मेरौ परमतत्व ताकौं जानत नाहीं यातैं अरु मैं कैसोहौं भक्तकी इच्छाजौ शुद्धसात्विक मनुष्याकार शरीर धऱ्योहै. ॥ ॥ दोहा ॥ मोकौंमानसजानिकै, आदरकरतनकोय ॥ मूरषएजा-नतनहीं, यहैजुईश्वरहोय ॥ ११ ॥

मोघाशामोघकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः ॥
राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिंमोहिनींश्रिताः ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन निःफलहै आसा जिनकी निःफलहै कर्म जिनके निःफलहै शास्त्रज्ञान जिनकौ विच्छिन्नहै चित्त जिनकौ ऐसे जे है ते राक्ष-सी आसुरी प्रकृतिकौ आश्रय करिकै बुद्धिभ्रष्ट व्हैकै मेरो अपमान कर-तहै. यातैं मोकौं जानत नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ उनकीआसासुफलनाहिं, ज्ञा-नकर्मताभाय ॥ प्रकृतिआसुरीराक्षसी, तामैंबूडैधाय ॥ १२ ॥

महात्मानस्तुमांपार्थदैवींप्रकृतिमाश्रिताः ॥
भजंत्यनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययम् ॥ १३ ॥

टीका– हेअर्जुन जे महापुरुषहै अरु दैवी प्रकृतिकौ आश्रयहै ते अ-नन्यचित्त होइकै सकल भूतनकौ आदि अविनाशी ऐसौ जानि मोकौं भ-

जैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ देवप्रकृतिमैं जेमिलै, कामक्रोधकौंत्यागि ॥ जेजानत मोकौंसवै, रहतजुहैअनुरागि ॥ १३ ॥

सततंकीर्तयंतोमांयतंतश्चदृढव्रताः ॥
नमस्यंतश्चमांभक्त्यानित्ययुक्ताउपासते ॥ १४ ॥

टीका— हेअर्जुन जे दैवी प्रकृतिकौं आश्रयहै ते निरंतर मंत्रादिकनसौं मेरोही कीर्तन करतुहै अरु दृढव्रत होइकै मेरे जानिवेकौं जतन करतुहै. अरु भक्तिकरिकै मोकौं उपासन करतुहै. नित्ययुक्तहै. सावधानव्है भक्तिसौं मोंहिकौं उपासतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ कीरतमेरीदृढकरी, जनमोहीव्रतराषि ॥ भक्तिसहितमोकौंनवै, मेरेईगुनभाषि ॥ १४ ॥

ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्येयजंतेमामुपासते ॥
एकत्वेनपृथक्त्वेनबहुधाविश्वतोमुखम् ॥ १५ ॥

टीका— हेअर्जुन केतेक ज्ञानयज्ञसौं मोकौं उपासतहै. अरु केतेक एकतासौं उपासतहै. अरु केतेक भिन्नतासौं उपासतहै. अरु केतेक सकल प्रानीनकौ आत्मस्वरूप ऐसोजुमैं ता मोंकौं व्रह्मरुद्रादिक रूप करिकै वहुत भांति उपासतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञानजग्यकोऊजजत, मोकौसेवतमीत ॥ कोऊमानतएककरि, कोऊवहुतपुनीत ॥ १५ ॥

अहंक्रतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधम् ॥
मंत्रोहमहमेवाज्यमहमग्निरहंहुतम् ॥ १६ ॥

टीका— हेअर्जुन क्रतुकहै श्रौतकर्म अग्निष्टोमादिक यज्ञसो मैंहूं. अरु यज्ञकहैं स्मार्त कर्म पंचयज्ञादिक वैश्वदेव सो मैंहौं. अरु स्वधाकहै पितरनकै अर्थ श्राद्धादिक सो मैंहौं. अरु औषध कहै अन्न सो मैं हौं अथवा रोग दूर करै ऐसोजु औषध सोमैंहौं हव्यकव्यकै दानकौ जु मंत्रसो मैंहौं होमको साधन घृतसो मैंहौं आहवनीया दिक जो अग्नि सो मैंहौं हुतकहै

होम सो मैहीहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ हौंहीक्रतुअरुयज्ञहौं, स्वधाऔषधीजानि ॥ हौंपावकघृतहोमहौं, मंत्रौमोकौंमानि ॥ १६ ॥

पिताहमस्यजगतोमाताधातापितामहः ॥
वेद्यंपवित्रमोंकारऋक्सामयजुरेवच ॥ १७॥

टीका–हेअर्जुन या जगतकौ पिता मैं हौं माता मैं हौं धाताकहै पालक मैं हौं पितामह मैं हौं अरु जानिवेकी वस्तु मैं हौं पवित्र मैं हौं ओंकार मैं हौं ऋग्वेद यजुवद सामवेद मैं हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ मातापितायाजगतकौ,हौं धाताकरतार ॥ ऋगयजुसामपवित्रहौं, औरवेदऊंकार ॥ १७ ॥

गतिर्भर्ताप्रभुःसाक्षीनिवासःशरणंसुहृत् ॥
प्रभवःप्रलयस्थानंनिधानंबीजमव्ययम्॥ १८॥

टीका– हेअर्जुन सबकी गति मैं हौं जगतको पोषन मैं हौं सबहीको प्रभु मैं हौं शुभ अशुभको द्रष्टा कहै साक्षी सो मैं हौं अरु निवासकहै भोगस्थानसो मैं हौं याजगतकी उत्पत्तीसो मैं हौं अरु प्रलय मैं हौं स्थिति मै हौं निधान कहै लयस्थान सो मैं हौं अविनाशी बीज मैं हौं.॥दोहा॥ गतिनिवासभर्तासरन, साक्षी प्रभु अरु बंधु ॥ प्रलयस्थाननिधानहूं, अव्ययबीजअबंधु ॥ १८ ॥

तपाम्यहमहंवर्षंनिगृण्हाम्युत्सृजामिच ॥
अमृतंचैवमृत्युश्चसदसच्चाहमर्जुन ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन सूर्यरूपसो मैं ही तपतहौं मैंही वर्षासमैं मेघरूप व्हैं वरषतहौं कदाचित वर्षाको निग्रहहू मैं करतहौं. अरु अमृत मैं हौं मृत्यु मैं हौ सत असतहौं स्थूल सूछम सब मैंही हौं ऐसै सकलहीविषै मोकौं जानिकै बहुतभांतिकरिकै मोहीकौं उपासतहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ तपगहतछोडतजुहौं, वरषतहौंहीजानि ॥ अमृतमृत्युकारनकरन,हौं हीअर्जुनमानि ॥ १९ ॥

त्रैविद्यामांसोमपाःपूतपापायज्ञैरिष्ट्वास्वर्गतिंप्रार्थयंते ॥

तेपुण्यमासाद्यसुरेंद्रलोकमश्नंतिदिव्यान्दिविदेवभोगान् २०

टीका– हेअर्जुन जे वेदत्रयीके ज्ञाताहैं ते वेदोक्त जग्यकर्म करिकै सोमपानसौं पवित्र व्हैकै स्वर्गकी प्रार्थना करतहै. अरु ता जग्यकै पुण्यतैं इंद्रलोक पाइ स्वर्गलोकविषै देवतानके दिव्य भोग पावै देवतारूप व्हैकै अनेक उत्तम भोगकरै. ॥ ॥ दोहा ॥ यज्ञकरतपापनदहत, चाहतस्वर्गहिवास ॥ इंद्रलोकलहिभोगवै, दिव्यभोगसुविलास ॥ २० ॥

तेतंभुक्त्वास्वर्गलोकंविशालंक्षीणेपुण्येमर्त्यलोकंविशंति ॥
एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभंते॥ २१ ॥

टीका– हेअर्जुन ते स्वर्गलोकके भोगकरिकै जब पुन्य छीन होंही तब फेर वे मृत्युलोकविषै जन्म पावैहै. ऐसै जन्म पाइकै जे फिरि वेदत्रयी सौं जग्यादिक कर्म करिकै कामनाकौ अनुसरैहै ते फेरि फेरि आवागमन पावैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ फिरिआवतभूलोकमैं, छीनपुन्यजबहोय ॥ पावैआवागवनवै, कामवंतजेलोय ॥ २१ ॥

अनन्याश्चिंतयंतोमांयेजनाःपर्युपासते ॥
तेषांनित्याभियुक्तानांयोगक्षेमंवहाम्यहम् ॥ २२ ॥

टीका– हेअर्जुन जे अनन्य चित्तव्है मेरो चिंतवन करिकै मोकौं सेवैहै. अरु सदा मोहीविषै निष्ठा राषतहै. तिनके योगछेमके निर्वाह मैंही करतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ भक्तिकरैजुअनन्यव्है, मोहीमैंचितराषि ॥ जोगछेमतिनकौंकरौं, निजजनकौंअभिलाषि ॥ २२ ॥

येऽप्यन्यदेवताभक्तायजंतेश्रद्धयान्विताः ॥
तेपिमामेवकौंतेययजंत्यविधिपूर्वकम् ॥ २३ ॥

टीका– हेअर्जुन औरजे आन देवताके भक्त है श्रद्धासौं भजैहै तेऊ मोहीकौं भजैहै. ये विधिपूर्वक नाहीं भजैहै. मोछपाइवेकी विधिसौं नाहीं भजतहै यातैं फिरि फिरि जन्म पावैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ औरदेवकेभक्तजे, सेवतश्रद्धावंत ॥ विधिछोडैमोकौंजजत, लहतनमेरोतंत ॥ २३ ॥

अहंहिसर्वयज्ञानांभोक्ताचप्रभुरेवच॥
नतुमामभिजानातितत्वेनातश्च्यवंतिते ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन सबही जग्यनको त्राता देवरूप करिकै भोक्ता मैंही हौं स्वामी फलको दाता मैंही हौं ऐसे मोकौं जे तत्वतैं नाहीं जानतहै याहीतैं तिनको आवागवन होतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ सबजग्यनकोभोगता,हौं सबसिरजनहार ॥ मेरोतत्वनजानहीं, डारततिन्हैउछार ॥ २४ ॥

यांतिदेवव्रतादेवान्पितॄन्यांतिपितृव्रताः ॥
भूतानियांतिभूतेज्यायांतिमद्याजिनोऽपिमाम् ॥ २५ ॥

टीका– हेअर्जुन जे देवतानकौ भजैहै ते देवतानकौं पावैहै. अरु जे पितरनकौं भजैहै ते पितरनकौं पावैहै. अरु जे भूतनकौं भजैहै ते भूतनकौं पावैहै. अरु जे मोकौं भजैहै ते मोकौंहू पावैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ देवभक्तदेवनलहै, पितृपूजकपितृस्थान ॥ भूतजजैभूतनलहै, मोपूजैभगवान २५

पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति ॥
तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः ॥ २६ ॥

टीका– हेअर्जुन जाकै मोसौं निहचौहै. सो पुरुष पत्र पुहप फल अथवा जल जो कछु भक्तिभावसौं मोकौं समर्पै सो सबही मैं अंगिकार करलेतहौं. जो निकाम भक्त व्हैकै पत्रपुहपादिक भक्तिसौं समरपैहै सोमैं भक्तके अनुग्रहकै अर्थ अंगिकार करलेतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ पातफूलफलनीरऊ, जौअर्प्यौंकरिप्रीति ॥ लेउदीयौहौंभक्तकौ, कीयेप्रेमकीरीति ॥ २६ ॥

यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासियत् ॥
यत्तपस्यासिकौंतेयतत्कुरुष्वमदर्पणम् ॥ २७ ॥

टीका–हेअर्जुन तातैं तूं जू कछु करैहै. खावैहै. होमैहै. देतु है तपस्या करैहै सोसबही मेरेविषै अर्पनकरि. ॥ ॥ दोहा ॥ जोकछुकरतुहैषातुहै, जोहोमतजोदेत ॥ अर्जुनजोतूंतपकरै, सोकरिमोहीहेत ॥ २७ ॥

शुभाशुभफलैरेवंमोक्ष्यसेकर्मबंधनैः ॥
संन्यासयोगयुक्तात्माविमुक्तोमामुपैष्यसि ॥ २८ ॥

टीका–हेअर्जुन ऐसै कीये शुभ अशुभ कर्मनतैं छूटैगो. ऐसै संन्यासयोगसौं युक्त होइकै मोकौं पावैगो. ॥ ॥ दोहा ॥ भलेबुरेजेकर्महै, तिनतैंछूटिहैमित्त ॥ जुगतजोगसंन्यासकरि, मोमिलिहौंहिनिचिंत ॥ २८ ॥

समोहंसर्वभूतेषुनमेद्वेष्योस्तिनप्रियः ॥
येभजंतितुमांभक्त्यामयितेतेषुचाप्यहम् ॥ २९ ॥

टीका– हेअर्जुन सर्वभूत प्रानीनविषै मै समानहौं मेरै कोऊ शत्रुनाहीं अरु प्रियहू कोऊ नाहीं ऐसौ जुमैं तामोकौं जे भजैहै ते मोमेंहैं. अरु हूं तिनहीविषै हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ हौंसबठौरसमानहौं, मेरेप्रीतनद्रोह ॥ मोकौंसेवतभक्तजे, तिनसौंमोसौंमोह ॥ २९ ॥

अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक् ॥
साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः ॥ ३० ॥

टीका– हेअर्जुन जो अति दुराचारी होइ अरु अन्यदेवकौं छांडिकै केवल अनन्य व्हैकै मोहीकौं भज ताकौं श्रेष्ठहीकरि जाननौं याकौं निहचौ लेभहै. यातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ दुराचारमोकौंभजै, व्हैअनन्यकेभाय ॥ ताकौंतूंसाधौगिनौं, सबनिश्चैकोदाय ॥ ३० ॥

क्षिप्रंभवतिधर्मात्माशश्वच्छांतिंनिगच्छति ॥
कौंतेयप्रतिजानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति ॥ ३१ ॥

टीका– हेअर्जुन बहु दुराचारीहै तऊ मोकौं भजैतैं शीघ्रही धर्मात्मा होय निरंतर शांतिकौं पावै अरु मैं प्रतिज्ञाकरि कहतहौं जु मेरो भक्त कबहूं विनाश न पावै आचारतैं भ्रष्टहोय तऊ मेरी भक्ति पवित्रकरै. ॥ दोहा॥ वेगिहोइधर्मात्मा, शांतिलहैबहुभाय ॥ अर्जुननिश्चैजानितूं, नहिंमोभक्तनसाय ॥ ३१ ॥

मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेऽपिस्युःपापयोनयः ॥
स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेऽपियांतिपरांगतिम् ॥ ३२॥

टीका– हेअर्जुन स्त्री वैश्य कृषिकर्म करै सो शूद्र औरहू जे पापजोनिचांडालादिक है ते ऊमोभक्ति करवेसौं परमगति पावैहै. यह तूं निहचै जानि. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनसेवतमोहिजो, सोयाजोनिहिषोय ॥ स्त्रियांशूद्रअरुवैश्यपुनि, तेहिपरमगतिहोय ॥ ३२ ॥

किंपुनर्ब्राह्मणाःपुण्याभक्त्याराजर्षयस्तथा ॥
अनित्यमसुखंलोकमिमंप्राप्यभजस्वमाम् ॥ ३३ ॥

टीका– हेअर्जुन ओर जे पुण्यात्मा ब्राह्मणहै अरु जे छत्री राजऋषीहै सदाचारीहै मेरे भक्तहै अरु जिनको भलेकुलविषै जन्म है ते परमगतिकौं प्राप्त होहि. तिनकौ कहा कहनौ. तातैं अनित्य असुख ऐसै या राजरिषिदेहकौं पाइकैं मोकौं भजि. ॥ ॥ दोहा ॥ द्विजपुनीतअरुभक्तवर, राजरिषिनिसुखभाय ॥ सुखअनित्ययालोककौ, मोहिभजोचितलाय॥ ३३॥

मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु ॥
मामेवैष्यसियुक्त्वैवमात्मानंमत्परायणः ॥३४॥

टीका– हेअर्जुन तूं मेरेहीविषै मनराषि मेरोही सेवक होहु मेरेही पूजा करि मेरेही निमित्त जग्य करि मोहीकौ नमस्कार करि ऐसी भांति मेरेविषै परायन होइकै मोविषै मनलगावैगौ. तब तूं मोहीविषै आनि प्राप्ति होइगो. ॥ ॥ दोहा ॥ मोकौंभजिभजिनम्रव्है, मोहीमैंमनराषि ॥ इहीयुक्तितूंमोहिमिलि, प्रेमनसौंअभिलाषि ॥ ३४ ॥

अपनीईश्वरताकही, अचिरजकैसैभाय, । भक्तिविभौकरिकैकृपा, कह्योनवमसमझाय । १ ॥राजगुह्यविद्यायहै, राजगुह्ययहयोग । वरनीआनंदरामयहै, प्रभुकीपूजाजोग ॥ २ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां यो॰ श्रीकृष्णार्जुनसं॰राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

श्रीभगवानुवाच.

भूयएवमहाबाहोशृणुमेपरमंवचः ॥
यत्तेहंप्रीयमाणायवक्ष्यामिहितकाम्यया ॥ १ ॥

टीका- हेअर्जुन औरही मैं तोसौं कहतहौं सुनि तूं मेरे अति प्रियहै तातैं तेरेहितके लिये कहतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ दुरीबातमोसौंबहुरि, सुनिअरजुनचितलाय ॥ व्हैप्रसन्नतोसौंकहौं, तेरैहितकोभाय ॥ १ ॥

नमेविदुःसुरगणाःप्रभवंनमहर्षयः ॥
अहमादिर्हिदेवानांमहर्षीणांचसर्वशः ॥ २ ॥

टीका- हेअर्जुन मेरे जन्मकौं देवता जानत नाहीं अरु महर्षी भृग्वदिक है तेऊ जानत नाहीं. देवता अरु रिषि नाहिं सबहिनके आदिहौं अरु और हूजे है तिन सबके मैं आदिहौं. ॥ ॥ दोहा ॥देवरिषीनहिंजानाहिं, मोउतपतिहिमीत ॥ देवरिषिनअरुसबनकौं, हौंहीआदिपुनीत ॥ २ ॥

योमामजमनादिंचवेत्तिलोकमहेश्वरम् ॥
असंमूढःसमर्त्येषुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥

टीका- हेअर्जुन जो पुरुष मोकौं अज अनादिक सकललोकनको महेश्वर ऐसै जानै सो मनुष्यनविषैं मोहसौं रहित व्हैकै सकल पापनतैं मुक्त होइगो. ॥ ॥ दोहा ॥ अजअनादिजगदीशपुनि, मोकौंलषतजुकोय॥ सबमैंज्ञानीबहुबडौ, पापनिडारतधोय ॥ ३ ॥

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहःक्षमासत्यंदमःशमः ॥
सुखंदुःखंभवोभावोभयंचाभयमेवच ॥ ४ ॥

टीका- हेअर्जुन बुद्धि ज्ञान अव्याकुलता क्षमा सत्य दम शम सुष उतपत्ति लय भय अभय.॥ ॥ दोहा ॥ बुद्धिज्ञानशमदमक्षमा, अव्याकुलताहोय ॥ सुषभवदुषऔभावभय, औरअभयताजोय ॥ ४ ॥

अहिंसासमतातुष्टिस्तपोदानंयशोऽयशः ॥

भवंतिभावाभूतानांमत्तएवपृथग्विधाः ॥ ५॥

टीका—हेअर्जुन अहिंसा समता संतोष तपस्या दान कीर्ती अकीर्ती ए भूत प्रानीनकै भिन्नाभिन्न भांति भांतिके भावैहै. ते सब मोहीतैं होतहै. ॥ दोहा ॥ तोषअहिंसादानतप, समजसअजसोजान ॥ जीवनिकैसब-भावए, मोतैंहोतसमान ॥ ५ ॥

महर्षयःसप्तपूर्वेचत्वारोमनवस्तथा ॥

मद्भावामानसाजातायेषांलोकइमाःप्रजाः ॥ ६ ॥

टीका— हेअर्जुन पहिलै सप्तऋषि भृगुआदिलेकै अरु चार सनकादिक अरु चवधा मनू स्वायंभूआदिलेकै मेरे मनहीतैं प्रगट भयेहै अरु मेरै प्रभावसहितहै जिनकी या लोकविषै प्रजा शिष्यादिक पुत्रादिक प्रवर्तेहै. ॥ दोहा ॥ सातौंऋषिमुनिच्यारिमनु, मोमनतैंजुउदोत ॥ सबलोकनमांहीं भरे हैं इनहीकेगोत ॥ ६ ॥

एतांविभूतिंयोगंचममयोवेत्तितत्त्वतः ॥

सोऽविकंपेनयोगेनयुज्यतेनात्रसंशयः ॥ ७ ॥

टीका—हेअर्जुन मेरी या विभूतिकौं अरु जोगकौं जो तत्त्वतैं जानै सो जोगजुक्त होय. यामैं संदेह नाहीं. थिर जोग पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ मेरीजोगविभूतिकौ, तत्वज्ञानजोलेत ॥ निश्चलजोगहिसोलहैं, रहतजुयाहीहेत ७॥

अहंसर्वस्यप्रभवोमत्तःसर्वंप्रवर्त्तते ॥

इतिमत्वाभजंतेमांबुधाभावसमन्विताः ॥ ८ ॥

टीका— हेअर्जुन सबकै उपजवैको ठिकानों मैंहौं अरु सब मोहीतैं प्रवर्तेहै. जे विवेकीहै ते ऐसै जानि प्रीतियुक्त व्हैकै मोकौं भजैहै. ॥ दोहा॥ मैंहौंईश्वर जगतकी, मोहीतैंसबहोय। ज्ञानवंतयहजानिकै, मोहीसेवतसोय ८

मच्चित्तामद्गतप्राणाबोधयंतःपरस्परम् ॥

कथयंतश्चमांनित्यंतुष्यंतिचरमंतिच ॥ ९ ॥

टीका—हेअर्जुन प्रीतिपूर्वक ऐसो मोकौं भजैहै. कि मोविषै चित्त जिनकौ मोहीविषैहै. प्रान कहै इंद्रिय जिनके अथवा मोहीविषै प्रानकहै जीव जिनकौ अरु जे परमप्रीतिसौं ज्ञान चरचा करतुहै नित्य मोहीकौं मुखतैं कहतुहै तातें नित्य संतुष्ट होतुहै. अरु आनंद पावतुहै. ॥ ॥ दोहा ॥ प्रानचित्तमोमैंधरत, बोधपरस्परदेत ॥ मेरेचरितनिकहतनिति, प्रीतिपरमसुखलेत ॥ ९ ॥

तेषांसततयुक्तानांभजतांप्रीतिपूर्वकं ॥
ददामिबुद्धियोगंतंयेनमामुपयांतिते ॥ १० ॥

टीका— हेअर्जुन जैसे जे नित्यमोकौं प्रीतिपूर्वक भजैहै तिनकी मोमैं ऐसि बुद्धिहैं ताकौं बुद्धियोग देतहूं जाकरिकै मोकौं पावैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ सेवतमोकौंतिसदा, भक्तियोगकेभाय ॥ भलीबुद्धिमोसौंलहत, रहतजुमोंमैंआय ॥ १० ॥

तेषामेवानुकंपार्थमहमज्ञानजंतमः ॥
नाशयाम्यात्मभावस्थोज्ञानदीपेनभास्वता ॥ ११ ॥

टीका—हेअर्जुन तिनके अनुग्रहही कैलिये परम प्रकाशजु ज्ञानदीपकता करिकै अज्ञानरूप अंधकारको नाश करतुहौं सोमैं कैसो हौं अंतर्जामीस्वरूपहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ तमअज्ञानहिदूरकारे, दयावंतमैंहोत ॥ करहूंतिनकैहीयमैं, ज्ञानदीपउद्द्योत॥ ११ ॥

अर्जुन उवाच

परंब्रह्मपरंधामपवित्रंपरमंभवान् ॥
पुरुषंशाश्वतंदिव्यमादिदेवमजंविभुम् ॥ १२ ॥

टीका—अब अर्जुन पूछतहै कि हेपरब्रह्म परमतेज परम पवित्र तुमहोहौं नित्यपुरुष तुमहीहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ परब्रह्मपवित्रतुम, परमानंदकधाम ॥ अविनाशीअजपुरुषहो, आदिदेवतुमनाम ॥ १२ ॥

आहुस्त्वामृषयःसर्वेदेवर्षिर्नारदस्तथा ॥
असितोदेवलोव्यासःस्वयंचैवब्रवीषिमे ॥ १३ ॥

टीका– हेकृष्ण सब ऋषीश्वर अरु नारद असित देवल अरु वेदव्यास ए तुमकूं परम पुरुष नित्यदेव अज विभु ऐसे कहतेहै. अरु तुम आपहू मोसैं ऐसै कहतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ सबऋषिइहिंविधिकहतहैं, नारददेवलजानि ॥ व्यासअसिततुमहूंकहत, तातैंलीनैंमानि ॥ १३ ॥

सर्वमेतदृतंमन्येयन्मांवदसिकेशव ॥
नहितेभगवन्व्यक्तिंविदुर्देवानदानवाः ॥ १४ ॥

टीका– हेकृष्ण तुम मोसौं कहतहौ अरु जो नारदादिक ऋषि कहतहै सो यह सब सत्य प्रमान करिकै मानत हौं. अरु देवता अरु दानव तुह्मारी व्यक्ति कहै. अवतारकी मूर्तिताको तत्व जानत नाहीं कैसेकी हमारे अनुग्रहके लीये अवतार धर्योहै ऐसै दानवहू जानत नाहीं. ॥ दोहा ॥ जोकछुतुममोसौंकहत, मानतहौंसतभाय ॥ दानवदेवनजानहीं. तुमप्रगटेकोदाय ॥ १४ ॥

स्वयमेवात्मनात्मानंवेत्थत्वंपुरुषोत्तम ॥
भूतभावनभूतेशदेवदेवजगत्पते ॥ १५ ॥

टीका– हेकृष्ण तुम आपुही आपकौं जानतहों ओरको जानत नाहीं तुम भूत प्रानीनिकौं उपजावतहौ. सकल भूतनके नयंता कहै प्रेरकहौं अरु देवकहै ब्रह्मरुद्रादिक तिनहूके देवहौ. जगतके पतिहौ. विश्वके पालकहो. ॥ ॥ दोहा ॥ आपुनिकौंआपुहिलषौ, तुमपुरुषोत्तमदेव ॥ जीवनउपजावतहरत, पालतहोअधिदेव ॥ १५ ॥

वक्तुमर्हस्यशेषेणदिव्याह्यात्मविभूतयः ॥
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वंव्याप्यतिष्ठसि॥१६॥

टीका– हेकृष्ण जे आपनि दिव्य विभूतीहै ते सब मोकौं कहौ जि-

निविभूतिनसौं तुम या सकल लोकविषै व्यापिकै रहेहौ. ॥ ॥ दोहा ॥ निजविभूतिमोसौंकहौ, प्रभुकीचित्तकोचाय ॥ जोविभूतिश्रीकृष्णसौ, रहीजगतमैछाय ॥ १६ ॥

कथंविद्यामहंयोगिंस्त्वांसदापरिचिंतयन् ॥
केषुकेषुचभावेषुचिंत्योसिभगवन्मया ॥ १७ ॥

टीका— हेकृष्ण मैं तुह्मारो सदा चिंतवन करिकै तुमकौं कैसैंकै जानौं अरु कौनकौन पदारथविषै तुह्मारौ चिंतवन करौं. ॥ ॥ दोहा ॥ ध्यानतुमारोकरतप्रभु, जानौंकैसैंतोहि ॥ कौनपदारथमैंलषौं, सोसमुझावैमोहि १७

विस्तरेणात्मनोयोगंविभूतिंचजनार्दन ॥
भूयःकथयतृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेमृतम् ॥ १८ ॥

टीका— तातें हेकृष्ण अपनों योगैश्वर्य अरु विभूति मोकौं विस्तार करिकै फेरि कहौ. या अमृतरूप तुमारी वानी सुनत मोकौं तृपती होत नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ जोगविभूत्यौआपुनी, कहियैमोसौंदेव ॥ मोकौंतृपतिनहोतहै, सुनतअमीरसभेव ॥ १८ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

हंततेकथयिष्यामिदिव्यात्यात्मविभूतयः ॥
प्राधान्यतःकुरुश्रेष्ठनास्त्यंतोविस्तरस्यमे ॥ १९ ॥

टीका—ऐसी अर्जुनकी प्रार्थना सुनि श्रीकृष्ण कहतहैं कि हेअर्जुन मैं तोसौं अपनी दिव्यविभूति कहतहौं जे मेरी विभूतिविषै प्रधान कहै मुख्यहै ते कहतहौं. अरु मेरी विभूतिके विस्तारको अंत कहतहूं नाहीं यातें मुख्य विभूति कृपा करिकै कहतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनतुमसौंकहतहौं, निजविभूतिविस्तारि ॥ मुख्यजितीतेईकहत, हीयकेंदृगनिनिहारि १९॥

अहमात्मागुडाकेशसर्वभूताशयस्थितः ॥
अहमादिश्चमध्यंचभूतानामंतएवच ॥ २० ॥

टीका– हेअर्जुन सकल प्रानीनके अंतहकरणविषै आत्मारूप अंतर्जामी ऐसौ मैंही रहतहौं अरु प्रानीनिको आदि कहे जन्म मैंहौं प्रानीनकी स्थिति मैंहौं और प्रानीनको संहार मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ सबजीवनके-हीयमैं, मोहिआत्माजानि ॥ आदिअंतअरुमध्यहौं, मोहिसबनमैंमानि २०

आदित्यानामहंविष्णुर्ज्योतिषांरविरंशुमान् ॥
मरीचिर्मरुतामस्मिनक्षत्राणामहंशशी ॥ २१ ॥

टीका– अब विभूति कहतहौं. हेअर्जुन बारह आदित्यहैं तिनमैं विष्णुकहे वामन अवतार सो मैंहौं जे प्रकाश जोतिहै तिनमें सूर्य मैं हौं मरुत्तकहे वायु तिनमैं मरीचिनाम वायु मैंहौं अथवा सातमरुद्गणहै तिनमैं मरीचि मैंहौं अरु नक्षत्रमैं चंद्रमा मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ आदित्यनमैंविष्णुहौं, ज्योतिनमैंरविदेषि ॥ वायनमांझमरीचिहौं, नक्षत्रमैंशशिलेषि ॥ २१ ॥

वेदानांसामवेदोऽस्मिदेवानामस्मिवासवः ॥
इंद्रियाणांमनश्चास्मिभूतानामस्मिचेतना ॥ २२ ॥

टीका– हेअर्जुन वेदनमैं सामवेद मैंहौं. देवतानमैं इंद्रमैं हौं इंद्रियनमैं मन मैंहौं. भूतनमैं चेतना कहे ज्ञान शक्ति सो मैंहौं. ॥ दोहा ॥ सामवेदहौंवेदमें, इंद्रअमरगनमांहिं ॥ जीवनमैंहौंचेतना, मनइंद्रिनकौंनाहिं २२

रुद्राणांशंकरश्चाऽस्मिवित्तेशोयक्षरक्षसां ॥
वसूनांपावकश्चास्मिमेरुःशिखरिणामहम् ॥ २३ ॥

टीका– हेअर्जुन रुद्रनमैं शंकर मैंहौं. यक्षराक्षसविषै वित्तेश कहे कुबेर सो मैंहौं आठ वसुहैं तिनमैं पावकनामा वसु मैंहौं पर्वतनविषै मेरुपर्वत मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ रुद्रनमैंशंकरजुहौं, जक्षनमांहिधनेश ॥ पावकहौंहीवसुनमैं, सैलसुमेरुसुदेश ॥ २३ ॥

पुरोधसांचमुख्यंमांविद्धिपार्थबृहस्पतिं ॥
सेनानीनामहंस्कंदःसरसामस्मिसागरः ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन पुरोहितनमैं मुख्य कहे श्रेष्ठ ऐसौ बृहस्पति मैंहौं सेनापतिनमैं स्वामि कार्तिक ये मैंहौं. सरोवरनमैं सागर मैंहौं. ॥ दोहा ॥ देवपुरोहितमुख्यहौं, मोहिंबृहस्पतिमानि ॥ षट्मुखसेनापतिनमैं, सरमैं-सागरजानि ॥ २४ ॥

महर्षीणांभृगुरहंगिरामस्म्येकमक्षरम् ॥
यज्ञानांजपयज्ञोस्मिस्थावराणांहिमालयः ॥ २५ ॥

टीका– हेअर्जुन महा ऋषिनमैं भृगु मैंहौं वानीमैं एक अक्षर ऊँकार. मैंहौं यज्ञनमैं जपयज्ञ मैंहौं स्थावरनमैं हिमाचल मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ हौंजुमहर्षिनमांहि भृगु, वरननमैंऊँकार ॥ यज्ञनमैंजपयज्ञहौं, स्थावरहिम-आधार ॥ २५ ॥

अश्वत्थःसर्ववृक्षाणांदेवर्षीणांचनारदः ॥
गंधर्वाणांचित्ररथःसिद्धानांकपिलोमुनिः ॥ २६ ॥

टीका– हेअर्जुन सकल वृक्षनमैं पीपरमैंहौं देवर्षिनमैं नारद मैंहौं गंध-र्वनमैं चित्ररथ मैंहौं सिद्धनमैं कपिल मुनि मैंहौं. ॥ दोहा ॥ वृक्षनमैंपीप-रजुमैं, ऋषिमैंनारददेव ॥ गंधर्वनमैंचित्ररथ, सिद्धकपिलमैंभेव ॥ २६ ॥

उच्चैःश्रवसमश्वानांविद्धिमामसृतोद्भवम् ॥
ऐरावतंगजेंद्राणांनराणांचनराधिपम् ॥ २७ ॥

टीका– हेअर्जुन अश्वनमैं उच्चैःश्रवा मैंहौं सो उच्चैश्रवा कैसो है जो अमृतके लीये क्षीरसमुद्र मथ्यौ तहां प्रगट भयोहै अरु हस्तिनमैं ऐरावत मैंहौं मनुष्यनमैं राजा मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ अश्वनमैंउच्चैःश्रवा, गजऐरा-वतनाम ॥ हौंहीनृपहौंनरनमैं, पोषतसबकोकाम ॥ २७ ॥

आयुधानामहंवज्रंधेनूनामस्मिकामधुक् ॥
प्रजनश्चास्मिकंदर्पःसर्पाणामस्मिवासुकिः ॥ २८ ॥

टीका– आयुधनमैं वज्र मैंहौं गायनमैं कामधेनु मैंहौं संतान उपजा-

इ वेकौ कारण ऐसो जो कामदेव सो मैंहौं सर्पनमैं वासुकी मैंहौं.॥ दोहा॥ हथियारनमैंवज्रहौं, कामधेनुहैगाय ॥ कामप्रजाकरमाझहौं, वासुकिसर्पनराय ॥ २८ ॥

अनंतश्चास्मिनागानांवरुणोयादसामहम् ॥
पितॄणामर्यमाचास्मियमःसंयमतामहम् ॥ २९ ॥

टीका– हेअर्जुन नागनमैं शेषनाग मैंहौं जलचरमैं वरुण मैंहौं पितरनमैं अर्यमा मैंहौं. संयममैं यभमैं हौं॥ ॥ दोहा ॥ नागनिमाझिअनंतहौं, वरुणजुहौंजलजंतु ॥ पितरनमैंहौंअर्जमा, यमहौंसंजमवंत ॥ २९ ॥

प्रऱ्हादश्चास्मिदैत्यानांकालःकलयतामहम्॥
मृगाणांचमृगेंद्रोहंवैनतेयश्चपक्षिणाम् ॥ ३० ॥

टीका– हेअर्जुन दैत्यनमैं प्रऱ्हाद मैंहौ प्रेरणावश्य कर्ता अथवा गणना कर्ता तिनमैं काल मैंहौं. जे वनंचारी मृगहै तिनमैं सिंह मैंहौं. आकाशचारी पंछीहै तिनमैं गरुड मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ दैत्यनमैंप्रऱ्हादहौं, प्रेरनहारोकाल ॥ सिंहजुहौंसबमृगनमैं, पंछिनमैंरिपुव्याल ॥ ३० ॥

पवनःपवतामस्मिरामःशस्त्रभृतामहम् ॥
झषाणांमकरश्चास्मिश्रोतसामस्मिजाह्नवी ॥ ३१ ॥

टीका– हेअर्जुन जे पवित्रकेकर्ता है अथवा जे वेगवंतहै तिनमैं वायुमैहौं अरु शस्त्रधारीनमैं रामचंद्र मैंहौं. मच्छनमैं मकर मच्छ मैंहौं नदीनिविषै भागीरथी मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ वेगवानमैंपवनहौं, शस्त्रधारिनमैंराम ॥ जलजंतुनमैंमकरहौं, नदीगंगअभिराम ॥ ३१ ॥

सर्गाणामादिरंतश्चमध्यंचैवाहमर्जुन ॥
अध्यात्मविद्याविद्यानांवादःप्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥

टीका– हेअर्जुन सकल सृष्टिकौ आदि मध्य अरु अंत मैंहौं विद्यामैं अध्यात्मविद्या मैंहौं वादिनमैं तत्वनिर्णय मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ सभकैआदिरुअंतहौं, मध्यमोहिकौंमान ॥ तत्वबोधवादीनमैं,हौं अध्यातमज्ञान ३२॥

अक्षराणामकारोऽस्मिद्वंद्वःसामासिकस्यच ॥
अहमेवाक्षयःकालोधाताहंविश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥

टीका– हेअर्जुन अछरनमैं अकारमैंहौं समासनविषै द्वंद्व समास मैंहौं. अक्षय जो काल सो मैंहौं सकल कर्मफलको बिधाता मैंहौं जित कोई देपै तित मै हीहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ अछरमाहिंअकारहौं, द्वंद्वसमासनजानि ॥ हौंहीअक्षयकालहौं, धातासवमैंमानि ॥ ३३ ॥

मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभविष्यताम् ॥
कीर्तिःश्रीर्वाक्चनारीणांस्मृतिर्मेधाधृतिःक्षमा ॥ ३४ ॥

टीका– हेअर्जुन सबको संहार कर्ता मृत्यु मैंहौं. सबको उत्पत्ति कर्ता मैही हौं. स्त्रियनकी जातिमैं कीरति लक्ष्मी वानि स्मृति कहै स्मरन मेधा कहै बुद्धि धृति कहै धीरज छमा ए मैंही हौं. ॥ दोहा ॥ सबकौंहौंहीसंहरतु, ओरउपावनहार ॥ श्रीकीरतिसरस्वतिछमा, धृतिमतिहैंनिरधार ३४

बृहत्सामतथासाम्नांगायत्रीछंदसामहम् ॥
मासानांमार्गशीर्षोऽहमृतूनांकुसुमाकरः ॥ ३५ ॥

टीका– हेअर्जुन साममैं बृहत्साम मैंहौं. छंदनमैं गायत्री मैंहौं मासनमैं अगहन मैंहौं. ऋतुनमैं वसंतऋतु मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ महांसामहौंसाममैं, गायत्रीहौंछंद ॥ मारगसिरहौंमासमैं, रितुवसंतसुषकंद ॥ ३५ ॥

द्यूतंछलयतामस्मितेजस्तेजस्विनामहम् ॥
जयोस्मिव्यवसायोस्मिसत्वंसत्ववतामहम् ॥ ३६ ॥

टीका– हेअर्जुन जे छलकर्ता ठग है तिनमैं जुवा मैंहौं अरु जे तेजस्वी प्रभावंतहै तिनमैं तेज मैंहौं जे विजयीहै तिनमैं विजय मैंहौं अरु जे उद्यमीहै तिनकौं उद्यम मैंहौं सात्विकी जेहै तिनकौं सात्विक मैंहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ छलांद्यूतबलतेजहूं, विजयिनमैंजयजानि ॥ उद्यमउद्योगीनमैं, सत्वसात्विकयांमानि ॥ ३६ ॥

वृष्णीनांवासुदेवोस्मिपांडवानांधनंजयः ॥
मुनीनामप्यहंव्यासःकवीनामुशनाकविः ॥ ३७ ॥

टीका– हेअर्जुन जादवनमैं वासुदेव मैहौं जोमै तोसौं उपदेश कर्ता-हौं पांडवनमैं तूं धनंजयमेरी विभूतिहै. अरु जे मननशील मुनिहै तिनमैं वेदव्यास मैहौं कविनमैं शुक्राचार्य कवि मैहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ जदुकुलमैं-हौंकृष्णहौं, पार्थपांडवनमांहिं ॥ मुनिनमांझहौंव्यासमुनि, गनोशुक्रक-विताहि ॥ ३७ ॥

दंडोदमयतामस्मिनीतिरस्मिजिगीषताम् ॥
मौनंचैवास्मिगुह्यानांज्ञानंज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥

टीका– हेअर्जुन जे दंड देतहैं नीतिके लीये सो दंड मैंहौं जो जीत्यो चाहे है तिनमें साम दाम दंड भेद निग्रह ऐसी नीति मैहौं अरु गोप्यहै ति-नमै गुप्त करिवेकौं कारन ऐसो जु मौन सो मैहौं तत्व ज्ञानीनमैं ज्ञान मैंहौं. ॥ दोहा ॥ दंडवंतमैदंडहौं, नीतिवंतकौंनीति ॥ ज्ञानिनमैंहौज्ञानहौं मौनदु-रावनरीति ॥ ३८ ॥

यच्चापिसर्वभूतानांबीजंतदहमर्जुन ॥
नतदस्तिविनायत्स्यान्मयाभूतंचराचरम् ॥ ३९ ॥

टीका– हे अर्जुन सकल प्रानीनके उपजाइवेकौं कारन बीजहै सो मैहौं अरु इन चराचर प्रानीनिमैं ऐसो कोऊ नाही जो मोविनुहै. मोविनु-जो होई सो नाहींहै. ॥ ॥ दोहा ॥ सबजीवनकौंबीजहौं, अर्जुनमोको-जानि ॥ थिरचरयासंसारमैं, मोविनुकछुनहिंमानि ॥ ३९ ॥

नांतोऽस्तिममदिव्यानांविभूतीनांपरंतप ॥
एषतूद्देशतःप्रोक्तोविभूतेर्विस्तरोमया ॥ ४० ॥

टीका– हेअर्जुन मेरी विभूतिनकौं अंत नाहीं अरु मेरी विभूति कहि-बेकौ कोऊ समर्थ नाहीं इनविभूतिनकौ विस्तारमैं तोसौं संछेपतैं कह्योहै

॥ दोहा ॥ मेरीदिव्यविभूतिकौ, अंतनजान्यौजाय ॥ यहतौथोरोसोकह्यौ मोविभूतिकेभाय ॥ ४० ॥

यद्यद्विभूतिमत्सावंश्रीमदूर्जितमेववा ॥
तत्तदेवावगच्छत्वंममतेजोंऽशसंभवम् ॥ ४१ ॥

टीका– हेअर्जुन जोजो वस्तु विभूतिवंत कहे ऐश्वर्य युक्त होय अरु जोजो वस्तु श्रीमंत कहे सो लछमीवंत अथवा सोभावंत होय अरु जो वस्तुरमाहू प्रभावगुनै करिकै अधिक होय सो सबही मेरे तेजके अंसतें उपज्यो जानि. ॥ ॥ दोहा ॥ जोकछुयासंसारमैं, काहूगुनअधिकाय ॥ सोसबमेरैतेजहै, दीनौतोयचताय ॥ ४१ ॥

अथवाबहुनैतेनकिंज्ञानतवार्जुन ॥
विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत् ॥ ४२ ॥

टीका– अथवा हे अर्जुन ऐसै भिन्न भिन्न बहुत जानैतैं तेरै कहा प्रयोजन है तातैं तूं यह जानि कि यह सब जगतमैं अपनैं एक अंशतैं व्यापिकै रह्यौहैं. अथवा या जगतकौमैं अपनैं एक अंसतैं धरि रह्योहौं ॥ ॥ दोहा ॥ बहुतकहातोसौंकहौं, अर्जुनबातबनाय ॥ सबजगअपनैअंसतैं मैंराख्यौठहराय ॥ ४२ ॥

चितइंद्रियनकेवसपरयौ जोध्यावैअनुभूति ॥ सकलईसलषिलेषियैं दसमैंकहीविभूति ॥ १ ॥ यहविभूतिप्रभुकीबरन विनवैआनंदराम ॥ मोहिमहाप्रभुदीजियै चिदानंदसुषधाम ॥ २ ॥ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगोनामद० ॥ १० ॥

अर्जुनउवाच

मदनुग्रहायपरमंगुह्यमध्यात्मसंज्ञितं ॥
यत्त्वयोक्तंवचस्तेनमोहोऽयंविगतोमम ॥ १ ॥

टीका– अब अर्जुन कहतहै कि हेकृष्ण मेरै अनुग्रहकै लियै जो परम गोप्य अरु अध्यात्म संज्ञक कहे आत्मज्ञानरूप ऐसो तुम बचन कह्यौ

ताकरिकै मेरी मोह गयोहै. ॥ ॥ दोहा ॥ मोउपरकीनीदया, अध्यात्म-प्रगटाय ॥ वचनतुह्मारेसुनतही, मोहगयोजुनसाय ॥ १ ॥

भवाप्ययौहिभूतानांश्रुतौविस्तरशोमया ॥
त्वत्तःकमलपत्राक्षमाहात्म्यमपिचाव्ययम् ॥ २॥

टीका— हेकृष्ण प्रानीनिको उपजनौ अरु विनाश ए दोऊ विस्तारसौं जु मैसुने और अक्षय अविनाशी ऐसौ तुह्मारौ माहात्म्य हुं सुन्यौ. ॥दोहा॥ जीवनिकीउतपतिसुनि, औरप्रलयकीरीति ॥ कहीजुतुमविस्तारसौं, निज-माहातमनीति ॥ २ ॥

एवमेतद्यथात्थत्वमात्मानंपरमेश्वरम् ॥
द्रष्टुमिच्छामितेरूपमैश्वरंपुरुषोत्तम ॥ ३ ॥

टीका— हेपरमेश्वर जे सो तुम आपनौ आत्मा मोसौं कह्यौ सो आ-तमातै सोईहै इहां मोकौं अविश्वास कोऊ नाहीं तथापि हे पुरुषोत्तम ज्ञान ऐश्वर्य शक्ति बलवीर्य तेज इनकरिकै युक्त ऐसौ तुह्मारौ ऐश्वर्यरूप सो मैं देष्यौ चाहताहूं यारूपदेषिवेकौं मेरै परमकौतुक है. ॥ दोहा ॥ यौं-हीहौंज्यौंकहतहौं, हरिजुतुह्मारोभेव ॥ देष्यौचाहतहौंअवै, विश्वरूप-जेदेव ॥ ३ ॥

मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो ॥
योगेश्वरततोमेत्वंदर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥

टीका— हेकृष्ण जोमै तुह्मारो रूपदेखिसकौ तो मोकौं अविनाशी नित्य ऐसौ अपनो स्वरूप दिषावौ. ॥ ॥ दोहा ॥ देषनजोगौमोहिजौ, जा-नतहौंजदुराय ॥ अविनाशीनिजरूपतौ, दीजैमोहिदिषाय ॥ ४ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

पश्यमेपार्थरूपाणिशतशोथसहस्रशः ॥
नानाविधानिदिव्यानिनानावर्णाकृतीनिच ॥ ५ ॥

टीका— ऐसै अर्जुन प्रार्थना करि तब अपनौ दिव्य अद्भुत दिषाइवे-कै लीये अर्जुनकौ सावधान करि श्रीभगवान कहतहै हे अर्जुन देषिमे-रे रूप सतहै सहस्रहै नाना भांति दिव्यहै. नाना भांतिकै वरनहै नाना भांतिकै आकारहै. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुनअबतूंदेषिलै, सतसहस्रममरूप ॥ बहुतभांतिहैदिव्यजो, नानावरनअनूप ॥ ५ ॥

पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा ॥
बहून्यदृष्टपूर्वाणिपश्याश्चर्याणिभारत ॥ ६ ॥

टीका— हेअर्जुन मेरैविषै आदित्यनकौं देषि. और वसुनिकौं देषि. रु-द्रनकौंदेषि अश्विनी कुमारनकौं देषि मरुतगननकौं देषि. औरहू पहिलैं नदेषै ऐसैं अचिरज बहुतदेषि ॥ ॥ दोहा ॥ देषिरुद्रआदित्यवसु, अश्विनी-सुतमोमांहिं ॥ औरअचिरजरूपजे, पहिलैंदेषेनाहिं ॥ ६ ॥

इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम् ॥
ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥

टीका— हेअर्जुन यामेरे देहविषै चराचर जगत एकठौर अबहीं देषि या जगतकौं कोटिवरसतक भ्रमनकरै तऊदेषि सकै नाहीं और दूजु कुछ जयपराजयादिक देष्यौ चाहैहै सो सबही देषि. ॥ ॥ दोहा ॥ एकठौरम-मदेहिमैं, थिरचररहेसमाय ॥ देष्यौचाहत जोकछु,सोईदेउदिषाय ॥ ७ ॥

नतुमांशक्यसेद्रष्टुमनेनैवस्वचक्षुषा ॥
दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेयोगमैश्वरम् ॥ ८ ॥

टीका— हेअर्जुन तूं इन अपनैं नेत्रनसौं चर्मदृष्टि करिकै मोकौं दे-षिसकैगौ नाहीं तातैं मै तोकौं दिव्यदृष्टि देतहौं मेरे ऐश्वर्य जोगकौं तूं दे-षि. ॥ ॥ दोहा ॥ इननैंननिनहिंदेषियै, देउदिव्यदृगतोहि ॥ जोगेश्वरसं-युक्तजो जैसैंदेषमोहि ॥ ८ ॥


विश्व. रूप.

संजय उवाच

एवमुक्त्वाततोराजन्महायोगेश्वरोहरिः ॥
दर्शयामासपार्थायपरमंरूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥

टीका– अब संजय कहतहै कि हे धृतराष्ट्र श्रीकृष्ण अर्जुन सौ ऐसै कहिकै आपनौ परम ऐश्वर्यरूप दिषायौ. ॥ ॥ दोहा ॥ हेराजन्यौंबोलिकै, योगेश्वरहरिराय ॥ विश्वरूपअर्जुनप्रति अद्भुतदियोदिषाय ॥ ९ ॥

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ॥
अनेकदिव्याभरणंदिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥

टीका– हेधृतराष्ट्र सो रूप कैसो है. जाकै अनेक मुषहै. अनेक नेत्र है जहां अनेक अद्भुत पदार्थनकौ दर्शन है जाकै अनेक दिव्य आभूषन है जाकै दिव्य अनेक ऊंचे आयुध है. ॥ ॥ दोहा ॥ बहुआननलोचनबहुत, देषैअचिरजहोत ॥ भूषितनानाभूषणनि, सहलअनेकउदोत ॥ १० ॥

दिव्यमाल्यांबरधरंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥
सर्वाश्चर्यमयंदेवमनंतंविश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥

टीका– हेधृतराष्ट्र फेरि रूपकैसोहै दिव्य पुहप दिव्यवस्त्र धारेहै. दिव्यहै गंध ऐसे अरगजाकौ अनुलेपन कीयेहै अनेक आश्चर्य मयहै. प्रकाशरूपहै. अनंतकहै. जाकौं प्रमान नाहीं ऐसेहै. जितदेषियै तितसर्वत्रही मुषहै. जाकौ. ॥ ॥ दोहा ॥ दिव्यहारदिव्यौवसन, दिव्यसुगंधलगाय ॥ अनंतदेवमुषजिततिते, सबअचिरजकेभाय ॥ ११ ॥

दिविसूर्यसहस्रस्यभवेद्युगपदुत्थिता ॥
यदिभाःसदृशीसास्याद्भासस्तस्यमहात्मनः ॥१२॥

टीका– हेधृतराष्ट्र जो आकाशविषै सहस्र सूर्य एकही साथ उदितभयेहौंहीं तौ महात्मा विश्वरूपकी कांति समान कहनैनहीं जाय तो ओर उपमाकौं नहोय. और उपमा नाहीं. ऐसौरूप अर्जुनकौं दिषायौ. ॥

॥ दोहा ॥ सहसकरविआकाशमैं, पूरिरहेसबजोति ॥ दीपतिताप्रभुकीलषै तऊनसमताहोति ॥ १२ ॥

तत्रैकस्थंजगत्कृत्स्नंप्रविभक्तमनेकधा ॥
अपश्यद्देवदेवस्यशरीरेपांडवस्तदा ॥ १३ ॥

टीका– हेधृतराष्ट्र तादेवदेवके शरीरविषै अनेक भांति भिन्न भिन्न सब जगतकौं अर्जुन देषत भयौ. ॥ ॥ दोहा ॥ भिन्नभेदजेजगतमैं, देषै, सबइकठाऊ ॥ देवदेवकीदेहमैं, अर्जुनकितेगिनाऊ ॥ १३ ॥

ततःसविस्मयाविष्टोहृष्टरोमाधनंजयः ॥
प्रणम्यसिरसादेवंकृतांजलिरभाषत ॥ १४ ॥

टीका– हेधृतराष्ट्र ऐसै विश्वरूपके दर्शन किये उपरांत अर्जुन अतिहिविस्मय पाइके रोमांचित शरीर व्हैके मस्तक सौं प्रनाम करिकै हाथ जोरिकैं बोल्यौ. ॥ ॥ दोहा ॥ ताकौतबअचिरजभयौ, रोमहर्षकेदाय ॥ तादेवहिपरनामकरि, बोल्यौचित्तकौचाय ॥ १४ ॥

अर्जुन उवाच

पश्यामिदेवांस्तवदेवदेहेसर्वांस्तथाभूतविशेषसंघान् ॥
ब्रह्माणमीशंकमलासनस्थमृषींश्चसर्वानुरगांश्चदिव्यान् १५

टीका– अब अर्जुन कहतहै हे कृष्ण तुह्मारी देहविषै आदित्यादिक देवतानकौं देखतहौं अरु सबही जरायुजादिक चतुर्विध प्रानीनकै समूहनकौं देषतहौं अरु देवनकौं ईश्वर ऐसोजु ब्रह्मा ताकौं तुह्मारे नाभिकमलकैं आसनपरबैठ्यौ देषतहौं. अथवा पृथ्वीरूप कमल ताकौं मध्यमेरुपर्वत सोई कर्णिका भई तापर बैठ्यौ देषतहौं अरु वसिष्ठादिक रिषिनकौं देषतहौं. तछकादिक सर्पनकौं देषतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ देषतहौंतवदेहमैं, सबथिरचरसुरसिद्ध ॥ कमलासनऋषि ईशपुनि,सबैनागसुसमृद्ध १५

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रंपश्यामित्वांसर्वतोनंतरूपम् ॥

नांतंनमध्यंनपुनस्तवादिंपश्यामिविश्वेश्वरविश्वरूपम् १६ ॥

टीका– हेकृष्ण अनेक बाहु उदरमुष अरु नेत्र जाके ऐसे सबही ठौर उनकौं अनंतरूप देषतहौं अरु तुह्मारौ अंत्य मध्य आदि नाही देषतहौं सर्व व्यापीहो. यातैं अरु हेविश्वेश्वर तुम कौं मैं विश्वरूप देषतहौं. ॥दोहा॥ वहुतबाहु उदरोवहुतमैदेषौवहुसीस ॥ अंतआदिमधियहनहीं, तुमअनंत. जगदीस ॥ १६ ॥

किरीटिनंगदिनंचक्रिणंचतेजोराशिंसर्वतोदीप्तिमंतम् ॥
पश्यामित्वांदुर्निरीक्ष्यंसमंताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् १७

टीका– हेकृष्ण तुमकौं मैं मुकट धारी देषतहौं. अरु गदाधारी देषतहौं. अरु सुदर्शन चक्रधारी देषतहौं. सबही ठौर प्रकाशरूप ऐसो तेजको समूह काहूसैं देष्यौ नजाय ऐसौ देषतहौं दैदीप्यमान ऐसै जे अग्नि अरु सूर्य तिन समान दुतिदेषतहौं निश्चै कह्यो नजाय देषतैं चकचौंधी शीलगै ऐसै देषतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ मुकुटसीसकरचक्रगद, रूपराशिभगवान ॥ द्दगनिचौंधचितवतलगै, होरविअनलसमान ॥ १७ ॥

त्वमक्षरंपरमंवेदितव्यंत्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानम् ॥
त्वमव्ययःशाश्वतधर्मगोप्तासनातनस्त्वंपुरुषोमतोमे ॥१८॥

टीका– हेकृष्ण ऐसो तुह्मारो अचिंत्य ऐश्वर्यहै. तातैं तुमही अक्षर परब्रह्महौं. अरु जे मुमुक्षुहै तिनकै जानिवेकौ वस्तुहो अरु या संसारकौ तुमही परम आश्रयहौं. याहीतैं तुम अव्यय कहै. नित्यहौं. अरु नित्य धर्मके रक्षकहौं. मेरेमततैं तुम सनातन पुरुषहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ अछरहौतुमहीपरम, होसवजगतनिधान ॥ अविनाशीरछकधरम, उत्तमहोअनुमान ॥ ॥ १९ ॥ जान्यौचाहतहैजिते जिनके जाननजोग, तुमहिसनातनहौसदा कहतविवेकीलोक ॥ १८ ॥

अनादिमध्यांतमनंतवीर्यमनंतबाहुंशशिसूर्यनेत्रम् ॥

पश्यामित्वांदीप्तहुताशवक्रंस्वतेजसाविश्वमिदंतपंतम्॥१९॥

टीका– हेकृष्ण हम तुमकौं उत्पत्तिस्थिति संहार रहित देषतहौं अनंतहै प्रभाव जाको अरु अनंत वीर्यवंतहै भुजाजाकी और चंद्रमासूर्य जुहै नेत्र जाके दैदीप्यमान अग्निहै मुषविषै जाके अरु अपने तेजसौं संसारकौ संतापित करतहै ऐसै तुह्मारै रूपकौं मैं देषतहौं.॥ ॥ दोहा ॥ आदिअंतमधिरहिततुम, बहुभुजरविशशिनैन ॥ तुमरेमुषदीपतिअगनि, जगतप्रकासतऐन ॥ १९ ॥

द्यावापृथिव्योरिदमंतरंहिव्याप्तंत्वयैकेनदिशश्चसर्वाः॥
दृष्ट्वाद्भुतंरूपमुग्रंतवेदंलोकत्रयंप्रव्यथितंमहात्मन् २०॥

टीका– हेकृष्ण यह आकाश अरु पृथिवीके बीच अंतरिक्षहै सुतुम अपने एक शरीरसों व्यापि रहेहो. अरु सबही दिशा व्यापि रहेहो यह तुह्मारो अद्भुत घोररूप देषि तीनौं लोक अत्यंत भयभीत भयेहै ऐसै देषतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ गगनभूमिमधिसर्वदिशि, व्यापेतुमइकव्हैजु ॥ अद्भूतरूपसुउग्रलषि, प्रविशितलोकसबेजु ॥ २० ॥

अमीहित्वांसुरसंघाविशंतिकेचिद्भीताःप्रांजलयोगृणंति॥स्वस्तीत्युक्त्वामहर्षिसिद्धसंघाःस्तुवंतित्वांस्तुतिभिःपुष्कलाभिः

टीका– हेकृष्ण औरहूसुनौ एदेवतानिके समूह भयभीत व्हैकै तुमविषै प्रवेश करतहै. अरु केतेक डरतहै हाथजोरि स्तुति करतहै ॥ दोहा ॥ पैठततोमैं देवगण, स्तुतिहिकरतभयमानि ॥ ऋषिअरुसिद्धसमाज हु,ते रेकरतवषान ॥ २१ ॥

रुद्रादित्यावसवोयेचसाध्याविश्वेऽश्विनौमरुतश्चोष्मपाश्च ॥
गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघावीक्ष्यंतेत्वांविस्मिताश्चैवसर्वे ॥२२॥

टीका– हेकृष्ण रुद्र ११ आदित्य १२ वसु ८ साध्यनामदेवता अरुविश्वेदेव अरु अश्विनीकुमार २ मरुद्गण ४९ अरु उष्मपा नाम पि-

तर अरु गंधर्व यक्ष अरु विरोचनादिक दैत्य अरु सिद्धनके समूह एसब- हो विस्मय पाइके तुमकों देषतहो. ॥ ॥ दोहा ॥ रुद्रसिद्धआदित्यवसु, अश्विनीविश्वेदेव. ॥ साध्यजक्षगंधर्वसुर, मरुतनपावैभेव ॥ पितरउष्मपा- नामजै, दैत्यविरोचनआदि ॥ एसबविस्मैपाइकै, देषततोहिअनादि ॥२२ ॥

रूपंमहत्तेबहुवक्रनेत्रंमहाबाहोबहुबाहूरुपादम् ॥
बहूदरंबहुदंष्ट्राकरालंदृष्ट्वालोकाःप्रव्यथितास्तथाहम् २३

टीका– हेकृष्ण यह तुह्मारौ बडोबडो रूप देषिकै सबलोक डरतेहै औ- र मैं हूं डरत हौं सोरूप कैसोहै. बहुत मुष अरु बहुतहै नेत्र जाके बहुतहै बाहू अरु चरनहै जाके. अरु जो बहुदंष्ट्रा करिकै अति भयान कहै. ॥ दो- हा ॥ रूपबडोबहुमुषनयन, भुजपदअरुउदरौंजु ॥ देखिभयानकदाढबहु, विथितलोकअरुहौंजु ॥ २३ ॥

नभस्पृशंदीप्तमनेकवर्णंव्यात्ताननंदीप्तविशालनेत्रम् ॥
दृष्ट्वाहित्वांप्रव्यथितांतरात्माधृतिंनविंदामिशमंचविष्णो २४

टीका– हेकृष्ण यह तुह्मारौ रूप आकाश पर्यंत प्राप्त भयोहै अरु ते जयुक्त देदीप्यमान है. जाके अनेक वर्णहै. अरु जाके वीस्तीर्ण मुषहै दे- दीप्यमान अरु विशाल नेत्रहै जाके ए तुह्मारे रूपकौं देषि मेरो अंतरात्मा कहे मनसो अतिहि डरतहै धीरज नाहीं पावतहौं अरु शांति हूं नाहीं पा- वतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ पायपुहमिआकाशसिर, दीरघदृगमुखबाय ॥ ऐसै- तुमकौंदेषिकै, धीरजगयोपलाय ॥ २४ ॥

दंष्ट्राकरालानिचतेमुखानिदृष्ट्वैवकालानलसन्निभानि ॥
दिशोनजानेनलभेचशर्मप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ २५ ॥

टीका– हेकृष्ण दाढ करिकै विकराल अरु प्रलयकै अग्निसमान ऐसे जे तुह्मारे मुष तिनकौं देषिकै अतिहि भयभीत भयोहौं तातैं मोकौं दि- शाको ज्ञान नाहीं. अरु सुखऊ नाहीं पावतहौं तातैं हे देवेश हे जगन्नि-

वास तुम प्रसन्न होहु. ॥ ॥ दोहा ॥ कालअगनिसमदाढतुव, तादेषेभय-
भीत ॥ दिसभूलीसुषहूगयौ, अबकीजैप्रभुप्रीति ॥ २५ ॥

अमीचत्वांधृतराष्ट्रस्यपुत्राःसर्वेसहैवावनिपालसंघैः॥
भीष्मोद्रोणःसूतपुत्रस्तथासौसहास्मदीयैरपियोधमुख्यैः २६

टीका– हेकृष्ण दुर्योधनादिक सबही धृतराष्ट्रके पुत्र जयद्रथादिक राजासमेत तुह्मारे मुषविषे प्रवेश करतहै. अरु भीष्माचार्य द्रोणाचार्य कर्ण तुह्मारे मुषविषे प्रवेश करतहै. अरु हमारेउ जे शिषंडी धृष्टद्युम्नादिक, जे जोधानविषे मुख्यहै तेऊ प्रवेश करतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ पूतसबैधृतरा-
ष्ट्रके, सबनृपतिनकेसंग ॥ कर्णद्रोणभीषमजिते, जोधाहैमोअंग ॥ २६ ॥

वक्राणितेत्वरमाणाविशंतिदंष्ट्राकरालानिभयानकानि ॥
केचिद्विलग्नादशनांतरेषुसंदृश्यंतेचूर्णितैरुत्तमांगैः॥ २७॥

टीका– हेकृष्ण दंष्ट्राकरिकै अतिभयानक ऐसे जे तुह्मारे मुष तिनमैं ए सबही शीघ्र प्रवेश करतहै. तिनमैं केतेक चूर्णितमस्तक व्हैकै दांतनकै वीचि लगि रहेहै. ऐसै देषतहौं ॥ ॥ दोहा ॥ बरततिहारेबदनमैं, सबैपरत-
हैजाय, कोऊदाढनतरदले, कोऊरहेलपटाय ॥ २७ ॥

यथानदीनांबहवोंऽबुवेगाःसमुद्रमेवाभिमुखाद्रवंति ॥
तथातवामीनरलोकवीराविशंतिवक्राण्यभिविज्वलंति ॥२८॥

टीका– हे कृष्ण जैसै नदीनके अनेक प्रवाह समुद्रविषै सनमुष व्है-कै प्रवेश करतहै तैसें ए मनुष्यनमें जो बीर जोधाहै ते तुह्मारे जाज्वल्य-मान मुषविषै प्रवेश करतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्योंसरितावरिषारितहि, परत-
सिंधुमैंजाय, त्यौंनृपतैरैवदनमैं, सबैपरतहैआय ॥ २८ ॥

यथाप्रदीप्तंज्वलनंपतंगाविशंतिनाशायसमृद्धवेगाः ॥
तथैवनाशायविशंतिलोकास्तवापिवक्राणिसमृद्धवेगाः ।२९।

टीका– हे कृष्ण औरहू दृष्टांत कहतहौं कि जैसै देदीप्यमान अग्नि-

जिपै पतंग जानिबूझि वेगसौं अपनै नाशकैअर्थ प्रवेश करतहै. तैसै ए-लोकहू अपनै नाशकैअर्थ वेगहीसौं जानिबूझि तुह्मारे मुखविषै प्रवेश करतहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्यौंपतंगपरिदीपमैं लहतआपनौंनास, तैसैसब-नृपपरतहै तेरेमुखकेपास ॥ २९ ॥

लेलिह्यसेग्रसमानःसमंताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ॥
तेजोभिरापूर्यजगत्समग्रंभासस्तवोग्राःप्रतपंतिविष्णोः।३०।

टीका– हेकृष्ण तुम अपनै जाज्वल्यमान मुखसौं इन सबही वीरजोधानकौं ग्रास करिकै अतिसयसौं भछन करतहौ. और हे विष्णो तुह्मारी जे उग्रकांतिहै ते अपनें तेजसौं संसार व्याप्त करिकै अतिउग्र ह्वैकै संताप उ-पजावतुहो. ॥ ॥ दोहा ॥ लीलतहौंतिनकौंजुले, सेनासौंलपटाय, क्रांति-रावरीजगतकौं, देततापबहुभाय ॥ ३० ॥

आख्याहिमेकोभवानुग्ररूपोनमोस्तुतेदेववरप्रसीद ॥
विज्ञातुमिच्छामिभवंतमाद्यंनहिप्रजानामितवप्रवृत्तिं ॥३१॥

टीका– हेकृष्ण तुम उग्ररूप कौनहौ यह मोकौं कहौ तुमकौं नमस्कार-करतहौं हे देववर प्रसन्न होहु तुम आदिपुरुषहौ तुमकौ विशेष जानिवेकी इ-च्छा करतहौं. अरु तुम काहेतें ऐसै रूपसौं प्रवृत्त भयेहो. सोमैं जानतनाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ उग्ररूपतुमकौनहौ, मोसौंकहियैदेव, जान्यौचाहतहौंअबै, तुमचरितनकौभेव ॥ ३१ ॥

कालोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः ॥
ऋतेपित्वांनभविष्यंतिसर्वेयेऽवस्थिताःप्रत्यनीकेषुयोधाः३२

टीका–अब श्रीकृष्ण कहतहै कि हेअर्जुन लोकनको क्षयकर्ता मैं काल-स्वरूपहौं. यालोकविषै इन प्रानिनकौं संहार करिवेकौं प्रवृत्त भयोहौं यातैं ए सब भीषमद्रोणादिक जे सैन्यविषै जोधा ठाढेहै ते सब मृत्युकौं प्राप्त होइगें. एक तोविनु इनमैं कोऊ न रहैगा. ॥ दोहा ॥ काललरूपह्वैहोतहौं, सबकौं मा-

रनहार, तोविनुसबजोधानकौं भषिजैहोनिरधार ॥ ३२ ॥

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठयशोलभस्वजित्वाशत्रून्भुंक्ष्वराज्यंसमृद्धम्।
मयैवैतेनिहताःपूर्वमेवनिमित्तमात्रंभवसव्यसाचिन् ॥ ३३ ॥

टीका– तातैं हे अर्जुन तूं उठि शत्रुनिकौं हनिकै जसलेहु सबलोक कहैगेकि देवतानसौं जीते न जाय ऐसेभीष्मद्रोणादिकते अर्जुननै जीते. ऐसीभांतिजस पाइहै. विना श्रम वैरी जीतिकै समृद्धराज्यकौं भोगकरि अरु ए तेरे शत्रुहै. तेतो मैंहीं पहिले मारेहै. तातैं हेसव्यसाची तूं इहांके बलनिमित्तमात्रहोहु. ॥ दोहा ॥ तातैंउठिरनजीतलै, लेकीरतिअरुराज, मैंहनिराषेहैनृपति, निमित्तहोहुतूंआज ॥ ३३ ॥

द्रोणंचभीष्मंचजयद्रथंचकर्णंतथाऽन्यानपियोधवीरान् ॥
मयाहतांस्त्वंजहिमाव्यतिष्ठायुद्ध्यस्वजेतासिरणेसपत्नान्।३

टीका– हेअर्जुन द्रोण भीष्म जयद्रथ कर्ण अरु औरहूजे जोधानमैं वीर हैतेसबमैं. मारेहै. तिनकौं तूंमारि अब कछु व्यथा पावै जिन तातैं तूं जुद्धकरि संग्राम विषै वैरीनकौं जीतेगो. ॥ ॥ दोहा ॥ भीषमद्रोणअरुजयद्रथ, करन आदिजेओर, मेरेमारेमारतूं शत्रुयुद्धइकठोर ॥ ३४ ॥

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वावचनंकेशवस्यकृतांजलिर्वेपमानःकिरीटी ॥
नमस्कृत्यभूयएवाहकृष्णंसगद्गदंभीतभीतःप्रणम्य ३५

टीका– यह वृत्तांत संजय धृतराष्ट्रसौं कहतहैकि हेधृतराष्ट्र ऐसै श्रीकृष्णके वचन सुनिकै अर्जुन कंपायमान ह्वैकै हाथ जोरि श्रीकृष्णकौं नमस्कार करि परम हरषसौं गद्गद कंठ अरु भयभीतह्वैकै अतिहीविनयसौं नम्र होइकै श्रीकृष्णसौं फिरि कहतभयौ ॥ ॥ दोहा ॥ वचनसुनेश्रीकृष्णके, कांपीअर्जुनदेह, तबप्रभुकौंपदलागिकै, बोल्योवचनसनेह ॥ ३५ ॥

अर्जुन उवाच

स्थानेहृषीकेशतवप्रकीर्त्याजगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यतेच ॥
रक्षांसिभीतानिदिशोद्रवंतिसर्वेनमस्यंतिचसिद्धसंघाः॥३६॥

टीका— अव अर्जुन कहतहै किहेहृषीकेश जातैं तुह्मारो अद्भुत प्रभाव है अरु भक्तवत्सलहौ तातैं तुह्मारी कीर्तिसौं जगत् हर्ष पावतुहै. अरु अनुरागकौं पावतुहै. अरु राक्षस भयभीत व्हैकै दिशा दिशानकौं पलायन करतहै. अरु सव सिद्धनको समूह नमस्कार करतहै सोयहवात जुक्तहै. अचरज नाहीं. ॥ दोहा ॥ सवजगकौयहजगतहै रहैतुमह अनुरागि, सिद्धनमततोकौंसदा, राक्षसजातजुभागि ॥ ३६ ॥

कस्माच्चतेननमेरन्महात्मन्गरीयसेब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे॥
अनंतदेवेशजगन्निवासत्वमक्षरंसदसत्तत्परंयत् ॥ ३७ ॥

टीका—हेमहात्मन् हे अनंत हे देवेश हे जगन्निवास क्यौं, तुमकौं नमस्कार न करि तुम ब्रह्माहूतैं वडेहौ. ब्रह्माके पिताहो और कार्यकारनतैं परै ऐसो जु मूल कारन अच्छर ब्रह्मसौं तुमहीहो. ऐसे तुमकौं सवलोक नमस्कार करै है. ताको अचिरज कोऊ नाहीं ॥ दोहा ॥ क्यौंननवैतुमकौं सवै, ब्रह्माकेकरतार, जगतईशअक्षरअनंत, तुमसवतैंहोपार ॥ ३७ ॥

त्वमादिदेवःपुरुषःपुराणस्त्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानं ॥
वेत्तासिवेद्यंचपरंचधामत्वयाततंविश्वमनंतरूप ॥ ३८ ॥

टीका— हेकृष्ण तुम आदिदेवहो देवतानके आदिहौ. याहीतैं तुम अनादि पुरानपुरुषहौ. अरु यासंसारके लयस्थानहो अरुवेद्यकहैं. वस्तुमात्रसो तुमही हो अरु परमधाम कहै वैष्णवीतेज सो तुमहीहो हे अनंतरूप तुमही अपनें रूपसौं यह संसार व्याप्तकियोहै यातैं तुमहीकौं नमस्कार करनो जोग्यहै. ॥ ॥ दोहा ॥ पुरुषपुरातनआदिहौ, तुमहीजगतनिधान, तुमयहसवजगविस्तर्यौ, जानत तुमही ज्ञान ॥ ३८ ॥

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणःशशांकःप्रजापतिस्त्वंप्रपितामहश्च ॥

नमोनमस्तेस्तुसहस्रकृत्वःपुनश्चभूयोऽपिनमोनमस्ते। ३९।

टीका– हेकृष्ण वायु तुमहो, यम तुमहीहो, तुम अग्निहो, वरुनहो, चंद्रमाहो, सकलदेवरूपहो ब्रह्माहो. ब्रह्माहूके पिताहौ यातें तुमसकलके प्रपितामहहौ तातैं तुमकौं सहस्रनमस्कार करतहौं. फिर औरहूनमस्कारहै, अर्थ यहहै कि भक्ति अरु श्रद्धाके आधिक्यतैं नमस्कार करत २ अर्जुन तृप्त नाहींहोत यातैं श्रीकृष्णकौं वारंवार प्रणाम करतुहै. ॥ ॥ दोहा ॥ वायुप्रजापतिअग्निजम, वरुनपितामहचंद्र, वारवार सहसनिसतनि, प्रणमततोहिमुकुंद ॥ ३९ ॥

नमःपुरस्तादथपृष्ठतस्तेनमोस्तुतेसर्वतएवसर्व ॥
अनंतवीर्यामितविक्रमस्त्वंसर्वंसमाप्नोषिततोसिसर्वः॥ ४० ॥

टीका– हे सर्वरूप तुमकौं सनमुषहु नमस्कारहै. अरु पीठ पीछेंहु नमस्कारहै. अरु जे सबही दिशानविषै तुमकौं नमस्कारहै. तुम अनंतवीर्यहो अरु अतिहि अधिक पराक्रमीहो. तातैं तुम यासंसारमैं बाहिरभीतर व्याप्तव्हैरहेहो. जैसै कुंडलादिक आभूषनमैं बाहिरभीतर सुवर्ण व्याप्तव्है रह्योहै. तैसै तुमहू यासंसारमै सर्वत्र व्याप्तहो याहीतें तुम सर्वस्वरूपहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ आगेतैतुमकौंनवत, पाछै हूजअनंत, सर्वदिसनितुमकौं नवत, अमितप्रबल भगवंत ॥ ४० ॥

सखेतिमत्वाप्रसभंयदुक्तंहेकृष्णहेयादवहेसखेति ॥
अजानतामहिमानंतवेदंमयाप्रमादात्प्रणयेनऽवापि ॥ ४१ ॥

टीका– हेकृष्ण तुमकौं अपने मित्रजानि ढिठाईसौं अनादरकरिकै हेकृष्ण हेजादव हे सखे ऐसौ कह्यौ सौ क्षमाकीजो मैं तुमारी यामहिमाकौं अरु या विश्वरूपकौ अनजाने असावधान व्हैकै अथवा स्नेहसौं जो कछु कह्यौहै. सू क्षमा कीजो. ॥ ॥ दोहा ॥ मित्रजानिजोमैं कही, सोछामियै होदेव, जानौंकहाजुबावरो, तवमहिमाकौभेव ॥ ४१ ॥ हेयादव हेकृष्ण हे, सखा कह्यौ अनजानि, अथवा कह्यौ सनेह सौं, छमियै सेवकमानि ॥ ४१ ॥

यच्चावहासार्थमसत्कृतोसिविहारशय्यासनभोजनेषु ॥
एकोऽथवाऽप्यच्युततत्समक्षंतत्क्षामयेत्वामहमप्रमेयम्।४२।

टीका– हेकृष्ण पेलविषै ओर सोवत बैठत भोजनकरत ओर एकांत-विषे अथवा बहुत लोकनविषै हांसी करनकै लियै ढिठाईसौं अनादरक-रिके जो कछु मैं कह्यो होय सो तुमसौं छमा करावतुहौं तुमअप्रमेय हो-कहै तुह्मारै प्रभावकौं कोई चिंतवनकरिसकै नाही ऐसे हौं, ॥ ॥ दोहा ॥ भोजनसौंनविहारमैं, कीयैअनादरभाय, तेजुक्षमासबकीजियै, प्रभुजूके-सोराय ॥ ४२ ॥

पितासिलोकस्यचराचरस्यत्वमस्यपूज्यश्चगुरुर्गरीयान् ॥
नत्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकःकुतोन्योलोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव।

टीका– हेकृष्ण तुम या चराचर लोकके पिताहो याहीतैं तुम पूज्यहौं गुरुहूतें वडोगुरुहो. तौ अधिक कहातैं तुम परमेश्वरहो तातैं तीनहू लोकविषैं तुमारे समान अरु अधिककोऊ नाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ पिता-जुतुमसंसारके, तुमहीगुरुहोईस, तुमपटतरकोऊनाहिंन अधिककोऊ जगदीस ॥ ४३ ॥

तस्मात्प्रणम्यप्रणिधायकायंप्रसादयेत्वामहमीशमीड्यं ॥
पितेवपुत्रस्यसखेवसख्युःप्रियःप्रियायार्हसिदेवसोढुम्।४४।

टीका– हेकृष्ण तुम जगतके ईश्वरहो पूज्यहौ तातै नम्र ह्वैकै दंडव-त करिके तुमकौं प्रसन्न करतहौं जैसै पिता पुत्रको अपराध सहै अरु मि-त्र मित्रको सहै भरतार स्त्रीको सहै ऐसो तुम मेरो अपराध सहिवेकौं जोग्य-हौ मोसौं तुम सबहीकी छमा करिवे लायक हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ तोहि-दंडवतप्रसन्नह्वै, छमोदोपजोमोहि, ज्योंपितसुतकोपतिप्रियहि, मित्रमित्र-कोजोहि ॥ ४४ ॥

अदृष्टपूर्वंहृषितोस्मिदृष्ट्वाभयेनचप्रव्यथितंमनोमे ॥

तदेवमेदर्शयदेवरूपंप्रसीददेवेशजगन्निवास॥ ४५ ॥

टीका– हेकृष्ण तुमकौं कबहू न देखे ऐसे देषिकै मैं बहुत हर्षित भयोहौं अरु भयसौं मेरोमन विथा पाइकै चंचल होतहै. तातैं विथा दूर-करनेकै लियै हेदेव मोकौं वही पहलो रूपही दिषावौ अरु हे देवेश हे जगन्निवास तुम प्रसन्न होहु. ॥ ॥ दोहा ॥ पहिलौरूपदिषाइयै, हौं-जीऊं वाजोइ, रूपानिरषयह रावतो, मोहिहरषमयहोइ ॥ ४५ ॥

किरीटिनंगदिनंचक्रिहस्तमिच्छामित्वांद्रष्टुमहंतथैव ॥
तेनैवरूपेणचतुर्भुजेनसहस्त्रबाहोभवविश्वमूर्ते ॥ ४६ ॥

टीका–हेकृष्ण मुकुट गदा चक्रधरै वहु तुम्हारौ रूप देष्यौ चाहतहौं जो मैं पहिलौ देष्यौ रहे हे सहस्त्रबाहो हे विश्वमूर्ते यह रूप समेटिकै वहै मुकुट गदा चक्रधारी चतुर्भुज रूप प्रगट करियै तातैं इहां ऐसै जानीयेहैकि पहिलै सदा सर्वदा अर्जुनकौं मुकुटादिकनसौं युक्त चतुर्भुजरूपको दर्शन हतौ. ॥ दोहा ॥ मुकुटविराजैसीसपर, गदाचक्रतुवहाथ, इहिविधि मोहिदिषाइयै, प्रभुहो तुमजगन्नाथ ॥ १ ॥ चारिभुजाधरप्रगटव्है, मोकौंदरसनदेहु, तवमूरतिजोअनंतव्है, मेरैवासौंनेहु ॥ ४६ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

मयाप्रसन्नेनतवार्जुनेदंरूपंपरंदर्शितमात्मयोगात् ॥
तेजोमयंविश्वमनंतमाद्यंयन्मेत्वदन्येननदृष्टपूर्वम् ॥ ४७ ॥

टीका–अर्जुननें ऐसी प्रार्थना करि तब श्रीकृष्ण आश्वासनादेकै कहत है कि हेअर्जुन तुं काहेकौं डरैहै. मैं प्रसन्नहोकै आपनी योगमायाकै प्रभावतैं यह आपनो रूप दिषायोहै. सो रूप कैसोहै. विश्वरूपहै. अनंतहै. आद्यकहै सबतैं आदिहै अरु तोविन और दूसरौकाहूनैं नदेष्यौ ऐसोहै. ॥ ॥ दोहा ॥ तोहिदिषायौरूपमैं, अतिप्रसन्नचितहोय, आदिअंतसो तेजमय देषिसकैनहिंकोय ॥ ४७ ॥

नवेदयज्ञाध्ययनैर्नदानैर्नचक्रियाभिर्नतपोभिरुग्रैः ॥
एवंरूपःशक्यअहंनृलोकेद्रष्टुंत्वदन्येनकुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥

टीका— हेअर्जुन यह मेरोरूप वेदकै अध्ययन करिकै जग्यविद्याकै अध्ययनकरिकै दानकरिकै अग्निहोत्रादिकक्रिया करिकैहू तौविनु और दूसरो यामनुष्यलोकविषै कोऊ देषिसकै नाहीं. तातैं यारूपकौं देषिकैं केवल तुंहीं कृतार्थ भयोहै. ॥ ॥ दोहा ॥ वेदयज्ञअध्ययनतप, क्रियाकरत पुनिदान, ऐसेमेरेरूपकौ, तौविनुलैषनआन ॥ ४८ ॥

मातेव्यथामाचविमूढभावोदृष्ट्वारूपंघोरमीदृङ्ममेदं ॥
व्यपेतभीःप्रीतमनाःपुनस्त्वंतदेवमेरूपमिदंप्रपश्य॥ ४९ ॥

टीका— हेअर्जुन यह मेरौ ऐसो भयानकरूपदेषिकैं तुं विथा पावै जिन अरु मोहहू पावैजिन तूं निर्भय होहु प्रसन्नचित्तव्हैकै फिरवह मेरो पहिलो रूप देषि. ॥ ॥ दोहा ॥ रूपभयानकदेषिकै, तुंजिनहियहिडराय, अवभयकौंतुंदूरिहै, मेरैरूप हिचाय ॥ ४९ ॥ घोररूपदेषैविथा पावैजिनपुनिमोइ, लषिपाहिलौईरूप, यह परसननिरभयहोइ. ॥ ॥४९ ॥

संजयउवाच ॥

इत्यर्जुनंवासुदेवस्तथोक्त्वास्वकंरूपंदर्शयामासभूयः ॥
आश्वासयामासचभीतमेनंभूत्वापुनःसौम्यवपुर्महात्मा ५०

टीका— अव संजय कहतहै कि हेधृतराष्ट्र श्रीकृष्ण अर्जुनकौं ऐसै कहिकै अपनो वहै किरीटादिकयुक्त चतुर्भज रूप फेरि दिषाइयौ ऐसै सौम्यरूप व्हैकै भयभीत भयौ जोअर्जुन तासौं कृपाकरिकै आश्वासनाकरी. ॥ दोहा ॥ अर्जुनसौं ऐसै कह्यो, पहिलौवपुप्रगटाय, समाधानवहु विविधकियौ, भयतैलियैवचाय ॥ ५० ॥

अर्जुनउवाच ॥

दृष्ट्वेदंमानुषंरूपंतवसौम्यंजनार्दन ॥

इदानीमस्मिसंवृत्तःसचेताःप्रकृतिंगतः ॥ ५१ ॥

टीका– अब निर्भयव्हैकै अर्जुन कहतहै हेकृष्ण यह तुम्हारो सौम्य-मानुषरूप देषिकै अब मैं प्रसन्नचित्त भयोहौं अपनी प्रकृतिकौं प्राप्तभये-हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ रूपअनूपमतुमधर्‍यौ, तारूपहिकौंदेषि, प्रकृतिलहीमैं-आपुनी भयोसुचेतविशेषि ॥ ५१ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

सुदुर्दर्शमिदंरूपंदृष्टवानसियन्मम ॥
देवाअप्यस्यरूपस्यनित्यंदर्शनकांक्षिणः ॥ ५२ ॥

टीका– अब श्रीकृष्ण कहतहै कि हेअर्जुन तैं यह मेरो विश्वरूप देष्यौ सो रूपदेषनौ वहुतकठिनहै यारूपदेषिवेकौं देवताहू अभिलाषा-धरतुहै. पैदेषिसकैनाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ देष्योपरतनरूपयह, जोदेष्योतैं-मित्त, तासरूपकौंदेवता, देष्यौचाहतनित्त ॥ ५२ ॥

नाहंवेदैर्नतपसानदानेननचेज्यया ॥
शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा ॥ ५३ ॥

टीका– हेअर्जुन जैसै तै मोंकौं देष्योहै तैसै वेदके अध्ययन करि-कै तपस्या करिकै दानकरिकै जग्यकरिकै कोऊहू देषिसकै नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ दानयज्ञतपविधिकियै, मोहिनदेषैकोय, विनुश्रमपारथतूंअबै, मोकौंरह्यौजुजोय ॥ ५३ ॥

भक्त्यात्वनन्ययाशक्यअहमेवंविधोऽर्जुन ॥
ज्ञातुंद्रष्टुंचतत्वेनप्रवेष्टुंचपरंतप ॥ ५४ ॥

टीका– हेअर्जुन ऐसोजो स्वरूप ता मोकौं पुरुष अनन्यभक्तिकरिकै परमार्थतें जानिवेकौं समर्थहोय अरु शास्त्र ज्ञानतैं देषिवेकौ समर्थ होय अरु प्रत्यक्ष प्रवेश करिवेकौं समर्थ होय तातैं ओरउपायसौं जानिवेकौं देषि प्रवेश करिवेकौं समर्थ नहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ भक्तिअनन्यजुजोकरैं,

सो देपेयामांहि, नींकैजानीमोहिसौ, मोमैंरहैसमाहि ॥ ५४ ॥

मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥
निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमामेतिपांडव ॥ ५५ ॥

टीका–हेअर्जुन तातैं सकलशास्त्रनको सार परम रहस्य तोसों कहतहौं तूंनीकी भातिसुनि जोपुरुष मेरै निमित्त कर्म करै अरु जाके मैही परम पुरुषार्थहौं अरु जो मेरोही भक्तहोय अरु पुत्रादिकनके संगतैं रहितहोय और भूत प्रानीविषै वैरभाव नहोय ऐसो होय सो मोकौं पावै. ओर कोऊ पाइ सकै नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ मोनिमित्तकर्मनिकरै, सजैभक्तितजि ओर, वैरनकाहूसैंकरै, मोमैं लहै सुठौर ॥ ५५ ॥ वेदजग्यतपकोटितैं कबहुनदेष्यौजाय, विश्वरूपभगवानसौ भक्तहिंदियोदिषाय ॥ १ ॥ एकादश अध्यायमैं, विश्वरूपकौभेव, कह्यौकृष्णसमुझाइकै लषिअर्जुनकीसेव ॥२॥ विश्वरूपनीकैवरनि, इहिविधिआनंदराम, पायौप्रभु पूरनपरम, उरमैं धरिघनश्याम ॥ ३ ॥ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामएकादशोऽध्यायः॥११॥

अर्जुन उवाच ॥

एवंसततयुक्तायेभक्तास्त्वांपर्युपासते ॥
येचाप्यक्षरमव्यक्तंतेषांकेयोगवित्तमाः ॥ १ ॥

टीका–अब अर्जुन पूछतहै कि हेकृष्ण या भांति सर्व कर्म अर्पन करिकै निरंतर युक्त चित्त व्हैकै जेजे भक्त तुमकौं विश्वरूप, सर्वज्ञ सर्वशक्ति ऐसै उपासतहै. अरु जे अच्छरब्रह्म अव्यक्तहै निर्विशेष ऐसै उपासतहै. तिनदुहनमैं श्रेष्ठ जोगवेत्ता कोनसों कहो. ॥ ॥ दोहा ॥ जेसेवत तुमकौं सदा, करि कर्मनके साज, अक्षर ब्रह्महिजे भजति, बडोकोनकहिराज ।१।

श्रीभगवानुवाच ॥

मय्यावेश्यमनोयेमांनित्ययुक्ताउपासते ॥

श्रद्धयापरयोपेतास्तेमेयुक्ततमामताः ॥ २ ॥

टीका—अब श्रीकृष्ण कहतहै कि हे अर्जुन जे मेरेविषै मनको एकाग्र-करिकै अरु मेरे विषै नित्ययुक्त व्हैकै मेरे निमित्त कर्म करिकै श्रद्धासौं मोकौं उपासतहै. ते मेरै मततै श्रेष्ठ जोगजुक्तहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जामोमैं मन राषिकै, सेवतसेवकभाय, बहुश्रद्धासौं जोजुगत, सो सबतैं अधिकाय ॥२॥

येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते ॥
सर्वत्रगमचिंत्यंचकूटस्थमचलंध्रुवम् ॥ ३ ॥

टीका— हेअर्जुन जे अछरकहै अविनाशीकौं. अरु, अनिर्देश्यकहै बतावनैमै नावै ताकौं अरु अव्यक्त कहै रूपादिकन सौं रहितहै, तासौं सर्वत्र गम कहै सर्वव्यापी नाकौं अरु अचिंत्यकौं औंर कूटस्थकहै माया प्रपंचविषैआधाररूपव्है रह्यो ताकौं अचलकहै वृद्धिरहित ताकौं अरु ध्रुवकहै नित्य ऐसे मोकौं जे उपासतहै तेऊमोहीकौं प्राप्तहोहि. ॥ ॥ दोहा ॥ जोध्यावतहै अच्छरहि, जोनहिंप्रगटस्वरूप, व्यापीमायातैं परै, अचलअचिंत्यअरूप ॥ ३ ॥

संनियम्येंद्रियग्रामंसर्वत्रसमबुद्धयः ॥
तेप्राप्नुवंतिमामेवसर्वभूतहितेरताः ॥ ४ ॥

टीका— हेअर्जुन ऐसै मोकौं जे इंद्रियनकौं संजम करिकै सर्वत्रसम बुद्धि व्हैकै सकल प्रानीविषै हित करिकै उपासतहै ते मोहीकों प्राप्त होय. ॥ दोहा ॥ सबइंद्रीकौं रोकिकै, सबकौं लषै समान, सबजीवनकौं हित-करत, मोहिमिलै करज्ञान ॥ ४ ॥

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसां ॥
अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥

टीका— हेकृष्ण जिनको चित्त अव्यक्त कहै ब्रह्मताविषै आसक्तहै तेमहापुरुषहैं पैं यहवात अतिकठिनहैं यामे कलेस बहुत है क्योंकि जे

देहधारीहै तिनकौं अव्यक्तकी गति पावनी अतिकठिनहै. ॥ ॥ दोहा ॥ तिन्है क्लेश बहुहोतहै, ब्रम्ह लगायौ चित्त, रूप रेषजाकैनसौं, दुषसौं लहियत मित्त ॥ ५ ॥

येतुसर्वाणिकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्पराः ॥
अनन्येनैवयोगेनमांध्यायंतउपासते ॥ ६ ॥

टीका– हेअर्जुन जे मेरै भक्तहै ते मो परमेश्वरविषै सर्व कर्मनकौं अर्पन करिकै मोविषै परायन व्हैकै मेरो ध्यान करिकै अनन्ययोगसों मोकौं उपासतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जे सबकर्म निकरतहै, अर्पत मोकौं जानि, ध्यावत केवल भक्तिसौं, बहु उपासना ठानि ॥ ६ ॥

तेषामहंसमुद्धर्त्तामृत्युसंसारसागरात् ॥
भवामिनचिरात्पार्थमय्यावेशितचेतसाम् ॥ ७ ॥

टीका– हेअर्जुन ऐसै मेरैविषै मन राषि मोकौं उपासतहै तिनकौं शीघ्रही यासंसारतैं उद्धार करतहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ मृत्युसाहित भवउदधितैं, ताकोकरतउद्धार, मोमैंचितराष्यौ जुउ न, बहु भाइन निरधार ॥ ७ ॥

मय्येवमनआधत्स्वमयिबुद्धिंनिवेशय ॥
निवसिष्यसिमय्येवअतऊर्ध्वंनसंशयः ॥ ८ ॥

टीका– तातैं हेअर्जुन मेरैही विषै मनराषि मेरेही विषै निश्चयरूप बुद्धि राषि ऐसी कीयै मेरी कृपातैं ज्ञानी व्हैकै अंतविषै मेरो स्वरूप पाइकै मोहीविषै समावैगो. यामें संदेहनाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ तातैं अर्जुन बुद्धिमन, मोही मनतूंराषि, याआगैमोदेहमें, वसिहैं यहअभिलाषि ॥ ८ ॥

अथचित्तंसमाधातुंनशक्नोषिमयिस्थिरम् ॥
अभ्यासयोगेनततोमामिच्छाप्तुंधनंजय ॥ ९ ॥

टीका– अथवा हेअर्जुन जोतूं मेरौविषै चित्तकौं थिरकरकै तो या चंचल चित्तकौं विषयनतैं वारवार पेंचिकै मेरै समरनकै अभ्यास योगकरि ता अ-

भ्यास योगतैं मेरै पाइबेकौ जतनकरि याभांति मोंकौं पावैगो. ॥ दोहा ॥ जेतूंमौमैंनहिं सकत, चितअपनोठहराय; करअभ्यासमोमिलनको, मोहि-निरंतरध्याय ॥ ९ ॥

अभ्यासेऽप्यसमर्थोसिमत्कर्मपरमोभव ॥
मदर्थमपिकर्माणिकुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ १० ॥

टीका– हेअर्जुन तूं अभ्यासहूं करनविषैं समर्थ नाहीं तो मेरी प्रीतिकै अर्थ एकादशी उपवास अरु नामसंकीर्तनादिक जे कर्महै ते सावधान व्हैके करि या भांति मेरे लीयै कर्म करैगो तौ तूं मोच्छकौं प्राप्तहौयगो. ॥ ॥ दोहा ॥ जोअभ्यास नकरिसकै कर्मसमर्प्योमोहि, मेरैकर्म निकरतहूं सिद्धिहोइगीतोहि ॥ १० ॥

अथैतदप्यशक्तोसिकर्तुंमद्योगमाश्रितः ॥
सर्वकर्मफलत्यागंततःकुरुयतात्मवान् ॥ ११ ॥

टीका– अथवा हेअर्जुन जो, ऐसेही करि, नसकै तो एक मेरैही शरन रहिकै चित्त वश्य करिकै फलकौ त्यागकरि ऐसैं कर्मफल त्यागकीयै मेरी कृपातैं कृतार्थ होयगो. ॥ ॥ दोहा ॥ यहैनजोतूंकरिसकै, मोसरनहि अनु-राग, सबै कर्मके फलनकौं, अर्जुनदे तूंत्याग ॥ ११ ॥

श्रेयोहिज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानंविशिष्यते ॥
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनंतरं ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन ज्ञानरहित अभ्यासतैं ज्ञान श्रेष्ठहै अरु बुद्धिसहित-उपदेशपूर्वक जो ज्ञानतैं ध्यानश्रेष्ठहै अरु ध्यानतैं कर्मफलको त्याग श्रे-ष्ठहै ता कर्मफल, त्यागकीयै पाछै शीघ्रही संसारतैं शांतिकहै मोच्छता-कौंप्राप्तहोय. ॥ दोहा ॥ ज्ञानभलोअभ्यासतैं, तातैंध्यानविशेष, फलजु-त्यागतातैं भलौ, तातैंशांतिहिलेषि ॥ १२ ॥

अद्वेष्टासर्वभूतानांमैत्रःकरुणएवच ॥

निर्ममोनिरहंकारःसमदुःखसुखःक्षमी ॥ १३ ॥

टीका— अब जिनधर्मनसौं शीघ्रही परमेश्वरकी कृपा होइ ते धर्म कहतुहै हेअर्जुन जो पुरुष, सबभूतसौं द्वेष नकरै सबहीसौं मैत्रीकरै सबसोंकृपाकरै अरु ममता न करै अहंकार तजै अरु सुषदुषसमान करिजानि छमावंत होय. ॥ दोहा ॥ द्वेषनकाहूसौंकरै, मित्रभाइकरुनाजु, अहंकारममतातजै, दुषसुषसमछमताजु ॥ १३ ॥

संतुष्टःसततंयोगीयतात्माद्दढनिश्चयः ॥
मय्यर्पितमनोबुद्धियोंमद्भक्तःसमेप्रियः ॥ १४ ॥

टीका— ओर हेअर्जुन जो पुरुष सदासर्वदा लाभ अरु अलाभविषे संतुष्टकहै, प्रसन्नचित्त होय अरु योगीकहै सावधान होय यतात्माकहै जिन अपनो स्वभाव जीत्यौ होय अरु मेरेविषै दृढनिश्चय होय अरु मेरेविषै मन अरु बुद्धिकौं अर्पन करयो होय ऐसो जु मेरो भक्त सो मेरै अतिहि प्रियहै. ॥ दोहा ॥ सदारहै संतोषसौं, मनराषैनिजहाथि, प्रानबुद्धिमोमैंधरै, वहप्यारोमोसाथि ॥ १४ ॥

यस्मान्नोद्विजतेलोकोलोकान्नोद्विजतेचयः ॥
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तोयःसचमेप्रियः ॥ १५ ॥

टीका— हेअर्जुन जासौं लोक, नडरै अरुजो लोकनसौं नडरै जो हर्ष अमर्ष भय उद्वेग इनसौं मुक्ति होइ सो मेरै अतिहि प्रियहै. ॥ दोहा ॥ वहकाहूसौंनहिंडरै, भय औरहिनहिंदेय, हर्ष क्रोध दोऊ तजै, सोमोकौं हरिलेय ॥१५॥ भय उद्वेग तजैसबै, कहूं मानिनहिलेत, जो ऐसो मो भक्तहै, तासौंमेरौहेत ॥ १५ ॥

अनपेक्षःशुचिर्दक्षउदासीनोगतव्यथः ॥
सर्वारंभपरित्यागीयोमद्भक्तःसमेप्रियः ॥ १६ ॥

टीका— हेअर्जुन जोपुरुष काहू वस्तकी चाहि न धरै निस्प्रही होय अरु

बाहिर भीतर पवित्र होय आलसीनहोय काहूको पछपात नकरै मानसीव्य-थातैं रहितहोय अरु सबही उद्यमको परित्याग करै ऐसो जो मेरो भक्तसो मेरै प्रियहै. ॥ ॥ दोहा ॥ चाहनकाहूकीकरै, रहैपुनीतसुदास, सबआरंभनकौंतजै, रहैंजुमेरेपास ॥ १६ ॥

योनहृष्यतिनद्वेष्टिनशोचतिनकांक्षति ॥
शुभाशुभपरित्यागीभक्तिमान्यःसमेप्रियः ॥ १७ ॥

टीका– हेअर्जुन जोप्रियवस्तुकौं पाइके हर्षनकरै अरु अप्रियवस्तुकु पाइकै द्वेष नकरै इष्टार्थ नाश भये शोच न करै अनपाई वस्तुकौं चाहैनाहीं, अरु शुभाशुभकहै पुण्य, पाप इनदोऊको त्यागकरै ऐसै होइकैं जो भक्तिवंत होय सो मोकौं प्रियहै ॥ ॥ दोहा ॥ प्रियपायैंहरषैनही अप्रियलहैनदुःख, सोचकांक्षानहिंकरै, तजिशुभअशुभविसुख ॥ १ ॥ ऐसैंहैकैं जोपुरुष, भक्तिवंतजोहोय, अर्जुनमेरै अधिकवह, सुप्रियताकौंजोय ॥ १७ ॥

शमःशत्रौचमित्रेचतथामानापमानयोः ॥
शीतोष्णसुखदुःखेषुसमःसंगविवर्जितः ॥ १८ ॥

टीका– हेअर्जुन जो शत्रुविषे समान होय अरु मान अपमान विषै समबुद्धिहोय हर्ष शोक नकरै शीत विषै अरु उष्ण कहै घाम, ताविषै समान होय सुष अरु दुषविषैं समान होय काहूवस्तुविषै आसक्त नहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ शत्रुमित्रकौं समलषै, सहैमानअपमान, शीतउष्णसुषदुषसहै, संगकरैनहिंआन ॥ १८ ॥

तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनीसंतुष्टोयेनकेनचित् ॥
अनिकेतःस्थिरमतिर्भक्तिमान्मेप्रियोनरः ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन निंदा अरु स्तुति जाकै समानहोय अरु जोमौनी होय अरु जथालाभतें संतुष्टहोय अरु काहू ठौर अपने रहिवेको ठिकानो करैनाहीं जासौं याकैं बंधन होय स्थिरबुद्धिहोय ऐसो होयकै जो भक्तिवंतहो-

य सो मेरे प्रियहै. ॥ ॥ दोहा ॥ स्तुतिनिंदाहैएकसी गहै मौनसंतोष, गृह-नकरै थिरमतिरहै लहैं भक्तिसौंमोष ॥ १९ ॥

येतुधर्म्यामृतमिदंयथोक्तंपर्युपासते ॥
श्रद्दधानामत्परमाभक्तास्तेऽतीवमेप्रियाः ॥ २० ॥

टीका– हेअर्जुन धर्मरूपअमृत ऐसो जु यह भक्तियोग ताकौं जे पुरुष श्रद्धावंत होइकै उपासतहै अरु मोहीविषै जे परायनहोतहै ते भक्त मेरे अतिप्रियहै. ॥ ॥ दोहा ॥ धर्मअमृतजोमैकह्यो, ताहिजुसेवैकोय, श्रद्धाजुतमेरोभगत, मोहिसुप्यारोहोय ॥२०॥ दुःखरूपअव्यक्तगति ओरबिवनबहुमान, तवैवारहैध्यायमैं, भक्तिकहीभगवान॥निर्गुनसगुनउपासना, इनमैं कौंन विशेषि, वरनीआनंदरामयह, अधिकभक्तिअवरेषि ॥ २ ॥

इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दोहा सहितभाषाटीकायां भक्तियोगोनाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

अर्जुन उवाच ॥

प्रकृतिंपुरुषंचैवक्षेत्रंक्षेत्रज्ञमेवच ॥
एतद्वेदितुमिच्छामिज्ञानंज्ञेयंचकेशव ॥ १ ॥

टीका– अव अर्जुन कहतहै हेकृष्ण प्रकृति अरु पुरुष क्षेत्र अरु क्षेत्रज्ञ ज्ञान अरु ज्ञेय इनकी जानिवेकी मोकौं इच्छाहे यह श्लोककी भाष्यकार स्वामीनैं भाष्य नहीं करीहे. ॥ ॥ दोहा ॥ प्रकृति कवन अरु पुरुषको, क्षेत्रक्षेत्रज्ञकहाज, यहजाननिकीलालसा, ज्ञानज्ञेययदुराज ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते ॥
एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञमितितद्विदः ॥ २ ॥

टीका– तव श्रीकृष्ण बोलैहै हे अर्जुन यह शरीर क्षेत्र कहीयैं संसार की उपजिवैकी भूमिहै यातैं अरु जो याछेत्रकौ अहंकार ममताकरिकै

यह मैं हौं यह मेरो है ऐसै मानै सो क्षेत्रज्ञ कहियै जैसै करसान अपनैं क्षेत्रका फलसो भोग करै तैसै छेत्रज्ञहू अपनै छेत्रके फलकौ फल भोगताहै यातैं छेत्र अरु छेत्रज्ञके जे वेत्ता विवेकी है ते याकौं छेत्रज्ञ कहतेहै. ॥ ॥ दोहा ॥ क्षेत्रकहतयादेहकौं, अर्जुनज्ञानीलोय, जानतहै जो देहकौं, जोक्षेत्रज्ञजु होय ॥ २ ॥

क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत ॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानंयत्तज्ज्ञानंमतंमम ॥ ३ ॥

टीका– हे अर्जुन सब छेत्रनविषै क्षेत्रक्षेत्रज्ञकौ ज्ञान है सो मेरै मनैं श्रेष्ठहै यह ज्ञान मोछको कारनहै यातैं याज्ञानतैं जो ओर दूसरे ज्ञानहै सु वृथा पांडित्यहै बंधनको कारनहै तातैं यह ज्ञान श्रेष्ठहै. ॥ ॥ दोहा ॥ छेत्रज्ञ मोकौं जानतूं, वसतसवनकी देह, यहै ज्ञानकौं जानिवौ, मेरोमत है एह ॥ ३ ॥

तत्क्षेत्रंयच्चयादृक्चयद्विकारियतश्चयत् ॥
सचयोयत्प्रमाणश्चतत्समासेनमेशृणु ॥ ४ ॥

टीका– हे अर्जुन जो मै छेत्र कह्यो सो छेत्र जैसे स्वरूपतैं जडहै अरु दर्शनादिक स्वभावसौं जुक्तहे अरु जैसो इच्छादिक धर्म करिकै जुक्तहै अरु जैसो इंद्रियादिक विकारानसौं जुक्तहै अरु जैसै प्रकति पुरुषके संगतैं भयोहै अरु जैसो स्थावर जंगमादिकभेद करिकै भिन्नहै ओर सो छेत्रज्ञहु जैसे स्वरूपसौं है जैसो अचिंत्यऐश्वर्यके प्रभावकरिकै जुक्तहै सो सबही संछेपसौं मोतैं सुनि. ॥ ॥ दोहा ॥ छेत्रतहांते हैभयौं, जोहैजैसैभाय, जोविकारयामांझहै, कहूंसंछेप सुनाय ॥ ४ ॥

ऋषिभिर्बहुधागीतंछंदोभिर्विविधैःपृथक् ॥
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैवहेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ५ ॥

टीका— हेअर्जुन यह छेत्रको स्वरूप वसिष्ठादिक ऋषीश्वरनैं जोगशास्त्रविषैं ध्यान धारणाके लियै अंतर्यामी स्वरूप करिकै बहुभांति निरूपन करयोहै अरु नाना भांतिके जे नित्य नैमित्तिक अरु काम्यकर्म इनके उपदेश कर्ता जे वेद तिनहू नाना देवता रूप करिकै गायोहै अरु जे उपनिषदके वाक्यहै तिनहूं बहुत भांति करिकैं गायोहै अरु वेदवाक्यनको युक्त करिकै अरु विना ईश्वर प्राण अपानादिक वायु चेष्टाकौं नकरतुहैं ऐसो हेतुवंत अर्थको निश्चैकरिकै बहुत भांति कह्यो सोमैं तोसौं संछेपकरिकै कहतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ रिषिनु कहे बहु भांतजे, और न हूं यौंभाषि, हेतुवादनिहचौजुकरि, कह्योउपनिषदसाषि ॥ ५ ॥

महाभूतान्यहंकारोबुद्धिरव्यक्तमेवच ॥
इंद्रियाणिदशैकंचपंचचेंद्रियगोचराः ॥ ६ ॥

टीका— अव छेत्रनको स्वरूप कहतहौं हेअर्जुन पंचमहाभूत ५ अहंकार १ अरु बुद्धिकहे महत्तत्व १ अव्यक्तहै मूलप्रकृति १ अरु दशइंद्रिय १० एकमन १ अरु पांच तन्मात्रा ५ शव्दादिक ए चोवीस २४ तत्वहै. ॥ ॥ दोहा ॥ महाभूतअहंकारवुद्धि, अरु माया हूंजानि, एकादश इंद्रीविषै, शव्दादिक हूंमानि ॥ ६ ॥

इच्छाद्वेषःसुखंदुःखंसंघातश्चेतनाधृतिः ॥
एतत्क्षेत्रंसमासेनसविकारमुदाहृतम् ॥ ७ ॥

टीका— हेअर्जुन जो चोवीस तत्व कहै ते अरु इच्छा द्वेष सुष दुष संघातकहै शरीर चेतनाकहै ज्ञान रूप मनोवृत्ति अरु धृतिकहै धीरज इन सवहीनकौं एकत्रभयौ सो छेत्र इंद्रियादिक विकार सहितसंछेपसौं तोसौं मैं कह्योहै. ॥ ॥ दोहा ॥ इच्छासुषदुषचेतनाद्वेषधीरताएहि, यहमैंकह्यौसंछेपसौं, छेत्रजानितूंलेहि ॥ ७ ॥

अमानित्वमदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम् ॥
आचार्योपासनंशौचंस्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ८ ॥

टीका– अब क्षेत्रज्ञ जानिवेकै उपाय कहतहौं हे अर्जुन जोपुरुष अपनै स्तुति न करै कपटरहित होय काहू प्रानीकी हिंसा न करै छमा होय नम्रता होय गुरुसेवाहोय बाहिरभीतर पवित्रहोय थिरताहोय शरीरको संजम होय यह ज्ञान कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ छमासरलआदंभतजि,हिंसादमअभिमान, गुरुसेवासंजमकरन थिरतासोचप्रधान ॥ ८ ॥

इंद्रियार्थेषुवैराग्यमनहंकारएवच ॥
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ९ ॥

टीका– हेअर्जुन ओरहूजे इंद्रियनकै विषैं बैराग होय अरु अहंकार रहित होय अरु जन्म मृत्यु जरा व्याधि इनविषै दुषरूप जो दोष ताको अनुदर्शन होय ॥ ॥ दोहा ॥ विषयनसौं वैरागधरि, तजेरहै,अहंकार, जन्ममृत्युसुषव्याधिजर, दुषदोष निरधार ॥ ९ ॥

असक्तिरनभिष्वंगःपुत्रदारगृहादिषु ॥
नित्यंचसमचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ १० ॥

टीका– ओर हे अर्जुन पुत्र स्त्री घर इनविषै प्रीतिकौ त्यागहोय अरु पुत्रादिकनकौ सुष दुषतैं आप सुषदुष मानैनाहीं ओर सुबअशुभकी प्राप्तिविषै सर्वदा समचित्तहोय ॥ ॥ दोहा ॥नेहन पुत्रकलत्रसौं, तादुषदुषी नहोय, चितमैंधरैंसमानता, बुरैभलैंकौंबोय ॥ १० ॥

मयिचानन्ययोगेनभक्तिरव्यभिचारिणी ॥
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ ११ ॥

टीका–ओरहे अर्जुनमों परमेश्वरविषै अनन्य योगकहै सकलके आत्माविषै ईश्वरकी दृष्टि ताकरिकै अव्यभिचारिणी एकांतभक्तिहोय अरु जहां चित्त प्रसन्नहोय ऐसे एकांत शुद्ध स्थलविषै रहतोहोय. अरु सामान्य

मनुष्य जे संसारी तिनकी सभाविषै प्रीति नहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ अटल भक्तिमोमैं धरैं, सबकौ आतम जानि, रहै सदाएकांतमैं, तजैसभासनमानि ॥ ११ ॥

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वंतत्वज्ञानार्थदर्शनं ॥
एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोन्यथा ॥ १२ ॥

टीका– ओर हेअर्जुन अध्यात्मज्ञान नित्यत्वकहै त्वंपदार्थ सोधनविषै सर्वदा निष्ठा होय अरु तत्वज्ञानको अर्थ कहै प्रयोजन ऐसोजो मोछ ताकौं सबनतैं श्रेष्ठ करिदेषै ऐसै "अमानित्वमदंभित्व" वा श्लोकतैं लेकै तत्वज्ञानार्थ दर्शन ह्यांताउ वीस २० ज्ञानके साधन कहेहै. सोइ यह ज्ञानकहावै अरु यातैं विपरीतजु मानित्व सोअज्ञानकहावै. ॥ ॥ दोहा ॥ अध्यातम ज्ञानहिधरै, तत्वज्ञानकौंदेषि, यहसबजो कछुमैं कह्यौ, यहैंज्ञानअवरेषि ॥१२॥ त्वंपदार्थसोधनकरै, देषै मोछ विशेषि, यहैज्ञानइन तैं अवर, अज्ञानौ करलेषि ॥ १२ ॥

ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामियदऽज्ञात्वाऽमृतमश्नुते ॥
अनादिमत्परंब्रह्मनसत्तन्नासदुच्यते ॥ १३ ॥

टीका– इन साधन नि,करिकै जो जानिवैकी वस्तुहै सो कहतुहैंहे अर्जुन जो जानिवैकी वस्तुहै सो मैं तोसौं कहतहौं जाके जानै मोछ पावै सो जानिवैकी वस्तु कैसीहै जाके आदि नाहीं अरु परब्रह्महै सत्पदार्थना हींहै. अरु असत्पदार्थहू नाहींहै अर्थ यहहै कि विधिहू नकह्योजाय अरु निषेधहू कह्यौ न जाय ऐसोहै. ॥ दोहा ॥ वह्यौअमृतसमजानिवौ, जातैं मुक्तिजुहोय, कारनकारजतैंपरै नाहींब्रह्मकौंजोय ॥ १३ ॥

सर्वतःपाणिपादंतत्सर्वतोक्षिशिरोमुखं ॥
सर्वतःश्रुतिमल्लोकेसर्वमावृत्यतिष्ठति ॥ १४ ॥

टीका– हे अर्जुन जाकै सबहीं ठौर, हात पांवहै. जाकै नेत्रशिर मु-

खसर्वत्र ठौरठौरहैं. जाकै श्रुति कहैं कान तें सबठैरहै जो सकल प्रानीनिकौ रूप व्हैकैं सकल लोककै व्यौहारमैं व्यापिकै रह्यौहै. ॥ दोहा ॥ सर्वत्रहि करचरनसिर, त्यौं ही मुषदृगकान, व्यापिरह्यौंसबजगतमैं, मोहिदसौं दिसजानि ॥ १४ ॥

सर्वेंद्रियगुणाभासंसर्वेंद्रियविवर्जितं ॥
असक्तंसर्वभृच्चैवनिर्गुणंगुणभोक्तृच ॥ १५ ॥

टीका– हेअर्जुन जो यज्ञहै सो सबही नेत्रादिक जे इंद्रियहैं अरु तिनकी रूपादिक तन्मात्रा है तहां नाना आकारसों भासतहै अथवा सब इंद्रिय अरु तन्मात्रा इन दुहुनको प्रकाशकहै अरु सबही इंद्रियनसौं रहितहै अरु असक्त कहै संगसौं रहितहै तथापि सबको आधार है सत्वादिक गुनसौं रहितहै अरु सत्वादिक गुनको भोक्तृ कहै पालकहै ॥ ॥ दोहा ॥ सबविषयनतैंहैरहत, सबताकौं आभास, संगबिनासबकौंकरै, निर्गुनगुननप्रकास ॥ १५ ॥

बहिरंतश्चभूतानामचरंचरमेवच ॥
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयंदूरस्थंचांतिकेचतत् ॥ १६ ॥

टीका– हेअर्जुन वह ज्ञेय चराचर प्रानीनिकै भीतरहै अरु बाहिरहीहै जैसै सुवरन कुंडलादिकनमैंहैं अरु चराचर स्वरूपहै सूक्ष्महै तातें जान्यौ जात नाहीं याहीतें जे अज्ञानहै तिनकैं लक्ष जोजन दूरहै अरु जे ज्ञानी है तिनकै तिनही नजीकहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जंतुजितें चरहू अचर, अंतरबाहिरसोय, सबतैंदूरसुनिकटहै, सूछम लषैनकोय॥ १६ ॥

अविभक्तंचभूतेषुविभक्तमिवचस्थितं ॥
भूतभर्तृचतज्ज्ञेयंग्रसिष्णुप्रभविष्णुच ॥ १७ ॥

टीका– हेअर्जुन जो चराचर प्रानीनमें कारनरूप करिकै मिल्यौ है भिन्नता नाहींहै पैंजैसे भिन्नहोय तैसै रहैहै ऐसो ज्ञेयहै सो स्थिति-

के समैं प्रानीनको पोषकहै प्रलयकै समैं संहारको कर्ताहै अरु सृष्टिकै समैं सृष्टिको कर्ताहै ॥ ॥ दोहा ॥ तातैंभेदनकछुनहीं, सचमैरज्जुविभाग, उपजावतनासतसबन, पालतकरि अनुराग ॥ १७ ॥

ज्योतिषामपितज्योतिस्तमसःपरमुच्यते ॥
ज्ञानंज्ञेयंज्ञानगम्यंहृदिसर्वस्यधिष्ठितम् ॥ १८ ॥

टीका– ओर हे अर्जुन चंद्र सूर्यादिक जे जोतिमंडलहै तिनको प्रकाशकहै याहीतैं तम कहै अज्ञान तासौं परैहै जाकौं अज्ञानको स्पर्श नाहीं अरु ज्ञान स्वरूपहै ज्ञेय कहै जानिवेकी वस्तु ताकोस्वरूपहैं अरु पहिलैं कहैजे आमानित्व अदंभित्वादिक वीसूंज्ञानके सावधान तिनसौं पाइयैहै अरु प्रानी मात्रकै हृदयविषै नियंत रूप कहै प्रेरकहै ॥ ॥ दोहा ॥ ज्योतिनहूंकीज्योतिहै, अंधकारतेंपार, ज्ञानजानिवोहीयमैं, सबकैहैनिरधार ॥ १८ ॥

इतिक्षेत्रंतथाज्ञानंज्ञेयंचोक्तंसमासतः ॥
मद्भक्तएतद्विज्ञायमद्भावायोपपद्यते ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन याभांति तोकौं मैं छेत्र ज्ञान ज्ञेय ए संछेपसौं कहेहै अरु यह वसिष्ठादि रिषिन विस्तारसौं कह्याहै तातै मेरो भक्त यहजानिकै मेरे भावकौं प्राप्तहोय ब्रह्मभाव पाइवेकौं जोग्यहोइ. ॥ ॥ दोहा ॥ छेत्रतथा अनुभवजुमैं, तोकौंदयोबताय, इनको जानै जो भगत, लहै जुमोपैं भाय ॥ १९ ॥

प्रकृतिंपुरुषंचैवविद्ध्यनादीउभावपि ॥
विकारांश्चगुणांश्चैवविद्धिप्रकृतिसंभवान् ॥ २० ॥

टीका– हेअर्जुन प्रकृति अरु पुरुष ए दोनौ अनादि जानी अनादि जोइश्वर ताकी शक्तिहै. ताकैं प्रकृति अनादी है अरु पूरन पुरुषको अंसहै तातै पुरुषहू अनादिहै. अरु विकार कहै देह अरु इंद्रियादिक अरु गु नके

सुषदुष मोहादिक सबही प्रकृतितैं उपजे जानि ॥ दोहा ॥ मायापुरुषअनादिहै, अर्जुन दोऊजानि, गुनविकार सब जे भये, मायाहूतैं मानी ॥ २० ॥

कार्यकारणकर्तृत्वेहेतुः प्रकृतिरुच्यते ॥
पुरुषःसुखदुःखानांभोक्तृत्वेहेतुरुच्यते ॥ २१ ॥

टीका– हेअर्जुन कार्य कहे शरीर अरु कारण कहे इंद्रिय तिनकी उपाइवैंविषै प्रकृति कारणहै अरु सुषदुषके भोगको कारण पुरुषहै भावार्थ यह हैकि जद्यपि प्रकृति अचेतनहै स्वतःकरिवौ संभवैनाहीं अरु पुरुष अविकारीहै तातैं स्वतः भोगकरिवौ संभवै नाहीं. तथापि पुरुषके निकटभयैं प्रकृति कर्ताहै. अरु प्रकृतिके निकटभयेतै पुरुष भोगताहै ऐसै कपिलाचार्यादिक ऋषि कहतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ कार्यकारनकर्ताजुहै, मायाइनकौंहेत, दुषअरुसुषकेभोगकौं, बहैपुरुषगहिलेत ॥ २१ ॥

पुरुषःप्रकृतिस्थोहिभुंक्तेप्रकृतिजान्गुणान् ॥
कारणंगुणसंगोऽस्यसदसद्योनिजन्मसु ॥ २२ ॥

टीका– हेअर्जुन पुरुष प्रकृतिविषै रहिके प्रकृतितैं उपजे जे सुष दुःखदिकगुण तिनकौं भोग करतहै अरु यापुरुषके सतीकहे देवादिक जोनि अरु असती कहे पशुपंछीनकी जोनि तिनविषै जे जनमहोतहै. तहां शुभाशुभ कर्मकौ करैया, ऐसै जु इंद्रियनकौ संग सोई करैहै. ॥ ॥ दोहा॥ पुरुषजबहि प्रकृति भजत, तबहि करत गुनभोग, ऊंचनीचजनमहिलहत, जानिगुननकेजोग ॥ २२ ॥

उपद्रष्टाऽनुमंताचभर्ताभोक्तामहेश्वरः ॥
परमात्मेतिचाप्युक्तोदेहेऽस्मिन्पुरुषःपरः ॥ २३ ॥

टीका– हेअर्जुन याप्रकृतिके कार्य देहविषै पुरुषवर्तमानहै अरु सदा समीपकहै निकटहै. यातैं उपद्रष्टा कहै साक्षीहै. अरु अनुमंताकहै निकटमात्रहीतैं शीघ्रही अनुग्रहके कर्ताहै. ईश्वररूपकरिकै भर्ताकहै पो-

पकहे. अरु भोक्ताकहै पालकहै. अरु महेश्वर कहै ब्रह्मादिकनके ईश्वरहुहै अरु परमात्माकहैं अंतर्यामीहै. ॥ ॥ दोहा ॥ परमातमकौं देहतैंन्यारोजानतलोय, साक्षीभर्ताभोगता ईश्वरनिर्गुनहोय ॥ २३ ॥

यएवंवेत्तिपुरुषंप्रकृतिंचगुणैःसह ॥
सर्वथावर्तमानोऽपिनसभूयोऽभिजायते ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन जो ऐसी भांति पूरुषकौं जानै अरुसुषदुषादि जे गुननसहित ऐसी जु प्रकृति ताकौं जानै सो मनुष्य सर्वथा विधिकौ उलंघन करिकै वर्तै तऊ फिरि जनम पावै नाहीं मुक्ति कौं प्राप्तहोय ॥ ॥ दोहा ॥ जो कोऊ ऐसै लषै, पुरुष प्रकृति गुनभाय, सो कैसे हुजगमैंरहै, बहुरि न उपजै आय ॥ २४ ॥

ध्यानेनात्मनिपश्यंतिकेचिदात्मानमात्मना ॥
अन्येसांख्येनयोगेनकर्मयोगेनचापरे ॥ २५ ॥

टीका– ऐसे आत्मज्ञानविषै साधन कहतहौं हे अर्जुन केतेक पुरुष ध्यानकरिकै मनसौं देहविषैं आत्माकौं देषतहै अरु केतेक सांख्य कहै प्रकृति पुरुषको विवेक ताकरिकै देषतहै अरु केतेक अष्टांगजोग करिकै देषतहै. अरु केतेक कर्मजोग करिकै देषत है. ॥ ॥ दोहा ॥ देहमांझ आतमलषै, कोऊ कीयै ध्यान, सांख्यजोग अरु कर्म करि, लषत ओरस दान ॥ २५ ॥

अन्यत्वेवमजानंतःश्रुत्वान्येभ्यउपासते ॥
तेपिचतितरंत्येवमृत्युंश्रुतिपरायाणः ॥ २६ ॥

टीका– अतिमंद जे अधिकारीहै तिनके तरवेको उपाय कहतुहौं हे अर्जुन ओर केतेक जेहै ते सांख्यजोगादिकनकै मार्ग करिकै आत्माकौं प्रत्यच्छ करि सकत नाहीं तातैं ओर जे आचारज रहै श्रेष्टहै. तिनतें उपदेश सुनिकै उपासतहै. तउ श्रद्धासौं उपदेशकौं श्रवन करिकै

भवसंसारकौं तरिजाय. ॥ ॥ दोहा ॥ जे ऐसें नही जा नहीं, तेसुनि और नपैजु, ममउपासनाकरतहै भवभयमृत्युतरैजु ॥ २६ ॥

यावत्संजायतेकिंचित्सत्त्वंस्थावरजंगमं ॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धिभरतर्षभ ॥ २७ ॥

टीका– हेअर्जुन जो कछु स्थावर जंगम प्रानी उपजतहै ते सबही छेत्र अरु छेत्रज्ञकै संजोगतैं उपजै जानि. ॥ ॥ दोहा ॥ जिते जीव या जगतमैं, स्थावर जंगमहोत, छेत्रछेत्रज्ञ जोगते, सबै लहत उद्योत ॥२७॥

समंसर्वेषुभूतेषुतिष्ठंतंपरमेश्वरम् ॥
विनश्यत्स्वविनश्यंतंयःपश्यतिसपश्यति ॥ २८ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष सबही स्थावर जंगम प्रानीनिविषै आत्माकौं जो अविनाशी देषै सो पुरुष भली भांतिदेषैहै. ओर ऐसै कोऊ देषत नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ परमेश्वरसब जगतमैं, बैठ्यौएकसमान, तिन्है- नसत विनसेनहीं, सोजानै सोजान ॥ २८ ॥

समंपश्यन्हिसर्वत्रसमवस्थितमीश्वरं ॥
नहिनस्त्यात्मनात्मानंततोयातिपरांगतिम् ॥ २९ ॥

टीका– हे अर्जुन ईश्वर सर्वत्र समानहै ऐसी दृष्टि करिकै जो ईश्वरकौ समान करिकै देषैहै. सो पुरुष आपुसौं आप नाहीं हनैहै. अर्थ यह है कि अविद्यासौं सच्चिदानंद आत्मासौं तिरस्कार करिकै विनाश नाहीं करतहै. तातैं वह पुरुष परमगति मोच्छकौं प्राप्तहोय जो ऐसै न देषैहैं सो देहात्मदर्शी पुरुषदेह सहित आत्माकौं हनैहै मरणानंतर प्रकाशशून्य अंधकार स्थानमैं जाताहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ईश्वरकौं सबठौर जो जानत समता भाय, आपुआपकौं नहीं हनें, रहै परमगतिपाय ॥ २९ ॥

प्रकृत्यैवचकर्माणिक्रियमाणानिसर्वशः ॥

यःपश्यतितथात्मानमकर्त्तारंसपश्यति ॥ ३० ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष सबही कर्म प्रकृतिहीके किये देषै अरु तहां आत्माकौं अकर्ता करिके देषैकि देहके अभिमानहीते आत्मा कर्ताहै अरु आपसौं आप काहू कर्मको कर्तानाहीं ऐसै जो आत्मा देषैहै सोई पुरुष भली भांतिसौं देषैहै ओर कोऊ आत्माकौ ऐसै देषत नाहीं आत्मा शुभाशुभ कर्म कर्ता नाहीं तातैं सर्वत्र समानहै. ॥ दोहा ॥ मायाकृतजू कर्मकौं, जीवअकर्ताजोय, जानत जो या भेदकौं, लषत आत्मा सोय ॥ ३० ॥

यदाभूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ॥
ततएवचविस्तारंब्रह्मसंपद्यतेसदा ॥ ३१ ॥

टीका– हेअर्जुन जोपुरुष स्थावर जंगमप्रानीनके जुदे जुदे भेद है तिनकौ प्रलयके समैं ईश्वरकी शक्तिरूप प्रकृतिविषै रहैहै. ऐसै विचारै अरु सृष्टिके समैं ताही प्रकृतितें स्थावर जंगम प्रानीनिको विस्तारहोतहै ऐसै विचारै याभांति प्रकृतिविषै प्रानीनिकौ अभेद देषै तब परिपूर्ण ब्रह्मस्वरूपहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ प्रलयसमैंप्रानीनिकौं, प्रकृतिलीन रषैलोय, बहुरिप्रकृतितैं विस्तरै लषैसुब्रह्महिहोय ॥ ३१ ॥

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्माऽयमव्ययः ॥
शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते ॥ ३२ ॥

टीका– हेअर्जुन जो उपजैहै ताकौ विनाश होतहै. अरु जो गुनवंतहोय ताको गुन नाशहोय सु तो यह परमात्मा अनादिहै. निर्गुनहै. यातै अव्ययहै अविचारीहै. तातैं या शरीरविषै रहिकै न कछु कर्म करतहै. अरु नातौं कर्म फलसौं लिपैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ आदिअंतसौं रहितहै, निरगुन आतमसो य, देहमांझजद्यपिरहै, करैनलिपताहोय ॥ ३२ ॥

यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्यते ॥

सर्वत्रावस्थितोदेहेतथात्मानोपलिप्यते ॥ ३३ ॥

टीका–हे अर्जुन जैसै आकाश सर्वव्यापीहै तऊ सूछमता करिकै अ-रु असंगता करिकै कहूं लिपत नाहीं होत तैसै आत्माउत्तम मध्यम अ-धम देहविषै रहैहै. तऊ देहके गुन दोषसौं लिपतनाही होत. ॥ दोहा ॥ ज्यौं आकाश सूछम वसै, सबमे परसत नाहीं, त्यौंहीहै हयगातमैं, लि-प्तनदेह निमांहिं ॥ ३३ ॥

यथाप्रकाशयत्येकःकृत्स्नंलोकमिमंरविः ॥
क्षेत्रंक्षेत्रीतथाकृत्स्नंप्रकाशयतिभारत ॥ ३४ ॥

टीका–हेअर्जुन जैसै एकही सूर्य या सबलोककौं प्रकाश करतहै जैसै छेत्रज्ञ सकल छेत्रकौं प्रकाश करतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्यौं प्रकाश एकैक रत, सब जगसूरजदेव त्यौंही सबकी देहमें, परमात्माको भेव ॥ ३४॥

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमंतरंज्ञानचक्षुषा ॥
भूतप्रकृतिमोक्षंचयेविदुर्यांतितेपरम् ॥ ३५ ॥

टीका–हेअर्जुन जे पुरुष ऐसी भांति छेत्र छेत्रज्ञको भेद ज्ञानदृष्टि करिकै नीकी विधिजानै अरु पहिलै कही ऐसी जु भूतनकी प्रकृति तातैं जेध्यानादिक मोच्छकै उपायहै. तिनकौं जे जानै ते पुरुष परम पदकौं प्राप्तहोय. ॥ ॥ दोहा–छेत्रऔर छेत्रज्ञकौ, भेदलषै जोकोय, भूत प्रकृतितै मोच्छकौं, जानैं मुक्त सुहोय ॥ ३५ ॥ भगतजगततैउद्धरो, कहे कृष्णएवैन, तबैतेरहैमेकह्यौ तत्वज्ञान सुषदैन ॥ १ ॥ तत्वज्ञान उपदेश विनु मृत्युतरै नहिंकोय, तातै कह्यौविवेकयह, प्रकृति पुरुषको जोय ॥ २ ॥ सबजग-सौं अनुराग करि, आनंद विमल विवेक, छेत्र छेत्रज्ञको जोगहै, वरन्यौ तत्वविवेक ॥ ३ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां यो-गशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दोहासहितभाषाटीकायां क्षेत्रक्षेत्रज्ञनिर्देश-योगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

परंभूयःप्रवक्ष्यामिज्ञानानांज्ञानमुत्तमम् ॥
यज्ज्ञात्वामुनयःसर्वेपरांसिद्धिमितोगताः ॥ १ ॥

टीका– हेअर्जुन फेरि तोसौं मैं सब ज्ञाननिमैं परम उत्तम ज्ञानहै सो कहत हौं. जाकै जानैतै सकल मुनिगन या देहबंधतैं छूटिकै परम सिद्धिकौं प्राप्त भएहै. ॥ ॥ दोहा ॥ परमज्ञान उत्तम सोऊ, तोकौंदेउबताय, जाहि जानिकै मुनिसबै, रहे मुक्तिकौं पाय ॥ १ ॥

इदंज्ञानमुपाश्रित्यममसाधर्म्यमागताः ॥
सर्गेपिनोपजायंतेप्रलयेनव्यथंतिच ॥ २ ॥

टीका– हेअर्जुन जो यह तोकौ कहियैगो ऐसोजु ज्ञान ताकै पायेतै मेरे रूपकौं तृप्तव्हैकै वह ज्ञानी पुरुष सृष्टिके. सबै ब्रह्मादिक उपजैहै. तऊ वह उपजत नाहीं अरु प्रलयविषै प्रलयके जे दुःख है ते पावत नाहीं. अर्थ यहहै कि ऐसे ज्ञानीकौं फिरि जनममरन होतनाहीं. सारूप्यमुक्तिकौं प्राप्त होय. ॥ ॥ दोहा ॥ इहिज्ञानकौंसेइकै, मेरोलहैसरूप, प्रलयसृष्टितिनकौंनहीं, परैनतेभवकूप ॥ २ ॥

ममयोनिर्महद्ब्रह्मतस्मिन्गर्भंदधाम्यहम् ॥
संभवःसर्वभूतानांततोभवतिभारत ॥ ३ ॥

टीका– हे अर्जुन महद्ब्रह्मकहै प्रकृतिसो मेरी योनि कहै गर्भाधानको ठिकानोहै. ताविषैमैं संसारके विस्तारको कारन चिदाभास रूपगर्भ धरतहौं. अरु तागर्भाधानतैं ब्रह्मादिक सकलभूतनकी उतपत्ति होतहै. ॥ दोहा ॥ ब्रह्मप्रकृतिमोजोनिहै तामहिगर्भहिराषि, उपजावतसबसृष्टिकौं, अर्जुनचित अभिलाषि ॥ ३ ॥

सर्वयोनिषुकौंतेयमूर्तयःसंभवंतियाः ॥
तासांब्रह्ममहद्योनिरहंबीजप्रदःपिता ॥ ४ ॥

टीका– हेअर्जुन सकलमनुष्यादिक जे जोनिहै तिनविषै जे स्थावर जंगम मूर्ति उपजतहै तिनमूर्तिनकि जोनि कहै मातासो प्रकृतिहैं अरु बीजप्रदकहै गर्भाधानको कर्ता पिता मैंहौं.॥ ॥ दोहा ॥ जेजेमुरति होतहै सबजोननमैआय, तिनकोहौंहीबीजहौं, मैहिपिता अरु माय ॥ ४ ॥

सत्वंरजस्तमइतिगुणाःप्रकृतिसंभवाः॥
निबध्नंतिमहाबाहोदेहेदेहिनमव्ययं॥ ५॥

टीका– परमेश्वरकै आधीन ऐसेजे प्रकृतिपुरुष तिनसौं याभांति सकल प्रानीनिकी उत्पत्ति कही अब जोभांति प्रकृतिसंजोगतें पुरुषकौं संसार होतहै. हेअर्जुन सात्विक राजस अरु तामस ए तीनौ गुन प्रकृतितें उपजैहै. ते गुन प्रकृतितैं जुदेजुदे प्रकट व्हैकै देहविषै निर्विकार ऐसो जु देही कहै जीव ताकौं बांधतहै अर्थ यहहैकि तीन गुनके कार्य जे सुख मोहादिक तिनसौं देही संयुक्त करतुहै॥ ॥ दोहा॥ सतरजतमजेनगुभये, मायाहीविमानि, तनमेंअव्ययजीवकौं, तेगुनबांधतिआनि ॥ ५ ॥

तत्रसत्वंनिर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयं॥
सुखसंगेनबध्नातिज्ञानसंगेनचानघ॥ ६॥

टीका– अब सत्वको लछन अरु जाभांति सत्वगुन पुरुषकौं बांध्यौहै सो प्रकार कहतुहौं हेअर्जुन ए तीन गुन कहे तिनमें सात्विक निर्मलहै यातैं जैसौं स्फटिकमनि प्रकाशक अरु निर्मल होइ तैसोहै अरु अनामय कहै निरुपद्रव शांतरूपहै तातैं शांतको कार्यसुषहै तासुषकै संगसौं बांधतहैं अरु प्रकाशको कार्य ज्ञान है. ता ज्ञानकै संगसौं बांधतहै अर्थ यहहै कि मैं सुषीहौ मैं ज्ञानीहौं ऐसीभ्रांति अहंकारकरिकै मनके जेधर्महै तिनसौं छेत्रज्ञकौं जुक्त करिकैं बांधतहैं॥ ॥ दोहा॥

निर्मलअरुपरकासकरि, सतगुनशांतिसुभाय, ज्ञानसंगसुषसंगसौबांधत-जीवहिआय ॥६॥

रजोरागात्मकंविद्धितृष्णासंगसमुद्भवम् ॥
तन्निबध्नातिकौंतेयकर्मसंगेनदेहिनाम् ॥ ७ ॥

टीका– अव रजोगुनको लछन अरु जा भांतिबंधनकरै सो प्रकार कहतुहै हेअर्जुन रजोगुन अनुरंजन रूपहै. सनेहरूपहै. ऐसै तूं जानि यातें तृष्णा-अरु संगकहे आसक्ति एदोनो रजोगुनतैं उपजेहै. सो रजोगुन या देही-को कर्मसंगहै. कर्मनकी आसक्तिता, करिकै बांधतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ रजगुन राजसरूपहै तृष्णा संगको हेत, काम संग करि जीवकौं, ऐसे बंधन देत ॥ ८ ॥

तमस्त्वज्ञानजंविद्धिमोहनंसर्वदेहिनां ॥
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नातिभारत ॥ ८ ॥

टीका– अव तामसकौ लछन अरु जाभांति बंधनकरै सो प्रकार कह-तुहै. हेअर्जुन तमोगुन अज्ञानतैं उपज्यौ जानि तमोगुनमैं आवरनशक्ति विशेपहै. अरु प्रकृतिकै अंसतैं उपज्यौहै. तातैं सबकौं मोहितकरतहै. या-हीतैं देहीकौं प्रमादकहै असावधानता करिकै अरु आलसकहै अनुद्यम-ता करिकै अरु निद्राकरिकै बांधतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ हेतजु तम अज्ञानतैं, मोहितसबको होय, आलस निद्रा विकलता, इनसौं बांधत जोय ॥ ८ ॥

सत्वंसुखेसंजयतिरजःकर्मणिभारत ॥
ज्ञानमावृत्यतुतमःप्रमादेसंजयत्युत ॥ ९ ॥

टीका– हेअर्जुन याहीदेहकै दुप शोकादिक विद्यमानहै. तउ सत्वगु-न यादेहीकौ सुषहीसौं एकत्रकरै सुषहीकै सनमुष करैहै. अरु यादेहीकौं सुष हर्षादिक विद्यमानहै. तउ याकौं रजोगुन कर्महीविषै संजुक्त करैहै अरु तमोगुनहै सु सतसंगतितैं उपज्यौ जोज्ञान,ताकौं आच्छादित करिकै

प्रमादकहै असावधानता ताहीसौं संयुक्त करैहै. अरु आलस्यादिकन सौं संयुक्त करैहै ॥ ॥ दोहा ॥ सतगुन सुष, सनमुषकरै, रजगुन कर्मनिलीन, तमगुन आलसजुतकरै होतज्ञान सबछीन ॥ ९ ॥

रजस्तमश्चाभिभूयसत्वंभवतिभारत ॥
रजःसत्वंतमश्चैवतमःसत्वंरजस्तथा ॥ १० ॥

टीका– हेअर्जुन रजोगुन अरु तमोगुन इनकौं तिरस्कार करिकै सत्वगुन अधिक होतहै तब, वह सत्वगुन यादेहीकौं सुष अरु ज्ञानसंजुक्त करै ऐसै रजोगुनहूं सत्व अरु तमकौं तिरस्कार करिकै अधिकहोय तब तृष्णा अरु कर्मविषै जुक्त करै. ऐसै तमोगुनहूं सात्विक अरु राजसकौ तिरस्कार करिकै अधिक होय तब प्रमाद कहै अज्ञान अरु आलस विषै जुक्त करै. ॥ ॥ दोहा ॥ रजगुन तमगुनपेलिकै रहैसत्वगुनपूरि, सततमकौंपलैजुरज, तमतैं सतरजदूरि ॥ १० ॥

सर्वद्वारेषुदेहेस्मिन्प्रकाशउपजायते ॥
ज्ञानंयदातदाविद्याद्विवृद्धंसत्वमित्यत ॥ ११ ॥

टीका– हेअर्जुन तब यादेहमैं नेत्रादिक जे सब द्वारहै तिनविषै रूपादिक विषय ज्ञानको प्रकासहै. तब या चिन्ह करिकै सत्वगुनकी वृद्धिजानियै अरु सुष हर्षादिक होहि तब सत्वगुनकि वृद्धि जानियैं. ॥ ॥ दोहा ॥ सबद्वारनतैं देहमें, जबहि प्रकासत ज्ञान, तबहि बढ्योहै सत्वगुन, अर्जुनयहतूंजान ॥ ११ ॥

लोभःप्रवृत्तिरारंभःकर्मणामशमःस्पृहा ॥
रजस्येतानिजायंतेविवृद्धेभरतर्षभ ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन जब लोभ होय अरु निंतिही कार्यविषैं प्रवृत्ति होय अरु जवग्राहादिक विषै कर्मको उद्यम होय, की यहकार्यकरत्यौं अरु यह ऐसैं करौंगो ऐसैं होय अरु असम कहैं संकल्प विकल्पहोय स्पृहाकहैं

लालचहोय ऐसे चिन्ह जवहोय तव रजोगुनकी वृद्धिजानियैं. ॥ दोहा ॥ वढत रजोगुनहैं जवहि, नरशरीरमैं आय, लोभकर्म उद्यम असम, इनहि-देत प्रगटाय ॥ १२ ॥ कामविषैं नितहीजवैं अर्जुन होतप्रवृत्त, अरु लालचतैं जानियैं, वढ्यो रजोगुनमित्त ॥ १२ ॥

अप्रकाशोप्रवृत्तिश्चप्रमादोमोहएवच ॥
तमस्येतानिजायंतेविवृद्धेकुरुनंदन ॥ १३ ॥

टीका– हेअर्जुन जव अप्रकाश कहै विवेक नाशहोय अरु अप्रवृत्ति कहै उद्यमरहित होय अरु प्रमाद कहै कर्तव्य कर्म कौं स्मरन-नाहीं होय अरु मोहकहै मिथ्या ता, विषै प्रीतहोय तव ऐसै चिन्ह हो-य हैं तव तामसगुनकी वृद्धि जानियै ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुन जवही करत है, तमगुन आय प्रकाश, आलसमोह अग्यानता, मनमैं क-रत विलास ॥ १३ ॥

यदासत्वेप्रवृद्धेतुप्रलयंयातिदेहभृत् ॥
तदोत्तमविदांलोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥

टीका– अवै मरनकैं समै ही वृद्धिकौं प्राप्तभये जे सत्वादिक गुन तिन गुन कौं विशेष फल कहतुहैं हे अर्जुन सात्विक गुनकी वृद्धिभये जव, जीवजु मृत्युकौं प्राप्तहोय तव, उत्तमजे हिरण्यगर्भादि देवता तिनकौं जे उपासतहै ऐसे जे उत्तम विदकहै महापुरुष विवेकी तिनके जे अ-मल कहैं प्रकाशमय सुषभोगस्थान ऐसेजे लोकैंह तिनकौं प्राप्त होहिं- ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ जो सतगुनकी वृद्धिमैं, तजैजीवनिजदेह, तो ज्ञानि-नके लोकमैं, जाइकैरैसोगेह ॥ १४ ॥

रजसिप्रलयंगत्वाकर्मसंगिषुजायते ॥
तथाप्रलीनस्तमसिमूढयोनिषुजायते ॥ १५ ॥

टीका– ओर हे अर्जुन जव जव राजसगुनकी वृद्धि भयै प्रानी मृ-

त्युकौं पावै तब वह मृत्युकौं पाइकै जे कर्म संगी कहै कर्मनि विषै आसक्त मनुष्यहै तिनविषै जन्म पावे अरु जब तमोगुनकी वृद्धि भयै प्रानी मृत्युकौं पावै तब वह प्रानी जे मूढयोनि पशूहै तिनविषै जनम पावे ॥ ॥ दोहा ॥ रजगुनमैं तजिजीवकौं, कर्मवंत वरिजाय, तमगुनमैं जो मरतहै, पशुनमांझप्रगटाय ॥ १५ ॥

कर्मणःसुकृतस्याहुःसात्विकंनिर्मलंफलं ॥
रजसस्तुफलंदुःखमज्ञानंतमसःफलम् ॥ १६ ॥

टीका– अब सत्वादिक गुनकौं कर्मफल कहतुहै, हेअर्जुन सुकृत कहैं सात्विक जो कर्म ताकौं सात्विक रूप निर्मल रूप प्रकाश रूप ऐसो जु सुख सोइ फलहै ऐसै कपिलाचार्यादिक कहतुहै अरु राजस कर्मकौ फल दुष कहतुहै अरु तामस कर्मकौ फल अज्ञान कहतुहै ॥ ॥ दोहा ॥ सुकृत कर्म तैं होतहै, सात्विकफल अतिसुच्छ, रजगुनको फल दुःखहै, तम अज्ञानफल तुच्छ ॥ १६ ॥

सत्वात्संजायतेज्ञानंरजसोलोभएवच ॥
प्रमादमोहौतमसोभवतोज्ञानमेवच ॥ १७ ॥

टीका– हे अर्जुन सात्विकतैं ज्ञानकी उत्पत्ति होय अरु राजसतैं लोभकी उत्पत्ति होय अरु तामसतैं प्रमाद कहै असावधानता मोह अरु अज्ञान इनकी उत्पत्तिहोय ॥ ॥ दोहा ॥ लोभरजोगुनतैं भयौ, सतगुनतैंहै ज्ञान, तमगुनतैंहै विकलता, मोह ओर अज्ञान ॥ १७ ॥

ऊर्ध्वंगच्छंतिसत्वस्थामध्येतिष्ठंतिराजसाः ॥
जघन्यगुणवृत्तिस्थाअधोगच्छंतितामसाः ॥ १८ ॥

टीका– हेअर्जुन जिनकी साखिकी वृत्तिहै वे सत्यलोक पर्यंत ऊर्ध्व गतिकौं प्राप्त होय अरु जिनकी राजसी वृत्तिहै ते तृष्णासौं व्याकुल चित्त व्हैकै मनुष्य लोकहौं विषै उपजतुहै अरु जिनकी तामसी वृत्तिहै

ते अंधतामिस्रादिक जे नरकहै तिनविषै उपजतुहै ॥ ॥ दोहा ॥ सात्विकऊंचे जातुहै, राजस मध्यमलोक, तामस जात अधोगतिनि, पावतबहुविधिशोक ॥ १८ ॥

नान्यंगुणेभ्यःकर्तारंयदाद्रष्टानुपश्यति ॥
गुणेभ्यश्चपरंवेत्तिमद्भावंसोऽधिगच्छति ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन द्रष्टाकहे देषनहार विवेकी पुरुष गुनसौं ओर दुसरो कर्ता देषै नाहीं. ए सब कर्मगुनही करतुहै. ऐसै देषै अरु गुननतें परै साक्षीरूप आत्माकौं जानै सो पुरुष मद्भाव कहे मेरे ब्रह्मरूपकौं प्राप्ति होय. अर्थ यहहैकि साक्षाद्ब्रह्मही होय. ॥ ॥ दोहा॥ गुनहीकौंकर्ताकरी, जानै ज्ञानीकोय, मोहिलषैगुनतैंपरै, मोमैलीनसुहोय ॥ १९ ॥

गुणानेतानतीत्यत्रीन्देहीदेहसमुद्भवान् ॥
जन्ममृत्युजराव्याधिर्विमुक्तोमृतमश्नुते ॥ २० ॥

टीका– हेअर्जुन देहके कर्ता अरु अंतविषै देहरूपव्है विलसै ऐसेजु तीनगुन तिनकौं उल्लंघन करै कहे त्रिगुन रहितहोय ऐसो जु देही कहे पुरुष सो गुनतें जन्ममृत्यु जरा दुःख तिनसौं मुक्त व्हैके ब्रह्मानंदकौं प्राप्तहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ देहकरतजोतीनगुन तिनकौं देइजुत्यागि, जन्ममृत्यु जरादुपतैं, छुटैमुक्तिरसपागि ॥ २० ॥

अर्जुन उवाच ॥

कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेतानतीतोभवतिप्रभो ॥
किमाचारःकथंचैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥ २१ ॥

टीका– अर्जुन पुछतहैकि हे कृष्ण जो गुनातीतहो ताको लछन कहा अरु ताको आचार कैसोहै अरु कौन उपायसौं तीनगुनकौं लंघन करै सो मोकौं कहियै. ॥ ॥ दोहा॥ जोत्यागतहैतीनगुन, ताकौंलच्छनकौन, कैसे ताके आचरन तुममोसौंसुकहोन ॥ २१ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

प्रकाशंचप्रवृत्तिंचमोहमेवचपांडव ॥
नद्वेष्टिसंप्रवृत्तानिननिवृत्तानिकांक्षति ॥ २२ ॥

टीका– अब श्रीकृष्ण कहतहैकि हेअर्जुन प्रकाश प्रवृत्ति अरु मोह ए, तीन्यौ, तीनही, गुनके कार्यहैं ऐसैं जो जानैं अरु औरहू जे गुनके कार्यहैं तिनकौं स्वभावसौं प्राप्त भयेहै ऐसै जानि दुष बुद्धि करिकै तिनसौं द्वेषनकरै अरु स्वभावतैं निवृत्त भये जानि सुख बुद्धि करिकै तिन की वांछा नकरै ऐसो होइ सो पुरुष गुनातीत कहियै ॥ ॥ दोहा ॥ मोहज्ञानअरुकर्मकौ जोजानैहियमांहि, विनुपायैचाहतनहीं लहिसुषपावैनाहिं ॥ २२ ॥

उदासीनवदासीनोगुणैर्योनविचाल्यते ॥
गुणावर्ततइत्येवयोवतिष्ठतिनेंगते ॥ २३ ॥

टीका– हेअर्जुन जोपुरुष उदासीन ज्यौं बैठिरहै अरु गुनको कार्य सुषदुःषादिक जाकौ चलाइ नसकै ऐसो होय अरु स्वरूपज्ञानविषै रहै अरु ऐसै जानैंकि ए गुन आपनैं कार्यनविषैं वर्तैहैं इनगुननविषैं मेरो संबंधहू नाहीं ऐसैं विवेक ज्ञान करिकैं जो चुपव्है रहैं काहूसौं कछु कहैं नाहीं अरु चंचल नहोय सो पुरुष गुनातीत कहियैं ॥ ॥ दोहा ॥ उदासीन बैठारहै सुषदुषचपलनहोय गुनसबकारजकरतहैं, योंजानैं जों लोय ॥ २३ ॥

समदुःखसुखःस्वस्थःसमलोष्टाश्मकांचनः ॥
तुल्यप्रियाप्रियोधीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन जाकैं सुष रु दुष समानहोय अरु स्वस्थकहैं स्वरूप कहियैं ज्ञान विषैंरहैं याहीतैं समानहैं मृत्तिका, पिंडपाषान अरु सुवर्ण जाकैं अरु सुषदुषके कारन जोप्रिय आप्रियतैं जाकैं समान

होही अरु धीरज कहैं बुद्धिवंत होइ अरु जाकैं अपनी निंदा अरु स्तुतिसमान होय सो पुरुष गुनातीत कहीयैं ॥ ॥ दोहा ॥ सुषदुषकौंसमकारिगिनैं कंचनमाटिभाय, प्रियअप्रियकौंतुल्यगिनि, स्तुति निंदाइकदाय ॥ २४ ॥

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्योमित्रारिपक्षयोः ॥
सर्वारंभपरित्यागीगुणातीतःसउच्यते ॥ २५ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष मान अपमान विषै समान बुद्धिहोय और, मित्र अरु शत्रु विषै समानबुद्धि होय अरु इह लोकके अरु परलोकके सुषहै तिनकै लीयै जे कर्मनके आरंभहै ते सबहीतैं ऐसै आचारजुक्त होय सो पुरुष गुनातीत कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥तुल्यमान अपमान अरु, मित्र शत्रु सममान, सब आरंभ निजोतजै गुनातीत कहिजान ॥ २५ ॥

मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ॥
सगुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयायकल्पते ॥ २६ ॥

टीका– अब गुणकै उल्लंघनकौं उपाइ कहतुहै. हेअर्जुन जो पुरुष श्रीनारायण स्वरूप जुमैं तामोहीकौं अनन्य भक्तिजोग करिकै सेवै सो पुरुष इन तीनही गुनकौं उल्लंघन करिकैं ब्रह्मभावकौं प्राप्त होय. ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ मोकौं जोदृढभक्तिसौं सेवैचित्तकैचाय, सोतीन्यौ गुनकौं लंघै रहै ब्रह्मकौं पाय ॥ २६ ॥

ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहममृतस्याऽव्ययस्यच ॥
शाश्वतस्यचधर्मस्यसुखस्यैकांतिकस्यच ॥ २७ ॥

टीका– हेअर्जुन ब्रह्मकी प्रतिष्ठा मैंहौं अर्थ यहकी ब्रह्मको एकरूप ब्रह्म मैंहीहो जैसै प्रकाशकौ एकरूप सूर्यमंडलहै तैसैं ब्रह्मही जुमैंहौं अरु अव्यय कहै नित्य ऐसो अमृत कहै मोछ ताको ठिकानो मैहीहैं अरु निरंतर शुद्धसात्विक जोधर्म ताको ठिकानो मैंहीहौं अरु परम आनंद स्व-

रूपहौं तातैं निरंतर जो पुरुष ताको ठिकानो मैहीहौं॥ ॥ दोहा ॥अर्जुनमैंही ब्रह्महौं, मोछौं मेरोरूप, हौं अविनाशी धर्महौं, आनंद परम अनूप ॥ २७ ॥त्रिगुन संगतैं होतहै, यहविचित्र संसार, कृष्णचतुर्दशमैकर्‌यौ, अर्जुनसैं विस्तार ॥ १ ॥ त्रिगुन रूपसव जगजलधि, तरहै कोउनपाय, तवैकृष्णनिज भक्तकौं, दीनीभक्ति बताय ॥२॥ वरन्यौ त्रिगुनविभागयह, मनदै आनंदराम, हरिप्रनाम विनतीकरै, रहो सीसपरस्याम ॥३॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनि०ब्रह्मयोगशास्त्र श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणविभागवर्णनं नाम चतुर्दशोध्याय ॥ १४ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थंप्राहुरव्ययं ॥
छंदांसियस्यपर्णानियस्तंवेदसवेदवित् ॥ १ ॥

टीका— अव श्रीकृष्ण कहतहै कि वैराग्यविना भक्ति अरु ज्ञान उपजैही नाहीं यातैं वैराग्य पूर्वोक्त ज्ञानोपदेश करिवेके निमित्त संसारको स्वरूप वृक्षके दृष्टांतसौं वरनतहै कि हेअर्जुन छर अरु अछर इन दोहुनमैं ऊर्ध्वकहे श्रेष्ठ अधिक ऐसो जुपुरुषोत्तम सोहै मूल जाको अरु अधःकहे निकृष्ट ऐसोजु कार्यकी उपाधिरूप जे हिरण्यगर्भादिक तेहै शाखा कहे डारि जिनकी ऐसोजु संसाररूप अविनाशी अश्वत्थकहे पीपर ताकौं प्रवाहरूप करिकै अविनाशी नित्य ऐसो कहतहैं अरु छंद कहे वेद ते है पान जाके अर्थ यहहैकि वेदहै तेधर्म वतावतुहै तेपानहै तातैं छायारूप जे कर्मफल तिनकरिकै संसार वृक्षविषै सकल प्रानिनिकौ आश्रयहै तेप्रानि पंछीरूपहै ऐसे अश्वत्थकौं जो जानैं सो वेदकैं अर्थ कौं जानैं वेदको अर्थ यहहै कि संसारवृक्षको मुल श्रीनारायणहै अरु ईश्वरके अंस ऐसैजे ब्रह्मादिक तेयाकी साषाहै सो संसारवृक्ष विनाशीहै अरु प्रवाहरूप करिकै नित्यहैं वेदनै वताये जे कर्म तिन करिकै सेवीयै ऐसो है इहां वेदको अर्थ इतनांहै यातैं ऐसे जा-


श्रीपुरुषोत्तम
ऊर्द्धमूल
अश्वत्थं
सृष्टिउत्तरोत्तर
ब्रह्मादिदेव
अधोशाखा
अव्ययंप्राहुः
देव-दैत्य-मनुष्य-तिर्यक्
महेशादिगण
मूलश्रीपुरुषोत्तम
शाखा
ब्रह्मा
विष्णु
महेश
वेद
श्रुति
छंद
उपनि
पद

नैं सो वेदवित्तहै वेदकै अर्थ कौं जानैहै ॥ ॥ दोहा ॥ उरधजरशाषातरे, अविनाशी अश्वत्थ, वेदपत्रजो जानई, सौ जानै सबअर्थ ॥ १ ॥

अधश्चोर्ध्वंप्रसृतास्तस्यशाखागुणप्रवृद्धाविषयप्रवालाः ॥
अधश्चमूलान्यनुसंततानिकर्मानुबंधीनिमनुष्यलोके॥ २ ॥

टीका— हे अर्जुन ओरही सुनिजे पापीहै ते अंधकहै पश्वादिक योनिविषै प्राप्तभयेहैं अरु जे सुकृतीहै पुण्यात्माहै ते ऊर्ध्वकहैं देवादिक योनिविषै विस्तारकौं प्राप्तभयेहै ऐसीभांति यासंसारवृक्षकी जो-ए, सा षाहै तेअधः ऊर्ध्व विस्तारीहै ओर गुनकहैं सत्वादिक तिनकी जे वृत्ति कहै तेई जलसमान भई तिनकरिकै ऐसाषा सींचाहैं ताही-तैं वृद्धीकौं प्राप्तभईहै ओर जे रूपादिक वृक्षहैं इनशाषानिके नये पल्लवहै अरु प्रशाषासमान जे इंद्रियवृत्तिहै तिनकरिकै युक्तहै ओर हेअर्जुन तासंसाररूप वृछके मुलहै तें अधःकहैं तिर्यगादिक योनिविषै अरु ऊर्ध्व कहै देवादिक योनिविषै बहुती विस्तारसौं बंधेहैं पुष्पमूल एकईश्वरहै अरु ताता भोगकी वासनारूप जो मूलहै ते तो बीचके छोटे मूलहै ते मूल मनुष्यलोकविषैं कर्मानुबंधी कहैं तैसीही कर्मवासनालीयै कर्म करवौवै अर्थ यहहै कि ऊर्ध्वलोक अरु अधोलोकविषै जब कर्म छीन होहिं तब ताता वासना करिकै मनुष्यलोक पावै ताता वासनाके अनुसार कर्मनविषै प्रवर्त्त हायकै फिरि कर्मकरै मनुष्यलोकही विषै कर्मको अधिकारहै ओर लोकविषै नाहीं तातैं मनुष्यलोकविषै मूल कर्मानुबंधीहै. ॥ ॥ दोहा ॥ गुनसींची साषावढी विषयापल्लवराय, जरफैली कर्मनबंधी मनुज लोकमैं आय ॥ २ ॥

नरूपमस्येहतथोपलभ्यतेनांतोनचादिर्नचसंप्रतिष्ठा ॥
अश्वत्थमेनंसुविरूढमूलमसंगशस्त्रेणदृढेनछित्त्वा ॥ ३ ॥

टीका— हेअर्जुन यासंसारमैं रहितहै जे प्रानी ते या अपूर्व संसारवृक्षको रूप नाहीं पावतहै काहेतैंकि ऊर्ध्वमूलहै अरु अधशाषाहै यातैं

याको अंत नाहींहै यातैं अंतहू नाहीं पावतहै अनादिहै तातैं आदिहूं नाहीं पावतहै अरु कौन भांति याकी स्थितिहै सोऊ नाहीं पावतुहै यह संसारवृक्ष ऐसोहै तातैं छेद्यो न जाय अरु अनर्थको कर्ताहै. तातैं हेअर्जुन सुविरूढमूल कहे अतिहि बंध्योहै मूल जाकौ ऐसोजु यह अश्वत्थताकौं असंग कहे अहंकार अरु ममताकौं त्याग सोई भयौ दृढशस्त्रताकरिकैं छेदैं. ॥ ॥ दोहा ॥ आदिअंत नहिं जानियैं, स्थानरूप नहिं जाहिं, दृढ असंग हथियारलैं दुसहमूलतरुढाहि ॥ ३ ॥

ततःपदंतत्परिमार्गितव्यंयस्मिन्गातानिवर्ततिभूयः ॥
तमेवचाद्यंपुरुषंप्रपद्येयतःप्रवृत्तिःप्रसृतापुराणी ॥ ४ ॥

टीका– हे अर्जुन ता अश्वत्थकौं कैसै छेदै पाछैं ताको मूलरूप ऐसोजु वैष्णव पद ताकौं ढूंढै सो पद कैसो है जा पदकौं पाइकै फिरि संसारविषै आवै नाहीं सो वैकुंठ ढूंढिवेकौं प्रकार कहतुहै. जापदतैं यह पुरातन संसारकी प्रवृत्ति भई है. ताही आदिपुरुषके सरनै रहैगो ऐसै अनन्यभक्ति करिकै ढूंढै. ॥ ॥ दोहा ॥ चाहिकरै ताठौरकी, फिरै न ताकौं पाय, सृष्टि भई जापुरुषतैं ताकीशरनजुआय ॥ ४ ॥

निर्मानमोहाजितसंगदोषाअध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामाः ॥
द्वंद्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढाःपदमव्ययंतत् ॥ ५ ॥

टीका– तापदकी प्राप्तिकै लियै औरउपाय कहतुहै. हे अर्जुन मन कहे अहंकार मोहनकहे मिथ्या इतसौं जे रहित है अरु जीत्योहै पुत्रादिकनकौं संगरूप दोष जिन अरु अध्यात्मकहै आत्मज्ञान ताविषै निश्चय रूपहै बुद्धि जिनकी अरु निवृत्तिभईहै कामना जिनकी अरु सुष दुष शीतउष्ण इत्यादिक द्वंद्वतैं मुक्तहै. अरु जे अमूढ कहै विवेकीहै ते पुरुष अव्ययी अविनाशी ऐसोजु वैष्णवपद ताकौं प्राप्तहौंय हैही. ॥ ॥ दोहा ॥ कामसंग अरु मोहतजि, अध्यातमरति होय, सुष दुष तजिताकौंलहै अ-

विनाशी पदजोय ॥ ५ ॥

नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः ॥
यद्गत्वाननिवर्त्ततेतद्धामपरमंमम ॥ ६ ॥

टीका– ताही पदको स्वरूप कहतहै हे अर्जुन ता पदकौं सूर्य प्रकाशित करतनाहीं अरु चंद्रमांहू प्रकाश करत नाहीं अरु अग्नीहूं नाहीं करतहैं अरु जा पदकौं पाइके फिरि या संसारविषे जनम न पावै सो मेरो परमधामहै. ॥ ॥ दोहा ॥ पावक रवि अरु चंद्रमा, ताहिकरै न प्रकास, फिरैनताकौं पाइकै, सोहै मेरोवास ॥ ६ ॥

ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतःसनातनः ॥
मनःषष्ठानींद्रियाणिप्रकृतिस्थानिकर्षति ॥ ७ ॥

टीका–हेअर्जुन याजीवलोकविषै जीवहै सो मेरोही अंशहै सोयहजीवरूप मेरो अंस अविद्या, करिकै जीवरूपहै. अरु सनातनहै कहैं सदासर्वदा संसारी ऐसो प्रसिद्धहै. सोयह जीव सुषुप्ति अरु प्रलयकै समैं प्रकृति विषै लीनव्है रहै ऐसे जे मन आदिलेकै छ ज्ञानेंद्रिय अरु कर्मेंद्रिय औरप्रान इनकौं या जीवलोककहैं संसार ताविषै भोगकै लीयै आकरषैहै अर्थ यहकि, सुषुप्ति अरु प्रलयहूविषै सकलजीवमात्र मोविषै लीनहोतहै. तातैं, प्रानीनिकौं मेरी प्राप्तिहौंहि. तथापि अविद्या सहित जीवको शुद्ध रूपमैं लय नाहीं होतहै अरु प्रकृति सहित जो मेरो रूपहै, ताविषै लय होतहै. याहीतैं अविवेकी जीव फेरि जब संसारविषै उपजवैकै लीयै निकसैहै तब प्रकृति विषै रहै ऐसी जुउपाधि रूप इंद्रिय तिनकौं आकर्षैहै. अरु जेविवेकीहै ते शुद्धस्वरूपविषै लीनहोतहै यातैं संसारविषै बहुरि आवतुनाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ जीवलोकमैं जीवजे, अविनाशी मोरूप, मनहि आदि इंद्रियनकौं, षैंचतप्रकृतिहि चूप ॥ ७ ॥

शरीरंयदवाप्नोतियच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ॥

गृहीत्वैतानिसंयातिवायुर्गंधानिवाशयात् ॥ ८ ॥

टीका– हे अर्जुन जब यह, जीव कर्मनके वासनातैं दूसरो शरीर पावै अरु जब यह मरनसमैं शरीर छोडै तब यह देहादिकनको ईश्वर जो जीव सो पूर्वलै शरीरतैं इन इंद्रियनकौं लेकै ओर दूसरे शरीरकौं प्राप्तहोय तहां दृष्टांतहै कि जैसै वायु आशय कहै फूलनकै ठिकानेतैं फूलकी सुगंध लेकै चलै तैसैं जीव पूर्व लै शरीरतैं इंद्रियकौं दूसरे शरीरविषै लेजायहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जाशरीरकौं तज यहै, जहांकरै संबंध, इंद्री ईश्वर संगरहै, वायु संग ज्योगंध ॥ ८ ॥

श्रोत्रंचक्षुःस्पर्शनंचरसनंघ्राणमेवच ॥
अधिष्ठायमनश्चायंविषयानुपसेवते ॥ ९ ॥

टीका– हेअर्जुन श्रवन, नेत्र, त्वचा, जिव्हा, नासिकाये बाह्येंद्रिय अरु मन कहै अंतह करन इन सबयी इंद्रियनकौं आश्रय करिकै यह जीव शव्दादिक विषयनकौ भोग करतुहै. ॥ ॥ दोहा ॥ श्रवननेत्र अरुनासिका, त्वच अरु रसनाजानि, इनको गहिमनु संगलै लहतजीव विषयानि ॥ ९ ॥

उत्क्रामंतंस्थितंवापिभुंजानंवागुणान्वितं ॥
विमूढानातुपश्यंतिपश्यंतिज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥

टीका– हेअर्जुन या जीवकौं पूर्व देह छांडिकै अरु दूसरे देहविषै जातेकौं अरु ताही देहविषैं रहकैं विषयनको भोग करनेकौं ऐसै इंद्रियादिक गुनयुक्त जो जीव ताकौं जे मूढ कहै अज्ञानीहै ते नाहीं देषतहै अरु जिनकै ज्ञानही नेत्रहैं ऐसे जो विवेकीहैं ज्ञानीपुरुषते याकों देषतहैं. ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ इंद्रीजुत निकसत रहत, करत विषैकौं भोग, मूढ जीवको इनहिलयैं, लपैं सुज्ञानी लोग ॥ १० ॥

यतंतोयोगिनश्चैनंपश्यंत्यात्मन्यवस्थितं ॥
यतंतोऽप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतसः ॥ ११ ॥

टीका– हे अर्जुन जे जोगीहैं ध्यानादिक जोग करिकै जतन करतहै ते याकौं देहविषै वियमान देषतहै अरु जे अकृतात्मा कहैं अशुद्ध चित्तहै शास्त्रको अभ्यास करिकै जतन करतहै तऊ याआत्माकौं देषत नाहीं अचेतसकहै मंदमतीहै यातै. ॥ ॥ दोहा ॥ जोगीश्वर जतनहिकियै, देषतहै हियमांहि, मूरष जतनकरैं तऊ, जीवहिदेषतनाहिं ॥ ११ ॥

यदादित्यगतंतेजोजगद्भासयतेखिलम् ॥
यच्चंद्रमसियच्चाग्नौतत्तेजोविद्धिमामकम् ॥१२ ॥

टीका– या भांति देहादिकतैं भिन्न ऐसोजु परमेश्वरको अंसजीवता सौं संसारी स्वरूप कह्यौ अब ताहि परमेश्वरकी अनंतशक्ति कहतहै कि हेअर्जुन जो तेज आदित्यविषैहै. जो अग्निविषैहै. ऐसै नाना भांतिको तेज विश्वकौं प्रकाशित करतहै. सो सब मेरोही तेजजानि. ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ तेजजुहै आदित्यमैं, भाषत सब संसार, चंद्रमांहि अरु अग्निमैं, सो मेरो निरधार ॥ १२ ॥

गामाविश्यचभूतानिधारयाम्यहमोजसा ॥
पुष्णामिचौषधीःसर्वाःसोमोभूत्वारसात्मकः ॥१३॥

टीका– और हेअर्जुन मैंही वलसौं पृथ्वीविषै प्रवेशकरिकै स्थावर जंगम सकल प्रानीनिकौं धरोहौं और मैंही रसरूप सौम होइकै व्रीहि आदिलेकै औषधीनकौं पुष्टि करिकै वढावतुहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ धारतहौं सबजीवकौं, पैठि पुहमिक मांझ, पोषतहौं ही औषधी, ह्वैरससम ससिसांझ ॥ १२ ॥

अहंवैश्वानरोभूत्वाप्राणिनांदेहमाश्रितः ॥
प्राणापानसमायुक्तःपचाम्यन्नंचतुर्विधं ॥ १४ ॥

टीका– हे अर्जुन मैंही जठराग्नि होइकै प्रानीनिकै देहविषै प्रवेश करिकै प्रान अपान वायुकौं संग लैकै प्रानीनिकै भक्ष्य, भोज्य, लेह्य चो-

ष्य, ऐसें चारिविधिकें अन्नकौं पचावतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ हौंहीं जठरागिनिजु व्है, वसुं देहनमैं आय, प्रान अपान सहाइसौं, डारत अन्न पचाय ॥ १४ ॥

सर्वस्यचाहंहृदिसन्निविष्टोमत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंच॥
वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्योवेदांतकृद्वेदविदेवचाहम् ॥१५॥

टीका– हे अर्जुन सकल प्रानीनिकै हृदयविषै मैं अंतर्यामी स्वरूपसौं प्रतिष्ठित भयौहौं. तातैं प्रानिमात्रकौं पहिलैं देषीजु वस्तु ताकौं स्मरन मोहीकौं होतहै. अरु ज्ञान कहे इंद्रियनसौं विषयनको ज्ञान सो मोहीतैं होतहै अरु अपोहन कहे इंद्रियनको अरु सब वेदन करिकैं तिहिं तिहिं देवताको रूप मोहिकौं जाननौं अरु वेदांतकहे वेदांतसंप्रदायकै प्रवर्तकौं कर्ता अरु ज्ञानको दाता गुरु मैंहीहौं. अरुवेदकेअर्थको दाता मैंही हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ सबकेहियमैं हौं रहौं, मौंतैं ज्ञानविकार, वेद सबै मोकों कहै, मैं तिनको करतार ॥ १५ ॥

द्वाविमौपुरुषौलोकेक्षरश्चक्षारएवच ॥
क्षरःसर्वाणिभूतानिकूटस्थोऽक्षरउच्यते ॥ १६ ॥

टीका– अब अपनौ सबतैं उत्तम स्वरूप कहतहौं हेअर्जुन यालोकविषैं एक क्षर अरु अक्षर एदोऊ अक्षय प्रसिद्धहैं. तातैं ब्रह्मादिक सकल जे प्रानीहै तिनके शरीर क्षर कहियै अरु विनाशी देहविषै जो अविनाशी निर्विकार रहैं ऐसोजु कूटस्थ कहै चेतन भोक्ता सो अक्षरपुरुष कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ लोकमांझ है पुरुषहै, क्षर अरु अक्षरभाय, क्षर शरीरकौ कहतहै, अक्षरजीव गिनाय ॥ १६ ॥

उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः ॥
योलोकत्रयमाविश्यबिभर्त्यव्ययईश्वरः ॥ १७ ॥

टीका– हे अर्जुन छरअच्छरतैं विलच्छन ओर उत्तमपुरुषहैं ताकौं स-

कल वेदपरम अरु आत्मा ऐसौं कहैहै तातैं आत्मस्वरूप करिकैं अचेतनजो अछर पुरुष तासौं विलछन है ऐसो निर्विकार जो ईश्वर परमात्मा सो त्रैलोक्यविषै प्रवेश करिकै त्रैलोक्यकौं पालन करैहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ उत्तमपुरुषसु औरहै, परमातमको भेव, तीनलोकसो धरतुहै करिकरि निजपदसेव ॥ १७ ॥

यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपिचोत्तमः ॥
अतोस्मिलोकेवेदेचप्रथितःपुरुषोत्तमः ॥ १८ ॥

टीका– हेअर्जुन छर कहे जडपदार्थसो मैं उल्लंघ्योहै. या छरतैं मैं परे हौं. अर्थ यहहै की मैं नित्यमुक्तहौं तातैं छर पुरुषतैं उत्तमहौं अरु अछर कहे चेतन पदार्थ ताकोमैं प्रेरकहौं तातैं अछर हूतैं उत्तमहौं याहीतैं लोकविषै वेद पुरुषोत्तम ऐसो प्रसिद्धहौं याभांति श्रीकृष्णजु अपनैं पुरुषोत्तम ऐसे नांवको अर्थ कह्यौ यातैं पुरुषोत्तम कहीयै. ॥ ॥ दोहा ॥ छर अरु अच्छरतैं परै, हौं सभतैं अधिकाम, यातैं वेद अरु लोकमैं, पुरुषोत्तम मो नाम ॥ १८ ॥

योमामेवमसंमूढोजानातिपुरुषोत्तमम् ॥
ससर्वविद्भजतिमांसर्वभावेनभारत ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन जैसे पुरुषोत्तम नामको अर्थहै तैसेही निश्चित बुद्धि व्हैकै जो मोकौं पुरुषोत्तम जानैसो पुरुष सबही भांति मोहिकौं भजेहै. अरु मोकौं भजेतै पुरुष सर्वज्ञ होतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ पुरुषोत्तम मोंनांवकौं, जोंजानैं इहिभाय, सो सबविधि मोकौं भजैं, सकल ज्ञान निधिपाय ॥ १९ ॥

इतिगुह्यतमंशास्त्रमिदमुक्तंमयानघ ॥
एतद्बुध्वाबुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्चभारत ॥ २० ॥

टीका– हेअर्जुन या भांति संक्षेप करिकै अतिहि गोप्य रहस्य सं-

पूर्ण शास्त्रमैं तोसौं कह्योहै अरु जौया शास्त्रकौं जानैं सो हरकोऊ पुरुष ज्ञानी व्हैकै कृतकृत्य होइगो हे भारत तूं तो कृतकृत्यहैं ही ताकौं कहा कहनो. ॥ ॥ दोहा ॥ छिपीवात ग्रंथननुही, सोतोसौं कहिदीन, पारथसो जानैं यहै, सोई बुद्धिप्रवीन ॥ २० ॥ ज्ञाननहीं वैरागविनु, ओर भक्तिनाहिं होय, तवै ज्ञान वैरागजुत, कह्योपन रहै जोय ॥ १ ॥ इहां प्रकट करिकै कह्यौ, जगत वृक्षकौ रूप, छेदै दृढवैरागसौं, पावै ज्ञान अनूप ॥ २ ॥ वरन्यौ आनंदरामनै, यह पुरुषोत्तम जोग, कीनौंपर उपगारहै, रहौ सुषीसव लोग ॥ ३ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगोनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

अभयंसत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ॥
दानंदमश्चयज्ञश्चस्वाध्यायस्तपआर्जवं ॥ १ ॥

टीका— अव तत्वज्ञानकै अधिकार निमित्त देवीसंपद कहतहै हेअर्जुन जो पुरुष भयरहितहोय अरु जाको चित्त प्रसन्नहोय अरु जाकी आत्मज्ञानकी उपायविषै निष्ठाहोय अरु जो अपनै भोजनकी अन्नादिक वस्तुताकौं जथाजोग्य विभाग करिकै दानकरै ऐसो होय अरु जाकै मद कहैं वाह्येंद्रियनकौं संजमहोय अरु जाकौ दर्शपूर्णमासादिक यज्ञ होय अरु जाकौ स्वाध्यायकहैं ब्रह्मयज्ञ नित्यवेदपाठ होय अरु तपकहै आगिले अध्यायविषै कहियैगो. जोशरीरतपसो जाकौ होइ अरु जाकै आर्जव कहै नम्रताहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ अभयहीयकी शुद्धता, ज्ञानयोगथिर होय, दान यज्ञ तप वेद रुचि, दमजुसरलता जोय ॥ १ ॥

अहिंसासत्यमक्रोधस्त्यागःशांतिरपैशुनम् ॥
दयाभूतेष्वलोलुप्त्वंमार्दवंह्रीरचापलम् ॥ २ ॥

टीका— हेअर्जुन ओर जापुरुषकै अहिंसाकहैं ओरकौं पीडानदेय ऐसो होय अरु जाकै सत्यकहैं यथार्थ वानीहोय अरु अक्रोध कहै

कोई ताडनकरै तउ चित्तमैं क्रोध उपजैं नाहीं ऐसो होय अरु त्या-
ग कहै उदारताहोय अरु शांतकहै प्रसन्नचित्तहोय अरु अपैशुन्यकहै
पीठपाछेकाहूकी निंदानँकरै छिद्रनँकहै अरु जेदीनहै तिनविषै दया हो-
य अरु अलोलुपत्व कहै चंचलनहोय अरु मार्दव कहै अतिकोमलहो-
य क्रूरनहोय अरु ह्रीकहै अकार्य करणसौं लाजै ऐसौ होय अरु
अचापल कहै व्यर्थ जोकर्म तासौं निवृत्तहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ अन-
हिंसा अरु सत्यसब, रहै क्रोधविनुनित्य, त्यागशांतिबहुविधरचैं, दोषन-
आनै चित्त ॥ २ ॥ दयाकरै सबजंतुपर तजिचपलाई भाय, लाज अकर्म
निहृदयमृदु, व्यर्थ क्रियाछुटिजाय ॥ २ ॥

तेजःक्षमाधृतिःशौचमद्रोहोनातिमानिता ॥
भवंतिसंपदंदैवीमभिजातस्यभारत ॥ ३ ॥

टीका– ओर हेअर्जुन तेजकहैं प्रगल्भहोय अरु क्षमा कहै कोऊ-
निंदाकरै तऊ क्रोध उपजै नाहीं अरु धृतिकहै दुःखादिकतैं चंचल-
चित्तताकी थिरता होय शौचकहै बाहिर अरु भीतर शुद्धहोय अरु अ-
द्रोहकहै काहू प्रानीकौं मारिवेकी इच्छा नकरै अरु नातिमानिताक-
है आपविषै पूज्यताको अभिमान नकरै ऐसौ एअभयादिक छबीस२६
गुनहै ते जोदैवी संपदतैं उपजो होय तापुरुषविषै छबीस गुनहींहोय,
अर्थ यहैकीं देवजोग्यएसीजु सात्विकी संपदा ताके सनमुखभये जाकौ
जनमहोय जाकैं कल्यान भाविहोय ता पुरुषकै एछबीस गुनहोयहैं
॥ ॥ दोहा ॥ तेज छमा शुचिधर्म धृति, तजै द्रोह अभिमान, दैव-
संपदाजिनलही तामैंएगुनजानि ॥ ३ ॥

दंभोदर्पोऽभिमानश्चक्रोधःपारुष्यमेवच ॥
अज्ञानंचाभिजातस्यपार्थसंपदमासुरीं ॥ ४ ॥

टीका– अब आसुरी संपदा कहतहै हेअर्जुन दंभकहै धर्मध्वज-
कपटीहोय अरु दर्पकहै धन अरु विद्याकौं गुमानकरै अरु अभिमान-

होय अरु पारुष्यकहै अतिहिनिष्ठुरहोय. अरु अज्ञानीकहै अविवेकी होय ऐसैं दंभादिक ए छदोषहैं ते जो पुरुष आसुरी कहै राक्षसी संपदके सनमुषभयैं जनम्यो होय ताकौं होहि अर्थ यहहै कि एदंभादिक छ ६ दोष आसुरी संपदाके अनुकूल भयैतैं होहि. ॥ ॥ दोहा ॥ दंभदर्प अज्ञानरिस, अरु अज्ञानकठोर, जामैंएगुनतीनलहि, असुर संपदाघोर ॥ ४ ॥

दैवीसंपद्विमोक्षायनिबंधायासुरीमता ॥
माशुचःसंपदंदैवीमभिजातोसिपांडव ॥ ५ ॥

टीका– हे अर्जुन जेदैवी संपदसौं जुक्त है सो तत्वज्ञानके अधिकारी है. या दैवी संपदसौं मोक्षकौं प्राप्त होय अरुजो आसुरी संपदसौं जुक्त होय सो पुरुष नित्य बंधनकौं पावै. ऐसैं सुनिकै अर्जुनकौं संदेह उपज्यो कि मैं तत्वज्ञानको अधिकारी हौं कि नहीं तबयह अर्जुनकी हृदयकी बात जानिकै श्रीकृष्ण अर्जुनको समाधान करिकै कहत हैं कि हे पांडव तूं शोक जि नकरै तूं तो दैवी संपदके सनमुष भयै जनम्यो है तातैं तो कौं तत्वज्ञान कौ अधिकार है. ॥ ॥ दोहा ॥ दैवसंपदा तै मुकति, बंध आसुरी जोहि, सोचैजिन अर्जुन भये, दैवसंपदा तोहि ॥ ५ ॥

द्वौभूतसर्गौलोकेस्मिन्दैवआसुरएवच ॥
दैवोविस्तरशःप्रोक्तआसुरंपार्थमेशृणु ॥ ६ ॥

टीका– हे अर्जुन या लोकविषे सृष्टि दोय भांतिकी है. एक दैवी है एक आसुरी है तिनमैं दैवी संपद तो सौं मैं विस्तार करिकै कही. अब आसुरी संपद मोतैं सुनि. ॥ ॥ दोहा ॥ दैवआसुरी भेदतैं, द्विविधि सृष्टि है एहू, प्रथम कही विस्तारसौं, अबदूजी सुनि लेहू ॥ ६ ॥

प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंचजनानविदुरासुराः ॥
नशौचंनापिचाचारोनसत्यंतेषुविद्यते ॥ ७ ॥

टीका– हे अर्जुन जे असुरस्वभाव है पुरुष धर्मविषे प्रवृत्ति कौं

नाहीं जानत है. अरु धर्मतैं निवृत्त होनौ नाहीं जानत है. अरु जे आसुरी है तिनविषै पवित्रताई आचार अरु सत्य ए नाहीं होत है. ॥ दोहा ॥ अवधि ओरविधि जग्यकी आसुर जानत नाहिं, सत्यशौच आचार शुभ नहि एगुनतिनमांहिं ॥ ७ ॥

असत्यमप्रतिष्ठंतेजगदाहुरनीश्वरम् ॥
अपरस्परसंभूतंकिमन्यत्कामहैतुकम् ॥ ८ ॥

टीका– हे अर्जुन जे आसुर है ते यौ कहत है कि यहजगत असत्य है. कहै या जगतमैं बेद पुरान, प्रमान नाहीं है. मुनि भांड अरु राक्षस ए तीनो वेदकाकर्ता है. या हीतैं यह जगत अप्रतिष्ठित कहैहैं कि मर्यादाको कारन कोऊ नाहीं. यह संसार स्वभावहीतैं विचित्रहै. याहीतैं यह जगत अनीश्वर कहैहैं याको कर्ता कोऊ नाहीं है. अरु याकी थापनाहूको करइ,या कोऊ नाहीं पाप पुण्यहू नाहीं ऐसो है. अरु अपरस्पर संभूत कहै स्त्रीपुरुषकै मैथुनतैं उपज्यौ है. तातैं स्त्रीपुरुषको जो काम है सोई प्रवाहरूप करिकै या जगतको कारन है. इहां ओर कछु कारन नाहीं. ऐसै जे नास्तिक है ते कहत है. ॥ दोहा ॥ वेदपुराननि ईश्वरहि, एनहिंजानतमूढ, मैथुनतैं संसार है, काम हेतु यह गूढ ॥ ८ ॥

एतांदृष्टिमवष्टभ्यनष्टाऽत्मानोऽल्पबुद्धयः ॥
प्रभवंत्युग्रकर्माणःक्षयायजगतोऽहिताः ॥ ९ ॥

टीका– हे अर्जुन जे असुर है ते ऐसी दृष्टि करिकै मलीन चित्त व्हैकै ते अल्पबुद्धि उग्रकर्मके कर्ता जगतके क्षय निमित्त वैरी व्हैकै प्रगट होतहै. ॥ दोहा ॥ अल्पबुद्धिहै नेष्ट जे, यहै दृष्टिगहिलेत, हिंसाजुत कर्मनिकरै, रिपूजगतक्षयहेत ॥ ९ ॥

काममाश्रित्यदुष्पूरंदंभमानमदान्विताः ॥
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्ततेशुचिव्रताः ॥ १० ॥

टीका– हे अर्जुन ओर सुनि जे आसुरहैं ते कष्टहीं करिकै अरु दंभमान मदसौं जुक्त होइकै छुद्र देवतानिकै आराधनविषै प्रवर्तैहै. कौन भांतिकै असद्ग्राहान् गृहीत्वा कहे आसुर याभांति विचारै कि यामंत्रकरिवै तादेवताकौ आराधिकै महानिधिकौं साधिहौं. इत्यादिक दुष्ट आग्रहसौं मोहमात्रकरिकै क्षुद्र देवताकै आराधनकौं अंगिकारकरिकै क्षुद्र देवताकौं आराधैहै. ते आसुर कैसेंहैं अशुचिब्रत कहै मद्य मांसादिक निमित्तहै व्रत जिनके. ॥ ॥ दोहा ॥ भजत अपूरन कामकौं, दंभमान मदपाय, गहत बुराई मोहतैं, मांस ओर मद षाय ॥ १० ॥

चिंतामपरिमेयांचप्रलयांतामुपाश्रिताः ॥
कामोपभोगपरमाएतावदितिनिश्चिताः ॥ ११ ॥

टीका– हेअर्जुन ओर सुनि प्रलयकहैं मरन सोईहै अंत जाकौ अरु अपरिमेय कहै जाकौ कछु प्रमान नाहीं ऐसीजु चिंताविषै मग्नहोहि अर्थ यहैकी सर्वदा चिंतावंत होहीं और हमारा काम भोगही परम पुरुषार्थहै. और कछुनाहीं ऐसै निश्चयकरिकै मानै अरु कामना करिकै धनसंचयकी वांछा धरैहै. ऐसी भांति जे असुरहै ते कामहीकौं पुरुषार्थ कहतहै. अरु इहां शास्त्रहूकी साक्षी बतावतुहै कि एकामकी परम पुरुषार्थहै और कछु नाहीं ऐसो बृहस्पतिसुत्रमैं कह्योहै. ॥ ॥ दोहा ॥ जाकौकछु प्रमाननहिं ताचिंतामै लीन, कामभोग व्हैहै भलौ, निश्चै मानतदीन ॥ ११ ॥

आशापाशशतैर्बद्धाःकामक्रोधपरायणाः ॥
ईहंतेकामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन ओर सुनि उनकै काम श्रेष्ठहै अनेक जे आसाके पासहैं तिनसौं बंधे जब इत उत पैंचियै तब उनकौं काम क्रोधकौ आश्रय होइ तब काम भोगकै लीयै हिंसा आदिलेकै जे अन्यायहै ति-

नसौं धनसंचयकी वांछा करै. ॥ ॥ दोहा ॥ तेआसापासनिबंधे कामक्रोध चितलाय, जोरत धन अन्याय करि, कामरु भोगनिचाय ॥१२॥

इदमद्यमयालब्धमिमंप्राप्स्येमनोरथं ॥
इदमस्तीदमपिमेभविष्यतिपुनर्धनम् ॥ १३ ॥

टीका– अव आसुरनको मनोरथ कहिकै नरक प्राप्ति कहतहै हे अर्जुन जो आसुर होई सो या भांति मनोरथ कहिकै आजु मे यह मनोरथ पायोहै अब यह फिरि पाऊंगो. यह धन मेरे घरविषैहै. अरु यह धन फिरि होइगो. ॥ ॥ दोहा ॥ यहमैं पायौहै अबै, लहे मनोरथ ओर, यह धन मेरे ग्रहैमें, जोरौंगोबहुठौर ॥ १३ ॥

असौमयाहतःशत्रुर्हनिष्येचापरानपि ॥
ईश्वरोहमहंभोगीसिद्धोहंबलवान्सुखी ॥ १४ ॥

टीका– हेअर्जुन ओर सुनि यह शुत्रमैं मार्‍योहै. अरु ओरहूजे शत्रुहै तिनहूकौं मारिहौं. मैं ईश्वर हौं. मैं भोगीहौं. मैंसिद्धहौं मैं बलंवत हौं. मैंसुर्षीहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ यह वैरीमैंही हन्यौं, करौं ओरको अंत, ईश्वरहौं भोगी जुहौं, सुर्षीसिद्ध बलवंत ॥ १४ ॥

आढ्योऽभिजनवानस्मिकोऽन्योस्तिसदृशोमया ॥
यक्ष्येदास्यामिमोदिष्यइत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥

टीका– मैं धनाढ्यहौं मैं कुलीनहौ मोसमान औरकौनहै मैं जग्यकरौंगौ. मैं दानदेऊंगौ. मैं हर्षपाऊंगो. हे अर्जुन जेआसुर अज्ञानसौं मोहितहै ते ऐसे मनोरथ करतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ मैंहौं धनी कुलीनहौं, ओर न मोहि समान, जजौं देव मोदाहितहां, मोहितव्है अज्ञान ॥ १५ ॥

अनेकचित्तविभ्रांतामोहजालसमावृताः ॥
प्रसक्ताःकामभोगेषुपतंतिनरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥

टीका– हेअर्जुन जे आसुरहै ते अनेक मनोरथविषै चल्योजु चित्त ता करिकै भ्रम पावतुहै. अरु मोह जालसौं ढांपे ऐसे हौंहि जैसै मछ सूतकै जालसौं तैसै आसुर याभांति काम भोगविषै आसक्तहो- इकै अपवित्रजो नरक ताविषै परतहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ उनको मनबहू भ्रमतुहै, मोह ढंपै वेनित्त, परतघोर अति नरकमैं, कामभोग करहित्त॥ १६॥

आत्मसंभावितास्तब्धाधनमानमदान्विताः ॥
यजंतेनामयज्ञैस्तेदंभेनाविधिपूर्वकं ॥ १७॥

टीका– हेअर्जुन जेऔर है ते अपनेकौं श्रेष्ठकरि समझैहै अरु औरकोऊ श्रेष्ठनाहीं कहतुहै अरु काहूकौं नवैनाहीं ओर धनसौं जेउ- पजै मान अरु मद तिनसौं जुक्तहौंहि अरु वेनाममात्र यज्ञके कर्ताहै. अथवा दिक्षित सोमयाज जग्य इत्यादिक नामकै लीये जग्य करतहै. सोजग्य विधिविना जैसे होय तैसै करतहै, ॥ ॥ दोहा ॥ निजवडियायी नितकहत, नवतनधन अभिमान, नाममात्र यज्ञहि रचत, दंभीविनाबि- धान ॥ १७ ॥

अहंकारंबलंदर्पंकामंक्रोधंचसंश्रिताः ॥
मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतोऽभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥

टीका– हेअर्जुन जे आसुरहै ते अहंकार बल गर्व काम क्रोधइ- नकौं अंगिकारकरतहै ओर अपनै अरु पराई देह विषै मौं अंतरजामी परमेश्वरतैं द्वेषकरतहै अरु जे बडेहै तिनकी निंदा करतुहै ॥ दोहा ॥ अहंकार बल दर्प अरु, कामक्रोध गहिलेत, द्वेषी निजपद देहमैं, मो- कौंते दुषदेत ॥ १८ ॥

तानहंद्विषतःक्रूरान्संसारेषुनराधमान् ॥
क्षिपाम्यजस्रमशुभमासुरीष्वेवयोनिषु ॥ १९ ॥

टीका– जिनकौ आसुर स्वभाव कबहू मिटैनाहीं यह दोश्लोक-

तैं कहतहै हेअर्जुन तेआसुर मनुष्यनमैं अधमहै अतिक्रूरहै सबठौर-जहां तहां मोहीसौं द्वेष करतुहै. तातैं मैं इनकौं संसार मार्ग विषै जे आ-सुरी अतिक्रूर व्याघ्र सर्पादिक योनिहै तिनविषै निरंतर डारत हौं. जैसै उनके पापकर्महै तैसोई फल देत हौं ॥ दोहा ॥ मोंद्रोही अरु क्रूरकौं पापी अधम निहारि, जगतआसुरी जोनिमैं, तिनहिं देत हौं डारि ॥ १९ ॥

आसुरींयोनिमापन्नामूढाजन्मनिजन्मनि ॥
मामप्राप्यैवकौंतेयततोयांत्यधमांगतिम् ॥ २० ॥

टीका– और हेअर्जुन ते आसुरी मायाकौं पाइकै जन्म जन्मविषै मूढ होतहै. तातैं मेरे स्वरूपकौं पावनौं तो अतिदुर्लभ है. ये मेरे पाइवेकौं उपाइ ऐ सोजु साधनको मार्ग तहांकौं पावत नाहीं. यातैं क्रिमिकीटादि-क जे अधम जोनिहै ते पावतुहै. ॥ दोहा ॥ जन्मजन्ममैं मूढ ते, होत जु-आसुर आय, मोकौं ते पायत नहीं, परत अधम गति जाय ॥ २० ॥

त्रिविधंनरकस्येदंद्वारंनाशनमात्मनः ॥
कामक्रोधस्तथालोभस्तस्मादेतत्रयंत्यजेत् ॥२१॥

टीका– हे अर्जुन पाछै जे आसुरी दोष कहे तिनविषै सकल दोषनके मूलहै ते सर्वथा वर्जनी कहै. काम १ क्रोध २ अरु लोभ ३ एतीनोतीन भांतिके नरकद्वारैह. आत्माके नाशकारकैह. नीचयोनिकौं प्राप्त करै ऐसेहै. ता-तै इन तीन्यौकौं तजियै. ॥ दोहा ॥ नरक द्वारविधि तीनहै, करतआत्म कौं नाश, काम क्रोध अरु लोभ पुनि, इन्हैं छांडिसुखवास ॥२१॥

एतैर्विमुक्तःकौंतेयतमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः ॥
आचरत्यात्मनःश्रेयस्ततोयातिपरांगतिम् ॥ २२ ॥

टीका– इनकै त्यागको विशेष फल कहतुहै हे अर्जुन नरककै द्वारऐसे जे तीन कामादिक तिनतैं छूठ्यौ जो पुरुष सो जब अपनै श्रेयके साधन तपस्या जोगादिक आचरै तब मोक्षकौं प्राप्त होय ॥ ॥ दोहा ॥

तान्यौद्वारजुनर्कके, तिनतैं छुटैजुकोय, जतनकरै कल्यानके, तवहि पर मगति होय ॥ २२ ॥

यःशास्त्रविधिमुत्सृज्यवर्ततेकामकारतः ॥
नससिद्धिमवाप्नोतिनसुखंनपरांगतिम् ॥ २३ ॥

टीका– हे अर्जुन अपने धर्म विनु कीये कामादिकनको त्याग त्याग न होय तातैं वेदनैं वतायो जो धर्म ताकौं तजिकै जो पुरुष अपनै इच्छाचारी व्हैकै वर्तै सो पुरुष तत्वज्ञानकौं पावै नाहीं अरु सुषकहैं उपसम इंद्रियनको संजम ताहीकौं न पावै अरु परम गति कहै मुक्ति ताकौं न पावै. ॥ दोहा ॥ जे शास्त्रविधि छोडिकै, करत क्रिया वसकाम, सिद्ध लोकनाहिं परम गति, नहिं सुखमैं विश्राम ॥ २३ ॥

तस्माच्छास्त्रंप्रमाणंतेकार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥
ज्ञात्वाशास्त्रविधानोक्तंकर्मकर्तुमिहार्हसि ॥ २४ ॥

टीका– हे अर्जुन कार्यकी व्यवस्था कहै. यह कार्य करनौ तहां वेद धर्मशास्त्र पुराणादिक येई प्रमाणहै यातैं शास्त्रकी विधिसौं वतायौ जुकर्म ताकौं नीकी विधि जानिकै अधिकार विषै आइकै अपने अधिकारकै अनुसार करिवे कौं तूं जोग्यहै चित्त शुद्धि अरु ज्ञान अरु मुक्ति इनको मूल कर्महीहै यातैं कर्म करि. ॥ दोहा ॥ तातै काजअकाजमैं ताकौ वेद प्रमान, कर्म न करि तूं जानिकै, तिनकौ विधि सुविधान ॥२४॥ वेद करतजुपरोछकौ, मोकौं दैवताय, मेरेई कर्म निकरै, मेरी आज्ञापाय ॥१॥ तजै आसुरी संपदा,दैवी संपद पाय, ते नर मुक्ति लहै यही, कह्योसोरहौं ध्याय॥२॥ दैवासुर संपत्तिकौ, कह्यो विभागविचार, यातैं सात्विक को करयौ, तत्वज्ञान अधिकार ॥ ३ ॥ दैवासुरसंपति वरनि, आनंदरामविशेष, विनवैवनवारीयसौं, हियमैंनटवरभेप ॥ ४ ॥ इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे दैवासुरसं पद्विभागयो गो नामपोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

अर्जुन उवाच ॥

येशास्त्रविधिमुत्सृज्ययजंतेश्रद्धयान्विताः ॥
तेषांनिष्ठातुकाकृष्णसत्वमाहोरजस्तमः ॥ १ ॥

टीका– अब अर्जुन कहतहै कि हे कृष्ण जे पुरुष शास्त्रविधिकौं दुर-बुद्धि करिकै अथवा आलस करिकै अनादरसौं तजिकै अरु केवल आचारपरंपराकै वश भये श्रद्धायुक्त व्हैकै जग्यादिककर्म करतहै तिनकी निष्ठाकहे स्थितिसो कौनहै सत्वगुनहै कि रजोगुनहै कितमोगुनहै. अर्थ यहैकि उनकी देवपूजादिकनविषै प्रवृत्तिहोतहै. सो सत्वगुनलीयै होतहै कि रजोगुनलीयै होतहै कि तमोगुनलीयै होतहै. ॥ ॥ दोहा ॥ श्र-द्धाजुतजग्यहिरचै तजिवेदनकीनीति, सतरजतमसौं थितिकहौं, कहियै तिनकीरीति ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥

त्रिविधाभवतिश्रद्धादेहिनांसास्वभावजा ॥
सात्विकीराजसीचैवतामसीचेतितांशृणु ॥ २ ॥

टीका– अब श्रीकृष्ण कहतहै कि हे अर्जुन शास्त्रके तत्वज्ञानतैं प्रव-र्तैंहै. तिनकी जोपरमेश्वरपूजाविषै श्रद्धाहै. सोएकही है. अरुजे पुरुष लोककै आचारपाछे चलैहै तिनकी श्रद्धाहै सो सात्विकी राजसी अरु ता-मसी ऐसै तीन भांतिकैहै. सो श्रद्धा कैसीहै स्वभावजा कहै पूर्वसंस्कारतैं उपजीहै. अरु यह श्रद्धाशास्त्रोक्त जो विवेक ज्ञान ताकौं मिटावै है सो इनकी नाहीं यातैं केवल पूर्वलै स्वभावतैं श्रद्धातीनविधिकी होतहै. सोतूं मोतैं सुनि. ॥ ॥दोहा ॥ श्रद्धानरकीतीनविधि, होतजुसहजुसुभाइ, सा-त्विकराजसतामसी, सुनिएतिनकीदाइ ॥ २ ॥

सत्वानुरूपासर्वस्यश्रद्धाभवतिभारत ॥
श्रद्धामयोऽयंपुरुषोयोयच्छ्रद्धःसएवसः ॥ ३ ॥

टीका– हेअर्जुन श्रद्धाएकसात्विकीहै. तथापि पुरुष रजोगुनकौं अंगिकार करतुहै यातैं मिश्रितव्है सत्वगुन तीन भांतिकौं होतहै तातैं श्रद्धाहूके तीनभेद होतहै हे अर्जुन सत्वगुनके अनुसार विवेकी अरु अविवेकी सकल लोककै श्रद्धा होतहै तातैं यह संसारी पुरुष श्रद्धामयहै कहै तीनभांतिकी श्रद्धा सौं विकार पावतु है कैसे की जो पुरुष जैसी श्रद्धा लीयै होत सो पुरुष श्रद्धाके अनुसारतैं सोई जानिये जाकै पूर्वलै संस्कारतै सात्विकीगुन अधिकहै सो पुरुष सात्विकी श्रद्धासौ जुक्त होय अरु तैसेई जिनकै तमोगुन रजोगुन अधिक होय सो राजस तामसी श्रद्धासौं जुक्त होय ऐसै लोककै आचार मात्रसौं जे प्रवर्त्तेहै तिनकै स्वभाव जीतियैकौं सात्विकीही श्रद्धा है ओर नाहीं. ॥ दोहा ॥ श्रद्धा धर्मजु पुरुषकौ, अपअपनौ अनुरूप, सतरज तमजोजिहिं भजै, सोताहीको रूप ॥ ३ ॥

यजंतेसात्विकादेवान्यक्षरक्षांसिराजसाः ॥
प्रेतान्भूतगणांश्चान्येयजंतेतामसाजनाः ॥ ४ ॥

टीका– हे अर्जुन जे सात्विकी पुरुषहै ते सात्विकी प्रकृति जे देवताहै तिनकौं पूजेहै. अरु जे राजसहै ते राजसी प्रकृतिजे जक्ष राक्षस तिनकौं पूजेहै अरु ओर जो पुरुष तामसीहै ते ..मसी प्रकृति जे भूतप्रेतादिकहै तिनकौं पूजैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ देवनिसेवै सात्विकी, राजस राक्षसजक्ष, भूतप्रेतगनतैं भजै, नरजु तामसी पक्ष ॥ ४ ॥

अशास्त्रविहितंघोरंतप्यंतेयेतपोजनाः ॥
दंभाहंकारसंयुक्ताःकामरागबलान्विताः ॥ ५ ॥

टीका– राजस अरु तामसविषै फेरि विशेष कहतुहै. हे अर्जुन केतेक उत्तम पुरुष शास्त्रविधिकौं नै जानैहै. तऊ प्राचीन पुन्यकै संस्कारतें सात्विकी होतहै अरु केतेकजे मध्यम पुरुष है तेराजस होतहै. अरु केतेकजे अधम पुरुष है ते तामसी होवहै. अरु जेअतिमंद भागीहै ते पा-

षंडीनका संगसौं पाषंडाचारी व्हैकै जो शास्त्रविषै नं कह्यो अरु प्रानीनिकौं भय उपजावै ऐसे घोर तपकौं करतहै तातैं दंभ अहंकार अरु काम कहै अभिलाष राग कहै आशक्ति बल कहै आग्रह इनसौं जुक्त्व्हैकै जे पुरुष तप करतहै. तिनकौं तूं असुर निश्चै जानि. ॥ ॥ दोहा ॥ घोर तपस्या जे करै जे न वेदमति होंहिं, भरे दंभ अहंकारसौं काम रागलगिगौंहिं ॥ ५ ॥

कर्षयंतःशरीरस्थंभूतग्राममचेतसः॥
मांचैवांतःशरीरस्थंतान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्॥ ६ ॥

टीका– हेअर्जुन अपनी देहविषै रहै ऐसेजे पृथिवी आदिलैकै पंच महाभूत तिनकौ जु ग्राम कहै समूह ताकौं वृथा उपवास करिकै निर्बल करिकै दुर्बलकरि छीन करतहै. ते अचेतन अविवेकी पुरुष अंतर्जामी रूप देहविषै रहौं ऐसो जुमैं तामोहीकौं दुर्बल छीन करतुहै तिनकौं तुं आसुर निश्चयकहैं. अतिहि क्रूरहै निहचै जिनकौ ऐसै जानि, ॥ ॥ दोहा ॥ पंचभूतजे देहमैं, तिनकौं वैदुष देत, हियमैं मोहूकौं हनै, तेहै असुर अचेत ॥ ६ ॥

आहारस्त्वपिसर्वस्यत्रिविधोभवतिप्रियः॥
यज्ञस्तपस्तथादानंतेषांभेदमिमंशृणु ॥ ७ ॥

टीका– हेअर्जुन तीन भांतिकौ अन्नादिक आहारहु सबकौं प्रियहोतहै. अरु तैसैंई यज्ञ तपस्या दान एऊ तीनभांतिके हैं इनके भेदसुनि अर्थ यहकी राजस अरु तामस जे आहार अरु यज्ञादिक तिनकौं तजिकैं सात्विक जे आहार अरु यज्ञादिकहैं तिनकौं सेवनतैं सत्वगुनकी वृद्धिको जतनकरै. ॥ ॥ दोहा ॥ तीनभांति आहार यह, सबकौं रोचकहोय, यज्ञदान तदभेद ए, मोंपैं सुनियैं सोय ॥ ७ ॥

आयुःसत्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्द्धनाः॥

रस्याःस्निग्धाःस्थिरहृद्याआहाराःसात्विकप्रियाः ॥ ८ ॥

टीका— हेअर्जुन आहारनतैं आयुकी वृद्धिहोय अरु सत्वकहैं उत्साहु वधैं अरु बलकहैं शक्ति ताकी वृद्धि होय आरोग्य कहैं रोगनकौं नाशहोय अरु सुखकहैं चित्तकी प्रसन्नता होय अरु प्रीतिकी वृद्धिहोय अरु जे आहार रसवंत हौंहि चीकने हौंहि अरु जे देहविषे अपनै रसकै अंसकरिकैं थिर हौंहि अरु जे अतिमनोहर हौंहि ऐसे जे भक्ष भोज्यादिक आहार ते सात्विककौं प्रिय हौंहि. ॥ ॥ दोहा ॥ सुंदर थिर अति चीकनो, सात्विकप्रिय आहार, आयुसत्व आरोग्यबल, प्रीति बढावनहार ॥ ८ ॥

कट्वम्ललवणात्युष्णातीक्ष्णरूक्षविदाहिनः॥
आहाराराजसस्येष्टादुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥

टीका— हे अर्जुन जो आहार अतिहि कटु कहै करवो होय अतिहि षाटो होय अतिहि षारो होय अरु जो अतिहि उष्ण होय अरु जो अतिहिजु तीछन मिरचादिक होय अरु जो अतिहि रूक्ष कांगुनी कोदौं इत्यादिक अन्न होय अरु अतिहि विदाहि कहै सरस्यौ राई आदि लेकै हौंहि इनतैं दुष कहै. हृदयकौं संताप होय अरु सोक होय अरु आमय कहै रोग होय. ॥ ॥ दोहा ॥ दाहक रूषे उष्ण कटु, तीछन षाटे षार, सोकरोग दुष देतहै, राजसप्रिय आहार ॥ ९ ॥

यातयामंगतरसंपूतिपर्युषितंचयत् ॥
उच्छिष्टमपिचामेध्यंभोजनंतामसप्रियम् ॥ १० ॥

टीका— हे अर्जुन यातयाम कहै जाअन्नपचायै उपरांत पहर १ वीत्यो होय ऐसो अन्न होय अरु जो गतरस कहै जाको रस निचोडलीयौं होय ऐसो अन्न होय अरु जो पूति कहै दुर्गंध अन्न होय अरु जो वासी अन्न होय अरु उच्छिट कहै काहूकै भोजन कीयै पीछै वच्यो ऐसो अन्न होय अरु अमेध्य कहै जो अन्न भक्षण करिवै लायक न होय ऐसोजु भोजन

सोतामसकौं प्रिय होय. ॥ ॥ दोहा ॥ जिहिंरांधे पर प्रहरगत, वासौ उठ्यौं वुसाय, झूठ्यौ ओर पवित्र नहिं, भोजन तामस ठाय ॥ १० ॥

अफलाकांक्षिभिर्यज्ञोविधिदृष्टोयइज्यते ॥
यष्टव्यमेवेतिमनःसमाधायससात्विकः ॥ ११ ॥

टीका– अब तीन भांतिकौ जग्य कहतुहै हे अर्जुन फलकी इच्छा तजिकै जे पुरुष विधि देखिकै मेरे जग्य अवश्य करनौहीहै ऐसै मन एकाग्र करिकै निश्चयसौं जे जज्ञ करतुहै सो सात्विक जग्य कहियै. ॥ दोहा ॥ लषिविधानसौं कीजियै, छांडि फलनकी आस, समाधान धर हीयमैं, सात्विक जग्य विलास ॥ ११ ॥

अभिसंधायतुफलंदंभार्थमपिचैवयत् ॥
इज्यतेभरतश्रेष्ठतंयज्ञंविद्धिराजसम् ॥ १२ ॥

टीका– हे अर्जुन जे सकाम होइकै फलकी इच्छा धरिकै दंभकै लीयै अरु,अपनी बडाई प्रगट करनैके लीयै जग्य करतुहै सो जग्य तूं राजस जानि. ॥ ॥ दोहा ॥ करिकै फलकी कामना, ओर दंभकी भाय ऐसे जे जग्यहि करै, राजस जग्य सदाय ॥ १२ ॥

विधिहीनमसृष्टान्नंमंत्रहीनमदक्षिणम् ॥
श्रद्धाविरहितंयज्ञंतामसंपरिचक्षते ॥ १३ ॥

टीका– हे अर्जुन जो जग्य शास्त्रोक विधिसौं नहीं होय अरु जिहिं जग्यविषै ब्राह्मणादिकनकौं अन्नदान कोऊ करै नाहीं अरु जो जग्यमंत्र हीन होय अरु जो जग्य जैसी दछना कहीहै तादछनासौं रहित होय अरु जो श्रद्धारहित होय ऐसा जो जग्य ताकौं जे शिष्ट कहै महापुरुषहै ते तामस कहतहै. ॥ दोहा ॥ । विनुअन्नहि विनुदछना, विनामंत्र विधिहीन, विनुश्रद्धाजग्यहिकरै, सोहै तामसलीन ॥ १३ ॥

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनंशौचमार्जवम् ॥

ब्रह्मचर्यमहिंसाचशारीरंतपउच्यते ॥ १४ ॥

टीका– अब तीन विधिकी तपस्या कहतहै तहां प्रथम शरीरादिक भेदसौं तीन विधिकी कहतहै हे अर्जुन देवता ब्राह्मन गुरु तत्त्व ज्ञानी इनकी पूजा करै ओर बाहिर भीतर पवित्र रहै सबसौं नम्रता राषै अरु ब्रह्मचर्यविषै रहै काहूकी हिंसा न करै यह शरीर तपकहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ ग्यानीगुरु द्विजदेवकौं, पूजै रुचि मृदु होय, ब्रह्मचर्य हिंसा तजै, तप सारीरकसोय ॥ १४ ॥

अनुद्वेगकरंवाक्यंसत्यंप्रियहितंचयत् ॥
स्वाध्यायाभ्यसनंचैववाङ्मयंतपउच्यते ॥ १५ ॥

टीका– हेअर्जुन जो वाक्यकहैं वचनतें काहूकौं भय उपजावैं नाहीं अरु जो वचन सत्य होय अरु जो श्रोताकौं प्रिय होय अरु जो अंतविषै हितकारी होय अरु जो वचन वेदको अभ्यास करतहैं याभांति यह वाचक तपकहियैं. ॥ ॥ दोहा ॥ भयनकरै जो प्रियवचन, हितकारी सतभाय, करैं वेद अभ्यास पुनि, वाचक तपयादाय ॥ १५ ॥

मनःप्रसादःसौम्यत्वंमौनमात्मविनिग्रहः ॥
भावसंशुद्धिरित्येत्ततपोमानसमुच्यते ॥ १६ ॥

टीका– हेअर्जुन मन अतिहि प्रसनहोय निर्मल होय अरु सौम्यत्वकहै क्रूरनहोय कोमल होय अरु मोनकहैमनमैं ईश्वरके स्वरूपकी भावना होय अरु आत्मविनिग्रह कहैं विषयनतैं निवृत्तहोय अरु भाव संशुद्धि कहैं लोकव्यवहार विषैं कपटसौं रहितहोय या भांति यह मानस तप कहियैं. ॥ दोहा ॥ मन प्रसाद मुख मृदुबचन, इंद्रीनिग्रह मौन, भाव शुद्धियह कहतहैं, मानस तपसी तोन ॥ १६ ॥

श्रद्धयापरयातप्तंतपस्तत्त्रिविधंनरैः ॥
अफलाकांक्षिभिर्युक्तैःसात्विकंपरिचक्षते ॥ १७ ॥

टीका– अब सात्विकादिक भेदसौं तीन भांतिकौं तप कहतुहै हे अर्जुन जो तपस्या परम श्रद्धासौं फलकी इच्छा तजिकै एकाग्रचित्त व्हैकै करियै सो सात्विक तपस्या कहीयै.॥ ॥ दोहा ॥ श्रद्धासौं नर तपकरै, सोईतीन्यौ भांति, फल इच्छा छोडे करै, सोई सात्विक कांति॥१७॥

सत्कारमानपूजार्थंतपोदंभेतचैवयत् ॥
क्रियतेतदिहप्रोक्तंराजसंचलमध्रुवम् ॥ १८ ॥

टीका– हेअर्जुन जो तपस्या सत्कार कहै आदरकै लियै तपस्या होय अरु जो अपनी पूजा कराइवेकै लीयै अरु जो दंभकहै कपट तासौं जु करियै सो अरु जा तपकौ निश्चै नहोय अरु अध्रुव कहै छिन एक करियै छिन एक नकरियै ऐसो होय सो तप राजस कहियै.॥ ॥ दोहा ॥ पूजा आदर मान पुनि, ओर दंभको काज, सो तपराजस कहतुहैं, चंचल छिनक समाज॥ १८ ॥

मूढग्राहेणात्मनोयत्पीडयाक्रियतेतपः ॥
परस्योत्सादनार्थंवातत्तामसमुदाव्हतम् ॥ १९ ॥

टीका– हेअर्जुन जो तप अज्ञानकै आग्रहसौं आत्माकौं पीडितकरिकै करियै अरु ओरकै मारन मोहन वशीकरन इत्यादिक षट् कर्म करनकै लीयै जो तप करियै सो तप तामस कहीयै. ॥ ॥ दोहा ॥ देहहिदुषवै मूढव्है, हठ सौ जो तप होय, परकौं कष्ट दिषावही, तामस तपव्है सोय ॥ १९ ॥

दातव्यमितियद्दानंदीयतेऽनुपकारिणे ॥
देशेकालेचपात्रेचतद्दानंसात्त्विकंस्मृतम् ॥ २० ॥

टीका– अब तीन भांतिकौ दान कहतुहै हे अर्जुन दान देनौही ऐसो निश्चय करिकै जो दान दीजै अरु पात्र उपकार करिवैकौं समर्थ नहोय अरु जो पात्र तपस्या शास्त्र करिकै युक्त होय ऐसोजु पात्र ब्राह्मनकौं

कुरुक्षेत्रादिक देषविषै अरु ग्रहनादिक काल विषै जो दानदीजै सो दान सात्विक कहियै ॥ ॥ दोहा ॥ दानदेइ उपगारविनु, पात्र विप्रकौ देषि, देशकालकौं जानिकै, सात्विक दान विशेषि ॥ २० ॥

यत्तुप्रत्युपकारार्थंफलमुद्दिश्यवापुनः ॥
दीयतेचपरिक्लिष्टंतद्राजसमुदाहृतम् ॥ २१ ॥

टीका– हे अर्जुन काहू समय यह मोसौं उपकार करैगो ऐसो बदलौ चाहिकै अरु स्वर्गादिक फलकी इच्छा धरिकै अरु चित्तमैं क्लेश पाइकै जो दान दिजै सो दान राजस कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ कीजै जो उपगारसौं, फलकी आसा मानि, दीजै जो अतिकष्टसौं, ताकौं राजस जानि ॥ २१ ॥

अदेशकालेयद्दानमपात्रेभ्यश्चदीयते ॥
असत्कृतमवज्ञातंतत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥

टीका– हे अर्जुन जो दान अपवित्र देशविषै अपवित्र सूतकादिक कालविषै दीजियै अरु जो नकली मस्करेनकौं अरु नटादिक अपात्रनकौं दीजियै. अरु जो पादप्रक्षालनादिक पूजा विनु दिजियै अरु जो बहुत अनादरसौं दीजियै सो यहदान तामस कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ विनादेसअरुकाल विनु, दीयौचाहैदान, विनुआदरसत्कारविनु तामसताहिवषान॥२२॥

ओंतत्सदितिनिर्देशोब्रह्मणस्त्रिविधःस्मृतः॥
ब्राह्मणास्तेनवेदाश्चयज्ञाश्चविहिताःपुरा ॥ २३ ॥

टीका– हे अर्जुन जे महापुरुष विवेकीहै ते ब्रह्म परमात्माकौं ॐतत सत्याभांति त्रिविध नामकह्योहै ॐब्रह्मको नाम यातैं हैकि ॐकार जगतकौं कारनहै ताहीतैं अति प्रसिद्धहै तातैं ॐकार ब्रह्मको नामहै अरु जे अविवेकीहै तिनकौ ब्रह्म दूरहै तातैं तत् ब्रह्मको नामहै. अरु परमार्थ सत्ता करिकै साधुता करिकै अरु अपवित्रता करिकै सत् ब्रह्मकौं नामहै इन तीनहू नामकौं निर्देश कहै कहिवेसौ त्रिगुन कहै. अंगह्नी नहू जो क-

में ताकौं सगुन कहै सांगोपांग करिवेकौं समर्थहै तातैं ऐसै ब्रह्मकै त्रिविधनाम उच्चारनतैं ब्रह्माने ये सृष्टिके आदिविषै ब्रह्मनाम वेद अरु जग्य एसृजेहै. अथवा जा परमात्माकौ त्रिविध यह नामहै तापरमात्माने अतिपत्रिव जे ब्राह्मन वेद अरु जग्य ए सृजेहै तातैं यह ताकौं नामोच्चारन अतिहि प्रसस्त कहै पवित्रहै. ॥ दोहा ॥ ॐ तत् सत् एक ब्रह्मके, नामजु तीन प्रकार विप्रवेद अरु जग्य तिन, कीने पहिले वार॥ २३ ॥

तस्मादोमित्युदाहृत्ययज्ञदानःतपःक्रियाः॥
प्रवर्ततेविधानोक्ताःसततंब्रह्मवादिनाम्॥ २४ ॥

टीका— अब ॐकारादिक तीनहूं नामकी महिमा भिन्न भिन्न कहतहै हे अर्जुन जातैं ब्रह्मका नामको उच्चारन,ऐसो अति पवित्रहै तातैं ॐ ऐसो उच्चार करिकै वेदवादीनेनै करेजे शास्त्रोक्त जग्यादिक कर्मतैं निरंतर अंगहीन हौंहि. तउ अतिहि सगुन सांगोपांग हौंहि. ॥ दोहा ॥ क्रिया जग्यतपदान अरु कहि पहिलेॐकार, वेदवंतयौं कहतहै विधिविधान विस्तार ॥ २४ ॥

तदित्यनभिसंधायफलंयज्ञतपःक्रियाः॥
दानक्रियाश्चःविविधाःक्रीयंतेमोक्षकांक्षिभिः। २५।

टीका— हे अर्जुन जे शुद्धचित्त पुरुष मोछकौं चाहतहै तेतत् ऐसैं उच्चार करिकै फलकी वांछा तजिकै जग्य तपस्या दानादिक क्रिया करतहै. तब वेशुद्ध चित्त भयै संकल्पके त्यागतैं मुमुक्षु हौंहि तातैं तत् शब्दको उच्चार अतिहि पवित्रहै. ॥ दोहा ॥ तत् यह करिकै करतहै क्रिया जग्य तपदान, फल अभिलाषा छांडिकै चाहत मुक्ति निदान ॥ २५ ॥

सद्भावेसाधुभावेचसदित्येतत्प्रयुज्यते॥
प्रशस्तेकर्मणितथासच्छब्दःपार्थयुज्यते॥ २६ ॥

टीका— हे अर्जुन सद्भाव कहै देवदत्तके पुत्रादिकहै या अर्थ विषै अरु

साधु भाव कहै देवदत्तके पुत्रादिक श्रेष्ठहै या अर्थ विषै सत् ऐसो उच्चार करियै अरु अपवित्र जे मांगलिक विवाहादिक कर्महै तिन विषै सत् ऐसो उच्चार करनो युक्तहै. ॥ दोहा ॥ शुद्धभाव सतभावमैं, सत्को करत उच्चार ओरभले पुनि कर्ममें, सतको गावतसार ॥ २६ ॥

यज्ञेतपसिदानेचस्थितिःसदितिचोच्यते ॥
कर्मचैवतदर्थीयंसदित्येवाभिधीयते ॥ २७ ॥

टीका– हेअर्जुन जग्यविषै तपस्याविषै जोस्थितिहै सोसत् कहियै अरु जोपरमात्माको निमित्त कर्महै सोसत् कहिहै. भावार्थ यहकि जातैं ऐसै तीन्यौं ब्रह्मके नांव अतिप्रशस्तहै अतिपवित्रहै. मंगली कहै तातैं सकल कर्म सांगोपांग करिवैके लीयै इनतीननीकै उच्चारकरीयौ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ जग्यदान तपकीजुस्थिति, ताहिकहत सतनाम, ताके जेजे कर्महै ताको सतविश्राम ॥ २७ ॥

अश्रद्धयाहुतंदत्तंतपस्तप्तंकृतंचयत् ॥
असदित्युच्यतेपार्थनचतत्प्रेत्यनोइह ॥ २८ ॥

टीका– हेअर्जुन जोकछु श्रद्धाविनु होम दान तपस्या करियै सो अरु ओरहू श्रद्धाविनुजो कछु कर्म करियै सु सबही असत् कहीयै काहेतैं कि विगुनकहै श्रद्धा विनु कर्म अंगहीनहै यातैं परलोकहू विषै फलदायकनाहीं अरु अकीर्त्तिकहै कुजस कहै यातैं याहूलोक विषैं फलदायक नाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ श्रद्धा विनु होमतयजत, देतसवैंजु अकाज अर्जुन जो यह असतहैं दुहूलोकनहिं साज ॥ २८ ॥ एकहिश्रद्धा सात्विकी, मुख्यकही समुझाय । ओर त्रिविधगुन भेदतैं कहेसत्रहैध्याय ॥ १ ॥ जवैराजसीतामसी, श्रद्धाको तजिदेत । रहै सात्विकीमैं तवै, तत्त्वज्ञान गहिलेत ॥ २ ॥ जोई अर्जुन सौं कह्यौ, कृष्ण सदन धनश्याम । श्रद्धा विधिविवेकसौं, वरन्यौ आनंद राम ॥ ३ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता सूदनिपत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्र-

द्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोध्यायः ॥ १७ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

अर्जुन उवाच

संन्याससस्यमहाबाहोतत्त्वमिच्छामिवेदितुम् ॥
त्यागस्यचहृषीकेशपृथक्केशिनिषूदन ॥ १ ॥

टीका– अव अर्जुन कहतहै कि हृषीकेशकहै तोसकल इंद्रियनके प्रेरक अरु हेकेशी निषूदनकहै केशीनाम अश्वके आकार वडो दैत्य सो मूहपसारि भछनकरिवे कौ आयौ तव अनिविस्तीर्ण जो मुष ता विषै भुजाप्रवेशित करिकै ताहिछिनमैं भुजाकी वृद्धिकरि ताकेशीकौं काकरिके फलकीनाई विदीर्ण कर्‍यो तातैं हेकेशिनिषूदन मैं सन्यासको अरु त्यागको तत्व भिन्न भिन्न विवेक करिके जान्यौं चाहतहौं ॥ ॥ दोहा ॥ त्याग तत्व जान्यौ चहत, कहियौ जोभगवान्, तत्व ओर संन्यासकौ, न्यारौ करौवषान ॥ १ ॥

काम्यानांकर्मणांन्यासंसंन्यासंकवयोविदुः ॥
सर्वकर्मफलत्यागंप्राहुस्त्यागंविचक्षणाः ॥ २ ॥

टीका– अव याकौ उत्तर श्रीभगवान् कहतुहै, हेअर्जुन कविकहै जे पंडितहै तेफलसहित जे सकामकर्महै तिनकौं जु त्याग ताकौं संन्यास जानतहै अरु जोसकल नित्य नैमित्तिकादिक कर्मनके फलकौ त्यागकरियै ताकौं बिचक्षण कहै. विवेकी पुरुषहैं ते त्याग कहतहै ॥ दोहा ॥ कामजुक्त कर्मनितजै, कहै ताहि संन्यास, कर्मफलनकौं त्यागयह, त्यागकहतबुद्धिदास ॥ २ ॥

त्याज्यंदोषवदित्येकेकर्मप्राहुर्मनीषिणः ॥
यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे ॥ ३ ॥

टीका– हेअर्जुन केतेक मनीषीकहै सांख्ययोगीहै ते हिंसा दोषवंत जे सकल कर्महै तिनकौं तजियै ऐसे कहतहै, काहेतैंकि हिंसादिक-

दोष उक्त कर्महै तिनसौं बंधहोय यातैं अरु अपरकहै जेमिमांसकहै ते-जग्यदान अरु तपस्या इत्यादिक जे नित्यकर्महै तेछांडिये नाहीं ऐसै कहतहैं ॥ ॥ दोहा ॥ कर्म छांडियै दोषतैं, कोउकहत यारीति, जज्ञ-दान तप कर्म जिन, तजौ ओर यह नीति ॥ ३ ॥

निश्चयंशृणुमेतत्रत्यागेभरतसत्तम ॥
त्यागोहिपुरुषव्याघ्रत्रिविधःसंप्रकीर्तितः ॥ ४ ॥

टीका– हे अर्जुन हे पुरुषश्रेष्ठ यह त्याग बहुत दुर्बोध कहै काहू सौं जान्यौं न जाय ऐसो है. जात्यागविषै जोनिश्चयहै सो तूं मौंतैं सुनि हे भ-रतश्रेष्ठ जे तत्त्वज्ञानी है तिनयहत्यागविवेक करिकै तामसादिक भेदनिसैं तीन भांतिकौं कह्यौ है. ॥ ॥ दोहा ॥ याठौरहिपदअर्थतूं, मेरौनिश्चयजा-नि, तीन भांतिकौं त्याग यह, अर्जुन चितमैं आनि ॥ ४ ॥

यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत् ॥
यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीषिणाम् ॥ ५ ॥

टीका– हे अर्जुन यज्ञदान तपस्यादिक जे कर्महै तिनको त्यागनहिं करिये कर्म करियैही क्यौंकि यज्ञदान अरु तप एक, विवेकी नके चित्तकौं शुद्धकरैं यातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ जग्यदानतपकर्म ए, कीजैतजियै नाहीं, यातैं पंडित जन इन्है, गिनत पवित्रनमांहि ॥ ५ ॥

एतान्यपितुकर्माणिसंगंत्यक्त्वाफलानिच ॥
कर्त्तव्यानीतिमेपार्थनिश्चितंमतमुत्तमम् ॥ ६ ॥

टीका– अब जाभांति यज्ञादिक कीयै अति पवित्र हौंहि सोप्रका कहतुहै. हे अर्जुन अतिहि पवित्र जे जग्यादिक कर्म सो तोसौं कहे है. ते कर्म आसक्ति अरु फल तजिकै केवल ईश्वरके आराधन निमित्त करनेहैं है. यह मेरो निश्चयरूपउत्तममतहै ॥ दोहा ॥ फल छांडे संगहितजै, कर्म करौचितलाय, अर्जुन यह मेरौ जुमत, निश्चै उत्तमदाय ॥ ६ ॥

नियतस्यतुसंन्यासःकर्मणोनोपपद्यते॥
मोहात्तस्यपरित्यागस्तामसःपरिकीर्त्तितः॥ ७॥

टीका– हे अर्जुन नित्यकर्मतैं शुद्धचित्त होहिं यातैं नियत कहैं नित्य ऐसो जुकर्म ताको संन्यास कहै त्यागसौं नोपपद्यते कहैं त्याग करनौ जोग्य नाहीं काहेतैं, कि यह नित्यकर्म पहिलै अंतःकरनकौं शुद्ध करै अरु पाछै फेरि मोक्षदायक होइ यातैं अरु जे काम्य कर्म कहे जे सकाम कर्म है ते बंधनरूप हैं यातैं सकाम कर्मको त्याग करनौ जोग्यहै. अरु जो मोहतैं ता नित्य कर्मको त्याग करै तो वह त्याग तामस कहियै काहेतैंकि मोहतामसीहै. यातैं त्यागही तामसी कहियै ॥ दोहा ॥ जो अवस्य करनौ जुकर्म, ताकौं छांडिन देय, जोछांडै अज्ञान तम, सो तामस गहिलेहि ॥७॥

दुःखमित्येवयत्कर्मकायक्लेशभयात्त्यजेत् ॥
सकृत्वाराजसंत्यागंनैवत्यागफलंलभेत् ॥ ८ ॥

टीका– हे अर्जुन जो पुरुष आत्म तत्त्वज्ञानविनु या भांति विचारै कि यह कर्म केवल दुःखरूप है. ऐसौ जानिकै काय क्लेशके भयतैं नित्य कर्मकौं तजै सो त्याग राजसी कहीयै काहेतैं कि, दुष राजसहै तातैं राजस पुरुष ऐसै त्याग कीयै तैं राजस त्याग फल कहीयैं ज्ञानकी निष्ठा ताकौं पावै नाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ यहै जानि कर्म नितजै, मतिदेही दुष होय, सोतौ राजस त्याग है, निरफल कहीयैं सोय ॥ ८ ॥

कार्यमित्येवयत्कर्मनियतंक्रियतेर्जुन ॥
संगंत्यक्त्वाफलंचैवसत्यागःसात्विकोमतः ॥ ९ ॥

टीका– हे अर्जुन यह कर्म अवश्य करनौईहै ऐसै जानिकै नियत कहै नित्यजे कर्महै तिनकौं अवश्य करियै अरु कर्म विषै संगहै आसक्ति ताकौं तजियै अरु कर्म फलहै तिनकौं तजियै सो यह त्याग सात्विकी कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ करनौ कर्म अवश्य यह, जानजु कीजै कर्म संग

ओर फलकूं तजै, सात्विक त्याग सुधर्म. ॥ ९ ॥

नद्वेष्टयकुशलंकर्मकुशलेनानुषज्जते ॥
त्यागीसत्त्वसमाविष्टोमेधावीछिन्नसंशयः ॥ १० ॥

टीका– अरु सात्विक त्यागीको लछनकिहेतुहै. हे अर्जुन सत्व समाविष्ट कहै. सात्विक गुनसौं व्याप्त ऐसोजु सात्विक त्यागी सो कुशल कहै. दुप दाई ऐसे जे शसिररितु विषै प्रातःस्नानादिक कर्म तिनसौं द्वेष नकरै. अर्थ यहकि कर्म करतैं कष्ट बहुत होयहैं ऐसै जानि द्वेष बुद्धिसौं तजै नाहीं अरु कुशल कहैं सुषकारी ऐसे जे ग्रीषम ऋतु विषै मध्याह्न स्नानादिक तिन विषै प्रीतिनकरै काहेतैं कि यह सात्विक त्यागी मेधावी कहै थिर बुद्धिहै अरु याकौं संशय कहै मिथ्याज्ञान सो दूर भयोहै. यातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ बुरे कर्म निंदै नहीं, भलेरहै नहिंलागी, बुद्धिवंत संदेहविनु, यहै सात्विकौ त्यागी ॥ १० ॥

नहिदेहभृताशक्यंत्यक्तुंकर्माण्यशेषतः ॥
यस्तुकर्मफलत्यागीसत्यागीत्यभिधीयते ॥ ११ ॥

टीका– हेअर्जुन जो देहकौं आत्मा करिकै मानै ऐसो जु देह भृत कहै देहधारी पुरुष सो सर्वथा सकल कर्मकौ त्यागकरि सकै नाहीं तातै जो कर्म निकरै अरु कर्मके फलकौ त्यागकरै सोई मुख्य त्यागी हौकहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ देहवंत सौं कर्मए, नाहीं छाडे जाहि, कर्म फलनिकौ जो तजै, सोई ज्ञानी मांहि ॥ ११ ॥

अनिष्टमिष्टंमिश्रंचत्रिविधंकर्मणःफलम् ॥
भवत्यत्यागिनांप्रेत्यनतुसन्यासिनांक्वचित् ॥ १२ ॥

टीका– हेअर्जुन कर्मको फल त्रिविधहै. एक अनिष्टकहै नरक. अरु एकइष्ट कहै देवलोक स्वर्गादिक अरु एक मिश्रकहै मनुष्यलोक याभांति तीन प्रकारकौ जो प्रसिद्ध कर्मफलहै सो सबही जे सकामहै तिनही-

कौं परलोक विषै प्राप्तहोय. अरु जे त्यागीहै तिनकौं तीन भांतिकौं कर्म फल होत नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ स्वर्गनरक अरु भूमियह त्रिविध कर्म फलजानि, कर्मवंतकौ होतहै सन्यासी नहिंमानि ॥ १२ ॥

पंचैतानिमहाबाहोकारणानिनिबोधमे ॥
सांख्येकृतांतेप्रोक्तानिसिद्धयेसर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥

टीका— हेअर्जुन एपांच कारन सकल कर्मकी सिद्धिके लीयै सांख्ये कृतांते कहै. सांख्यके वेदांतके सिद्धांत विषै कहेहै. ते मेरे वचन तूंनीकी भाति समुझकै जानि ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुन मोंपै सुनिजतूं कारनहै एपांच, कह्यौ सांख्य सिद्धांतमैं कर्म सिद्धकौं सांच ॥ ॥ १३ ॥

अधिष्ठानंतथाकर्ताकारणंचपृथग्विधम् ॥
विविधाश्चपृथक्चेष्टादैवंचैवात्रपंचमम् ॥ १४ ॥

टीका— अब तेई पांच कारन कहतुहै. हेअर्जुन अधिष्ठान कहे शरीर १ कर्ताकहै अहंकार २ करण कहै. चक्षुश्रोत्रादिक अनेक प्रकारके इंद्रिय ३ अरु प्रान अपानादिक जे वायुहै तिनकी चेष्टा ४ ऐसै च्यारिए अरु इनमैं पांचवौं इंद्रियनकौं प्रेरक अन्तर्यामी ५ ऐसै एपांचौ कर्मनकी सिद्धिकै कारनहै. ॥ ॥ दोहा ॥ अधिष्ठान कर्ता जुहै, ओर करन बहुभाय, नानाविधि व्यापर, अरु पंचम दैव गिताय ॥ १४ ॥

शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्मप्रारभतेनरः ॥
न्याय्यंवाविपरीतंवापंचैतेतस्यहेतवः ॥ १५ ॥

टीका— हेअर्जुन शरीर वचन अरु मन इन करिकै पुरुष भलौ अथवा बुरौ कर्म आरंभै है. ताकौ एपांचौं कारनहै. ॥ ॥ दोहा ॥ मन अरु वचन शरीर सौं कर्म करत या साज, भलौ बुरौकोऊ करौ, इनविनुसरै नकाज ॥ १५ ॥

तत्रैवंसतिकर्तारमात्मानंकेवलंतुयः ॥

पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्नसपश्यतिदुर्मतिः ॥ १६ ॥

टीका– हेअर्जुन सकल कर्म नविषै एपांचौ कारन भए ऐसौ निश्चय भयै जो पुरुष केवल उपाधि रहित असंग कहै आसक्ति रहित ऐसे आत्माकौं जो कर्ता करिकै देषै हैसो दुरबुद्धिहै. नीकी भांति करिकै देषत नाहीं. ॥ दोहा ॥ जे नर आतम एककौं, देषतहै कर्त्तार, ते कछुवे देषत नहीं, हैवै मूढगिवार ॥ १६ ॥

यस्यनाहंकृतोभावोबुद्धिर्यस्यनलिप्यते ॥
हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते ॥ १७ ॥

टीका– हे अर्जुन जाकै अहंकारकौ भावनाहीं अथवा मैं कर्ता हौं ऐसोजु अहंकारकौ स्वभाव जाकै नाहीं अरु जो कर्म कर्ता शरीरादिकहै ऐसैं जानि अरु जा पुरुषकी बुद्धि शुभ अशुभ कर्मनसौं लिप्त नाहीं होत ऐसोजु आत्मतत्वज्ञानी सो, इन सबही लोकनकौं हनै तऊ काहूकौं हनत नाहीं अरु नकछु वाकौ कर्मके फलसौं बंध होतहै. ॥ दोहा ॥ जाकी बुद्धिन लिप्तहै, अहंकार नाहिं जाहिं, सोइन लोकनकौं हनै, हनेन बंधन ताहि ॥ १७ ॥

ज्ञानंज्ञेयंपरिज्ञातात्रिविधाकर्मचेदना ॥
करणंकर्मकर्तेतित्रिविधःकर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥

टीका– हे अर्जुन ज्ञान कहै यज्ञकर्मकरे शुभकारीहै ऐसै समुझिवो अरु ज्ञेय कहै शुभकारी कर्म अरु परिज्ञाता कहै ज्ञानवंत पुरुष ए तीन्यौ कर्मकौं प्रवर्ता वैहै. अर्थ यहकि तीन्यो कर्मके प्रेरकहै इनतैं कर्मकी प्रवृति होतहै. अरु करण कहै इंद्रियादिक अरु कर्म कहै कर्त्ताकै वांछित कर्म अरु कर्त्ता कहै कर्म करन हार ऐसै तीन भांतिके कर्म संग्रहहै कहै एतीन्यौ कर्म कर्ताहै इनसौं कर्म होतहै ॥ दोहा ॥ प्रेरकतीन्यौ कर्मके, ज्ञानज्ञेय ज्ञातार, करण कर्म कर्ता कहै संग्रह तीन प्रकार ॥ १८ ॥

ज्ञानंकर्मचकर्ताचत्रिधैवगुणभेदतः ॥

प्रोच्यतेगुणसंख्यानेयथावच्छृणुतान्यपि ॥ १९ ॥

टीका– हे अर्जुन गुण संख्याने कहै सांख्य शास्त्रता विषै ज्ञानकर्म अरु कर्त्ता ए तीन्यौ सात्विकादिक गुनके भेदकरिकै जुदे तीन भांतिके कहेहैं तेइ ज्ञानादिक तीन्यौ नीकी भांतिसौं मोतैं सुनि. ॥ दोहा ॥ त्रिविध होत गुन भेदतैं, ज्ञानकर्म करतार, सांख्य शास्त्रमैं जे कहे ते सुनिलेयाबार ॥ १९ ॥

सर्वभुतेषुयेनैकंभावमव्ययमीक्षिते ॥
अविभक्तंविभक्तेषुतज्ज्ञानंविद्धिसात्विकम् ॥ २० ॥

टीका– हे अर्जुन जाज्ञान करिकै ब्रह्मा आदिलेकै स्थावर पर्यंत भिन्न भिन्न जे सकल प्रानीहैं तिन विषै आत्मा एकहै, निर्विकारहै, ऐसौ आत्मतत्त्वकौं विचारकरियैसो ज्ञान सात्विक जानि. ॥ ॥ दोहा ॥ जो करि देषै जीवमैं, अविनाशी इहिंभाय, न्यारे मै न्यारौ नहीं, सात्विक ज्ञान वताय ॥ २० ॥

पृथक्त्वेनचयज्ज्ञानंनानाभावान्पृथग्विधान् ॥
वेत्तिसर्वेषुभूतेषुतज्ज्ञानंविद्धिराजसम् ॥ २१ ॥

टीका– हेअर्जुन जा ज्ञानसौं सकलदेह विषै एकही जो क्षेत्रज्ञ ताकौं अनेक भांतिके भिन्न भिन्न करिकै जानै अरु यह सुषीहै यह दुर्षीहै या भांतिसुषदुषादिकनकरिकै आत्माकौं सकर्मक देह विषै भिन्न भिन्न देषै ता ज्ञानकौं तू राजस जानि. ॥ ॥ दोहा ॥ नानाभाइनमैं लषैं, न्यारो न्यारो ज्ञान, भिन्न लषै सवजीवकौं, राजस ज्ञानसुजान ॥ २२ ॥

यत्तुकृत्स्नवदेकस्मिन्कार्येसक्तमहैतुकम् ॥
अतत्वार्थवदल्पंचतत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥

टीका– हेअर्जुन जा ज्ञानसौ एक कार्यकहै एक देह अथवा एक प्रतिमा ताविषै जैसौं कृस्नवत् कहे संपूर्ण रूप होय ऐसैं जानै. अर्थ यहकि शरीरके प्रमान आत्माहै अरु प्रतिमाके प्रमान ई-

श्वरहै ऐसौं दृढकरिकै जानै अरु जो ज्ञान अहैतुक हैं ते निर्मूल होय, अरु जो अतत्वार्थवत् कहै जा ज्ञानविषै परमार्थरूप जोईश्वर ताको अवलंबनाहीं कहै स्पर्श नाहीं अरु जाकौ विषयकहै जाकेजानिवेकी वस्तुसौ अतिहि अल्पकहै अरु जाकौ फलहु अल्पहै ऐसो जोज्ञान सो तामस कहीयै. ॥ ॥ दोहा ॥ पूरनजानौ एकमैं, विनुकारनरेमित्त, तत्व अर्थ विनु अल्प मति, तामस ज्ञान सुनित्त ॥ २२ ॥

नियतंसंगरहितमरागद्वेषतःकृतम् ॥
अफलप्रेप्सुनाकर्मयत्तत्सात्विकमुच्यते ॥ २३ ॥

टीका– अव तीन भांतिकौं कर्म कहतुहै हेअर्जुन जो नित्यकर्म पुरुषकौं करनौ कह्यौ है अरु जा कर्म विषै पुरुष आसक्त न होंय अरु जो कर्म राग द्वेष विनुकह्यौहोय अरु रागकहें जो कर्म पुत्रादिकनकी प्रीति केलीयै कर्‍यो नहोय अरु अद्वेषकहै जो कर्म शत्रुविषै वैरभावकेलीयै कर्‍यो न होय अरु जो कर्म फलकी वांछातजिकै निःकामव्हैकै कर्‍यो होय ऐसोजु कर्म सात्विक कहियै ॥ ॥ दोहा ॥ संग राग अरु द्वेष विनु, नियत कर्म जोकोय, तजिफलइच्छाकीजियै, सात्विक कर्म सुहोय ॥ २३ ॥

यत्तुकामेप्सुनाकर्मसाहंकारेणवापुनः ॥
क्रियतेबहुलायासंतद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥

टीका– हेअर्जुन जो कर्म सकामव्हैकै फलकी इच्छा धरिकै करियै अरु मोसमान कोऊ नाहीं मैंभलो गृहस्थहौं मैंबडो आचारीहौं. ऐसो अहंकारसौं जो करैहै अरु जो कर्म बहुतक्लेश संयुक्त होयसौं कर्म राजस कहीयै ॥ ॥ ॥दोहा ॥ जो कीजैकरि कामना, कैधो करिअहंकार, जा मै श्रमहै अतिघनौ, सोराजस निरधार ॥ २४ ॥

अनुबंधंक्षयंहिंसामनपेक्ष्यचपौरुषम् ॥
मोहादारभ्यतेकर्मयत्तत्तामसमुच्यते ॥ २५ ॥

टीका– हेअर्जुन अनुबंध कहै याकर्मतैं आगै शुभ होइगो कि अशुभ होइगो ऐसैं विचार विनुकीयै अरु या बहुत द्रव्यको क्षय होइगो, ऐसो विचार करीयै विनु अरु हिंसाकै विचार विनु कीयै अरु अपनैं सामर्थ्यकै विनु विचार कीयै केवल मोहहीतैं जो कर्म आरंभै सो तामस कर्म कहीयै ॥ ॥ दोहा ॥ पौरुष हिंसा शुभ, अशुभ द्रव्य षरचनविचार, जोकीजै अज्ञानतैं तामस कर्मनिहार ॥ २५ ॥

मुक्तसंगोनहंवादीधृत्युत्साहसमन्वितः ॥
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारःकर्तासात्विकउच्यते ॥२६॥

टीका– अब तीन भांतिकौ कर्ता कहतुहै हेअर्जुन जो कर्मविषै आसक्त न होय अरु गुमानसौं अहंकार लीयै वचन कहै नाहीं अरु जो धीरज अरु उद्यमसौं युक्त होय अरु जो सिद्धिविषै हर्ष शोकसौं रहित होय ऐसो जु कर्ता सो सात्विक कहीयै. ॥ ॥ दोहा ॥ धरि धीरज उत्साहसौं तजै संग अहंकार, निर्विकार सिद्धअसिद्धसम, सत्व कर्म करतार ॥ २६ ॥

रागीकर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धोहिंसात्मकोशुचिः ॥
हर्षशोकान्वितःकर्ताराजसःपरिकीर्तितः ॥ २७ ॥

टीका– हेअर्जुन जो कर्ता पुत्रादिकनविषै प्रीतिवंत होय अरु कर्मफलकौं चाहै ओर लोभी होय पराये द्रव्यकौं चाहे अरु प्रानी मारिवेको स्वभाव होय अरु अपनौं आचारसो रहित होय अरु लाभ अलाभविषै हर्ष शोकजुक्त होय ऐसोजु कर्ता सो राजस कहीयै. ॥ ॥ दोहा ॥ रागी चाहत कर्म फल, लुब्धकहिंसक होय, हर्ष शोकसंयुत अशुचि, राजस कर्ता सोय ॥ २७ ॥

अयुक्तःप्राकृतःस्तब्धःशठोनैष्कृतिकोलसः ॥
विषादीदीर्घसूत्रीचकर्तातामसउच्यते ॥ २८ ॥

टीका– हेअर्जुन जो अयुक्त कहे सावधान न होय अरु प्राकृत कहे विवेकरहित होय अरु स्तब्ध कहे काहूकौं नवैनाहीं करु सठ कहे जो अपनी शक्ति छिपाइकै औरकौं ठगै ऐसो होय अरु जो औरकौं अपमान करै अरु कबहु उद्यमकरै नाहीं आलसी होय अरु विषादकहै सदा सोकही करतहै अरु दीर्घसुत्री कहे आजु सकारे अवश्यकरनौ ऐसोजु कार्य ताकौं महिना हुमैं करि नसकै विचारत विचारतहीं रहैं ऐसोजु कर्तासो तामसी कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ सबदिन रहैविवेकविनु, सदा आरसीनित्त, दीरघ सोच नवैनहिं, अरु विषादजुतचित्त ॥ थोरेदिनके कामकौं बहुत लगावै वार, ताहीसौं सबकहतहै यह तामसनिरधार ॥ २८ ॥

बुद्धेर्भेदंधृतेश्चैवगुणतस्त्रिविधंशृणु ॥
प्रोच्यमानमशेषेणपृथक्त्वेनधनंजय ॥ २९ ॥

टीका– हे अर्जुन जैसे कर्ता तीन भांतिकौं कह्योहे तैसै ज्ञाता तीन भांतिकौं जानि. हे अर्जुन ऐसे सात्विकादि गुनसौं बुद्धिही तीन भांतिकी है. अरु धीरजही तीन भांतिको है सोवही तोसौं भिन्न करिकै कहतहौं. तूनीकी भांति चित्त देकै सुनि. ॥ ॥ दोहा ॥ बुद्धि अरु धीरज तीनि विधि, होत जुगुनके भाय, न्यारो न्यारो सब कहत, हौं अब तुलै सुनाय ॥ २९ ॥

प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंचकार्याकार्येभयाभये ॥
बंधंमोक्षंचयावेत्तिबुद्धिःसापार्थसात्विकी ॥ ३० ॥

टीका– अब तीन भांतिकी बुद्धि कहतहै. हे अर्जुन जो बुद्धि प्रवर्त्त-कहै धर्म ताकौं जानैं अरु निवृत्त कहै अधर्म ताकौं जानै अरु भय अभय-कौं जानैं ओर बंध अरु मोक्षकौं जानैं सो बुद्धि सात्तिकी कहीये. ॥ ॥ दोहा ॥ काज अकारज भय अभय, ओर प्रवृत्ति निवृति, जानै बंधन मुक्ति जो, सात्विकि बुद्धिकि वृत्ति ॥ ३० ॥

ययाधर्ममधर्मंचकार्यंचाकार्यमेवच ॥
अयथावत्प्रजानातिबुद्धिःसापार्थराजसी ॥ ३१ ॥

टीका– हे अर्जुन जा बुद्धिकरिकै धर्मकौ अरु अधर्मकौ अरु कार्यकौं अरु अकार्यकौं ए जैसैहै तैसे इनकौं न जानै जाभांति जैसी वस्तु होइ तैसी न जानैं संदेहयुक्त होय ऐसी जो बुद्धि सो राजसी कहीये ॥ ॥ दोहा ॥ धर्म अधर्मनिकौं लषै, कार्ज अकारज जानि, जैसै है तैसेन्ही, बुद्धि राजसी मानि ॥ ३१ ॥

अधर्मंधर्ममितियामन्यतेतमसावृता ॥
सर्वार्थान्विपरीतांश्चबुद्धिःसापार्थतामसी ॥ ३२ ॥

टीका– हे अर्जुन जो बुद्धि अधर्मकौं धर्म करि जानै अरु धर्मकौं अधर्म करि जानै अरु जो बुद्धि अज्ञानसौं आवरी होय अरु जो सवही वस्तुकौं विपरीत कहै उलटे समजै सो बुद्धि तामसी कहीये. ॥ ॥ दोहा ॥ जानै पापहि पुन्य करि, दंभ अज्ञानी होय, लषै अर्थ विपरीत सब, बुद्धि तामसी जोय ॥ ३२ ॥

धृत्यायया धारयतेमनःप्राणेंद्रियक्रियाः ॥
योगेनाव्यभिचारिण्याधृतिःसापार्थसात्विकी ॥ ३३ ॥

टीका– अब धीरज तीन भांतिकौ कहतहै हे अर्जुन जाधीरज करिकै मन प्रान इंद्रिय इनकेजु क्रिया कही कर्म ताकों रोकै अरु चित्तकी एकाग्रता करिकै ओर ठोर काहू वस्तुविषै चलै नाहीं एसीजु धृति कहे धीरज सो सात्विकी कहीये. ॥ ॥ दोहा ॥ जासौं इंद्री रोकिकै, ऐच क्रिया अरु मान, जोगजुगत निहचल महा, धीरज सात्विक जानि ॥ ३३ ॥

ययातुधर्मकामार्थान्धृत्याधारयतेऽर्जुन ॥
प्रसंगेनफलाकांक्षीधृतिःसापार्थराजसी ॥ ३४ ॥

टीका– हे अर्जुन जाधीरजकरिकै धर्म अर्थ कामकौं मुख्य करिकै

धरैं छांडैनाहीं ओर धर्म अर्थ कामकौ प्रसंगतैं फलकौं चाहै सो धीरज राजस कहियै. ॥ ॥ दोहा ॥ धर्म अर्थ अरु कामकौं, जो धारत चितचाय, चाहै फलहि प्रसंगसौं, धीरज राजसभाय ॥ ३४ ॥

ययास्वप्नंभयंशोकंविषादंमदमेवच ॥
नविमुंचतिदुर्मेधाधृतिःसापार्थतामसी ॥ ३५ ॥

टीका– हे अर्जुन अविवेकी पुरुष जा धीरजकरिकै निद्रा भय शोक विषाद कहै दुष अरु मद इनकौं न छांडै सो धीरज तामसी कहीयै. ॥ ॥ दोहा ॥ जो भय शोक विषाद मद, सुपनमांहि ठहरानि, दुष्टबुद्धि छांडै नहीं, धृतिजु तामसी जानि ॥ ३५ ॥

सुखंत्विदानींत्रिविधंशृणुमेभरतर्षभ ॥
अभ्यासाद्रमतेयत्रदुःखांतेचनिगच्छति ॥ ३६ ॥

टीका– अब तीन भांतिकौ सुख कहतु है हेअर्जुन अब तुं मोंतै तीन भांतिकौ सुख सुनि जासुष विषै अभ्यासकीएतै अतिपरिचयसौं रमै कहै अति आनंदित होय. अर्थ यह है कि जा पुरुषसौ पुरुषको दुष दूरि होय ॥ ॥ दोहा ॥ अब अर्जुन मोपैं सुनौ, सुषके तीन प्रकार, जाके अभ्यासहि कियै, दुषको होइ निवार ॥ ३६ ॥

यत्तदग्रेविषमिवपरिणामेमृतोपमम् ॥
तत्सुखंसात्विकंप्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजं ॥ ३७ ॥

टीका– हेअर्जुन ओरहू सुनि सो सुख पहिलै तो विष समान होय अरु पाछैं अमृत समान होय ऐसो जु सुष सो सात्विक कहीयै. यह सात्विक सुष कैसो है आत्मबुद्धिप्रसादज कहै आत्माविषैं परायन जो बुद्धि ताकी प्रसन्नतासौं उपजोहै. ॥ ॥ दोहा ॥ पहिलै तौ विषसो लगे, बहुरि अमृत सोजोय, सोसुख सात्विकहै कह्यौ, बुद्धिप्रसादतै होय ॥ ३७ ॥

विषयेंद्रियसंयोगात्यत्तदग्रेमृतोपमम् ॥

परिणामेविषमिवतत्सुखंराजसंस्मृतम् ॥ ३८ ॥

टीका– हेअर्जुन जो सुष विषयेंद्रिय संयोगात्कहै विषय अरु इंद्रियनके संयोगतैं उपज्ये ऐसो प्रसिद्ध जो स्त्रीप्रसंगादिक सुत्र पहिलैतौ अमृत समान होय अरु बहुरि पाछैतैं विषसमान होय सो सुष राजसी कहीयै ॥ ॥ दोहा ॥ इंद्रिय विषय संजोग सुष, पहिलै अमृत समान, पाछै ज्य विष सो लगै, सौ राजस सुषमानि ॥ ३८ ॥

यदग्रेचानुबंधेचसुखंमोहनमात्मनः ॥
निद्रालस्यप्रमादोत्थंतत्तामसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥

टीका– हेअर्जुन जो सुष पहिलै आत्माकौ मोहित करै अरु पाछैहूं आत्माकौं मोहित करै अरु निद्रा आलस्य असावधानता इनतैं उपज्यो होय सोसुष तामसकहीयै. ॥ ॥ दोहा ॥ पहिलै अरु पाछै जुसुष, मोहित करै जुदेह, आलस निद्रातै उठे, तामस कही येएह ॥ ३९ ॥

नतदस्तिपृथिव्यांवादिविदेवेषुवापुनः ॥
सत्वंप्रकृतिजैर्मुक्तंयदेभिःस्यात्त्रिभिर्गुणैः ॥ ४० ॥

टीका–हेअर्जुन पृथ्वी विषै अरु देव लोकविषै ऐसो प्रानीमात्र कोऊनाही जो प्रकृति कैजे तीन गुन है तिनसौं बंध्यो नहोय तातैं जो कछु औरहू ऐसा सबही गुनसौं बंध्यौ गुनरहित कबुनाहीं ॥ ॥ दोहा ॥ सोपुहि मीमै नहिं कछु, सुरमै अरु आकाश, सत्वजु इनतीन्योगुनानि, बंध्यो नि मायापास ॥ ४० ॥

ब्राह्मणक्षत्रियविशांशूद्राणांचपरंतप ॥
कर्माणिप्रविभक्तानिस्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ ४१ ॥

टीका– हेअर्जुन ब्रह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र इनके कर्म स्वभावके जे गुन है तिनसौं भिन्न भिन्नहै अर्थ यहहैं कि पूर्व जन्मके संसार तैं सात्विकादिक स्वभाव लीयै भिन्न भिन्न कर्म उपजतहैं ॥ ॥ दोहा ॥ द्वि-

ज क्षत्री अरु वैश्यको, ओर शूद्रको कर्म, निज स्वभाव गुनसौ, भयौ न्यारे न्यारे धर्म ॥ ४१ ॥

शमोदमस्तपःशौचंक्षांतिरार्जवमेवच ॥
ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजं ॥ ४२ ॥

टीका– सत्वगुन जिनके मुख्यहै ऐसे ब्राह्मन कहीयै अरु जिनके सत्वगुन लीयै राजस गुन मुख्यहै ते क्षत्री कहीयै अरु जिनके तमो गुन लीयै राजस गुन मुख्यहै ते वैश्य कहीयै अरु जिनके रजोगुन लीयै तमोगुन मुख्यहै ते शूद्र कहियै तहां ब्राह्मनके जे स्वभावके कर्म है ते कहतुहै हे अर्जुन शम कहै मनकौ निग्रह अरु दम कहै इंद्रियनको निग्रह अरु तप कहै पूर्वोक्तशरीर तप अरु शोच कहै अंतःकरणकी पवित्रता अरु बाहिर शरीर तप अरु क्षांति कहै क्षमा अरु आर्जव कहतहै नम्रता अरु ज्ञान कहै शास्त्रज्ञान अरु विज्ञान कहै अनुभव अरु आस्तिक्य कहै शास्त्रपुराण अरु परलोक ए सबही सत्यहै ऐसी बुद्धि होय ए सबही कर्म ब्राह्मणके स्वभावतैं उपजैहै. ॥ ॥ दोहा ॥ शम अरु दम तप शौच पुनि, क्षमा नम्रता भाव, आस्तिक ज्ञान विज्ञान यह, ब्रह्मज कर्म स्वभाव ॥ ४२ ॥

शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यंयुद्धेचाप्यपलायनम् ॥
दानमीश्वरभावश्चक्षात्रंकर्मस्वभावजम् ॥ ४३ ॥

टीका– हे अर्जुन शौर्य कहै पराक्रम अरु तेज ओर धृति कहै धीरज अरु दाक्ष्य कहै चतुराई अरु युद्धे चाप्यपलायनम् कहै युद्धविषै सनमुपरहनौ पलायन करनौ नाहीं अरु दान कहै उदारचित्तव्है दान करै अरु ईश्वर भाव कहै प्रभुव्हैकै प्रजाविषै दंडकरनौ यह सब धर्म क्षत्रिके स्वभावतैं उपज्यौंहै. ॥ ॥ दोहा ॥ सूरतेज धीरज चतुर, युद्ध माझन पलाय, ठकुराई अरु दातार, क्षत्रीकर्म सुभाय ॥ ४३ ॥

कृषिगोरक्षवाणिज्यंवैश्यकर्मस्वभावजं ॥
परिचर्यात्मकंकर्मशूद्रस्यापिस्वभावजं ॥ ४४ ॥

टीका– हे अर्जुन कृषि कहै षेती अरु गोरक्ष कहे गायनकी रक्षा अरु वाणिज्य कहै वणिज यह कर्म वैश्यके स्वभावतैं उपज्यौहै ओर तीन वर्णकी सेवा करणी यह कर्म शुद्रके स्वभावतैं उपज्यौहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ षेती गोरक्षा वणिज, वैश्यकर्म ए जानि, तीन वर्ण सेवा करै, शूद्रकर्म यह मानि ॥ ४४ ॥

स्वेस्वेकर्मण्यभिरत:संसिद्धिंलभतेनर: ॥
स्वकर्मनिरत:सिद्धिंयथाविंदतितच्छृणु ॥ ४५ ॥

टीका– हे अर्जुन जो पुरुष अपने कर्मविषै सावधान होय सो पुरुष संसिद्धि कहै. ज्ञान योग ताकौं पावैहै हे अर्जुन अब जाभांति पुरुष अपनै कर्मविषै सावधान व्हैकै तत्वज्ञान पावै सो प्रकार मोतैं सुनि. ॥ दोहा ॥ अपनै अपनै कर्मतैं, सिद्धि लहै सब कोय, सो अब विधि मोपैं, सुनौं कर्म सिद्धि जो होय ॥ ४५ ॥

यत:प्रवृत्तिर्भूतानांयेनसर्वमिदंततम् ॥
स्वकर्मणातमभ्यर्च्यसिद्धिंविंदतिमानव: ॥ ४६ ॥

टीका– हे अर्जुन जा अंतार्यमी परमेश्वरतैं भूत प्रानीनिकी प्रवृत्ति होतहै अरु जाकारनरूप परमेश्वरतैं यह सकल संसार व्याप्त भयौ है ता परमेश्वरकौं मनुष्य अपने कर्मनिकरिकै पूजै तौ सिद्धिकौं पावै. ॥ दोहा ॥ जातैं उपजत जीव सब, जिनकीनो विस्तार, निजकर्मनि ताकौं जजै सिद्धि लहै नरसार ॥ ४६ ॥

श्रेयान्स्वधर्मोविगुण:परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ॥
स्वभावनियतंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् ॥ ४७ ॥

टीका– हे अर्जुन नीकी भांति सांगोपांग काह्यौ ऐसोजु परम धर्म

तासौं अंगही नहूं अपनौ धर्म श्रेष्ठहै. अरु तूं ऐसै मति जानै कि कुटुंब-वध होय ऐसोजु अपनौ युद्धादिक धर्म तासौं परम धर्म ऐसौजु भिक्षासो श्रेष्ठहै. का हेतैं कि अपनै स्वभावका जो धर्महै ताकै कीयै तौ पुरुषकौं पाप नाहीं होत यातैं. ॥ ॥ दोहा ॥ नीकेहूं परधर्मतैं, निगुन भलौ निज-कर्म, कछू पाप याकौ नहीं, करत आपनौ धर्म ॥ ४७ ॥

सहजंकर्मकौंतेयसदोषमपिनत्यजेत् ॥
सर्वारंभाहिदोषेणधूमेनाग्निरिवावृताः ॥ ४८ ॥

टीका—हेअर्जुन जो आपनै सहजहै स्वभाव ताकौ जु कर्म सो सदोष होय तऊ तजियै नाहीं क्यौंकि सांख्यकै विचारतैं तूं अपनै धर्मकौं हिंसा-तैं सदोष मानैहै. अरु परधर्मकौं श्रेष्ठ मानैहै. सु तौ परधर्मही सदोषहै. काहेतैंकि सकलकर्म दोषसौं व्याप्तहै. जैसै अग्नि धूमसौं व्याप्तहै तैसैं भावार्थ यहहै कि जैसै अग्निको धूम रूप जो दोषहै ताकौं दूरकरिकै के-वल प्रताप कहै तेज ताकौं सेवतहै तैसैं कर्मको जो दोषरूप अंसहै ताकौं दूरकरिकै चित्तशुद्ध करिवैकै लियै कर्मको गुनरूप जो अंसहै ताकौं सेवि यै. ॥ ॥ दोहा ॥ दोषसहित निजकर्म लषि, रहैनक्यौं हूत्याग, दोषभरे आरंभ सव, धूमसहित ज्यौं आग ॥ ४८ ॥

असक्तबुद्धिःसर्वत्रजितात्माविगतस्पृहः ॥
नैष्कर्म्यसिद्धिंपरमांसंन्यासेनाधिगच्छति ॥ ४९ ॥

टीका— हेअर्जुन जो सर्वत्र आसक्त बुद्धिनहोय अरु जितात्मा कहै जो अहंकार रहित होय अरु विगतस्पृह कहै कर्म फलकी वांछा न करै ऐसौजु पुरुप सो त्याग रूप जो सन्यासहै ताकरिकै परम श्रेष्ठ जु निष्क-र्म सिद्धि ताकौं प्राप्त होय ॥ ॥ दोहा ॥ लगनि बुद्धि कहु नाकरै, जीतै म-न तजि आस, परम सिद्धिनिह कर्म की, पावै करि संन्यास ॥ ४९ ॥

सिद्धिंप्राप्तोयथाब्रह्मतथाप्नोतिनिबोधमे ॥

समासेनैवकौंतेयनिष्ठाज्ञानस्ययापरा ॥ ५० ॥

टीका– हेअर्जुन जो निह कर्म की सिद्धिकौं पाइकै जाभांति ब्रह्मकौं पावैहै सो तू संछैपसौं मौंतैं सुनि अरु ज्ञानहुंकी परम नेष्ठा कहै ईश्वरपराय नता सौंमैं कहत हौंसुनि तुंकुंती को पुत्र है मेरै अति बल्लभहै तातैं मैं तोसौं रहस्य कहत हौं याहीतैं हे कौंतेय ऐसो कह्यौ ॥ ॥ दोहा ॥ सिद्धि पाय पर ब्रह्मको, जेसै पावे सार, कयौ जुहौ संछेपसौ, निष्ठा ज्ञान अपार ॥ ५० ॥

बुद्ध्याविशुद्धयायुक्तोधृत्यात्मानंनियम्यच ॥
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वारागद्वेषौव्युदस्यच ॥ ५१ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष विशुद्ध कहे निरमल ऐसी जु सात्विकी बुद्धी ताकरिकै जुक्त होय सो पुरुस आत्माकौं सात्विक धीरजसौं निश्चल करिकै अरु जो शव्दादिक जे विषय है तिनकौं तजिकै अरु रागद्वेषकौं दूर करिकै साक्षाद्ब्रह्मरूपकौं प्राप्त होय. ॥ ॥ दोहा ॥ जुक्त रहै शुद्ध बुद्धिमैं, धीरज सौं निरधार, सबद आदि विषयातजे, रागद्वेषकौं मार॥५१॥

विविक्तसेवीलघ्वाशीयतवाक्कायमानसः ॥
ध्यानयोगपरोनित्यंवैराग्यंसमुपाश्रितः ॥ ५२ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष विविक्तसेवी कहे एकांत शुद्ध देशविषै रहै अरु लघ्वाशीकहै नथोरो बहुत ऐसो भोजन करै अरु यतवाकायमानस कहै जिन काया वाचा मन अपनै वस करै हौंहिं अरु ध्यानयोग पर कहै नित्यही ध्यानयोगविषै सावधान होय अरु जो ध्यानकी लीयै फेरि फेरि दृढ वैराग्य धरै ऐसो होय. ॥ ॥ दोहा ॥ रहैं दुरयो एकांतमैं लघु भोजन मन जीति, ध्यानयोग अंतर सदा, वहवै राग कि रीति ॥५२॥

अहंकारंबलंदर्पंकामंक्रोधंपरिग्रहम् ॥
विमुच्यनिर्ममःशांतोब्रह्मभूयायकल्पते ॥ ५३ ॥

टीका– ओर हे अर्जुन अहंकार अरु बल कहै दुष्ट आग्रह अरु दर्प कहै गुमान अरु काम अरु क्रोध अरु परिग्रह कहै काहू वस्तुकौं संग्रह इन सबहीनकौं तजै ते पुरुष ममतासौं रहित होय. अरु शांतचित्त कहैं प्रसन्नचित्त होइकै ब्रह्मभूयाय कल्पते कहै. ब्रह्म स्वरूपकौं पावै ॥ ॥ दोहा ॥ क्रोध परिग्रह काम बल, दर्प्प ओर अहंकार, ममतातजि निर्मल रहै, शांति ब्रह्ममय सार ॥ ५३ ॥

ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति ॥
समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपराम् ॥ ५४ ॥

टीका– हेअर्जुन या भांति जब पुरुष ब्रह्मरूपविषै निश्चल रहै तव प्रसन्न चित्तव्हैकै गईवस्तुकौ शौचैनहीं अरु अनपाई वस्तुकौं चाहै नाहीं अरु सकल भूतप्रानीनिविषै समान बुद्धि होय सो मेरी श्रेष्ठ भक्तिकौं पावै. ॥ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मभयौ परसन्न मन, शोचनकरै नचाह, सबजीवनकौं समलखै, पावै भक्तिप्रवाह ॥ ५४ ॥

भक्त्यामामभिजानातियावान्यश्चास्मितत्वतः ॥
ततोमांतत्त्वतोज्ञात्वाविशतेतदनंतरम् ॥ ५५ ॥

टीका– हेअर्जुन ता श्रेष्ठ भक्तिकरिकै पुरुष जितनौ मेरो सर्वव्यापी रूपहै. जैसो मैं सच्चिदानंदघनरूपहौं तैसो मैंहीकौं तत्वतैं जानैं. अरु ऐसे जब तत्वतैं जानैं तब ता ज्ञानको लय होय अरु ज्ञानको लयभयै मोछविषै प्रवेशकरै अर्थ यह कि परमानंद होय. ॥ ॥ दोहा ॥ मोकौं जानैं भक्तिकरि जितनौंहौं जिहिं भाय, मोहि जानिकै तत्वसौं, ब्रह्मरूप व्है जाय ॥ ५५ ॥

सर्वकर्माण्यपिसदाकुर्वाणोमद्यपाश्रयः ॥
मत्प्रसादादवाप्नोतिशाश्वतंपदमव्ययम् ॥ ५६ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष मेरोही आश्रय करिकै मेरे अर्थ सकल नि-

त्य नैमित्तिक काम्यादिक कर्म करै अरु स्वर्गादिक फल चाहै नाहीं. सो पुरुष मेरी कृपातैं अनादि नित्य सबतैं श्रेष्ठ ऐसोजु वैकुंठपद ताकौं प्राप्त होय. ॥ ॥ दोहा ॥ मोकर्मनिकौं नितकरै, मेरो आश्रय पाय, मोप्रसादतैं जो रहै, अक्षय पदवी पाय ॥ ५६ ॥

चेतसासर्वकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्परः ॥
बुद्धियोगमुपाश्रित्यमच्चित्तःसततंभव ॥ ५७ ॥

टीका– तातैं हेअर्जुन तूं अपनैं चित्तसौं सर्व कर्म मेरै बिषै अर्पन करिकै मोहीकौं परम पुरुषार्थ जानिकै अरु परमेश्वरपरायन जो निश्चय रूप बुद्धिविषै रहिकै निरंतर कर्म करिवेकै समै ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः या रीतिसौं कर्म करि अरु जाभांति मेरैविषै तेरोचित्त रहै तैसौ होहु. ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ मनसौं मोंमैं कर्म धरि, मो ततपरता लेय, बुद्धिजोगकौं सेइकै मोहीमैं चितदेय ॥ ५७ ॥

मच्चित्तःसर्वदुर्गाणिमत्प्रसादात्तरिष्यसि ॥
अथचेत्त्वमहंकारान्नश्रोष्यसिविनंक्ष्यसि ॥ ५८ ॥

टीका– हेअर्जुन जो तूं मेरैविषै चित्त राषैगो तो तूं सकल दुषनसौं मेरै अनुग्रहतैं तरैगो. अरु जो तूं अहंकारतैं मेरो कह्यो न सुनेगो तो तूं विनाश पावैगो. ॥ ॥ दोहा ॥ मोप्रसादतैं दुषसवैं, तरिजैहै निरआस, अहंकारतैं विनुसुनै, लहियै तूं जु विनाश ॥ ५८ ॥

यदहंकारमाश्रित्यनयोत्स्यइतिमन्यसे ॥
मिथ्यैषव्यवसायस्तेप्रकृतिस्त्वांनियोक्ष्यति ॥ ५९ ॥

टीका– हेअर्जुन जो तूं अहंकारकौं आश्रय करिकै मैं जुद्ध नकरौं ऐसैं मानैगो तो यह तेरौ निश्चै मिथ्याहै क्यौंकि स्वभावही तोपैं जुद्ध करवावेगो. ॥ ॥ दोहा ॥ लरौनहीं तूं जो कहत, अहंकारकौं मानि, यह तुव निश्चै जूठहै प्रकृतिलरावत आनि ॥ ५९ ॥

स्वभावजेनकौंतेयनिबद्धस्वेनकर्मणा ॥
कर्तुंनेच्छसियन्मोहात्करिष्यस्यवशोपितत् ॥ ६० ॥

टीका– हेअर्जुन अपने स्वभावतें उपज्यौ जो कर्म तासौं तूं बंध्योहैं अरु अज्ञानतैं कर्म कर्यो चाहत नाहींहै सुता कर्मकौं तूं अवश्यकहै पराधीन व्हैकै आपुहि करैगो. ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुन अपने कर्मसौं, तूं बंध्योहै नीत, कर्यौ न चाहै मौ हतैं, परवस करिहौं मीत ॥ ६० ॥

ईश्वरःसर्वभूतानांहृद्देशेर्जुनतिष्ठति ॥
भ्रामयन्सर्वभूतानियंत्रारूढानिमायया ॥ ६१ ॥

टीका– हे अर्जुन ईश्वर सकल प्रानीनिकै हृदै रहै है अरु ए सकल प्रानी कालचक्रपर चढेहै तिनकौं ईश्वर अपनी माया शक्तिसौं फिरावतुहै ॥ ॥ दोहा ॥ ईश्वर सबकै हीयमैं, अर्जुन रहत सगूढ, जीव भ्रमावतुहै सदा, करि माया आरूढ ॥ ६१ ॥

तमेवशरणंगच्छसर्वभावेनभारत ॥
तत्प्रसादात्परांशांतिंस्थानंप्राप्स्यसिशाश्वतम् ॥ ६२ ॥

टीका– तातैं हे अर्जुन सर्वथा ताही ईश्वरकै सरनिजाहु ताईश्वरहीकै अनुग्रहतैं परम शांति पावैगो. अरु जो नित्य अविनाशी पदहै ताकौं पावैगो. ॥ ॥ दोहा ॥ हो हु सदा वाकी शरन, अर्जुन तूं सम भाय, अविनाशी थिरशांतिपद ,ताप्रसादतैं पाय ॥ ६२ ॥

इतितेज्ञानमाख्यातंगुह्याद्गुह्यतरंमया ॥
विमृश्यैतदशेषेणयथेच्छसितथाकुरु ॥ ६३ ॥

टीका– हे अर्जुन या भांति तोकौं मैं दया करिकै गोप्यहुतैं अतिगोप्य ऐसो जो ज्ञान सो कह्योहै. यह सुगीताशास्त्र सकलही तूं विचारिकै जैसे तेरी इच्छा होय तैसैं करि. ॥ ॥ दोहा ॥ ज्ञानकह्यौ तो सौंजुमैं जो जनप्रगट जुनाहिं, जोजाने सोईजु करि धरि, विचार जियमाहि ॥ ६३ ॥

सर्वगुह्यतमंभूयःशृणुमेपरमंवचः॥
इष्टोसिमेदृढमतिस्ततोवक्ष्यामितेहितम्॥ ६४॥

टीका– हे अर्जुन फिरि ओरहु सबतें गोप्य ऐसोजु ज्ञान सो मैं तोसौं कहतु हौं परमेष्ट ऐसोजु मेरो वचन सो तु सुनि तुं मेरे बहुत प्रियहैं. तातैं तोसौं हित कहत हौं. ॥ ॥ दोहा ॥ जो कछु है सबतै परैं, परम वचन सो मानि, तुं दृढ बुद्धि मित्र मम, तो हित कहौं वषानि ॥ ६४॥

मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु॥
मामेवैष्यसिसत्यंतेप्रतिजानेप्रियोसिमे॥ ६५॥

टीका– हे अर्जुन तुं मैरैविषे मनराषि मेरो भक्त होहु अरु मेरे निमित्त जग्यादिक करि मोकौं नमस्कार करि जो तुंयाभांति मोपरायण होइगो. तो तु मेरि कृपातैं ज्ञानीं व्हैके मोहिं मैं आनि प्राप्त होयगो. इहां संदेह मति माने तु मेरे प्रियहै. तातैं यह मै तोकौं प्रतिज्ञाकरिकै साच कहतहौं. ॥ ॥ दोहा ॥ मोकौं जज तू सत्ययह, नमि मोमैं मनराषि, अंतसमैं हो मोहिमैं, प्यारे तुम यहसाषि ॥ ६५॥

सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज॥
अहंत्वासर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुचः॥ ६६॥

टीका– फिरि या ज्ञानतैं अति गोप्य ज्ञान कहतु हैं हे अर्जुन सर्व धर्म कौं तजिकै एक मेरे हि शरण आउं. मैंतोकौं सबही पापनितैं छुडाऊगो तू-कछु शोचजिनकरै ॥ ॥ दोहा ॥ सबधर्मनिकौत्यागिकै मो सरनहि तूआय, दूरिकरौ सबपापकौं, सोक तजो याभाय ॥ ६६॥

इदंतेनातपस्कायनाभक्तायकदाचन॥
नचाशुश्रूषवेवाच्यंनचमांयोभ्यसूयति॥ ६७॥

टीका– हे अर्जुन यह ज्ञान तो सो मैं कह्यो है. सो ज्ञान जो पुरुष तपस्वीन होय मेरो भक्त नहोय तासौ कबहू कहेजि न अरु जो सेवा करै

नाही अरु या गीतातत्वकौं श्रवनकी इच्छा न होय तासैंकह्यो जिनः अरु जो मोकौं मनुष्यसमान जानिकै दोषकी दृष्टिसौं मेरै निंदाकरै ताही सौंकहै जिनि. ॥ ॥ दोहा ॥ जाकैतपनांहिं भक्ति नहिं, ओर शुश्रूषा नाहिं तासौं तु यह जिनि कहै, जे मो दोषीआंहि ॥ ६७ ॥

यइदंपरमंगुह्यंमद्भक्तेष्वभिधास्यति ॥
भक्तिंमयिपरांकृत्वामामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥

टीका– हे अर्जुन जो पुरुष यापरमगोप्य गीताशास्त्रके ज्ञानकौ मेरे भक्तनकौ कहैगो सो पुरुष मोविषै परम श्रेष्ठ भक्ति करिकै मोहिको पावेगो. यामें संदेह नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ सो भक्तनसौं जे कहै, परम दुरचो यह ज्ञान, सो मेरी भक्ति हिलहै मोमैं रहै निदान ॥ ६८ ॥

नचतस्मान्मनुष्येषुकश्चिन्मेप्रियकृत्तमः
भवितानचमेतस्मादन्यःप्रियतरोभुवि ॥ ६९ ॥

टीका– हेअर्जुन जो पुरुष या गीताशास्त्रकौं नीकी भांति व्याख्यान करिकै मेरे भक्तनकौ सुनावैता पुरुष सामान मनुष्यनविषै मेरै हितकौ कर्ता ऐसौ ओर कोउनाहीं अरु ता पुरुषतैं ओर दूसरो पृथिवी विषै मेरै अतिप्रियकोऊ नाहीं. ॥ ॥ दोहा ॥ मोकौं प्यारे बहुत वह, हौं प्यारो हौं ताहि, वह मनु राषै जीयमैं, हौंराषौं हियमांहि ॥ ६९ ॥

अध्येष्यतेचयइमंधर्म्यंसंवादमावयोः ॥
ज्ञानयज्ञेनतेनाहमिष्टःस्यामितिमेमतिः ॥ ७० ॥

टीका– हेअर्जुन यह तेरौ संवादरूपहै याकौं जो पुरुष पाठकरै तापुरुषनैं सब जग्यनतैं श्रेष्ठ ऐसोजु ज्ञानयज्ञ ताकरिकै मेरै निमित्त जग्य कर्यौ ऐसैमैं मानतहौं. जो कोऊ गीताके अर्थ जाने विनापाठ मात्रही करै अथवा सुनै. वह तऊ पुरुप मोहिकूं प्रकासैहै. ऐसैमैं जानौ. तैसैं कोऊ एक पुरुप अपनी इच्छासो कदाचित् काहूकौं

नांव लेइ तब वह जानैकि मोकौं बोलावतुहै. तब वहवाकै ढीगजाय तैसै अर्थ जानै विना पाठमात्रहू करै ताकै ढीगमैं जाऊं अर्थ यह कि पाठमात्रहीतैं मै प्रसन्नहोहु. ॥ ॥ दोहा ॥ धर्मवादजो हम कीयौ, पढै जो कोऊ जानि, ज्ञानजज्ञ तिनहौं जज्यौ यह मेरौ मत मानि ॥ ७० ॥

श्रद्धावाननसूयश्चशृणुयादपियोनरः ॥
सोऽपिमुक्तःशुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥

टीका– हे अर्जुन जो पुरुष श्रद्धावंत होइके या गीताशास्त्रकौं सुनै अरु जो पुरुष गीता सुनते ऐसै न कहै कि येगीताकौं उच्चैस्वर पढतहै अरु असुद्ध पढतहै याभांति निंदाकरै अरु गीताकौं सुनतरहै सौ पुरुष सकल पापनतैं मुक्त व्हैकै अश्वमेधादिक पुन्यसौं पाइयै ऐसेजु शुभ लोक है तिनकौं प्राप्तहोय. ॥ ॥ दोहा ॥ श्रद्धाजुत दूषन विना, याहि सुनै जो कोय, पुन्यवंत लोकनिलहै, मुक्तिजु ताकौं होय ॥ ७१ ॥

कच्चिदेतच्छ्रुतंपार्थत्वयैकाग्रेणचेतसा ॥
कच्चिदज्ञानसंमोहःप्रनष्टस्तेधनंजय ॥ ७२ ॥

टीका– हेअर्जुन यह मैं तोसौं गीता शास्त्रको उपदेश कह्यौ सो तूं सुन्योकी नाहीं अरु याकै सुनैतैं अज्ञानतैं उपज्यौं जो मोह सो नष्ट भयो की नाहीं अर्थ यह कि जो या उपदेशतैं तोकौं ज्ञान उपज्यौ न होय तो फिरि उपदेश करौं ॥ ॥ दोहा ॥ चित्त एकही व्है सुन्यौं, तैंअर्जुन यह धर्म, मिट्यौ मोह अज्ञानकौ, और छुटै चितभर्म ॥ ७२ ॥

अर्जुन उवाच ॥

नष्टोमोहःस्मृतिर्लब्धात्वत्प्रसादान्मयाच्युत ॥
स्थितोऽस्मिगतसंदेहःकरिष्येवचनंतव ॥ ७३ ॥

टीका– अब अर्जुन कहतहै कि हे कृष्ण मेरौ मोहगयौ अरु तुम्हा-

रि कृपातैं आत्मस्वरूपकौ स्मरन पायौ अब मैं निःसंदेह व्हैकै युद्धनिमित्त ठाढोहौ तुह्मारी आज्ञा करौंगो. ॥ ॥ दोहा ॥ मोह गयौ आई सुरति एहो श्रीभगवान, गयौ दूर संदेह अब, तुम आज्ञा परवान ॥ ७३ ॥

संजय उवाच ॥

इत्यहंवासुदेवस्यपार्थस्यचमहात्मनः ॥
संवादमिममश्रौषमद्भुतंरोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥

टीका– या भांति संजयनैं धृतराष्ट्रकौं श्रीकृष्णार्जुनसंवाद कह्यौ अब आगै कहनीहै भीष्मपर्वकी कथा ताकौं स्मरनकरिकै संजय कहतहै कि हे धृतराष्ट्र या भांति श्रीकृष्णकौ अरु अर्जुनकौ यह अद्भुत संवादमैं सुन्यौ जाकै सुनै शरीरविषै रोमांचितहौंहि. ॥ ॥दोहा॥ हरि अर्जुनकी बातए, सुनी जुमैं याभाय, अचिरज रूप अनूप अति, रोमहर्ष चितचाय ॥७४॥

व्यासप्रसादाच्छुतवानेतद्गुह्यमहंपरम् ॥
योगंयोगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतःस्वयम् ॥७५॥

टीका– हे धृतराष्ट्र यह परम गोप्य श्रीवेदव्यासजीकी कृपातैं महायोगेश्वर जो साक्षात् श्रीकृष्ण तिनके मुखतैं जब अर्जुनकौं उपदेश कर्‍यौ सो सब मैं सुन्यौ. ॥ ॥ दोहा ॥ परम दुर्‍यौ मत यह जु,हौं सुनौ व्यास परसाद, जोगीश्वर श्रीकृष्णजु, निजमुष कियो विवाद ॥ ७५ ॥

राजन्संस्मृत्यसंस्मृत्यसंवादमिममद्भुतम् ॥
केशवार्जुनयोःपुण्यंहृष्यामिचमुहुर्मुहुः ॥ ७६ ॥

टीका– हे राजा धृतराष्ट्र महा अद्भुत अरु परम पवित्र ऐसोजु यह श्रीकृष्ण अरु अर्जुनकौ संवाद ताकौ वारंवार स्मरन करिकै मैं वारंवार हर्ष पावतुहौ. अथवा मेरौ शरीर रोमांचित होतहैं. ॥ ॥ दोहा ॥ वारंवार सुमिरतजु हौं, वासंवाद हि राज, हर्ष होत मोकौं महा, अतिपवित्रके साज ॥ ७६ ॥

तच्चसंस्मृत्यसंस्मृत्यरूपमत्यद्भुतंहरेः ॥
विस्मयोमेमहान्राजन्हृष्यामिचपुनःपुनः ॥ ७७॥

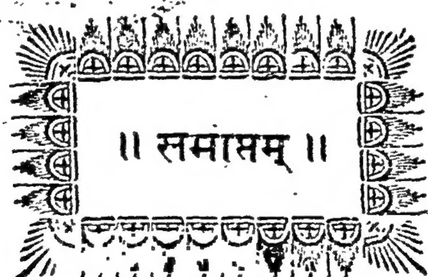
टीका— ओर हे धृतराष्ट्र श्रीकृष्णके ता अद्भुत विश्वरूपकौं मैं वारंवार स्मरन करिकै परम अचिरज पावतुहैं अरु वारंवार हर्ष पावतुहैं. ॥ दोहा ॥ अद्भुत रूप श्रीकृष्णकौ, सुमिर सुमिर हों ताहि, हर्ष होत मोकौं महा, विस्मय मानत वाहि ॥ ७७ ॥

यत्रयोगेश्वरःकृष्णोयत्रपार्थोधनुर्धरः ॥
तत्रश्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥

टीका— तातैं हे धृतराष्ट्र अपनै पुत्रनकौं राज्यको मनोरथ तूं करै जिन, क्यौं कि मैं यह निश्चय कस्योहै. कि जहां साक्षात् जोगेश्वर श्रीकृष्णहै अरु जहां गांडीव धनुष्यको धरै या अर्जुनहै ऐसै जिनकै पक्षहै तहां निश्चल राज्यलक्ष्मीहै अरु तहां विजयहै. अरु तहां दिन दिन अधिक वृद्धिहै. तहां नीतिहू निश्चलहै. तातैं तूं अपनै पुत्रनकौं लैकै श्रीकृष्णकै सरन जाइकै पांडवकौं प्रसन्न करिकै अपनो सर्वस्व पांडवनकौं समर्पन करिकै दुर्योधनादिक जे तेरे पुत्र है तिनैकी रक्षा करि यह भावार्थ है. ॥ ॥ दोहा ॥ जोगीश्वर श्रीकृष्णजु, अर्जुनहै जाठोरि, तहां विजय अरु नीतिहै, राज संपदा ओर ॥ ७८ ॥ कृष्णकृपातैं होतहै, भक्तियुक्तको ध्यान, तातैं बंधनतैं छुटै, यह गीतारथ जान ॥ १ ॥ इहिं अठरा अध्यायमैं कह्योमोक्ष संन्यास, अर्जुनसौं श्रीकृष्णजू जानि आपनौ दास ॥ २ ॥ कह्यो मोक्ष संन्यास जो, कृष्ण कमल दलश्याम, उरमैं धरि, गिरिधरनकौं, वरन्यौ आनंदराम ॥ ३ । यह गीता अद्भुत परम, श्रीमुषकियोवषान, वारवार निरधार किय, पराभक्तिकौ ज्ञान ॥ ४ ॥ भक्तिवस्यै श्रीकृष्णजू यहै करी निरधार, भक्ति करै बहुभांतिसौं, यहै वेदकौ सार ॥ ५ ॥ भगवद्गीताकोउ पढ़ै, ओर सुनै चितलाय, पावै भक्ति अखंड सो, श्रीहरि सदा सहाय ॥ ६ ॥ गीता प्रतिदिन उचरै, सदा सूछमगमांहिं, मनसा वाचा

कर्मगा तिन सम कोऊ नाहीं॥ ७ ॥ जो कोउ चाह भवतर्यौ, कृष्ण चरनके पास, और सकल श्रम छांडिकै, गीता करै अभ्यास ॥ ८ ॥ लोक कृतारथकै लियै, सबै ग्यानको सोध, आनंदरामहि यह कर्‌यो, परमानंद प्रबोध ॥ ९ ॥ परमानंदप्रबोध यह, कीनो आनंदराम, पढै गुनै याकौं सुनैं, सो पावै प्रभुधाम ॥ १० ॥ नारायन निज नामकौ. धर्‌यो देहकौ ध्यान, अपनी आनंदरामकौ, भक्ति दई भगवान॥ ११ ॥ जब लगि रविशशि मेरुमाहि, अगनि उदधि थिर होय, परमानंदप्रबोध यह, तबलग जगमैं जोय ॥ १२ ॥ तवलग दीपति भानुकी, ताप सहै सबदेस ॥ जबलगि दिष्ट पर्‌यौ नही हरिगीताराकेश ॥ १३ ॥ शशि रस उदधि धरा १७६१ संमित, कार्तिक उर्जमास, रविपंच्यौ पूरनभयौ, यह गीतापरकास॥ १५॥

इति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैय्यासक्यां भीष्मपर्वणि ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दोहासहितभाषाटीकायां मोक्ष संन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ श्रीरस्तु ॥



पुस्तक मिलनेका ठिकाणा:

पंडित-श्रीधर शिवलाल मुंबई ज्ञानसागर छापखाना अजमीरमें नयाबजार पंडित श्रीधर शिवलालजीके पुस्तकालयमें.